कवि भीम विरचित

सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतियों की सहाय से संशोधित अज्ञात कविकृत
"सार्वलिगा पाणिग्रहण चउपई"
और
कवि कीर्तिवर्धन रचित 'सदयवत्स सार्वलिगा चउपई'
के परिशिष्ट और
प्रस्तावना एवं टिप्पणियाँ सहित

सम्पादक–
डा० मंजुलाल मजमुदार
एम. ए., पी-एच. डी. एल-एल. बी.
'माधवानल कामकंदला प्रबन्ध' के सम्पादक
एवं
'गुजराती साहित्य के स्वरूप-पद्य विभाग:
मध्यकालीन और अर्वाचीन' के लेखक

प्रकाशकः—
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट
बीकानेर

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ
मूल्य–४ रु०

मुद्रकः—
महावीर मुद्रणालय,
अलीगंज (एटा)

डा० कन्हैयालाल मुन्शी 'Gujarat & its Literature' (1935) Page 162:—

"Sadayavatsa kathā' has charmed Gujarat for about five hundred years. Sadayavatsa and Sāvalingā, husband and wife, are banished from their native city and are separated. Ultimately they meet after undergoing fearful experiences, in all of which the fantastic vies with the miraculous. The story is taken probably from some unknown Prākrit source. Its first available Gujarati version is copied in Samvat 1488."

संकलना

अर्पण

कायस्थ कवि गणपतिकृत 'माधवानल कामकंदला प्रबंध'
(१९१४), और भीमकृत 'सदयवत्स वीर प्रबंध' (१९१५)
के प्रथम निवेदक ।
अनेक अप्रकट संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और
प्राचीन गुजराती ग्रंथों के आद्य संशोधक ।
(पट्टण ग्रंथ-भण्डारों की सहाय से आधार लेकर)
'गायकवाड़ प्राच्य ग्रंथमाला' के आद्य संपादक

राजरत्न
पं० चीमनलाल दलाल की स्मृति में
सविनय
अर्पण

मंजुलाल मजमुदार

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १६४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध मे विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का संकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं । यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है । अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी मे उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनाओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है—

१. कळायण, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३ बरस गांठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कविताये, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नही हो सका है । इसका भाग ५ अङ्क ३–४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है । यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अङ्क १–२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेपाक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथो का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई है। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथो का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथो का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएँ और कहानियां आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हुंडलोद, थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भडुली—	श्री अगरचन्द नाहटा म: विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२६. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी -जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस बृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके । संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजान्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्‌वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०.

उपोद्घात

'सदयवत्स वीरप्रबन्ध' का पहला परिचय- प्रस्तुत प्रबंध के अस्तित्व का पहला उल्लेख करने वाले श्री चीमनलाल दलाल महोदय थे। ई. स. १९१५ (वि. स. १९७१) मे गुजरातके प्रख्यात शहर सूरत में आयोजित की गई (५) पांचवीं गुजराती साहित्य परिषद के समक्ष उन्होंने "पट्टण के ग्रंथ भांडार और उसमें बहुतायत रहा हुआ अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य" ("पाटणना भंडारो अने खास करीने तेमां-रहेलुं अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती साहित्य") नाम का एक बढ़िया निबन्ध पढ़कर सुनाया था। उसमे एक अ-जिन कवि 'भीम' की रचना (लिपि वि. स. १४८८) सदयवत्स कहानी का उन्होंने ही सर्वप्रथम निर्देश किया था।

इसके पहले श्री कांटावाला से संपादित 'साहित्य' मासिक पत्रिका के अगस्त ई स १९१४ (वि. सं. १९७०) के अंकमें आम्रपद्र (आमोद) जिला भरुच के कायस्थ कवि गणपति की रचना-कृति "माधवानल कामकंदला प्रबंध" (रचनाकाल वि. सं. १५७४) कि,जो २ ५०० दोहा छंदका काव्य-ग्रंथ था उसके प्रति सबसे पहले श्री दलाल महोदय ने ही पाठकों एवं विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने ही पट्टण के ग्रंथागार में से अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य के ग्रंथों का परिचय एक सूचिके रूपमें पहले एकत्र किया था। क्योंकि उनके पहले पट्टण के ग्रंथागार के साहित्यक ग्रंथोंकी सूचि (नोंध) या सकलित यादी तैयार करने के लिये डा० ब्युलर, डा० पीटरसन, एवं प्रा० मणिलाल न. द्विवेदी आदि महानुभावोंने प्रयत्न किया था। उनको यहांके ग्रंथागारके संरक्षकों-का सहकार प्राप्त नहीं हुआ था। किन्तु श्री दलाल महोदय, स्वयं जिन होने के नाते, उन्होंने उन ग्रथागार के संरक्षकों का सहकार एवं सद्भाव प्राप्त कर लिया था। और अत्यंत परिश्रम करके यहाँ के (पट्टणके ग्रंथा-

गार के) साहित्यक-धन द्वारा उस साहित्य का साहित्य जगत में परिचय दिया। गुदडी के लाल की तरह, साहित्य प्रकाश मे लाया गया। साहित्य-जगत मे नई रोशनी आई। फलस्वरूप बडौदा रियासतकी श्री गायकवाड़ प्राच्य ग्रंथमाला (G. O. Series) के पहले सपादक एव तत्री-पद पर उनकी नियुक्ति की गई थी।

सम्पादनका श्रेय यह एक आनन्दजनक एवं आश्चर्यकारक घटना घटी है ऐसा कहने मे सकोच नहीं होता है। क्योंकि श्री दलाल महोदय ने जिस अ-जैन काव्यग्रथो की सर्वं प्रथम उद्‌घोषणा की थी, वही दोनो ग्रथो के सपादन करने का सद्‌भाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। कौन जानता था कि यह कार्यं मुझसे होगा ? किन्तु हो गया है। और अब भी हो रहा है। इसमे ईश्वर का कुछ सकेत होगा ऐसा मैं समझता हूं।

ई स १९४२ (वि सं १९९७) मे "माधवानल कामकंदला प्रबध" मूल-मात्र, एवं परिशिष्ट और उपोद्‌घात सहित प्रथम भाग श्री गायकवाड़ प्राच्य ग्रथमाला मे ९३ पुष्प के रूप मे प्रकाशित हुआ है। विस्तृत प्रस्तावना, टिप्पणियाँ, तथा शब्दकोशका दूसरा भाग तैयार होने जा रहा है।

संपादन का इतिहास- प्रस्तुत "सदयवत्स वीर प्रबंध" नामका ग्रंथ का संपादन कार्य करने का निर्णय ई. स. १९३९ (वि. सं० १९९५) मे किया गया था। उसके बाद अन्य हस्तलिखित पोथियाँ एवं उपयोगी साहित्य की खोज मे कुछ वर्ष निकल गये। प्रस्तुत प्रबन्ध का प्रकाशन-कार्य अहमदाबाद की गुजरात विद्यासभा की ओर से होने वाला था। उससे मैंने वहा एक प्रेस-कापी प्रकाशन के लिये भेज दी। वहां के 'नवजीवन' छापखाने से ई. स १९५० (वि. स २००६) के आसपास के समय में देवनागरी लिपि मे प्रकाशित हुई कुछ गलतिया वाली प्रूफ-प्रतियाँ प्राप्त हुई। मैंने इन गलतियों की दुरुस्ती करने की प्रार्थना की। किंतु वहाँ के कार्यवाहको को गलतियाँ दुरुस्त करने के लिये सुविधा नही होने के नाते, कुछ कठिनाई देखकर उस कार्य को आगे

बढ़ाने में अनिच्छा व्यक्त की। छापखानेवालों ने यह सिरपच्ची वाला साहित्य विद्यासभा की ओर वापस भेज दिया। और विद्यासभा ने मुझे वापस लौटा दिया। और इस तरह यह प्रकाशनका कार्य यकायक रुक गया।

श्री नाहटाजी की प्रेरणा- श्री अगरचन्द नाहटाजी महोदयने उनके "राजस्थान भारती" नामके मासिक पत्रिका के अंक मे सन् १९५८ मे प्रकाशित एक विस्तृत लेख मे 'उस प्रबन्ध का प्रकाशन होने वाला है," ऐसा नोंट के रूप मे उल्लेख किया था। बाद मे (वि. स. २०१९) ई सं. १९६० के सितम्बर मास मे श्री नाहटाजी महोदयने, प्रस्तुत प्रबन्धकों श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट बीकानेर ग्रथमालामे प्रकट करनेकी, सस्था के सेक्रेटरी (मत्री) के नाते, मुझे सूचन किया, प्रार्थना की। मैंने धन्यवादके साथ उनकी प्रार्थनाको सहर्ष स्वीकार किया। इस तरह प्रस्तुत प्रबधके प्रकाशन-कार्य की कहानी या पूर्व इतिहास अब पूर्ण होता है।

आभार दर्शन- इस उपयोगी साहित्य रचनाकृति को प्रकाशमे लाने की सुविधा एवं सहायता देने के लिये, तथा तत्सबंधी अनेक हस्त-लिखित प्रतिया एव अन्य सामग्री भेजकर रचनाकृतिके सपादन, संशोधन एव प्रकाशन आदि कार्यों मे जो सहायता प्रदान की है, इसके लिये मैं श्री नाहटाजी महोदय को धन्यवाद के साथ उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

उस सपादन की प्रस्तावना लिखने में उपरिनिर्दिष्ट श्री नाहटा जी महोदय का "राजस्थान भारती" मे प्रकाशित "सदयवत्स सावलिंगा की प्रेमकथा" नामके अत्यन्त अभ्यासपूर्ण एव विद्वत्तापूर्ण लेख का काफी उपयोग भी किया है। उसके लिये भी मुझे उनका ऋण-स्वीकार करते हुये अत्यन्त हर्ष होता हैं।

प्रस्तुत ग्रंथमें मैंने संशोधित की हुई एवं अन्य सव गुजराती सामग्री का हिंदी में अनुवाद करने वाले मेरे स्नेही एवं साहित्यक-शिष्य श्री चन्द्रकान्त बापालाल पटेल (साहित्यरत्न-प्रयाग) जी को मैं धन्यवाद देता हूं।

इस प्रबन्ध के सम्पादन में मेरे मित्र पंडित श्री लालचन्द्र भगवान दास गाँधीजी ने पाठ निर्णय और टिप्पणी में हृदयपूर्वक सहायता की है इसलिए मैं अत्यन्त उपकृत हूं।

फोटोग्राफ- 'प्रबंध' और 'चउपाई' की प्राचीन प्रतियों के आदि एवं अंतभागके फोटोग्राफ (चित्र-कांपी) भी दिये हैं। जो प्रतियां बड़ौदा प्राच्यविद्यामंदिर के नियामक श्री डा० भोगीलाल जी सांडेसरा के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं। जिससे लिपियों के प्रकारान्तरका परिचय भी होगा। और सुविधा रहेगी।

टिप्पणीमे कई अपभ्रंश शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है जिससे इनका यथार्थ बोध होने मे सुविधा रहेगी।

प्रबन्ध मे से एक दिलचस्प प्रसङ्ग का चित्र की प्रतिकृति एक सचित्र प्रति में से दी गई है।

"चैतन्यधाम" ३४ प्रतापगंज   मंजुलाल मजमुदार
बड़ौदा २
(गुजरात राज्य)

प्रस्तावना

प्रबन्ध का स्वरूप- वीररस प्रधान एवं ओजपूर्ण शैलीवाला काव्य 'प्रबंध काव्य' कहा जाता है। गद्य या पद्य दोनों में की हुई सार्थक रचना का नाम है 'प्रबध' (मणिलाल बकोरभाई व्यास का संपादित "विमल प्रबंध", प्रस्तावना पृ० ६२) ई. स. १००० से १५०० तक रचे गये ऐतिहासिक काव्योंके नाम, खास करके 'प्रबंध' रखे गये हैं। जैसेकि कुमारपाल प्रबन्ध, भोजप्रबन्ध, चतुर्विंशति प्रबन्ध, प्रबन्ध चिंतामणि, प्रबंध श्रेणि, जैसे संस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रथो में एक या अनेक वीरव्यक्तियों के चरित्रों का बयान किया गया है। इन प्रबंधों में संबधित व्यक्तियों में विमल मत्री जैसे युद्धवीर तथा धर्मवीर भी हैं, एवं जगड् जैसे दानवीर, और विक्रम जैसे युद्धवीर, और सदयवत्स या पृथ्वीराज जसे शृंगारवीर भी उल्लेखनीय हैं। यों प्रबंध खास करके ऐतिहासिक व्यक्तियोंके चरित्र-निरूपण के ही काव्य हैं।

वीररस का आलंबन- रसशास्त्रका एक सिद्धांत है कि उत्तम प्रकृति के नायकों का ही वीररसमें बयान करना चाहिये। क्योंकि वीरत्व उत्तम पुरुषों में ही होता है। वीररस का स्थायीभाव उत्साह है। उत्साह का राजस गुण किसी भी कार्य में वीर को प्रवृत्त करता है। क्योंकि उस कार्य मे उसको विजय प्राप्त करना है। वीर का उत्साह यूं पाँच प्रकार का हो सकता है। जैसे कि युद्ध करने का उत्साह, धर्म करने का उत्साह, दान करने का उत्साह, दया करने का उत्साह, तथा प्रेम करने का उत्साह।

महाभारत के पात्रों में अर्जुन युद्धवीर, हैं युधिष्ठिर महाराज धर्मवीर हैं। कर्ण दानवीर हैं। शिबिराज दयावीर हैं। भगवान कृष्णचंद्र शृंगारवीर के रूप में विख्यात हैं ही। यदि कोई कहेंगे कि क्षमावीर, सत्यवीर, लज्जावीर, नीतिवीर, धृतिवीर जैसे भेद क्यों न हो सके? वीरके

अनेक भेद और केवल पाँच ही भेद क्यों कहे गये ? इसका समाधान इस प्रकार हो सकता है कि क्षमाका अन्तंभाव दया मे हो जाता है । तथा सत्य आदि का संनिहित धर्म मे ।

अंग्रेजी वीरपूजा की भावना–कार्लाइल के 'वीर और वीरपूजा' (Hero & Hero worship) नामक पुस्तक में जीवन के विविध क्षेत्रो में वीरता दिखाने वाले वीरों का पूजन करना उचित है ऐसा प्रतिपादित किया गया है। इसमे वीरता को व्यापक अर्थ मे सूचित किया गया है।

कवि, धर्मगुरु, वैद, व्यापारी, सैनिक प्रत्येक के क्षेत्र मे हरेक को वीरता दिखलानेका पूर्ण अवकाश रहता है। और वीरता दिखलानेवाले सच्चे वीर कहलाने के योग्य हैं। उपर्युक्त दिखाये गये पाँच प्रकार के भेद में इसका भी अर्तभाव हो जाता है।

वीररस के अन्य पद्यस्वरूप- वीरोंके चरित्र 'प्रबन्ध' रूपमे 'पवाडा' रूप मे, श्लोक (सलोका) रूप में, या 'रासा'के रूपमें वीररसके लिये उचित ऐसे 'छद' मे रचे जाते हैं। और रचे भी गये हैं। जिसके दृष्टांत ऊपर दिये गये है। सामान्य मनुष्यों के चरित्र कभी काव्य द्वारा बिरदाने के योग्य होते नही हैं, या ऐसे साधारण मनुष्यों के चरित्र काव्य में वर्णित किये नही जाते हैं, या योग्य भी नही होते। इसलिये गुजराती एवं राजस्थानी पद्य-साहित्य में खास तौर पर चरित्र, प्रबन्ध, पवाडो, रासो तथा छद, एव शलोका, ये सर्व शब्द करीब पर्याय रूप में प्रयुक्त किये गये शब्द न हों, ऐसा समझने का मन होता है।*

---

* कान्हडदे प्रबंध की कुछ प्रतियो में उसका शीर्षक कान्हड चरिय, कान्हडदेनो चुपइ, कान्हड देनउ पवाडउ, और श्री कान्हडदे रास-ऐसा भी उल्लेख मिलता है-देखिये प्रा० कान्तिलाल व्यास, श्री सिंघी ग्रंथमाला अंग्रेजी प्रस्तावना, पृ० २० की पादनोंट।

वीरगाथा काल- वीरगाथा काल के राजाश्रित कवियों एवं भाट चारणोंने अपने आश्रयदाता राजाओं के शौर्य पराक्रम एवं प्रभाव आदि के वर्णन अपनी ओजपूर्ण सनकदार बानी में काव्यों में किये हैं। ये लोग कभी कभी रणक्षेत्र में जाते थे, तलवार भी चलाते थे। और अपनी वीर बानी से सैन्य में शौर्य का संचार करते थे। खुद भी युद्ध में प्राणार्पण कर देते थे। ऐसी रचनाओं की पीढ़ीगत रक्षा भी की जाती थी एवं वृद्धि भी।

हमें वीरगाथायें दो रूप में मिलती हैं। (१) मुक्तक रूप में, और (२) प्रबंध में। जिस तरह युरुप में वीरगाथाओं के विषय (Age of Chivalry) युद्ध एव प्रेम थे, वैसे भारत के साहित्य में भी हुआ है। किसी राज्य की स्वरूपवती राजकन्या का समाचार सुनकर अपने लश्कर के साथ उस राज्य पर धावा करके उसकी राजकन्या छीन ली जाती या अपहृत की जाती थी। इसमें वीरो का वीरत्व,गौरव, शौर्य,अभिमान, बल, प्रभाव, आदि माना जाता था। इस तरह प्रबन्ध काव्यो मे वीररस के साथ शृंगार रस का भी मिश्रण होता था, हुआ है।

वीररस के मुक्तक- वीररस के प्राचीन मुक्तकों का संग्रह मुनि श्री हेमचन्द्राचार्य के 'प्राकृत व्याकरण' ग्रंथ में दृष्टान्त के रूप में प्राप्त होता है। इसके सिवा भी प्रबध काव्य एवं वीरगीतों के स्वरूप में रचना हुई है।

रासा साहित्य- गुजराती के रासा युग के समसामायिक काल को हिंदी साहित्य में "वीरगाथा काल" नाम दिया गया है। इस काल में 'खुमान रासो' 'विशालदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो' 'हम्मीर रासो' 'जगनिक का आल्हाखंड' आदि रचना हुई है।

गुजराती म वि. सं. १३७१ के आसपास श्री अंबदेव सूरि रचित "समरारासु" में पट्टण के समरसिंह नामक एक ओसवाल वणिक बनिया ने संघ (यात्रा) निकाल के शत्रुंजय पहाड़ पर श्री ऋषभदेव के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया। और घर लौट आया उसकी प्रावस्[illegible] तीर्थ-

यात्रा आदि का वर्णन आता है । इसमें समरसिंह स्वयं दानवीर एवं धर्मवीर भी दिखाई देता है ।

श्री कक्कसूरि के वि. सं १३९२ में संस्कृतमें रचित ग्रंथ 'नाभिनंदन जिनोद्धार प्रबन्ध' में भी इसका बर्नन है । श्री अम्बदेवसूरि इस यात्रा में सम्मिलित थे । ऐसा उसमें उल्लेख है ।

गुजराती प्रबन्ध साहित्य- 'विसलनगरा नागरबंभ' पद्मनाभने वि. सं १५१२ में 'कान्हडदे प्रबंध'की रचना की है। यह बिना सुपरिचित तथा सुविदित हो गई हैं । वि. सं १५६८ में श्री लावण्यसमयने 'विमल प्रबन्ध' की रचना की है वह भी प्रसिद्ध है । कायस्थ कवि गणपति ने 'माधवानल कामकंदला प्रबन्ध' की रचना वि. सं १५७४ में आम्रपद्र, आमोद जिला भडोच में की है।

शील से शोभित नायक नायिका का शृंगार इसका वर्ण्य विषय है । इसमें माधव चारित्र्य-शुद्ध शृंगारवीर है । कामकदला अभिजात गणिका-पुत्री है । और वह मृच्छकटिक की पात्र वसंतसेना का स्मरण कराती है । इसीलिये उनका मिलन साहसवीर तथा परदुखभजन ऐसे राजन विक्रम द्वारा होता है । इस प्रबन्ध में विप्रलभ तथा रतिक्रीडा यों दोनों प्रकार के शृगार रसप्रद बाणी में वर्णित किया गया है । फिर भी इसमें कविने शीलका, चारित्र्यका,माहात्म्य अधिक भावपूर्वक स्थापित किया है ।

वैष्णव कवि श्री गोपालदासे ने "श्री वल्लभाख्यान" श्री वल्लभाचार्य (जीवनकाल वि. सं. १५२९-१५८७) तथा श्री विटठलनाथजी (जीवनकाल वि. सं. १५७२ से १६४२ में) धर्मवीर ऐसे गोस्वामी श्री विट्टल नाथजी की प्रशस्ति की, प्रबन्ध-रूप में नौ गेय पद्यों में रचना की है ।

संस्कृत गद्य कथा- श्री रत्नशेखर के शिष्य श्री हर्षवर्धनगणिने वि. सं. १५२७ में "सदयवत्स कथा" संस्कृत गद्य में रची है । वह शायद एक जैनेत्तर कवि भीम ने रचित "सदयवत्स वीर प्रबंध" की वि. सं १४८८ में श्री पट्टन में लिखी गयी प्राचीनतम प्रतिकृति प्राप्त हुई है । इस बिनासे इस कृतिकी रचना के संभव में

सकता है कि भीम की रचना अनुमानतः वि. सं. १४६६ में हुई होगी, ऐसा कुछ लोगो ने अनुमान किया है। दूसरी प्रति वि. सं. १५९० में एवं तीसरी प्रति वि. सं. १६६२ की प्राप्त है। इस परसे कहा जा सकता है कि सदयवत्स और सावलिया की प्रेम कथा का यह सबसे प्राचीन एवं उपलब्ध संस्करण है।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने जिस प्रति की जाच की थी उसमें पद्य-सख्या ६७२ थी। दूसरी प्रति में ६८९ पद्य-सख्या है। किंतु सर्व प्रतियां का मिलान करनेके बाद,प्रबन्ध की ७३० जितनी कड़िया प्राप्त हुई हैं।

स स्कृत कथानक भीम के प्रबन्ध का मुख्यतः अनुसरण करता है। किंतु उसमे जिनधर्म की महिमा का गुथन करलेनेकी तक श्री हर्षवर्धन-ने छोड दी नही है। इन प्रसंगों का उल्लेख कथा-सार देते समय कौंस या कोष्टक में सूचित किया जायेगा। खरतर गच्छ के यति श्री कीर्ति-वर्धन ने इस कथानक में जिनमत का कुछ भी प्रचार नहीं किया है।

कथानक का मूल- 'कथा सरित् सागर' जो कि लोककथाओंके महासागर स्वरूप गिना जाता है। उसमें भी 'सदयवत्स कथा' का पता चलता नही है। फिर भी उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता, प्रतिष्ठान नगर, शालिवाहन, बावनवीर, और खापरा चोर इत्यादि उल्लेखों से और सदयवत्स के अद्भुत वीरता-भरे वर्णनों से या गाथाओंसे इस लोक-कथा की उत्पत्ति का सम्बन्ध 'विक्रम कथा-चक्र' के साथ होना अनुमान किया जा सकता है।

* स स्कृत में 'सदयवत्स', प्राकृत में 'सुदयवच्छ' 'सुद्धवच्छ' एवं सुद्द, गुजरातीमें 'सदयवच्छ' और 'सदेवंत' इस तरह राजस्थानी-मारवाडी में 'सूदो', एव 'सदेवछ' शब्द हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये सर्व शब्द कथानक से सम्बन्ध रखने वाले हैं। कथानक के निकटवर्ती शब्द हैं।

सावलिगा का निर्देश कहीं कहीं सावलिंगी के रूप में भी प्राप्त है।

प्राचीन उल्लेख पद्मावतमें सदयवत्स कथा के विषय में दो प्राचीन उल्लेख प्राप्त होते हैं। (१) मलेक मुहम्मद जायसीकृत रचना पद्मावत में इस कथानक का उल्लेख उसने किया है। और श्री सुधाकर द्विवेदी वाला जो संस्करण हैं उसमें यही पाठ है।

(२) शिरफ ने जायसीकृत 'पद्मावत' के अपने अंग्रेजी अनुवाद में पृ० १४४ की पादटिप्पणी में भी 'सदयवत्स' पाठ का उल्लेख किया है।

अपभ्रंशमें उल्लेख- एक दूसरा उल्लेख भी प्राचीन समय का प्राप्त होता है, जो अब्दुल रहेमानके अपभ्रंश काव्य 'संदेश रासक'में है। जिसका रचनाकाल वि. सं १४०० के आसपास है। उसने मुलताननगर का वर्णन किया है। उसमें वहां के विचक्षण नागरिको की साहित्यक विनोद की चर्चा के प्रसंग में उन्होने लिखा है कि मुलताननगर के सर्व नागरिक पंडित थे। ये विचक्षणो के साथ नगर में परिभ्रमण करते समय कही कहीं प्राकृत के मनोरम्य छद के आलाप सुनने मे आते थे। तो कही भेष परिवर्तन करने वाले लोग (बहुरूपी) 'रासक' करते देखने को मिलते थे, तो कहीं वेद, सदयवत्स कथा, नल चरित्र, महाभारत एवं रामायण (रामचरित) सुनने मे आते थे।*

---

* देखिये, मूल अपभ्रंश रचना की संस्कृत टिप्पणी--

"यदि विचक्षणैः सह पुरान्तः परिभ्रम्यते तदा मनोहरं छंदसा मधुरं प्राकृतं श्रूयते।

कुत्रापि चतुर्वेदिभि. वेदः प्रकाश्यते।

कुत्रापि बहुरूपिभिर्निबद्धो रासको भाष्यते ॥४५॥

कुत्रापि सुदयवच्छ कथा, कुत्रापि नलचरितम्।

कुत्रापि विविध विनोदैः भारतं उच्चरितं श्रूयते ॥

अन्यच्च कुत्रापि कुत्रापि आशिष त्यागिभिर्द्विजवरैः

रामायणमभिनूयते ॥४४॥

यहां नलचरित्र, महाभारत एवं रामायण के साथ 'सदयवत्सकथा' का उल्लेख प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि उस समय यह कथा उन ग्रंथों की तरह ही लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध होगी।

प्रान्त प्रान्तमें प्रचार- जायसी के पद्मावत में इस कथा का उल्लेख है इससे ज्ञात होता है कि उस कथानक की प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश में भी इसी रूप में होगी। यह बात स्पष्ट नजर में आ जाती है।

अब्दुल रहेमान के इस का इस रूप में उल्लेख, वास्तव में पंजाबकी ओर इस कथा के प्रचार का द्योतक है। राजपुतानी (राजस्थान) एवं गुजरात मे भी इस कथानक का बहुत प्रचार रहा है। यह बात भी उस संपादित सशोधित एव प्रकाशित ग्रथ से ज्ञात होगी।

विक्रम कथाचक्र से सम्बन्ध-जिन कवि के स स्कृत कथानक में जिनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जुटाया है। एव कथा में उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता (देवी), प्रतिष्ठाननगर एव शालिवाहन राजा बावन वीर, और खापरा चोर आदि के उल्लेख किये है। और इस प्रकार से विक्रमकथाओं के वार्ताचक्र (कथा चक्र) के साथ उसका सम्बन्ध व्यजित किया है।

प्रबन्धके रचयिता कविका परिचय- कवि ने प्रबन्ध मे अपने निर्देश के अतिरिक्त अन्य कोई भी परिचय नही दिया है। नामका निर्देश निम्नलिखित काव्य-पंक्ति में मिल जाता है, जो यहा उद्धृत किया गया है।

"इम भणइ भीम तस गुण थुणिसु,
जो हरिसिद्धि-वर-लवध।"

नाम का निर्देश प्राप्त होता हैं। किंतु कवि ने अपनी जाति ज्ञाति एवं जन्मस्थल या निवासस्थान के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। साथ साथ प्रबन्धके रचना-कालका भी किंतु उनके प्रबन्धकी प्राचीन-

तम प्रतिकृति श्री पट्टन में वि. सं. १४८८ की लिखी हुई प्राप्त हुई है। (विद्वद्जन मनः प्रमोदाय) इससे काफी अनुमान किया जा सकता है कि यह रचना विक्रम की १५ वीं शती के उपरार्ध से अर्वाचीन नहीं है।

कविका निवास स्थान-कविने अपने निवास स्थानके बारेमें कुछ भी संकेत नही किया है। किंतु कविका निवास स्थान गुर्जर भूमि हो ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि जब कामसेना के व्याधिकी चिकित्सा केवल गुर्जर वैद्यराज से ही हो सकी थी। और इससे गुर्जर वैद्यकी कवि भीम ने काफी प्रशसा भी की है।

प्राचीन काल की गुर्जर भूमि का विस्तार भी गुर्जर प्रतिहार राजाओं के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ हुआ है। जिस राज्य में सौराष्ट्र, आनर्त, एव समस्त राजस्थान का भी सन्निवेश होता था, और इसकी व्यापक लोक भाषाये भी समान थी।

कवि की ज्ञाति- कवि का ब्राह्मण होना सम्भव है। क्योंकि उसने गणेश, शकर, एव हरसिद्धि माता परमेश्वरीका उल्लेख किया है। साथ साथ कैलाशपति भगवान शकर के प्रासाद का सुन्दर बयान दिया है। (दे०कडी २१७, १८, १९) । प्रतिष्ठान नगर वर्णनके प्रसङ्गमे विक्रम, त्रिविक्रम, विष्णु एव सूर्य का भी उल्लेख हैं। सावलिंगा के अग्निप्रवेश की पूर्व तैयारी के रूप में जो प्रार्थना दी है इससे भी पता चलता है। जैसे कि 'करउ साखि त्रिकम ने तरणी' कडी (५९९)।

कवि रामायण एवं महाभारत से भी विशिष्ट रीति से परिचित थे ऐसा जान पडता हैं। कुछ छंद एवं काव्य पद्धतियों के द्वारा इसका पता चलता हैं। सदयवत्स के गुण एव कार्यों की प्रशसावली के अनुसंधान में नल, कदर्प, युधिष्ठिर, गागेय भीष्म पितामह, भीमसेन, कर्ण एवं दुर्योधन जैसोके उपमान भी कविने दिये हैं।(दे० छप्पय कडी २८७)कविके जमाने मे जिनधर्म एवं जीवदया अहिंसाका भी काफी प्रचार था। इसके द्योतक निम्नलिखित काव्य-पंक्तियां हैं। इससे पता चलता है। जैसे कि 'जिन शासन माडउ गहगहइ। जीवदया देखी मन रहइ ।।'(दे कडी ४५१,४५२)

प्रबंध की भाषा- प्रस्तुत प्रवन्ध की भाषा किसी भी जिनेत्तर गुजराती ग्रंथ की भाषा से प्राचीन जान पड़ती है। प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्द और प्रयोगों के रूप में उसमें इतनी सामग्रियां भरी पड़ी हैं कि न पूछो बात। यदि प्रारम्भ के मगलाचरण में कवि ने गणपति का नाम-स्मरण न किया होता तो इसकी गणना किसी जिन कवि की कृति के रूप मे गिना जाने का सम्भव था। डा० टेसिटोरीने जूनी पश्चिम राजस्थानी का नामाभिधान जिस भाषा-स्वरूप को दिया है। और गुजराती विद्वान महाशयोंने 'अतीम अपभ्रंश' और 'जूनी गुजराती', ऐसे शब्दो से उसका व्यवहार किया है। उसी समयकी भाषा 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध'मे प्रतीत होती है। वास्तव में वि. सं. १४८८ की प्रति की उपलब्धि से भाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा हुई है। और इसमें कुछ परिवर्तन एव आधुनिकरण नही हुआ है।

सरस यां सुन्दर रचना -कवि इस प्रबन्धके प्रारम्भ में 'सरस' 'सुअर्थ' एव सुच्छंद प्रबन्ध के रचयिता सर्व कोई प्रौढ़ एवं लघु छोटे बड़े ऐसे कविजनो को नमस्कार करते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि कवि ने किसी प्राकृत किवा प्राकृत अपभ्रंश ग्रन्थो में से इस प्रबंध के विषय मे प्रेरणा प्राप्त की होगी जिसका निर्देश हमे निम्नलिखित काव्य पक्तियो से मिलता है। जैसे कि "गुरु लहुय जि कवि कवियण, सरस सुअत्थ सुछद बधयरा।" कवि के पुरोगामी काल मे ऐसी प्रबन्ध रचना होना भी शायद सम्भव हो। फिर भी अद्य-यावत्प्राप्त जिनेत्तर रचनाओ में कवि भीम की रचना सबसे प्राचीन है-ऐसा कहने में सकोच नही हैं।

भीम कवि की रचना एवं काल-समय- सदयवत्स चरित कथानक के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य से निर्णय किया जाता हैं कि उन रचनाओं का प्रारम्भ वि. की १५ वीं शती से होता है। प्राचीन गुजराती भाषा में रचित भीम कवि की रचना 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' ग्रंथ उपलब्ध रचनाओं में सबसे प्राचीन है। इसकी प्राचीनतम प्रतिकृति

वि. सं. १४८८ की प्राप्त हुई है। इससे अनुमान किया गया है कि यह रचना निदान २० बीस साल पहले की होना सम्भव है। अतएव इनकी रचना वि. सं. १४६६ की है। ऐसा निर्देश कई लेखकों ने किया होगा। वास्तव में कवि का इसके वारे में कही भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

प्रबन्ध के छंद- कवि ने प्रस्तुत प्रबन्धमें दूहा,दूहासोरठा,पद्धडी, चउपई, अडयल, वस्तु, छप्पय, कुंडलिया. चामर एव मौक्तिकदांम इन मात्रामेल छद एवं एकताली केदारराग, और धउल धनासी, जैसे गेय काव्य-छंद प्रयुक्त किये हैं। अतएव ७३० कडियों में वह कृति प्रसादयुक्त एवं वैविध्यपूर्ण और सुन्दर बन पाई है।

वस्तुछंद 'पिंगलसारोदार'के नियमानुसार, १२५ मात्राओका नवपदी छंद है। पहले तीसरे ओर पांचवें पदमे १५ मात्रायें, दूसरे एव चौथे पद में ११ मात्रायें, और अंत्यके चार पदों से दूहा बनता है।

पद्धडी पद्धडिका और पाधडी छद कडवक के अत में अपभ्रंश काव्यो में प्रयुक्त होता है।

आचार्य हेमचद्र जी ने 'छंदानुशासन' में 'चीः पद्धडिका' चार चगणों से पद्धडिका छंद बनता है ऐसा लक्षण दिया है। चार मात्रा के गणकी चगण संज्ञा है। एवं १६ मात्रा का एक पाद, इस तरह के चार पाद पद्धडिका छद में रहते हैं। इसमें उसका नाम चतुष्पदी भी है।

प्रबन्ध में रस- कवि ने इसमें नौ ९ रस होने का उल्लेख किया है, किंतु प्रधानतया वीर एवं अद्भुत रसका संचार अधिक है। शृंगार रस उसमें गौण रूप में पाया जाता है। 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' नाम की गुजराती कवि की रचना प्रयः वीर रस से ही प्रेरित हैं।

गुजराती रूपान्तर-उज्जयिनी के राजा प्रभुवत्स के महालक्ष्मी रानी से सदयवत्स नामक पुत्र हुआ। उसे द्यूत का कुव्यसन लगा हुआ था। प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन के सार्वलिंगा नामक पुत्री थी। उसके स्वयंवर मे जाने के लिये आमंत्रण मिलने पर राजा प्रभुवत्स ने मंत्री के साथ सदयवत्स को प्रतिष्ठानपुर भेजा। मत्री कृपण होने से कुमार को खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य नहीं देता था। स्वयंवर में सदयवत्स ने अपने गुण एवं कला से आकर्षित कर सार्वलिंगा से विवाह कर लिया।

उज्जयिनी मे महादेव नामक एक दरिद्र ज्योतिषी रहता था। स्त्री की प्रेरणा से एक दिन वह राजा प्रभुवत्स की सभा मे उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय पूछा उसने कहा कि मैं ज्योतिष के बल से भूत, भविष्यत् और वर्तमान के शुभाशुभ को जानता हूं। राजा ने उसके इस अभिमान से क्रुद्ध हो परीक्षार्थ अपने निकटवर्ती जयमगल हाथी का आयुष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह कल दोपहरको मर जायगा। राजा ने क्रोधित होकर उसे कैद कर लिया और नौकरो को जयमंगल हाथी की विशेष रक्षा करने की आज्ञा दे दी। लोक ज्योतिषी की अवज्ञा करते हुये कहने लगे, देखो इस ज्योतिषी ने हाथी का मरण तो जान लिया पर अपने बंदीखाने मे पडने की बात को नही जानी।

इधर वैद्यो की देखरेख मे जयमगल की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। पर भवितव्यतावश दूसरे दिन दोपहर के समय हाथी मदोन्मत्त हो भाग निकला और बाजार में उपद्रव मचाने लगा। इसी समय एक सगर्भा ब्राह्मणी के अघरणी उत्सव का वरघोडा उसके पीहर से ससुराल जा रहा था, वहाँ वह हस्ति आ पहुचा। उत्सव में सम्मिलित लोग भाग खड़े हुये, पर ब्राह्मणी गर्भभार के कारण भाग न सकी। अतः हाथी ने उसे पकड ली। यह देखकर उसके पति ने चिल्लाते हुये उसकी रक्षा करनेवाले को हार आदि देने की उद्घोषणा की। सदयवत्स की दृष्टि भी उस ओर पड़ी और उसने हाथी को मारकर ब्राह्मणी की रक्षा की। इससे प्रसन्न हो प्रभुवत्स राजा ने कुमार को युवराज-पद देने का

निश्चय किया । स्वयंवर में साथ जाने वाले मंत्री ने कुमार को युवराज-पद मिलता देख विचार किया कि मैंने इसे आवश्यक द्रव्य व्यय के लिये नहीं दिया था संभव है वह उस वैर का बदला मुझ से ले । अतः इसे युवराज-पद नहीं मिले ऐसा सोच राजा को उल्टी मंत्रणा दी कि कुमार ने एक साधारण स्त्री की रक्षा करने के लिये "जयमंगल"-जैसे राजमान्य हाथी को मार डाला यह उचित नहीं किया । राजा को मंत्री की बात जँच गई उसने कुमार के कार्य को अनुचित समझ कर उसे राज्य छोड़कर चले जाने की आज्ञा दे दी ।

कुमार ने भी अपमान होने से अब वहाँ रहना उचित नहीं समझा और जाने की तैयारी कर ली । माता ने समझाया पर उसने नहीं माना । सावलिगा भी उसके साथ हो गई । चलते चलते वे एक बन में आ पहुंचे वहा सावलिगा को जोरो से प्यास लगी । कुमार पानी की खोज मे इधर उधर घूमते हुए एक प्रपा पर नजर आई । पानी लेनेके लिये पास पहुचने प्रपालिका वृद्धा ने कहा यह हरसिद्धि माता की प्रपा है । जितना पानी लोगे उतना ही खून देने की शर्त से ही जल ले सकते हो । कुमार ने सावलिगा के प्रेमवश बह शर्त स्वीकार कर, पानी ले जा कर, सावलिगा को पिलाया । वृद्धा भी साथ गई और खून माँगा । कुमार शिरच्छेद करने को उद्यत हुआ । इससे देवी ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहते हुए कहा- कि मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये जंगल की रचना की है । और मैं उज्जैन एवं प्रतिष्ठान नगर की कुलदेवी हूं । कुमार ने सग्राम एवं युद्ध में जय होने का वरदान माँगा ।

देवी ने सारियों के द्यूत में जय होने के लिये दो पासे, कपर्दक द्यूत में जय होने के लिये कपर्दिकायें, और संग्राम में जय होने के लिये लोहछुरिका दी । आगे चलते हुए स्त्रियों के समूह के बीच में एक कुमारिका को ध्यान करते हुए देखकर सावलिगा ने उसके पास जाकर वृत्तान्त पूछा । कुमारिका ने कहा यहाँ से ५ कोस पर स्थित धारावती-नगरीके राजा धारवीरकी स्त्री धारिणीकी मैं लीलावती नामक पुत्री हूं ।

बन्दीजनों के मुख से सदयवत्स का गुण श्रवण कर उसे पाने के लिये इस कामितप्रद तीर्थ में ६ महीने से ध्यान कर रही हू । सदयवत्स के न मिलने पर कल चिता में जल मरूंगी । सावलिगा ने यह वृतांत सदयवत्स को कहा । कुमार सबके साथ नगरी मे आया और लीलावती से विवाह कर उसकी इच्छा पूर्ण की ।

[इसी समय धर्मघोष नामक जैनाचार्य वहा पधारे और "थोडा बहुत भी धर्म जरूर ही करना चाहिये" ऐसा उपदेश देते हुये मृगांक की कथा कह सुनाई । सदयवत्स ने उसे सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार किया ।]

लीलावती को पितृगृह में रखकर सावलिगा के साथ कुमार आगे चला । रास्ते में एक पर्वत पर शिला से ढकी हुई गुफा देखी, दोनों ने कौतूहलवश भीतर प्रवेश किया तो उसमें ५ चोर बैठे देखे । चोरो ने सदयवत्स को अकेला देख उसे मारकर सावलिगा को ग्रहण कर लेने का विचार किया । उन्होंने द्यूत रमने के लिये सदयवत्स का आव्हान किया और जो हारे उसे मस्तक देना पड़े यह शर्त रखी गई । देवीके वरदानसे सदयवत्स जीता पर सज्जनतासे उसका शिर छेदन नही किया । इससे चोर प्रभावित हुए । और अदृष्टांजन, संजीवनी, रससिद्धि आदि विद्यायें देने को कहा पर कुमारने उन्हे नही लिया । फिर भी एक चोर ने गुप्तरूप से कुमार के उत्तरीय वस्त्र के छोर से पद्मिनिपत्र वेष्टित लक्ष मूल्य का कंचुक बाध दिया । चोरों ने यह भी कहा कि कभी आप संकट में पड़ जायें तो हमे स्मरण करते ही हम आकर आपकी सहाय करेंगे ।

कुमार आगे चलते हुए एक निर्जन नगर में पहुंचा । राजभवन के समीप आने पर एक स्त्री का रोना सुन कर उसके पास जाके रोने का कारण पूछा । उसने कहा मैं नंद राजा की लक्ष्मी हूं, अनाथ होने से रो रही हूं, तुम मेरे स्वामी बन जाओ ।

[नगर का निर्जन होने का कारण पूछने पर लक्ष्मी ने कहा कि इस

वीरपुर नगर मे एक तापस आया था। वह ब्रह्मचारी था। लोगों पर प्रभाव जमाने के लिये स्त्री का स्पर्श हो जाने पर बडा गुस्सा दिखलाने का ढोंग करता था। एक बार नगरी की वेश्या ने उसका स्पर्श किया, इससे उसने राजा के पास फरियाद की। वेश्या ने उसे ढोंगी बतलाया राजा ने उसकी परीक्षा के लिये उसे महल मे लाकर रानी के संसर्ग मे अधिक रूप से आने की व्यवस्था कर दी। रानी को देख कर वह कामातुर हो उठा और भोग के लिये प्रार्थना की। रानी जोर से चिल्लाई तब राजा ने आकर तापस को मारडाला। वह तापस मरकर राक्षस हुआ और पूर्व भव के वैर से नगरी की यह स्थिति कर दी।]

लक्ष्मी ने कुमार को धन का ढेर पडा बतलाया। कुमार सावलिंगा से कहा कि यह धन अपने फिर कभी विधि विधानपूर्वक ग्रहण करेंगे। अभी तो प्रतिष्ठानपुर चलें। चलते चलते वे प्रतिष्ठान के समीप आ पहुंचे और पास के गाँव मे एक ब्रह्मभट्ट के यहा जा कर ठहरे। ससुराल होने के कारण नगर-प्रवेश के लिये योग्य वस्त्राभूषण लाने एवं रचनादि की व्यवस्था करने के लिये कुमार अकेला नगर मे जाने लगा तब सावलिंगा ने कहा कि यदि आप ५ दिन मे वापिस नही लौटे तो मैं चिता-प्रवेश कर लूंगी।

कुमार को नगर मे प्रवेश करते हुए एक टूंटक मिला। कुमार उसे अपशकुन समझ कर वापिस जाने लगा। टूटक को यह बात अखरी और वह पुष्प एवं खाद्यादि मांगलिक वस्तुओं को लेकर पास मे आकर कहने लगा कि मैं सिंहल के राजा का सुरसुंदर नामक पुत्र हूं। कौतुकवश ५०० हाथी एवं करोड़ मोहर लेकर नगर देखने के लिये यहाँ आया था पर मैं उसको जूए मे हार गया। जुवारियों ने मेरे हाथ कान भी काट डाले। दैव रूठता है वही जूआ खेलता है।

टूंटक के साथ कुमार ने नगर मे प्रवेश किया। रास्ते मे सूर्य-प्रासाद मे विवाद हो रहा था। विवाद का विषय यह था कि राज्यमान्य कामसेना वेश्या ने स्वप्न मे देखा कि श्रेष्ठि दत्तक के पुत्र सोमदत्तने उसके

घर आकर उससे भोग किया। अतः सोमदत्त से अपनी द्रव्य मुद्रा रूप मे गर्हित कार्यों की शुल्क लेने के लिये वेश्या ने अक्का भेजी। श्रेष्ठि ने-धन देने से इनकार किया। इसी कारण ३ दिन से विवाद चल रहा था कुमार को देख उसे इसका न्यायाधीश चुना गया। उसने श्रेष्ठि से कहा कि राजमान्य से विरोध करना उचित नहीं। अतः तुम इसे धन दे दो। कुमार ने श्रेष्ठि से धन मंगा कर उसका आधा भाग लेने के लिये अक्का को कहा पर उसने आधा लेने को स्वीकार नहीं किया। तब कुमार ने एक दर्पण भाग कर उसके सामने धन रख दिया और प्रतिबिम्बित धन लेने के लिये अक्का से कहा। क्योकि स्वप्न एवं प्रतिबिम्बित अवस्था समान ही होती है। इस न्याय से अक्का लज्जित हो बिलखती हुई लौट गई।

कामसेना यह वृत्तांत जानकर नृत्य करने के बहाने सूर्य प्रासाद में आई और कुमार को देख कर मोहित हो गई। उसने कुमार को अपने घर चलने को कहा। टूंटक ने जाने का विरोध किया कि वेश्या किसी की नही होती। पर कुमार निर्भीकता से चला गया और ५ दिन उसके यहा रहा। कुमार नगर में जूआ खेलने गया और बहुत सा धन कमा लाया। उसमे से कुछ धन सार्वलिगा के लिये आभूषणादि खरीद करने के लिये टूटक को दे दिया बाकी वेश्या को दे दिया।

५ वें दिन कुमार ने वेश्या से जाने की आज्ञा मागी। वेश्या ने रहने का बहुत आग्रह किया पर कुमार को सार्वलिगा से बचनवद्ध होने के कारण जाना जरूरी था अतः रवाने हुआ। जाते समय वेश्या-ने कुमार का उत्तरीय वस्त्र खेंचा तो उससे चोर का बाधा हुआ पद्मिनीवेष्टित कंचुक खुल पडा। वेश्या ने वेष्टन खोलने पर रत्नमय कंचुक देख कर कुमार से मागा और उसने वह उदारतापूर्वक दे दिया।

वेश्या उसे पहिन कर राजसभा में जा रही थी, इसी समय एक सेठ ने कंचुक को देख, वह अपना चोरी गया था वही है यह निश्चय

कर राजा से इसकी फरियाद की। राजा द्वारा वेश्या को पूछने पर उसने कहा हमारे यहा अनेक चोरादि आते हैं मैं उनका नाम नहीं बतला सकती। तब राजा ने वेश्या को शूली की सजा का हुक्म दे डाला। कुमार ने जब यह बात सुनी तो वह शूली के स्थान पर पहुचा और कोतवाल को जाकर कहा 'चोर मै हू, वेश्या को छोड़ दो'' पर उसके नहीं छोड़ने पर जबरदस्ती उसे छुड़ा दिया, राजाने कुमार को पकड़ने के लिये अपनी सेना भेजी पर कुमार ने उसे भी हरा दिया।

उधर ५ दिन तक कुमार के न आने के कारण सावलिंगा ने चिता-प्रवेश की तैयारी कर ली। कुमार ने यह सुनते ही अपने बदले सोमदेव को वहां छोड वापिस आने की प्रतिज्ञा कर वहा पहुचा। और सावलिंगा को जलने से बचाया। प्रतिज्ञानुसार कुमार शूलीस्थान पर वापिस आया राजा ने ५२ वीरों को कुमार से युद्ध करने के लिये भेजा। नारद से सूचना पाकर कुमार के पूर्व परिचित ५ चोर वहां सहायतार्थ आ पहुचे अतः ५२ वीर भी हार गये।

राजा ने बल से काम निकालता न देख नम्रता से कुमार का नाम पूछा और उसके न वतलाने पर वेश्या से पूछा। तो वेश्या ने उसका नामाङ्कित खड्ग लाकर राजा को दिखलाया। राजा को छलने के लिये कुमार ने कहा इस तलवार को तो मैं सदयवत्स से जूए मे जीता था। राजा ने उसे वश मे करने को गजघटा बुलाई। उसे भी सिंहनाद द्वारा कुमार ने भगा दिया। अंत मे राजा के अनुरोध से कुमार ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रगट किया। तो राजा को उसे अपना जामाता ही जानकर बडी प्रसन्नता हुई और अपने पुत्र शक्तिसिंह को भेज कर सावलिंगा को भी बुला ली।

अवान्तर कथा। कुछ समय तक दोनो वहां आनदपूर्वक रहे। इसी समय सदयवत्स की मित्रता १ बनिक, १ क्षत्रिय एवं ब्राह्मण जाति के तीन व्यक्तियो से हो गई। इतने में ही एक विदेशी के मिलने पर कुमार ने पूछा कि कही कुछ कौतुक देखा हो तो कहो। उसने कहा तुम्बन नगर में धनपति सेठ के मृत पिता बहुत

समय हुए जला दिये गये थे, पर वे रात के समय जीवित अवस्था में घर पर आ जाते हैं। यह बड़ा आश्चर्य है। कुमार कौतूहलवश तीनों मित्रों के साथ वहां गया। तुम्बन में प्रवेश करते हुए एक ब्राह्मणकन्या को सीकोतरी पीड़ा दे रही थी,उसे छुड़ाकर उसका विवाह ब्राह्मण मित्र के साथ कर दिया।

आगे चल कर मित्रों सहित कुमार सेठ के घर पहुंचा। और अमुक धन लेने का तय कर वे उसके पिता का शव जलादेने के लिये स्मशान ले गये। उसे प्रातःकाल जलाने का निश्चय कर रात को १-१ प्रहर बारी बारी पहरा देने की कर ली गई।

पहली बारी वणिक की थी। पहरा देते हुए उसे एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। वणिक शव को अपनी पीठ पर बांध स्त्री के पास गया। और रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा मेरा पति शूली पर लटका हुआ है मैं उसके लिये थाली मे भोजन लाई हूं पर शूली के ऊची होने के कारण उस तक पहुच नही सकती। इसी दुःखसे रो रही हू। वणिक ने करुणावश उसे पीठ पर चढ़ा कर ऊंची कर दी। स्त्री ने ऊची चढ़ कर शूली पर लटके हुए पुरुष का माँस खाना शुरू कर दिया। जब एक मासखड वणिकके ऊपर पड़ा तब उसने उसको नीचे डाल दिया। पड़ते ही वह स्त्री भागने लगी पर वणिक ने उसका पीछा कर एक हाथ काट डाला और उस हाथ को बालुका मे डाल दिया।

दूसरे पहर मे एक ब्राह्मण ने एक राक्षस द्वारा एक राजकुमारी को ले जाते हुए देखा। राक्षस को राजकुमारी से भोग की प्रार्थना करते देख पीछे से ब्राह्मण ने उसे मार डाला।

तीसरे पहर क्षत्रियकी बारी थी। शव को जलाने के लिये वह अग्नि लेने की खोज में निकला तो उसने भूतों को खीर पकाते देखा। उनके पास ७ पुरुष खिचड़ी के साथ साग की जगह खाने के लिये बंधे हुए थे।

क्षत्रिय पुत्र ने भूतों को डरा कर भगा दिया। और पत्थर मारकर खिचड़ी की हांडी को फोड़ डाला। बंधे ७ पुरुष राजकुमार थे।

चौथे प्रहर सदयवत्स उठा तो शव ने उसे जूआ खेलने को आह्वान किया। शव में रहे हुए वैतालने अपने बाहु प्रसारित कर एक राजमहल में से जूआ खेलने की सामग्री उठाकर ले ली। जो हारे उसका मस्तक छेदन कर दिया जाय। इस प्रतिज्ञा पूर्वक साथ वैतालको जीतकर कुमार ने शव को जला दिया।

प्रभात में श्रेष्ठि के पास जाकर पूर्व निश्चित धन मांगा। श्रेष्ठि ने कहा कल खातरी करके दूंगा। कुमार ने राजा के पास फरियाद की और रात का सारा वृतांत कह सुनाया। राजा के प्रमाण मागने पर बालू मे गढ़ा हुआ हाथ उपस्थित किया और वह हाथ रानी का होने से रानी सीकोतरी सावित हुई। राजकुमारी राजकुमारो को भी उपस्थित किया गया। श्रेष्ठि ने कुमार को अपनी कन्या ब्याह दी।

सदयवत्स वहा से वापिस लौटते हुए निर्जन नगर को जिसे देख आया था वहाँ गया। वहाँ राक्षस की आराधना कर वीर कोट नामक नगर बसाया। सदयवत्स के लीलावती रानी से वनवीर और सावलिंगा से वीरभानु नामक पुत्र हुए।

[सदयवत्स ने चतुर्थी को संवत्सरी करने वाले जैनाचार्य कालकसूरि के हाथ से अपने बसाये नगर के जैनमंदिर की प्रतिष्ठा करवाई।]

इसी समय उज्जयिनी, जो कि अपनी मूल राजधानी थी, पर शत्रुओं के ६ महीने से घेरा डालने की बात सुन कर कुमार ने ससैन्य वहां जाकर शत्रुओ को परास्त किया। प्रभुवत्स राजा ने सदयवत्स को उज्जयिनी का राज्य दिया। वीरकोट का नवीन स्थापित राज्य राजकुमार को सौंप दिया गया।

[अन्यदा कालकाचार्य उज्जयिनीमे पधारे और पूछने पर सदयवत्स का पूर्वभव कह सुनाया कि तू विंध्याचल की पल्ली के गोत्रक नगर मे व्याघ्र राजा की धारलदेवी रानी के गुण सुंदर नामक सरलस्वभावी

एवं दयावान पुत्र था। श्यामाचार्य के पास जीवदया व अभयदान का उपदेश श्रवण कर उसने सम्यक्त्व सहित श्रावकोचित १२ व्रत ग्रहण किये। गुणसुन्दर मुनियों को अन्नादि का दान और प्राणियोको अभयदान देने मे सदा तत्पर रहता था। एक बार उद्यान मे क्रीडा करते हुए उसे ४ पुरुष मिले। उन्होने कहा कि वैताल नगर मे देवी के बलिदान के लिये हमे पकड़ा गया था पर हम वहा से भाग कर यहां आ गये हैं। वहाँ के लोग बडे निर्दयी हैं और मनौती मानकर थोड़े से स्वार्थके लिये भैसे और विशेष कार्य से मनुष्य तक की बलि दे देते हैं। गुण-सुन्दर का हृदय करुणार्द्र हो गया। अत वहाँ जाकर बलि देनेवाले लोगों को भगाकर मनुष्यो को बचाया। और अपनी बलि देने के लिए कठ पर तलवार का प्रहार करने लगा। देवी ने उसके धैर्य एवं साहस से प्रसन्न हो उसका हाथ पकड़ा। तब उसने देवी को प्रतिबोध देकर सदा के लिये बलिप्रथा बंद करवा दी। मृत्यु समय मे आराधन करने से तुम इस जन्म मे सदयवत्स हुए। जीव दया व अभयदान के पुण्यसे प्रबल पराक्रम और मुनि दान के फल से सब प्रकार के भोग प्राप्त किये। अपना पूर्व वृत्तान्त सुन सदयवत्स को पूर्व-भव स्मरण हो आया।

राजस्थानी रूपांतर-राजस्थान में प्रचलित सदयवत्स कथा में केशव की प्रति सबसे प्राचीन है। अतः तुलनात्मक विचार करने के लिये यहाँ उसका सार दे दिया जाता है।

पूर्व दिशा के कोंकण देशस्थ विजयपुर में महाराजा महीपाल राज्य करते थे। उनका पुत्र सदयवच्छ था। राजा के मंत्री सोम के सावलिंगा नामक पुत्री थी। योग्य वय होने पर महाराजा ने पंडित को बुला विद्याध्ययनार्थ कुमार को उसके सुपुर्द कर दिया। इसी प्रकार मन्त्री सोम ने सावलिंगा को भी पढाने के लिए उन्ही की पाठशाला मे भेज दिया। और उसे पाठशाला के छात्रों से अलग रखकर पढाने का निर्देश कर दिया।

सावलिंगा की पढाई परदे में होने लगी। राजकुमार के पूछने पर

पंडितजीने उसके परदे में पढ़नेका कारण उसका अन्धी होना बतलाया। और कुमारी को कुमार का कोढ़ी होना कह दिया जिससे परस्पर कोई सम्बन्ध न हो सके। एक दिन किसी कारण से पंडितजी नगरमे गये थे और सबको पढ़ाने का काम कुमार को सौंप गये। पढते हुए परदे मे स्थित कुमारी ने कोई पाठ अशुद्ध बोला। तब कुमार ने कहा 'अन्धी ! अशुद्ध क्यों बोल रही हो?' प्रत्युत्तरमे कुमारीने कहा--कोढी! जैसा पाटी में लिखा है वैसा ही पढ रही हू।' कुमार का भ्रम इस उत्तर से दूर हो गया। उसने सोचा गुरुजी के कथनानुसार कुमारी यदि अन्धी है तो पाटी पर लिखा वह पढ़ने की बात कह नही सकती,और मुझे कोढी कहने का कारण भी क्या ? अतः हम दोनों एक दूसरे को देख न सकें इसीलिये गुरुजी ने भ्रम फैला रखा है। भ्रम दूर होते ही कुमार को कुमारी के देखने की उत्कंठा बढी। और एक दूसरे को देख करके प्रेमसूत्र में बंध गये। फिर परस्पर दूहा-गूढादि लिखते व कहते रहने के द्वारा प्रीति दृढ़ होती गई।

गुरुजी के बाग में खेत थे। उसकी रखवाली के लिये बारी २ से शिष्य वहां जाते थे। नियमानुसार सदयवच्छ अपनी बारी पर खेत पहुंचा और सावलिंगा उसे भाता (भोजन) देने खेत गई। वहाँ एकान्त होने से प्रीति विशेष रूप से दृढ़ हो गई। सावलिंगा ने किसीके भी साथ विवाह होने पर पहली रात उसके साथ रमण का वादा किया।

शिक्षा समाप्त होने पर यौवनावस्था देख, राजा ने सदयवच्छ का विवाह किसी राजकन्या से कर दिया। और सावलिगा के पिता ने भी कुमारी की अवस्था विवाहयोग्य जानकर, ब्राह्मण को भेजकर पुष्पावती के सेंठ धनदत्त से उसका सम्बन्ध निश्चत कर दिया। सदयवच्छ यह जानकर वेश्या के कथनानुसार स्त्रीवेष में कुमारी सें उसके घर जाकर मिला। तब उसें देवी मन्दिर में मिलने का कुमारी ने संकेत किया।

निश्चित समय पर पुष्पावती सें धनदत्त आया और उसके साथ सावलिंगा का विवाह हो गया। सदयवच्छ के साथ अपनी पुरानी प्रीति

एवं वचन निवाहने के लिये देवी मन्दिर में अपनी पूर्व मनौती पूर्ण करने को पति से आज्ञा लेकर वहा पहुंची।

सदयवच्छ ने उस दिन दूना नशा कर लिया और देवी के मन्दिरमें जाके सो गया। नशे की अधिकता से उसको इतनी प्रगाढ निद्रा आगई कि सावलिंगा ने उसे जगाने के लाख प्रयत्न किये पर सब निष्फल गये। तब निराश होकर वह अपने घर लौटते समय अपने आने के सूचक चिन्ह एवं फिर मिलने का संकेत-सूचक दूहा कुमार के हाथ पर लिख दिया।

निद्राभंग होनें पर कुमार नें सावलिंगा के न आने का बडा अफसोस किया। दतौन के समय हाथ की ओर देखने पर कुमार ने हाथ पर उसका लिखा हुआ दूहा पढ़ा। और अपनी गलती महसूस कर,योगी होकर दोहे की सूचनानुसार पोहपावती नगर पहुंचा। रास्ते मे हाथ का लेख नष्ट न हो जाय अत: बावड़ी मे पशु की भांति मुंह से पानी पिया। इस प्रसंग मे पनिहारियों से वातचीत करते हुए कुंभारिन से पता लगा कर वह धनदत्त सेठ के घर पहुंचा और सावलिंगा से चार आँख होने पर दोनों अधीर हो उठे।

उस समय सावलिंगा ने अपनें पति को कहकर नया महल या मंदिर बनानेका काम शुरू कर रखा था। सदयवच्छ उसीके निर्माण-कार्यमे मजदूरी करने लगा। एक बार जोगीका वेष धारण कर भिक्षा लेने सावलिंगा के घर गया, जब उसने अन्य किसीके हाथ से भिक्षा न ली, तब सावलिंगा देनें आई और पुन: चार आँखें होंने पर स्तम्भित से हो गये।

राजगवाक्षमें बैठी हुई राजकन्या नें यह स्वरूप देख उपालंभ सूचक दोहे कहे। इन दोहों को सुनकर कुमार नाराज होकर चला गया। राजकन्या ने सावलिंगा से मिलकर दोनों का प्रेम-सम्बन्ध ज्ञात किया।

इधर सदयवच्छ ने सैन्य संग्रह कर पुहुपावती के राजा भोज को राजकन्या देनेका कहलाया। और उसके न माननें पर युद्ध कर,उसे हरा दिया। तब भोज ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। कर-

मोचन के समय कुमार ने अन्य वस्तुये न लेकर धनदत्त सेठ को बांधकर मगवाया और उससे सावलिगा देने का स्वीकार कराके छोड दिया।

सावलिगा और सदयवच्छका युगल जोडा मिलकर बडा प्रसन्न हुआ। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात् सपरिवार अपनी नगरी लौट राज्यपालन करता हुआ विलास करता रहा। सावलिगा आदि रानियोके साथ विषय-सुख भोगते हुए उसके ४ पुत्र हुए। यही कथा की समाप्ति होती है।

कथा के विविध रूपांतर-उपर्युक्त कथा मे प्रेम और विरह प्रधानतः है, अर्थात शृंगाररस प्रधान है। सावलिगा ने भी अपनी प्रीति व वचन निभाया। इसके परवर्ती रूपातरो मे सदयवच्छ की नगरी का नाम किसी मे मुंगीपुर किसी मे आनन्दपुर और किसी मे पुहुपावती मिलता है। उसके पिता का नाम सालिबाहन व महीपाल, माता का नाम कही चपकमाला कही सौभाग्यसुन्दरी, एव गुरु का नाम सगुण महात्मा लिखा है। सावलिगा के पिता का नाम पदमसन, कही पदमसेठ, और माता का नाम लीलावती लिखा है विद्याध्ययन के लिये गुरु के पास कही सावलिगा पहले गई और कही पीछे, ससुराल का स्थान धारानगर ससुर का नाम हीरा, पति का नाम रतनपाल एव वहा राजा का नाम विजयपाल लिखा है। पुहुपावती मे सदयवच्छ के पहुचने पर कई कथानकों मे घर में आग लगा कर सावलिगा का बगीचे मे उससे जाके मिलना, कही वहाँ भी सदयवत्स का नही पहुच सकना लिखा है। वहाँ के राजा का नाम कही भिन्न ही लिखा है और उसकी कन्या के विवाह का कारण कन्या का सावलिगा से अनुराग हो जाना बतलाया है। कही स्वयंर विधि से उसके साथ विवाह होने का उल्लेख है। कई रूपातरो में सदवच्छका अपने नगर लौटने का कारण पिता अन्वेषण कर बुलवा भेजना लिखा है। और भी कई घटनाओ में अतर व कमीवेशी पाई जाती है। अर्थात अनेक व्यक्तियो की सूझबूझ से इस कथा में बहुत कुछ समय समय पर जोड़ा एवं रूपांतरित किया गया है।

कई कथानकों के प्रारंभिक भाग में उसके पूर्वभव का प्रसंग देकर

प्रीति का प्राचीन सम्बन्ध होना व्यक्त किया है। एक रूपांतर मे अन्य अनेक कथानको की भाँति शिव पार्वती का प्रसग भी जोड दिया गया है।

कथारूपों में भिन्नता-अब गुजरात और राजस्थानी सस्करण में मुख्य रूप से जो अन्तर है उस पर प्रकाश डालता हूं।

(१) गुजराती संस्करण वीर एव अद्भुतरस प्रधान है राजस्थानी शृंगार प्रधान है।

(२) गुजराती सस्करण मे कई घटनाये हैं। तब राजस्थानी कथा मे घटनाओं का प्राधान्य व अधिकता नही है, पर प्रेम सम्बन्धी कथन ज्यादा है।

(३) गुजराती सस्करणानुसार सावलिगा सदयवत्स की विवाहिता पत्नी है, तब राजस्थानी सस्करणानुसार वह रत्नपालकी विवाहिता पत्नी और सदयवत्स की प्रेमिका है।

(४) गुजराती सस्करणानुसार सदयवत्स उज्जैनी के राजा प्रभुवत्स का पुत्र है तब राजस्थानीके अनुसार विजयपुर, आणन्दपुर, मुंगीपुर, या पुहपावती के राजा महिपाल या सालिवाहन का पुत्र है।

(५) गुजरात एव राजस्थान में प्रचलित आधुनिक कथानक मिलता जुलता है अर्थात-गुजरात में भी प्राचीन कथानक को अब भुला दिया गया प्रतीत होता है। इनमें पूर्वभवो के प्रेम सम्बन्धों की कथा ७।८ भवों तक बढ़ चुकी है।

शृंगारप्रधान कथानक-कीर्तिवर्धन की 'सदयवत्स चउपई' और मारवाड़ राजस्थान के अन्यान्य गद्य पद्यात्मक 'सदेवंत सावलिगा' नाम के कथानकों में प्रधान रूप में शृंगार रस पाया जाता है।

सदयवत्स कथा एवं दो परिपाटी-राजस्थान की अनेक प्रसिद्ध लोककथाओं में "सदयवत्स सावलिया" की प्रेमकथा का कई शताब्दियों तक राजस्थान में सर्वाधिक प्रचार अधिक लम्बे समय तक

रहा है। इस कथा की अनेक प्रतियाँ एवं विविध रूपांतरों की उपलब्धि इस कथन का समर्थन करती है।

सदयवत्स कथा के विविध रूपांतरो के अभ्यास से जाना जा सकता हैं, कि उस लोककथा का मुख्यत: दो प्रवाहों मे विकास हुआ है। भीम कवि का गुजराती 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध,' एवं हर्षवर्धनके सस्कृत 'सदयवत्स चरित्र' के गद्य कथानक की परिपाटी वीर रस से प्रेरित चली आ रही है। तो राजस्थानी पद्यात्मक एव गद्य पद्यात्मक सभी प्रकार के कथानक शृंगार-रस-मूलक होने के नाते उससे बहुत ही भिन्न रहे हैं।

पंजाब एवं उत्तर प्रदेशमें उल्लिखित 'सदयवत्स कथानक' का केवल नामोल्लेख के अलावा विशेष कुछ भी ज्ञान अभी तक प्राप्त हुआ नहीं है।

सदयवत्स चउपई-राजस्थानी रूपांतरो में सबसे प्राचीन रचना खरतरगच्छीय जैनकवि केशव, अपर (दीक्षित) नाम कीर्तिवर्धन रचित "सदयवत्स सावलिंगा चउपई" है। इसकी रचना वि. स १६९७ के विजयादशमी को प्रथमाभ्यास के रूप में की गई है। किंतु जान ऐसा पडता है कि वास्तव मे यह चउपई भी कवि की स्वतत्र रचना न होकर जनता मे प्रसिद्ध दोहे आदि पद्यों को अपने धागेसे माला बनाने के रूप मे पिरोये हो ऐसे, संकलन सा दिखाई देता है। राजस्थानी भाषा के पिछले सभी रूपांतर प्राय: गद्य पद्यात्मक रूप में ही हैं। जिनमे से कुछ रचनाओंमें दोहे है, गद्यांश कम हैं। तो कुछ में गद्यांश बहुत विस्तृत है। कीर्तिवर्धन ने अपनी रचनाकृति में बीच बीच में अपने पद्यो के साथ २ प्रचलित पद्यों को भो यथास्थान जुटा दिये हैं।

गद्यपद्यात्मक रूपांतर-राजस्थान की गद्यपद्यात्मक 'सदयवत्स कथा' सचित्र रूप में भी मिलती हैं। अतएव वह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। 'सदयवत्स सावलिंगा री कहा' गुजरात मे आबाल वृद्धो में ज्ञात है। उनके आठ भव के प्रेम एवं वियोग की कथायें स्त्रियां भी बडे चावसे

पड़ती हैं। उपलब्धि प्राचीन राजस्थानी काव्य ग्रंथों में पूर्ववर्ती केवल १-२ एक या दो भव की कथा का वर्णन पाया जाता है। आठ भव की कथा का सम्बन्ध पीछे से जोड़ा जुटाया गया प्रतीत होता है।

कथा द्वारा जैन मतका प्रचार एवं प्रसार सदयवत्स कथा का संस्कृत गद्य रूप कि जो गुजराती कथानक से प्रेरित होना प्रतीत होता है, उसके रचयिता हर्षवर्धन ने इस लोक-कथा को अन्य जैन विद्वानों की भांति ही जैन स्वांग या चोला पहना दिया जान पड़ता है। जैसे कि सदयवत्स मे अपने बसाये हुए नगर मे वीर जिनेश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा चतुर्थी की सवत्सरी मनाने वाले कालकाचार्य के हाथों से करवाई है। जैन कवि ने जैनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ा जुटाया है। जिसने सदयवत्स को इसके पूर्वभव की कथा सुनाई उससे सदयवत्स को जाति-स्मरण तब हुआ। हर्षवर्धन के उल्लेख के अनुसार सदयवत्स ने श्रावक-धर्म स्वीकार किया था। किन्तु केशव (कीर्तिवर्धन) ने उसे राजस्थान मे प्रचलित लोककथा के रूप में ही रहने दिया है।

परिशिष्ट १-में-प्रकाशित 'सदयवत्स सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई' की रचना किस कवि ने की है उसका उल्लेख अप्राप्य है। प्रायः उसका रचयिता जैन होना सम्भव है। कवि ने किसी प्राचीन चरित्र के आधार पर यह रचना की है। पाणिग्रहण अधिकार के प्रथम अधिकार होने का उस चउपई में उल्लेख है। जैसे कि 'ए पहिलु हुउ अधिकार, कवि जोई चरित्र आधार'। इसकी भाषा १६ वीं शती के अंत भाग की अथवा १७ वीं के प्रारम्भ के होना सम्भव है।

कवि केशव की रचना-केशव कवि की 'सदयवत्स सावलिगा चउपई' की रचना (परिशिष्ट २) विप्रलंभ शृंगार रस में ही भरपूर है। इसमें जो छंद है दूहा (दोहे), चंद्रायणा, एव कवित्त, मनोवेधक है। एव सुभाषित, अन्योक्ति, अर्थान्तरन्यास. कहावतें, और मुहावरों के द्वारा काव्य रसपूर्ण बनाया है। कवि ने कडी ४५४, ४५५, ४५८, में वस्तु-निर्देशात्मक मंगलाचरण किया है। (पृ० १३५) और अंत में फल

स्तुति की है।

पूर्वभव का कथानक-संस्कृत कथानक मे पूर्वभव की कहानी दी गई है। वह कीर्तिवर्धन की चउपई में नही है। सदयवत्स एवं सावलिंगा के प्रेमी युगल का सम्बन्ध नायक एव नायिका के रूप मे है। इसमें पराक्रम की कोई भी बात नहीं है। केवल पुष्पावती के राजा को पद-दलित करके, सावलिंगा को सदयवत्स प्राप्त करता है. इतने पराक्रम का ही उल्लेख है। परन्तु इसमें कुछ अद्भुतता नही दिखाई देती। सदयवत्स शौर्यवीर के रूप नहीं दिखाई देता, किंतु प्रेमवीर के रूप में दृश्यमान होता है।

सदेवन्त सावलिंगा के आठ भव की कहानी-कवि या लेखक-इस कहानी के रचयिता का पता नही चलता।

कथानक का प्रारम्भ जगन्माता पारवती जी ने बनलीला देखने का हठाग्रह किया। इसलिए भगवान शंकर उनको साथ में लेकर वनमें चल आये। रास्तेमें एक नारियल नामक प्राचीन वाव देखने में आयी। तृषा लगी हुई थी जिससे पार्वती जी ने भगवान शंकर से पानी लाने के लिये प्रार्थना की। शिवजी ने प्रार्थना सुनकर पानी लाकर दिया। सती उमा पानी पीने की तैयारी करती है कि वहां शिर उठाने पर एक नर एवं मादा बंदर की जोडी देखी। पार्वती ने भगवान शंकरसे पूछा कि ये वन्दर कौन से विचार में इतने मग्न हो गये हैं। शिवजी ने उत्तर दिया कि यह बात बहुत लम्बी चौड़ी है, छोड़ दो इसे। उत्तर सुनकर यह रूठ गयी, और मारे क्रोध के जब भगवान शंकर के शिर के बालों में छुप गई। तब आखिर मे शिवजी वह बात सुनाने के लिये तैयार हो गये।

अष्ट भव के नाम-(१) ब्राह्मण-ब्राह्मणी (२) चकबा-चकवी (३) हिरन-हिरनी (४) मयूर-ढेलणी (५) हंस हंसी (६) राजा-रानी (७) बंदर-बंदरी, और बाद में (८) नर-नारी

पहले भव की कहानी ब्राह्मण-ब्राह्मणी-धारापुर नामका एक देहात था। उस गाव में दो ब्राह्मण रहते थे। दोनो निःसन्तान थे। जिससे उन्होंने वनमें जाकर तपश्चर्या की। ब्रह्माजी प्रसन्न हुए दोनों को वर दिये। एक को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ दूसरे को पुत्री-रत्न की प्राप्ति हुई। योग्य उम्र होते ही इन दोनों की शादी हो गई। युवक शादी के बाद विध्याध्ययन करके घर वापस आ रहा था। रस्ते के बीच में ससुरसे भेंट हुई वह जामाता को अपने घर ले आया। कुछ दिनों तक वह ससुराल में रहा। और बाद में ये दोनो पति पत्नी (युवक-युवती) अपने घर जाने के लिये निकल पड़े।

किंतु रास्ते में ऐसी घटना घटी कि इन दोनो की तृषातुर अवस्थामें मृत्यु हुई। पार्वतीजी ने भगवान शंकर से प्रार्थना की कि प्रभु इस जोडी को जिन्दा कीजिये। तो शंकर भगवान ने कहा कि अब ये लोग कृपा करने के योग्य नहीं हैं। फिर भी पार्वतीजी ने हठाग्रह धारण किया और उन्हें जिन्दा करवाया।

यौवन के मद में मस्त बने हुए ये भट-भटाणी एक शिवालय में आये। विषयवासना बढ गई, इसकी तृप्ति करने के लिये देवल में जो शिवजी का लिंग (मूर्ति) था उसको उखाड़कर कहीं बाहर फेंक दिया और अपनी मनोवांच्छा पूर्ण की। इस अयोग्य और नराधम कृत्यसे भगवान शंकर क्रोधित हो गये और श्राप दिया कि तुम्हें सात भव (अवतार) तक वियोग सहना पडेगा।

शंकर भगवान का श्राप सुनकर ये दोनों काशी में करवट लेने के लिये निकल पड़े। रास्ते में एक गांव आया भट। (युवक) खुराक की तलाश में गया। जब वापस आया तब देखा तो पत्नी का पता नही था। अब क्या करें। इसलिये उसने काशी (वाराणसी) जाकर गले पर करवट लगवा दिया और मौत के शरण हो गया।

जब भट्ट खुराक की तलाश में गया था, उस समय वहां एक राजा आया और भट्टाणी का अपहरण कर गया। वह स्त्री रात्रि के समय

चुपचाप राजा के पंजे में से छुटकर निकल पडी। और उसने भी काशी (बनारस) की राह पकड़ी। और गले पर करवट लगवा दिया। इस लोक को छोड़कर चली गई।

कहानी दूसरी, चकवा-चकवी-किसी एक जगल में एक पेड़ पर एक चकवा और चकवी रहते थे। उसी जगल में एक बार अचानक अग्नि सचार हो गया। दावाग्नि का भीषण काड शुरू हो गया। और जिस वृक्ष पर ये दोनो पछी रहते थे यह वृक्ष भी जलने लगा। किंतु दोनों को ऐसा लगा कि हमें आश्रय देने वाला वृक्ष जल जाय और हम यहासे भाग छूटें। यह बात ठीक नही है। ऐसा विचार करके ये दोनो पछी भी दावाग्नि मे आग के शोलो से जलकर भस्म हो गये-मर गये।

कहानी तीसरी, हिरन और हिरनी की-एक जगल था। वहां एक हिरन एव हिरनी रहते थे। ये वन में घूमते थे और अपना गुजर-बसर करते हुये आनन्द में जीवन व्यतीत करते थे। उस जगल में एक बार एक पारधी आया उसने हिरनी को फँसा दिया, हिरनी ने बहुत आक्रंदन किया। हिरनीका आक्रंदन सुनकर उस शिकारीके मन में दया उमड पडी। उसने हिरनी को मुक्त कर दी। अब तो हिरनी अपने पति हिरण की खोज मे निकल पडी। किंतु रास्ते में एक पहाड़ के पास हिरन को मृत अवस्थामें पाया। हिरनकी मृत्यु देखकर उसने भी अपना शिर पटककर मृत्यु से भेंट की। वह भी चल बसी।

कहानी चौथी, मयूर ढेलणी-इस कहानी के बारे में कुछ लिखा गया प्राप्त नही होता।

कहानी पाँचवी, हंस और हंसी की-हंस एव हंसी की एक जोडी जगल में रहती थी। उसकी रहने की जगह पर एक वार एक सांप आया। और उनको निगल जाने लगा। किंतु दैवसंजोग से उनके कर्णपट पर भगवान का नाम सुनाई पड़ा। दोनो की मृत्यु हुई। किंतु इस पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म में (भव में) ये दोनो राजा एवं रानी के रूप में अवतरित हुये।

कहानी छटवीं राजा और रानी-एक नगर था उसका नाम देयपुर। वहाँ के राजा का नाम था सालवाहन और रानी का था दुर्मति उनके पुत्र का नाम था वल्लभ।

एक दूसरा रायपुर नाम का नगर था। वहां सुव्रत नाम का राजा था। उसकी गुणवन्ती नाम की एक कन्या थी। उसके पिताने उसका विवाह संबंध किया था वल्लभ के साथ। किंतु उसकी मां भाई और चाचाजी ने अलग २ स्थान एवं अलग २ व्यक्तियो के साथ सगाई कर दी थी। खूबी यह थी कि इन सब रिश्तेदारो ने शादी की तिथि जो निश्चित की थी वह एक ही थी।

शादी के दिन चारों वर बरात लेकर सजधज के साथ आ गये। राजकुमारी आश्चर्य में पड़ गई। शादी किसके साथ की जाय। क्योंकि यहां तो एक के स्थान पर चार चार वर आये हैं। इससे उसके मनमें बहुत दुःख हुआ। अपनी जिंदगी पर नफरत आयी और वह अग्नि में जल गई। दुनियां से विदा ली।

शादी करने के लिये जो यहा चार वर आये थे। उनमें से एक वर ने कुंवरी की मृत्यु से अपनी बलि देदी। दूसरा कहीं भाग गया। तीसरे ने उसकी हड्डियो की राख गगाजी मे बहा दी। चौथा वल्लभ था उसने उसका पिंडदान दिया और पिंड भक्ष्य करने लगा।

जो व्यक्ति भागकर दूर देश चला गया था। उसके हाथमें अकस्मात एक अमृत का घट आ गया। उसको लेकर वह जिस जगह पर राजकुमारी जल गई थी, वहा आया। और राख के ढेर पर अमृत का सींचन किया। फलस्वरूप वह राजकुमारी एवं उसके साथ जलजानेवाला राजकुमार दोनो जीवित हो गये। बाद मे चारों के बीच में लड़ाई शुरू हो गई।

इन लोगों ने इस लड़ाई का फैसला करने के लिये एक पंच चुना। और पंच से न्याय करने की प्रार्थना की। क्योंकि पंच में परमेश्वर का निवास है। पंच ने सारा हाल सुन लिया। बाद में फैसला दिया कि

राजकुमारी को जिसने जिन्दा किया है वही उसका पति हुआ। नदी में राख बहानेवाला पुत्र हुआ। कुंवरीके साथ जलजानेवाला तथा उसके साथ फिर जन्म लेनेवाला उसका भ्राता होगा। और वल्लभ को उसका हकदार पति ठहराया गया। यो आखिर में राजकुमारी की शादी बल्लभ के साथ हुई।

विवाह के बाद कुछ समय पश्चात् ये दोनो ऐक वार ऐक जंगल में सैर करने निकले। वहाँ एक वाघ (शेर) आया। वह राजकुमार का भक्षण कर गया। राजकुमारी उसकी खोज में घूमती थी। इतने में वहाँ एक चोर आया उसने इस कुमारी को लूट लिया। उससे सब कुछ ले लिया। इससे दुखित होकर इस स्त्री ने एक कुए में गिरकर आत्म-हत्या कर ली। दूसरे भव में ये दोनों बंदर एव बंदरी के रूप मे अवतरित हुये।

कहानी सातवी बंदर और बंदरी- एक जंगल मे बंदर और बंदरी रहते थे। वहाँ से एक दिन शिव जी और पार्वती जी गुजरे। उस समय पार्वती ने बंदर-बंदरी की जोडी देखकर भगवान शंकर से पूछा कि उनके सम्बन्ध मे क्या बात है। तो शिवजी ने उनके गत जन्मों की (भवों की) बाते कह सुनाईं। बात सुनकर सती पार्वती जी ने उनको फिरसे मनुष्यावतार देने के लिये अनुरोध किया। प्रार्थना की। तो भगवान शकर ने कहा कि "इस मुहूर्त मे यदि यह बंदर एवं बंदरी इस वाव मे गिर जाय तो मनुष्य रूप प्राप्त होगा।"

वंदरी ने यह बात सुन ली। और पतिदेव बंदर को भी अपने साथ इस वाव में गिर जाने को कहा। किंतु बंदर ने न माना, बंदरी की बात को स्वीकार न किया। बंदरी अकेली वाव में गिर पड़ी। तो शिवजी के वरसे (कथनानुसार) यह बंदरी एक सुंदर स्त्रीके रूप में पलट गई। बंदर अब पछताने लगा किंतु अब पछताने से क्या होवे, "जब चिड़िया चुग गई खेत।" यह पुण्य क्षण तो अब व्यतीत हो चुकी थी।

इसी समय हीरासेन नाम का एक राजा अपने प्रधान के साथ वहां

आ पहुंचा वहाँ उसने इस रूपसुंदरी को देखा। वह प्रसन्न हुआ। और उस सुंदरी को रथ में बैठाकर अपने साथ ले चला। बंदर वन में फल लेने गया था। वह वापस आ गया। स्त्री को न देखकर वह रथ के पीछे हो गया। रानी राजा से प्रार्थना की कि इस बंदर को भी साथ में ले चलिये। राजा ने स्वीकार किया। बंदर को भी साथ में ले लिया गया। स्त्री ने छः महीने के बाद राजा के साथ शादी करने का वादा किया।

राजा नगर में आ गया। राजा ने इस बंदर को सुवर्ण की शृंखला से बाँध रखने की व्यवस्था की। राजा की जो एक सम्मानित रानी थी। उससे मिलने के लिये राजा जाता था। किंतु उस रानी से मिलने में बंदर रुकावट डालता था, रानी से नहीं मिलने देता था। इसलिये उसने रानी के बंदर का घाट घड़ने को युक्ति सोच ली। किसी भी तरह से उसका इलाज खोलना चाहिये। तरकीब की गई।

उस रानी ने इस बंदर को एक मदारी के हवाले किया। इस कृत्य से रूपसुंदरी एवं बंदर दोनों अप्रसन्न हुए, आखिर में रूपसुंदरी ने इस मदारी को फिर एक बार आकर अपना तमाशा दिखा जाने के लिये कहा।

छः महा की अवधि बीतने के पहले मदारी वहाँ फिर से आया उसने अपना खेल शुरू कर दिया। इसी बीच में रूपसुंदरी ने अपना अमूल्य हार तोड़ दिया। मदारी ने उस हार के मोती (मोक्तिक) बीनकर इकट्ठे कर देने के लिये बंदर को मुक्त कर दिया। उस बंदर ने राजा की माननीया रानी से वैर लेने के लिये फलांग लगाई, किंतु वह निशाना चूक गया और मृत्यु के शरण हो गया। बंदर की मृत्यु होते ही रूप-सुंदरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये और मर गई।

बंदर दूसरे भव में सदेवंत हुआ। सुंदरी सावलिंगा हुई। शादी की अभिलाषा रखनेवाला राजा हीरासेन धारानगरी के पदमशा सेठ के पुत्र रूपाशा के रूप में अवतरित हुआ। और प्रधान, लाल ब्रह्मभट हुआ मदारी गोरख साधु हो गया।

कहानी ८ वीं सदयवत्स और सावलिंगा- शालिवाहन नामक एक राजा था उसके पुत्र का नाम सदयवत्स था। उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के सावलिंगा नाम की लडकी थी। वह रूप का भंडार थी। मानो रूपराशि यहाँ खडी हुई हो। उसके रूप लावण्य या सौंदर्य को देखनेवाले मोहित हो जाते, फीके भी पड जाते। अधिक सुंदरता के कारण उसका नाम रोशन हुआ। उसके अनुपम सौंदर्य की बातें सदयवत्स ने भी सुनी, इससे वह उसको देखने के लिये आकुल-व्याकुल हो गया था। मन भी अधीर हो गया था।

एक बार एक गोरख नाम का साधु भिक्षा के लिये उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के घर पर आया। उसने लडकी सावलिंगा को देखा, और देखकर वह मोह के कारण मूर्छित हो गया। इतने में उसका गुरु भी वहां आ पहुचा। और उसको वहा से ले गया, इस गडबडी मे सदयवत्स भी वहां आ गया। और उसने अपने मित्र लाल बारोट (ब्रह्मभट) से पूछा कि यहा सावलिंगा कौन है और कहां है ?

ब्रह्मभट लाल ने उत्तर दिया कि अगर सावलिगा के दर्शन करने हैं तो यह कार्य यहाँ नही बनेगा। किंतु एक रास्ता है कि आप उस स्थान पर चले जाइये कि इस नव डेरी पर सावलिंगा गीत गरबी गाने के लिये आती है, वहां आप जावेंगे तो दर्शन होंगे। सदयवत्स वहां पहुंच गया। वह स्त्रीमडल के बीचमे जाकर खडा हो गया। और सावलिंगा से कहा कि "अरी तूं तेरे घू घटका ओजल दूर कर दें और तेरा मुखचंद्र दिखा दें।" तब सावलिंगा ने उत्तर दिया "कि मैं जिस शालामें पढ़ती हूं उस शाला मे आना।"

यद्यपि सदयवत्स सदेवंतकी पढाई खत्म हो गई थी। फिर भी पिता-जी से आज्ञा पाकर वह शाला मे गया। किंतु वहाँ मेहत्ताजी के भय से सावलिंगा ने उसको समझाया कि अगले दिन चंपाबाग मे प्रीतिभोज का प्रबन्ध करो। उसमें मेहत्ताजी को भी आमंत्रण भेज दो

इससे हम मिलेंगे और शांति से बातें करनें का मौका भी मिल जायगा।

दूसरे दिन गुरुजी को आमंत्रण भेजा गया। इससे वह चंपाबाग मे भोजन करने गये और सभी बच्चों को निकाल दिया और बाद मे इन दोनों ने एकान्त पाकर प्रेम से अनेक बाते कीं। दृष्टि से दृष्टि मिली और बातें करके तृप्त हुए।

किंतु यह सब प्रेम-विषयक बातें गुप्त न रह सकी, प्रकट हो गईं। गुरुजी को भी जानकारी प्राप्त हुई तो वे दौडते वहां आ गये। तब दोनों शरमिंदे होकर वहा से चल दिये और जाते समय निश्चय किया कि दूसरे दिन सदयवत्स गुरुजी के बगीचे की रखवाली करने को जाय, और सावलिगा गुरुजी की आज्ञा से उसको भोजन देने जाय। निर्णय के अनुसार सदेवत ने गुरू जी से कहा कि आप सावलिंगा को भोजन देने के लिये आज्ञा देने की कृपा कीजिए ताकि आपके बगीचे की रखवाली करनेवाला भूखों न मरे। गुरुजी ने स्वीकृति देदी। और सावलिंगा को आज्ञा दी गयी। तो सावलिंगा भोजन मे बत्तीस प्रकार की सामग्री लेकर वहा गयी बात कही गयी थी भात चावल देने की किंतु वह तो भाँति भातिके उत्तम खाद्य पदार्थों की सामग्रियां लेकर गयी। अधिक प्रणयकलह के बाद सदेवत एवं सावलिंगा ने भोजन किया। दोनों ने आपस में या परस्पर प्रेम टिकाने का निभाने का वादा किया।

प्रतिदिन दोनों एक तोते के द्वारा प्रेमपत्र लिखकर परस्पर भेजते हैं। सावलिंगा के पिता पद्मशाह सेठ ने लड़की की शादी फौरन करने के लिए निश्चय कर दिया। और रूपशाह एक बड़ी बरात लेकर बड़े सजधजके साथ शादी करनेके लिये यहां आ भी गया।

सावलिंगा ने सदेवंत से संदेश भेजा कि आप स्त्री का भेष लेकर मेरे महल में आ जाना। सदेवंत भेष बदल कर वहाँ महलमें आया किंतु वहाँ उसकी लीलावती नाम की ननद आ धमकी। जिससे इन दोनों में बातें न हुईं। इससे सावलिंगा ने सदेवंत से कहा कि रात को भगवान शिवजी के मंदिर में आ जाना। भला यह बात याद रखना। भूल

मत जाना।

सदेवत की पाटमदे नामक एक रानी थी। उसने पति को पर-स्त्री से दूर रहने के लिए समझाया किंतु वह न माना। और उसने रानी को धमकी दी। भली बुरी सुनाई, रानी चुप हो गई।

शादी का समय हुआ तो सावलिगा ने एक युक्ति की। ब्राह्मण देव को फोड़ दिया गया, प्रपच किया गया। और सावलिगा ने अपनी लविंगिया नाम की चेरी को अपने वस्त्राभूषण पहिना दिये और लग्नमंडप में शादी के स्थान चाँरी (शादी की वेदी) के सन्मुख विठा दी। इस तरह रूपशाह सेठ की शादी उस दासी के साथ हो गई।

रात को सावलिगा रूपशाह सेठ के पास आयी। और घूंघट के पट खोल दिया। उसका रूप सौंदर्य देखकर मोहित हो गया, और उसने सावलिगा का हाथ पकड लिया किंतु सावलिगा नें वहाना दिखाया कि मैंने एक शरत की है। प्रण किया है कि यदि मुझे रूपशाह, पति के रूप में प्राप्त होगा तो मैं अकेली आकर 'हे भगवान शिवजी तेरा पूजन करूंगी। बाद मे पति से मिलूंगी।'

सावलिगा की बात सुनकर रूपशाह सेठ ने कहा कि रात का समय है और अकेली जाना चाहती हैं, यह बात अच्छी और ठीक नही है। बहुत समझायी किंतु उसने सावलिगा ने नहीं माना। पूजन का थाल लेकर वह अकेली पैदल चलकर भगवान शंकर के मंदिर मे आ पहुंची। सदेवंत भीतर से द्वार बद करके नशे की खुमारी मे नींद ले रहा था। बहुत कोशिश कीं, किंतु वह किसी प्रकार से जाग्रत नहीं हुआ। इससें सावलिगा ने मंदिर पर चढ़कर ऊपर के शिखर को उतारकर मंदिर मे प्रवेश किया। और मोह-निद्रा में पड़े हुए उस सदेवंत को जाग्रत करने के लिए अनेक प्रयत्न किये। किंतु ये सब प्रयत्न बेकार सावित हुए, निष्फल हुए। बाद में हताश होकर उसने सदेवंत की हथेली में समस्या (निम्न-लिखित काव्य पंक्तियां) लिखीं। जैसे कि

"कोरे घड़े कुंवारि का, जेने खोले ऑखाणुनी आर।
एवा शुकने तमो आपशो, तो मळशे सावंलिगा नार।
× × ×
सुणो सदेवतराय, अमल कर्या आकरे।
हुं छुं बालकुमार, जाउं छुं सासरे ॥"

देह-दर्द और हृदय के दर्द से पीडित होकर उसने हथेली में काव्य के रूप में काव्य-पक्तियां लिखी। हतोत्साह हुई, और अपने घर पर वापस आ गई। तुरत वह पति के साथ पति के देश सिधार गई।

इधर सदेवंत नीद से जाग उठा और सावंलिगा का मिलन न होने से क्रोधित होकर अपने महल में वापस लौट आया। फिर उसकी रानी पाटमदे ने उसको एक बनियेकी कन्यासे प्रेम करने के कारण कई अयोग्य बातें सुनाई, बहुत कुछ कोसा। महेणे टाणे लगाये। इससे क्रोधित होकर सदयवत्स ने कड़ी प्रतिज्ञा की कि सावंलिगा से शादी करके उसको मुखिया रानी महाराणी या पटरानी बनाकर छोड़ूंगा। ऐसा कहकर वह अश्वशालामे पहुंचा। एक अच्छा अश्व लेकर उस पर आरूढ़ होकर अकेला चल दिया।

सदयवत्स सावंलिगा के नगर के बाहर पहुंचा। उसको तृषा लगी हुई थी। हाथ मे काव्य रूपी समस्या लिखी हुई थी उसकी रक्षा करने के हेतु, वह हाथ से पानी न पीकर पशु की तरह मुंह से पानी पीने लगा। यह देखकर वहाँ की पनिहारियाँ उसकी दिल्लगी करने लगीं कि यह कोई गंवार है क्या ? । किंतु वहाँ सावंलिगा की चेरी तथा उस नगर की राजकुमारी कनकावती उस समय नदी-तट पर आयी हुई थी। इन दोनों ने ताड़ लिया कि यह तो कोई चतुर बुद्धिशाली आदमी है। राजकुमारी कनकावती तो उसके दर्शन करके इतनी मोहित हो गई कि उसके मनसे निश्चय भी कर लिया कि मैं इस व्यक्ति के साथ शादी करूंगी, अन्य से नही।

ससुराल में आकर भी सावंलिया ने अपने पति के साथ बहाने बाजी

बढ़ा दी। और पति से कह दिया कि पीहर आते समय मैंने एक व्रत लिया है निश्चय किया है कि यदि मैं ससुराल मे क्षेमकुशल पहुच जाऊंगी तो मैं सात दिनों तक अकेली शयनगृह मे नीद लूंगी।

पति रूपशाह ने इस बात को सत्य मान लिया। इस घटना से हमारे देश में उस समय समाज मे व्रत मानता के विषय मे कितनी दिलचस्पी थी इसका पता चलता है। कितना था प्राबल्य व्रतो के विषय में इसके हमें दर्शन होते हैं।

अब तो सदयवत्स ने एक मालन को साथ लिया और उसकी सहायता से सावलिंगा से मिलने का निर्णय किया। सावलिंगा ने मालन से कहा कि तुम सदयवत्स को साधु का भेष पहनवा कर मेरे महल में जरूर भेज देना।

अब मालन उस नगर की राजकुमारी के यहां चल दी। और पहुंची कुमारी के महल में। राजकुमारी कनकावती ने भी मालन को कुछ लालच दिया। और कहा कि यदि तू मेरी शादी सदयवत्स के साथ कराने के काम में सहायता प्रदान करेगी तो मैं जिन्दगी भरके लिये तेरी ऋणी रहूगी तेरे उपकार को न भूलूगी।

मालन दोनोंके संदेश लेकर सदेवतके पास आयी ओर राजा सदयवत्स से कहा कि मैं सावलिंगा के साथ आपका मिलाप करा दूगी। किंतु साथ ही मैं भी आपसे एक वर चाहती हू, सदयवत्स ने कहा क्या कह दो। मालन ने कहा कि यदि आप मेरी बात के साथ सहमत होते हैं तो मेरी शरत यह है कि यहां के राजा वीरमदे की राजकुमारी कनकावती है उसके साथ भी शादी करनी पडेगी। है यह शरत मंजूर? राजा ने शरत को स्वीकार कर लिया। हां भर ली। क्योंकि उसका मन सावलिंगा से मिलने के लिये अधीर हो रहा था। जिसके फलस्वरूप उसने यह शरत स्वीकार ली।

अब राजकुमारी कनकावती ने दूती मालन के द्वारा सदयवत्स के मनोभावों की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। और अपना निश्चय

सदयवत्स के साथ शादी करनेका यह उसने अपने पिता वीरमदेसे सुना। इस बात को राजा ने स्वीकार भी कर ली। साथ ही पितासे सावलिंगा की सब बातें कह सुनाई। और उनका निश्चय भी बतला दिया। राजा ने इस कार्य में सहायता देने के लिए हां भर ली।

अब राजा ने सावलिंगा की शादी के विषयमें निर्णय करने के लिए रूपशाह सेठ को अपने पास बुलाया और सारी बातें बतला दीं। रूपशाह को भी अब पता चला कि सही रीतिसे उसकी शादी भी सावलिंगा के साथ नहीं हुई है एक चेरी के साथ हुई है। दूसरा पता यह चला कि सदयवत्स एवं सावलिंगा इन दोनों की परस्पर अत्यंत एवं हृदय से भी चाह है। ये सारी बातें जानकर उसने सावलिंगा को सुपुर्द कर देने की सम्मति देदी। सदेवत को दे देने की भी रूपशाह ने हां भरी। अब राजा वीरमदे ने एक बड़ा लग्न-महोत्सव निश्चित किया और सदेवंत के साथ ये दोनों स्त्रियों सावलिंगा एवं कनकावती की शादी कर दी।

कुछ समय यहां बिताकर राजा सदेवंत दोनों रानियों को साथ में लेकर बड़े सजधज के साथ अपने देश वापस लौट आया।

राजा शालिवाहन को पता चला कि पुत्र आ रहा है। यह जानकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ और बड़ी धूमधाम से लेने के लिए सामने गया।

सदयवत्स की मां भी उमग मे आ गई। उसने भी अपने बेटे को कि जो दो रानियों से शादी करके आया है, पोख (शादी की विधिके अनुसार) लिये। सदयवत्सने निर्णयानुसार इन तीनों रानियोंमेंसे सावलिंगा को पटरानी के पद पर स्थापित करके प्रण पूर्ण किया। सदयवत्स ने कई वर्षों तक सुख से राजकाज किया। खाया पिया और मौज-मजा तथा शान्ति एवं आनन्द में जीवन व्यतीत किया।

प्रबन्ध में सामाजिक जीवन-नृपति एवं प्रजाजनोंके बीचका संबंध बहुतायत से नगरों में एवं राजधानी में भी सदवर्ताव एवं प्रेम-भावना से युक्त रहता था। फिर भी राजा की अमाप सत्ता के सामने प्रजाजनों का कुछ बस नहीं चलता था "राजा किसी का मित्र नहीं"

प्राचीन सुभाषित के अनुसार, सदयवत्स के पिता प्रभुवत्स को आचरन या बलांव कथानक को नया मोड़ देता है। एक दिन पुत्र के पराक्रम पर संतुष्ट होने वाले पिता दूसरे दिन प्रधान मत्री के षड्यंत्र-शिकार बनता है। स्वयं युवराज-पद पर स्थापित किये गये पुत्र को (राज कुमार को) राज्य की हद छोड़कर चले जाने की आज्ञा देते हैं। यदि राजा किसी पर संतुष्ट (प्रसन्न) होता है तब उसे 'पसाय' (सं. प्रसाद) देते थे।

राज्य को कार्यवाही में-अनेक प्रकारके प्रपंच एवं षड्यंत्र की कार्यवाही चलती थी, यह बात हमे प्रधान के षड्यत्र (पृ० १४) की कार्यविधि से ज्ञात होती है। बहुतायत से राजा लोग निष्क्रिय रहते हैं।

कर्णतुष्ट: एवं क्षण रुष्ट: ऐसी राजा की उदात्त भावनायें भी गणना-पात्र हैं ही। प्रभुवत्स राजा को प्रजाजनो ने जो चीजें प्रदान की थी उनका राजा ने स्वीकार भी नही किया था। किंतु वापस लौटा दी थी। (कड़ी ३९१)

न्याय देने की पद्धति का दर्शन-सदयवत्स राजा एक प्रसंग देता हैं (पृ. ६४) वहां होता है। खास करके कानून के चक्कर में पड़ने के बजाय सरल समजदारी एवं व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करके ही न्याय का फैसला या निर्णय लिया जाता था।

त्योहार या उत्सव-प्रसंगऊपर नगर जनो द्वारा नगर-की सजावट या शृंगार व वनवार होता था इसका भी कवि ने सुंदर बयान दिया है। (पृ. १२-१३)

नगर में एक ओर जैसे गणिकागृहों की अनिवार्यता देखने में आती है, वैसे दूसरा ऐसा अनिवार्य स्थान द्यूतस्थान (जू-ठाण) प्रख्यात गिना जाता था ऐसा हमें पता चलता है (कड़ी ४०१) द्यूतस्थान द्यूत के क्षेत्रीय अखाड़े) राज्य-सम्मत गिने जाते होंगे ऐसा प्रतीत होता है। प्रसिद्ध जुआरियोंके नाम भी कविने अंकित किये है। (कड़ी ४०९-४१०)

वैसे ही प्रसिद्ध वारांगनाओं के नाम भी (कड़ी ५४२, ५५२) कमबद्ध एवं ब्यौरेवार गिनाये हैं। आधुनिक युग के जिसकी गणना समाजमें होती है और इस समाजमें जितना महत्व का गिना जाता है, उतना प्राचीन समय में गणिका एक महत्व स्थान होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

महाजन श्रेष्ठियोंकीसत्ता-नगरों में उनके व्यापार के क्षेत्र में अबाधित रूप में रहती थी। उस समय के प्रचलित श्रेष्ठियों के नामों की जानकारी भी हमें प्राप्त होती है। (कड़ी ५३२, ५३५)

बारहट्ट और ब्रह्मभट-या चारन का स्थान राजा एवं प्रजा के बीच मे संयोग जोड़ने वाली शृंखला के समान था। किसी भी व्यक्ति के लिये वह 'प्रतिभू' यानी Surety किंवा प्रतिनिधि बन सकता था और वह राजमान्य भी गिना जाता था। (पृ० १२) सावलिंगा को बहिन (भगिनी) समझकर एक गांव का बारहट्ट कि जिसको राजा ने पसाव (ग्रास) प्रदान किया था और वह उसका उपभोग भी करता था। उसने पांच दिनके लिए आश्रय दिया था। यह उसका उदात्त चरित्र उदाहरण-नीय जान पडता है।

राजा की आज्ञा का पालन करने वाले-'तलार' ओलग (सेवक) उपस्थित रहते थे। (पृ० ८९-८१) दंड के भेदों में शूलि, अंग-च्छेद एवं कारागृहवास जेलखाना इतने भेद जानने समझने के लिए प्राप्त होते हैं।

आत्महत्या इसके उपरांत स्वेच्छा से लोग संसार असार जानते ही जीवन से तंग आकर काशी में जाते थे, और वहां करवट लगवाकर जीवन समाप्त करते थे। इसके द्वारा समाज की पूर्वजन्मके प्रति कितनी अडग श्रद्धा रहती थी इसका हमें दर्शन होता है। मालवा प्रदेश में शिक्षा के रूप में किसी धातु या सिक्का गरम करके निशानी कर दी जाती थी ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

ज्योतिष- ज्ञाता ब्राह्मण देवकी भविष्य वाणी यदि बेकार असत्य साबित होगी तो उसको शिक्षा देने की चेतावनी के उद्गार प्रभवत्स राजा ने निकाले हैं। (कड़ी २४)

कुनबा एवं गृह जीवन-हिंदू संसारके ब्राह्म विवाह विधिका रसिक एवं यथारूपा (सादृश्य) वर्णन कवि ने दिया है। (कडी ६३६ ३७-३८) साथ साथ हिंदू संसार में सउकी (सपत्नी) या सौत को भी एक अनिवार्य परिस्थिति के रूप में गिनी गई है। (कड़ी २७२-७५) अतिथि या मेहमान का आदर सत्कार भावपूर्ण रीति से होता था। इसके वैभवद्योतक स्वरूपका वर्णन भी प्राप्त होता है। (कडी ३९७-९८) मार्वालिगा ने आत्महत्या के पूर्व जो प्रार्थना की है उसमें सती साध्वी सन्नारी के पति के प्रति भावात्मक ऐक्य व्यक्त किया गया है। (कडी-६००-६०८)

विरहाग्नि की जलन से आकुल व्याकुल सदयवत्स अपने दोनो हाथ दूर रखकर चौपाये की तरह पानी पीता हैं। क्योंकि उसके हाथके भीतर हथेलियों में उसकी प्रेयसी सार्वालिगा ने समस्या के रूप में काव्य पंक्तिया लिखीं थी। वे पंक्तियाँ नष्ट न होने पावे, इसलिये उसको ऐसा करना पड़ा है। इस दृश्य को देखकर जन-सुभाव से परिचित ऐसी पानी भरने आयी हुई पनिहारियो ने भी कैसे अनुमान किये हैं। वह प्रसंग बहुत ही हृदयगम है। एक सचित्र पोथी में एक चित्रकार ने उस प्रसंग को रंग एव रेखाओं के द्वारा जीवंत बना दिया है।

उस समय समाज मे **गणिका का स्थान** अनिवार्य एवं आवश्यक माना जाता था जान पडता है। क्योंकि चातुर्य प्राप्त करने के जो पाच स्थान मुख्य हैं। उसमें गणिका को स्थान दिया गया है। फिर भी उस गणिका का द्रव्य हरण एव पुण्य आदि बातें सुभावजन्य हैं। अभिजात गणिकाका आदर्श व कामकदला में भी प्राप्त होता है। गणिका की सूची कवि ने दी है। उस परसे अनुमानतः विक्रम की १५ वीं शताब्दी

में स्त्रियों के कैसे नाम प्रचलित होंगे, उसका हमें खयाल आता है। वैसा ही दूसरा नाम का वर्णन व्यापारी एवं सेठ शाहूकार का भी मिलता है।

बहुलायत से सामाजिक एवं धार्मिक प्रसंगों के वर्णन में कवि ने अपने जमाने का सुंदर चित्र अंकित किया है। सीमन्तिनी-यात्रा-वर्णन में उसका लाक्षणिक दृष्टाँत प्राप्त होता है। लीलावतीके साथका विवाह विधि या शादी का वर्णन 'धउल' (धोल) में किया है। इस तरह कवि ने वर्णनमें स्वाभाविकता ला रक्खी है।

जीवनमें रूढ़ मान्यतायें ज्योतिष शास्त्र के विषय में लोक मानस में बहुतायत से उसके फलादेश के प्रति बहुत आदर रहता था— जान पड़ता है। कथानकं के प्रारम्भ में एक चतुर्वेदी ज्योतिष ज्ञाता-विप्र के ऊपर तथा उसके कहे हुए भविष्य कथानक के ऊपर कथानक में रस केन्द्रित होता है। और भविष्य वाणी को नष्ट करने के लिये राजा अनेक प्रयत्न करते है, किंतु उसको सफलता प्राप्त नहीं होती है। फलस्वरूप पहले कुंवरके ऊपर प्रसन्न होनेवाला राजा दूसरे ही दिन प्रधान-मंत्रीके षड्यंत्र के कारण तुरंत राजकुमार को देश छोड़कर चले जाने की आज्ञा देता है। देश से बाहर कर देता है।

यहा से कथानक में साहस एवं अद्‌भुत रस का संचार होता है। किंतु उसके मूल मे वही ज्योतिष-ज्ञाता विप्र का फलादेश ही निमित्त होता है।

शकुन अपशकुन की मान्यतायें-भी अनेक स्त्रियों एवं पुरुषों के हृदय में जड़ जमाये बैठीं हुई मालूम होती है। अपशकुन की परम्परा का वर्णन (दे. पृ० ८) एवं शकुन की मीमांसा (दे. कडी १६७-१७५) वाला वर्णन-विभाग उसका समर्थन करता है। श्याम (कृष्ण) रंग के शृंगार श्याम रंग के वस्त्र आदि अपशकुनके द्योतक अंग हैं। (पृ० १४-१५) प्रतिदिन के व्यवहार में इस मान्यता का गहरा असर रहता था। दे. सउण भणी सीरामणी कडी १४३ और जोगिणी जिमणी आय कडी १६६)।

वृत्तांत शक्ति के दर्शन-प्रब ध में प्रसंग के अनुसार कवि ने अपनी वर्णन शक्ति का सुन्दर परिचय दिया है । कथानक का प्रवाह अस्खलित (बिना रुके) बहता ही रहता है । किंतु फिर भी कथानक में रम्य बीजांकुर उद्दिष्ट होता है, वहां कविराज क्षणभर के लिये विराम पाते हैं । और करामात ऐसी करते है कि तीन या चार कड़ियो या पंक्तियों में सारे प्रसंग-चित्र को तथा उसके अनुरूप हूबहू वातावरण खड़ा कर देते हैं । यहां केवल उसका निर्देश किया गया है । जैसे कि नगरी-पथ का वर्णन (कडी ४१२-४२२) पंसारी बाजारी एवं यहां की चीजों का वर्णन (कडी३४–४०) व्यापारियों का वर्णन (कडी २१२-२१६), स्त्रीसौंदर्य का वर्णन (कडी १५९-१६३) वनश्री का वर्णन (कडी २०६-२२६) कैलाशपति के मंदिर का वर्णन (कड़ी २१७-२१९), दूल्हा-अश्व-प्रशस्ति (धवलकड़ी २१७-२१८) सदयवत्स का गुण-वर्णन (कड़ी २८), सावलिगा का रूप वर्णन (कडी ३१२-३३२), वरयात्रा या वरात का वर्णन (कड़ी ३२२-३२४), गहरे अरण्य का वर्णन (कड़ी ३६०-३६४), नगर वर्णन (कडी ४२३-४२२), सदाशिव बन वर्णन (कडी २१७-२१९), युद्ध वर्णन (कडी ६२९-६३५), शूर या वीर जनो की प्रशस्ति (कडी ५९६, ५९७) एव पुण्य की महिमा (कडी ७३०) ये सब उल्लेखनीय वर्णन रोचक एव प्रासादिक भी है । और कवि की प्रतिमा एव बहुश्रुतता के द्योतक है ।

प्रबंध में अलंकृत एवं सुभाषित वानी का प्रयोगः-

कविकी रचना मनोगम्य एवं प्रसादिक भी है । उसके दृष्टांत कविने कथानक में अनेक जगह पर विविध रूप में अंकित किये हैं । जैसेकि अर्थान्तरन्यास (कडी २२६,२१८ २९०,८२) सुभाषित(कड़ी १०३६२२) और अन्योक्ति (चक्रवाकीके प्रति कडी ३६५-३६६) एवं इसमें सामली वचन जैसे सुभाषित भी हैं । जैसे कि बिना पतिकी प्रेमदा (पति विनानी प्रेमदा) ऐसे संबंधित सुंदर भाव–चित्र कवि ने खड़े किये हैं ।

सुकर्म से मनुष्य के पुण्य कार्यों की वृद्धि नहीं होती है । किंतु सत्पुरुष के समागम से ही भाग्योदय होता है । या भाग्य फल देता है । इस मान्यता में कर्म का सिद्धांत ध्वनित होता है । (कड़ी १३)

इस तरह कवि "भीम" की रचना सदयवत्स वीर प्रबन्ध विक्रमी १५ वीं शती का अनेक दृष्टि से एक अमूल्य रत्न जैसा है ।

आदि पृष्ठ । सदयवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि संवत नही है । प्राच्य विद्या मंदिर, बड़ोदा ।

अंतिम पृष्ठ, सदयवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि संवत नहीं है । प्राच्य विद्या मंदिर, बडोदा ।

कवि भीम-विरचित

श्री सदयवत्सवीर प्रबंध[1]

ॐ नमः । श्री शारदायै[2] नमः । श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।

[मंगलाचरण]

(गाहा)

माई महामाई-मज्झे, बावन्न वन्न जो सारो ।
सो बिंदु ओंकारो, स ओंकारो नमस्कारो ॥ १ ॥

जिण रचीय आगम निगम, पुराण सर-अक्खराण वित्थारो ।
सा ब्रह्माणी वाणी, पय[3] पणमवि सुपय मग्गेसु ॥ २ ॥

गयवयण गवरीनंदण, सेवइ सुहकरण असुह-अवहरणो ।
बहु-बुद्धि[4]-सिद्धिदायक, गणनायक पढम पणमेसु ॥ ३ ॥

गुरु लहुय जि केवि कवियण, सरस-सुअत्थ सुच्छंद-बंधयरा ।
एकत्थ[5] ताण सव्वे, करजुअलं जोडि पणमामि ॥ ४ ॥

[नव रसात्मक सदयवत्स प्रबंध]

सिंगार हास करुणा, रुद्दो वीरो भयाण वीभच्छो ।
अद्भुत संत नवइ रसि, जसु जंपिसु[6] सदयवच्छस्स ॥५॥

---

१. 'सुदयवत्सवीर चरित्र' अ.; 'सुदयवच्छवुधप्रबंध' भा. २. 'वीतरागाय नमः' भा. ३. 'पय पूजवि हूंय मग्गेसु' भा. ४. 'बलि', 'बधि' भा. ५. 'एकंत बाणि सव्वे', अ. ६. 'बणिसु', भा.

[सदयकुमार परिचय]

(छप्पय)

मालवदेस-मज्झारि, नयरि ऊजेणि अणोपम[1]।
पहु पहुवच्छ नरिंद, नारि[2] बहु लच्छि लच्छि-सम ॥
तिह सुअ सदयकुमार, सबल सामलि-भत्तारह।
साहसि[3] पवर-प्रसिद्ध, जय जगि जयत जूआरह ॥
खित्ततणि[4] खित्तीय सोहकर, रायरीति वीर[5] जि बिबुध।
इम[6] भणइ भीम तस गुण थुणिसु, जो हरसिद्धि वर लबध ॥६॥

[उज्जयिनी नृप प्रभुवत्स]

(गाहा)

ऊजेणि अवणि-मज्झे, नयरीवर[7] नयर-सयल-सिंगारो।
तेणि पहू पहुवच्छो, पत्थंतह पूरए अत्थो ॥७॥

[नगरी-निवासी ज्योतिषी विप्र]

तिणि नयरि एक निवसइ, विप्पो विज्जा-निहाण चउवेई[8]।
जोइत्तिक-कला–कुसलो, निद्धण कणवित्तियाजीवी ॥८॥

तस घरणि इक्क अवसरि, अखय मंत कत एक तस्स।
"पिय ! पहुवच्छ नराहिव, पच्चूसे[9] पत्थि हो पत्थि" ॥९॥

मनि धरवि घरणि-वयण, विप्पो संपत्त[10] राय-अत्थाणं।
लेई अक्खय करपत्तं, आसीय-वयणं पयासियं तस्स[11] ॥१०॥

१. 'निरुपम' आ. २. 'महिल' आ.; 'बहुलच्छि' अ. ३. 'साहसि बलि' अ. ४. 'क्षत्ततणइ क्षत्तीय' आ. ५. 'कीरति विबुर नर' आ. ६.'कवि भीम तासु गुण बन्नवइ,जो हरसिद्धि लबधवर' आ. ७. 'नारींवर' आ. ८. 'चउवेयो' अ. ९. 'पच्छसे पत्थि हो पत्थि' अ. १०. 'संपत्त' अ. ११. 'अत्थाणो' आ.

[आशीष वचनार्थं राजसभा-गमनं]

(दूहा)

विप्प[1] सुविज्जउ ऊलखिउ, कीउ पहुवच्छि[2] प्रणाम ।
आदरि आसण अप्पीउं, "कहिन[3] देव ! कुण ठाम ?" ॥११॥

(छंद पद्धडी)

पहु[4] प्रच्छइ जंपइ विप्पराउः
"सुणि[5] नरवर ! अम्ह ऊजेणि ठाउ"।
"दिन एता[6] दिट्ठि न दिट्ठ देव !
तं कांई कारण ? कहिन हेव" ॥१२॥

"जां लगइ कुकम्म-वसि हुइ कोई,
तां सुपुरिस-सरिसी भेट न होइ ।
जब टलिउ देव ! दारिद्दनु भाउ,
तव पामिउ मइं पहुवच्छ राउ !" ॥१३॥

[प्रभुवत्स वचन]

(दूहा)

विप्प-वयणिं राउ रंजिउ, पूछइ वलीअ विगत्ति ।
"कवण कला गुण तूं[7] अ-तणइ?,कवण तुज्झ[8]कुल-वित्ति ?[9]॥१४॥

[विप्र वचन]

(वस्तु)

विप्प जंपइ, विप्प जंपइः "निसुणि नरनाह ।
जयवंती ज्योतिष कला, कुलकम्मि अम्ह अच्छइ अगाह ।

---

१. 'पहुणा' प्रा. २. 'सवि खउ' प्रा. ३. 'कहुन' प्रा. ४. 'पहु पूछिउ' प्र. ५.'सणि' प्रा. ६. 'कांइ' प्रा. ७. 'तदूम' प्रा. ८.'सुत' प्रा. ९. 'विति' प्रा.

बरतारउ[1] संवच्छरह, नष्ट जन्म नवि विति लब्भइ ॥
थं सुरपुरि जं नरभुवणि, जं जं हुइ पायालि[2] ।
नरवर ! निज मंदिर-थिकूं, तं जाणू तिणि कालि" ॥१५॥

(दूहा)

विप्प-तणइ प्रति वड वयणि, वसिउ राउ-मनि रोस ।

[प्रभुवत्स वचन]

"जं बंभण ! तूं[3] वरलिउ, तं[4] जाणिसु तूं म्र जोस" ॥१६॥

तिणि[5] अवसरि अग्गलि रहिउ, गलि गज्जइ गजराउ ।

[ज्योतिष ज्ञान परीक्षा । गजराज जयमंगल आयु प्रश्न]

"जयवंतु[6] जयमंगलह, एह कहि, केतूं[7] आउ ?" ॥१७॥
लगन लेई[8] तव ततखिणि, कहिय खडी करि झल्लि ।

[अमंगल फलादेश कथन]

"जइ पूछिसि पहुवच्छ पहु, मरइ ति कुंजर कल्लि !"॥१८॥

बंभण-केरइ बोलडइ, राउ चमक्किउ चित्ति ।
"जउ कुंजर कल्लि नवि मरइ,तउ तू म्र कहि,कुण गत्ति?॥१६

थागइ एक अणजाणतां, तइं वड बोलिउ बोल ।
था तिहूं-पाहिइं अधिक, जाणइ निरस निटोल" ॥२०॥

विप्प भणइः "नरवर ! निसुणि, देव मदु छि अनंत ।
जे जयमंगल हत्थीउ, तेअ थिइ दिणि पंत ॥२१॥

---

१. 'वरतक' मा. २.'पैयाल' म. ३. 'तइं' म. ४. 'सिव जाणिस तुं जोस' मा. ५. 'तीणि' मा. ६. 'जइवंतु' मा. ७. 'किसूं' मा. ८. 'लिइंय वहुंत तीणई' म., 'स' मा. ।

चिहुँ दिसि चिहुँ थम्भे सरिस, जइ बहु बंधसि बद्ध।
तोइ बि प्रुहरे [बंभण भणइः] "चल्लइ मत्त मदंघ ॥२२॥

मरूम सुफा भल भुंहिरइ, चिहुँ पक्खे पुंतार।
इम रक्खंतइ राय! सुणि, बि-पुहरि मंडइ मार" ॥२३॥

[प्रभुवत्स नृप कोप-कथन]

(वस्तु)

राउ जंपइ, राउ जंपइः "वयण निसुणि[1] विप्प।
मुझ परतन्या पुव्व लग्गइ, अधिक उच्छ बोलइ स वारू।
अलीअ न चल्लइ अम्ह-तणइ, सच्च होइ तुह कज्ज सारू।
जउ बंभण! बि-पुहर-समइ, मत्त न मोडइ खंभ।
तउ तूं[2] नाणा तिलयनइ ठामि दिवारिसु[3] डंभ ॥२४॥

(चउपई)

"जउ जोसी! तूं ज्योतिष साच, तउ थिर थापउं माहरी वाच।"
[फलादेश मिथ्या करणोपाय]
इम बोली तुरी पाठविउ, राइं गज-राखण आठविउ ॥२५॥

एकि भणइः "ए बांभण[4] बूड", एकि भणइः "ए[5] काचउ कूड"
एकि भणइः "ए पडिउ अपाइ,किम छूटेसिइ राखिउ राइं?" ॥२६॥

गज-पाखलि पायक सइं पंच, ते[6] पुंतारि मुणइ प्रपंच।
तीह आपी आंकुस नइ आर, राइं[7] मेल्हया राखणहार ॥२७॥

मत्ता-पाखलि पुहरा पडइ, एकि आंकुस लेई ऊपरि चडइ।
इणइ[8] परि राखिउ सघली राति,पुहुतउ तिहां पहुवच्छ प्रभाति॥२८॥

१.'निसुणि वर विप्प' आ. २.'तल तणइ' अ. ३.'दिवारिसु'अ. ४.'बूड' अ. ५.'कीधउ' आ.,६.'जे' अ.'कुणइ प्रपंच' अ.७.'धूणी घरा वाळ्या पुंतार' आ. ८. 'इम रख्यु गज' आ.

[विशेष गज-रक्षण-प्रबंध]

वली अधिकि बंधाविउ बंधि, सवा-भार लोह-संकल कंधि।
नवि सलसली सकइ थिउ ठामि, किरि[1] चित्र कि लिखिउ
चित्रामि ! ॥२९॥

राई तइं तेडया पुंतार, "रे ! रूडि-परि करिज्यो सार।
गाढा थई राखउ[2] गजराज, बांभणि बि पुहर लहिणा आज"॥३०

[उच्छृङ्खल गज-गमन]

इम करतां सिरि आविउ सूर, गज चालिउ पावरिसनूं पूर।
धाइ धसइ अनइ धडहडइ, किरि आसाढि अंबर गडगडइ ।३१॥

ओडी संकल मोडया खंभ, चुहुटइ चालिउ गरूआरंभ।
नवि लेखइ[3] आंकुस नइ आर,धूणी धरा[4] पाडया पुंतार ॥३२॥

[उन्मत्त गज पथ-विहार-परिणाम]

गजि चउहटइ जई मंडिउं गाह, पान-तणां सवि लाध्यां लाहु।
फूल-तणा तिहां पूर्या पगर, मइगलि माथइ कीधउं नगर ॥३३॥

पुहुतउ श्रेणि सुगंधी-तणी, राज-वस्त मेली रेवणी।
नांखइ केसर अनइ कपूर, वास्यां तेल वहाव्यां पूर ॥३४॥

[लोक-संभ्रम]

वीणइ दोठइ दोसी दडवडइं, पारिखिने पगि पींडी चडइं।
फडीआ फोफलीआ सोनार,[5] नाठा लोक : न जाणइं सार ॥३५॥

हाट-मांहि थिउ हालकलोल, किरि कमलापति करइ कलोल।
पोतां लांख्यां पारिखि-तणां, कापडि सरिस किरिआणां घणां॥३६॥

---

१. 'जाणे गज लखींउ चित्रामि' आ. २ 'राख्यो' अ. ३. 'मानइ' आ. ४. 'धरि' आ. ५. 'सुनार' आ

एकि अटालि मालि गढि चडइ, एकि पाधरि दहदिसि दडवडइ।
एकि[1] छाबडां अछइ छडछोक,ते सीकिइं[2] -थ्यां सूसइं लोक॥३७॥

गिउ गयंद सुर-हटनी वाट, तिहां[3] मदिरानां दीठां माट।
मधु महुअडां द्रवणि जस द्राख, ते गजवरि आरोग्यां लाख[4] ॥३८॥

आगइ पंचायण पाखरिउ, आगइ पन्नग पंखावरिउ।
आगइ गज अंगि जमदूत, वली वारुणी भावि थिउ भूत ॥३९॥

सुंडाहल पूरइ परचंड, दंतूसल जाणे जमदंड।
पाडइ विसमा पोलि प्रासाद, नर नारिनूं[5] ऊतारइ नाद ॥४०॥

[गजनियंत्रणे नृपागमन]

राउ असवार थई थिउ[6] केडिः "जे भड भला ते वहिला तेडि।
जे आणी बंधइ[7] गज ठामि, तेहनइं आपूं गाम अनामि ॥४१॥

आपउं अंग-तणउ शृंगार, आपूं एकाउलिनउ हार।
आपूं अधिक वली पसाउ, जे बलीउ बंधइ गजराउ" ॥४२॥

एकि भणइः 'आघो थाईइ', एकि भणइः 'जमपुरि जाईइ'।
एकि भणइः 'वरि रूसइ राउ, सरसिइ[8] एहना-पखइ पसाउ'॥४३

[ब्राह्मण सीमन्तिनी-गृहागमन प्रसंग]

नव[9] बारहि नयर ऊजेणि, नितु नव नवा महोत्सव तेणि।
बंभण एक-तणइ तिणिवार, आघरणि अवसरि जयकार ॥४४॥

गयगामिणी धवल-धुणि करइ, वाडव विप्प वेअ उच्चरइ।
मस्तकि मेघाडंबर छत्र, वाजइं पञ्च शबद वाजित्र ॥४५॥

भरीय सेसि सइंहथिइं माई, पीहरि—थी पस पूरइं जाई।

१. 'जे छां छडा मनइ छड छोक' मा. २. 'पाछलि' मा. ३. 'मदिरा-पूर्या' मा. ४. 'राष' म. ५. 'नचनरिंद' म. ६. 'त्रिउ'-मा. ७. 'बंधइ बलीउ' मा. ८. 'रुडिसिइ' मा. ९. 'नव बाहरि' मा.

[वंशकुल परंपरा]

जां[1] घडि चालइ पहिलइ पाइ, तां आडी ऊतरइ बिलाइ ॥४६॥

खडकी खूली चाली बाट, जातां काडि बिलागू घाट ।
जां[2] घाटडू विच्छोडी वाडि, तां तरु-मइंली छींकी बिलाडि ॥४७॥

पग संचीनइ पाछी वलीइ, सूकइ काठि काग किलगिलइ ।
मनइ अनेरां हूई असुण, तिहनां कारण जाणइ कुण ? ॥४८॥

एकि भणइ : 'एह पडिसि आभ',[3] एकि भणइ 'एह गलिसिइ गाभ';
एकि भणइ : 'एह हवडा हाणि, एह असुण-तणइ परमाणि' ॥४९॥

[वजराज कृत सीमन्तिनी-ग्राह]

गेजर सुणीं गज तिहां-थउ वलिउ, पेखणहार लोक सहु पलिउ ।
सगूं सणीजूं गिउं सहू वही, विप्र-घरणि[4] गयवरिं ग्रही ! ॥५०॥

इम साही सुंडिहि कडि यंत्रि, जाणे लाठि[5] लगाडी यंत्रि ।
नवि मेहल्हइ नवि मारइ मत्त, पेखइं राइ राणा राउत्त[6] ॥५१॥

[सीमन्तिनी-पतिकृत मोक्षयाचना]

(छन्द पद्धडी)

तव आविउ धाइउ[7] ति नारी-भरतार,
बुंबारव वंभण करइ अपार ।
"को सुभट शूर माहसिक शुद्ध[8]
को धीर वीर वंसह विशुद्ध ? ॥५१॥
कोइ जाइउ चउदिसि चपल अंग ?
को अकल अटल आहवि अहंग ? ।

---

१. 'छेडि चीलइ' आ 'आंगलि' आ. २. 'जा घाटक कुंच डीओ वाडि, तो न रमइका छींक निलाडि' आ० । ३. 'पडिसि' अ. ४. 'नारि वराहरि' अ. ५. 'लाटि' अ. ६. 'सामंत' आ. ७. तिहिं' आं ८. 'सिद्ध' आ.

काइ खित्तीश्र खल-खंडरग समत्थ ?
की ग्रछइ छयल खिति खग्गहत्थ ?" ॥५३॥

[मार्गे कुमार सदयवत्सागमन]

इम करतउ जउ जुवटइ जाइ,
पूछिउ[1] ताम पहुवच्छ-जाइ ।

[सदयवत्स वचन]

"देव ![2] दया कर, कुरग दूहवइ तुज्झ ?
थिर थइ भिइ-काररग कहिन मुज्झ ॥५४॥'
कुरिग मारिउ ? डारिउ ? हरिउ रिद्धि[3] ?
कुरिग लूसिउ ? लीधउ ? तू कहिन सिद्धि ?॥"

[विप्र रक्षण-याचना]

तीरिग वयरिग विप्प भीश्र[4] विहलमुच्छ,
"करि वाहर, स्वामी सदयवच्छ ! ॥५५॥

(दूहा)

ग्राघरिग ग्रवसरि घररिग, ग्रावंती ग्रावासि ।
मारगि ग्रबला एकली, पडी महागज-पासि ॥५६॥

जम-मुहि किस्यू[5] जीवीइ ?, चतुर ! विमासिन चित्ति ।
सदयवच्छ ! सा बंभिरगी, मारीय हुसिइ मत्ति !" ॥५७॥

[वीर सदयवच्छ मत्तगजाक्रमण]

(छंद पद्धडी)

तव धायो घूंबड धसमसंत,
किरि ग्रावइ केसरि करि[6] कसंत ।

---

१. 'तिहा पूछीय' प्रा. २. 'देव देव म करि' प्रा. ३. 'मर्वाद्ध' प्रा. ४. 'बंयु बुहम पुछ' प्रा. ५. 'केतू' प्रा. ६. 'कसकसंत' प्रा.

बर्बरीय झंटि झलकंति[1] भालि,
कलकिल्यु[2] वीर बधु भृकुटि भालि ! ॥५८॥

भयमत्त[3] रत्त् जब दिट्ठ दिट्ठि,
तव असिमर कड्ढवि किद्ध मुट्ठि ।

मुहि मंडवि हक्किउ सबल हत्थि,
साहसीय[4] सुभट्ट सुंदर समत्थि ॥५९॥

नवि मेल्हइ नारिय सूंडि-अग्गि,
दंतूसल तोलवि वलिउ वेग्गि ।

इम हणिउ करडि करिमालि कंधि,
जिम त्रूटि[5] सीसि गिउं श्रवण-संधि ॥६०॥

[6] (राग केदारु एकताली)

राइं बोलाव्या बहू, जे भड गय-घड खंडंति ।
तेहू पाखलि परिभमइ, नवि वारण मुहि मंडंति ॥६१॥

मेगल मत्तालउ ए, नवि जाणइ पवरिस-पार ।
अंकुसि सरिसा अवगणी धूणी, धर पाडथा पुंतार ॥६२॥

[सदयवत्स कृत हस्ति-निग्रह]

सदयवच्छ सूरु सही, जीणइ वलीइं बंभण-नारि ।
मेल्हावी. हणी हाथीउः, जग पेखइं जइ जयत जूआरि ॥६३॥

(छंद पद्धडी)

गडग्रडिउ गयंद कि पडयउ पुहव्व,
सुर अंतरिक्खि पेक्खिइं अपूव्व ।

१.'झलकइ कवालि' प्र. २.'कलकलिउ वटाणु, थिउ भृगुटि भालि' प्र. ३. 'भयमत्तउ जब नयणि दिट्ठु' प्रा. ४.'साहसीक सूर' प्रा. ५. 'त्रूंटिवि' प्रा. ६. ट्रंक ६१ थी ६३ प्रा. प्रति मां नथी ।

'जय जय' शबद जंपइ जगत्त,
पहुवच्छ-पुत्त[1] पेखइ चरित्त ॥६४॥

[सीमन्तिनी श्रीणजम्य प्रानंद]

(चउपई)

ते बंभरण तेडिउ[2] तिरिणबार, युवति समोपी किद्ध जुहार[3]।
बंभण-घरि बिमरणउ[4] उच्छाह, 'सुद्द! सुद्द!' करइ[5] नरनाह ॥६५॥

[प्रभुवत्स-द्वारा धन्यवाद]

लाजंतइ जई किद्ध जुहार, राइं आलिंगरण दिद्ध अपार।
बापिइं बेटउ बाँहि धरिउ, राउ राजभवनि संचरिउ ॥६६॥

बारहट्ट बोलइ तिरिण वार, सदयवत्स न सहइ कईवार।
भाटइं भेद परीठिउ[6] इसिउः "पशु मारइं पुरषारथ किसिउ?॥६७॥

(छंद तोटक)

मइमत्त कि मारिय लज्ज रयउ,
शर-टंकीय सुंदर शल्ल विगयउ।
गयगंजरण ! लज्जइ रि किमइ ?
किम किज्जय सद्द सुसमर तिमइ ?[7]" ॥ ६८ ॥

(गाहा)

पोढा करीय पहारो, मेनावइ मुच्छ मोडए मूढो।
साहसीअ सदयवच्छो, लज्जरिउ मारि मयमत्तो ॥६९॥

---

१. 'पवरिउ पेखइ पुत्त' प. २. 'तेडाव्यु ताम' आ. ३. 'प्रणाम' आ. ४. 'मनिई' आ ५. 'सूदा साद' आ. ६. 'रीछयउ' औ. ७. टूक ६८ आ. प्रति० मां नथी.

[सदयवत्स युवराज-पदाभिषेक]

(चउपई)

ते महूरत ते मंगलाचार[1], सेसि भराव्यउ सदयकुमार।
राउ अप्पइ राणि मनइ राज,सूदउ भणइ:'न राजिइं काज॥'७०॥

घरि घरि तलीया तोरण बहू, ऊजेणी आणंद्यउं सहू।
हूकउ हरिष राजा-मनि घणउ, पेखि पवाडउ सूदा-तणउ॥७१॥

[सदयवत्स विनय वचन]

"तुम्हि जगि जयवंता[2] हुयो देव !,करिसु सदा हूं तह्म पय-सेव
नयरि[3] निचिन्त रमूं निशिदीस, तह्म पसाइं पहुवच्छ पहीस॥७२॥

रमूं भमूं जाऊं जूवटइ, घूरि[4] चाचरि खेलूं चउवटइ।
सुहडपणानी लीलां फिरूं, अधिपतिपणूं न अंगी करूं॥७३॥

जिहां जिहां रामति हासा होड, जिहां जिहा कला कुतूहल कोड।
जोवा जाऊं नीरणिइं ठामि, ईणइ संकटि पाडि[5] म स्वामि॥७४॥

राज-काजि एक बंधव बाप, मारइ पुरुष न बीहइं पाप।
लीलावंत-तणइ मनि लाज,[सूदउ भणइ:] न राजिइं काज"॥७५

[प्रभुवत्स-प्रसाद]

आपिउ एकाउलिनउ हार, आपिउ अंग-तणउ शृंगार।
आपिउ आमण-तणउ तुरंग, राजा-अंगि[6] न माइ रंग॥७६॥

ते बंभण तेडाविउ ताम, प्रति ऊठीनइ[7] किद्ध प्रणाम।
आपिउं वासि वसंतूं गाम, बहु[8] अरथ नइ अंबर द्राम॥७७॥

---

१. 'मंगलवार' आ. २. 'जइअइवंता देव' आ. ३. 'निरंतर' था. ४. 'घरि' आ., 'निग्र' अ.५ 'पाउ काइं' आ. ६. 'रिदइ' अ. ७. 'राजा ऊठी' अ. ८.'अरथ सरीसु अंबर द्राम' आ.

बंभणनइ घरि भागी भूख, नाठूं कुरीय-सरीखूं दूख।
महाराजि जउ दीधउं मान, लोक-मांहि तीरणइ[1] वाधिउ[2] वान ॥७८॥

(दूहा)

बंधी[3] तलीग्रा तोरणह, गूडीय वन्नरवालि।
दीसइ दीवाली-तणा,[3] उच्छव हुई[4] अगालि ॥७९॥

पंच शब्द निनाद[5] रसि, वद्धावी वाजंति।
पड-सद्द[6] पूरी भुंवण, गयणंगण गज्जंति ॥८०॥

विप्प वेग्र-धुणि उच्चरइं, करइं सुकवि कइवार।
रायंगणि राजा-तणइ, मिलिया मग्गणहार ॥८१॥

वर-मंडपि मंडीय गजर, वज्जइ मधुर मृदंग।
[7]रागरंग गायण गमक, नच्चइं नाचिणि चंग ॥८२॥

किहिं कप्पड़ किहिं दिइं कणय, किहिं केकाण कच्छाहि।
घन देयंतो[8] किलकिलइ, पहुवच्छ मन-मांहि ॥८३॥

[9]आसीस दिइं बहिनर बहू, मा भनि रंग-रसाल।
अरीय सेसि सइंहथि-सिउं, वद्धावइ वर बाल ॥८४॥

(चउपई)

मणि माणिक मुत्ताहल-हार, [10]कापड-कणय कपूर अपार।
विवहारीए बधावूं किद्ध, राजा किहिनूं कांईग्र न लिद्ध ॥८५॥

---

१. 'तु'मा. २. 'लागउ' म. ३. 'घरिघरि' म. ४. 'दीपोछव' मा. ५.'मयरि' म. ६.'निरंवह घरि' मा. ७.'पडिछंदे' 'रागरगि भाखविकरइ, नाचइ पात्र सुरंग' मा. ८ 'वेचंतु' मा. ९. 'बहिन करइ कुमारणां, मा धनि' मा. १०. 'हीर-चीर सोवन शृंगार' मा.

[सदयवत्स सम्मान-अप्रसन्न प्रधान]

सदयवच्छनूं सुणी वृत्तंत, मुहुतानइ[1] घरि बइठउ मंत्र।
"राउ आपतां न लीधूं राज", [2]भूप-जमलउ थिउ युवराज ॥८६॥

आज-थिकउ इहनइ सिरि भार, राजा आरोपिसिइ अपार।
लहुडपणा लगइ लक्षण सार, आगइ जूठउ अनइ जूआर ॥८७॥

जे माणस एहनइ नितु नमइ, ते माणस एहनइ मनि गमइ।
जे माणस आगइ एहना, सरसिइं काज सवि तेहनां ॥८८॥

आज-थिकी[3] हिव एहनी आस, आज-थिकउ एहनउ वीसास।
आज-थिकउ राजा मनि एह, आज-थिकउ हिव[4] अम्हनइ छेह॥८९॥

आगइ "इह-सिउं नवि मुझ रंग, जे मइं जीव[5] विणासिउ रंग[6]
अरथ-तणउ अति कीधु लोभ, सगे-सणीजे[7] न रही शोभ ॥९०॥

[प्रधानकृत युवराज-विरुद्ध षड्यन्त्र]

हिव ते कांई करउ उपाउ, जीणइ[8] एहनइं रूसइ राउ।
इसिउ अगूरव पाडउ रेस, कइ मारइ कइ काढइ देस ॥९१॥

कुटंब तणूं[9] [10]सांभलिउं कहिउं, मुहुतइ सोइ जि कथन[11] [12]संग्रहिउ।
मंति-पयहपणूं तउ आज, जउ हूं कालि कढावूं राज ॥९२॥

[प्रधानकृत भेद-प्रपंचारंभ]

तउ परधानि मांडिउ परपच, उडद अणाव्या पाली पंच।
सांभइ अरक[1] [2]आथमणी दार,[13] [3]वीर वधावूं लेई[14] [4]तीणि वार॥९३

---

१. 'महितानइ' आ. २. 'तु हू जमलि' अ. ३. 'पछी' आ. ४. 'राज-मनि' आ. ५.'एहनइ नही मूं ग' आ. ६.'जान' आ ७. 'रंग' अ. ८. 'माहि' अ. ९. 'जिम हिव' आ. १०. 'कुटुम्बि इस्यूं विमासी' आ. ११. 'अयणु' आ. १२.'सूर' आ. १३. 'बार' आ. १४. 'करइ' आ.

आपणि कीधउ कालउ शृंगार, कालउ अंग-तणउ आकार[1]।
काला कापड कीधां भेटि, तउ राजा घण पइठउ पेटि ॥९४॥

रा एकंति मंति लेई गउ, "कांइ प्रधान, काल-मूंहुअ थिउ ?।
एतां सघलूं ताहरूं राज, नवूं ति कांई कारण आज ?" ॥९५॥

जाणइ कामण मोहण कूड, जाणइ बुद्धि बोलतउ बूड ।
जाणइ अंग-तणउ [1]अनुराग, [2]वातइ ततक्षिणि लेई ताग ॥९६॥

[मंत्री वचन]

"नही उच्छव तम्ह घरि तेतलउ, वइरी-घरि होसिइ जेतलउ ।
'जयमंगल[3] मारिउ' महाराज!, इसिउ वधामणुं छाजइ आज ?॥९७॥

मदि[4] आव्या छूटइ मयमत्त, रोसि चड्या ते हीडइ रत्त ।
आइ उपायि, वली धराइ, इम अजुगतिइ[5]न आलि मराइ । ९८॥

जास पसाइं दमिया देस, जास पसाइं नमइ नरेस।
जास पसाइं दोहिलउ दुग्ग, लीधी पोलि त्रिभोगल[6] भग्ग ॥९९॥

जीणइ तात ! तम्हे[7] लिउ दंड, दमिय देस लीजइ[8] सवि खंड ।
ते उलग आवइ अहिठाणि[9], जे जीता जयमंगल प्राणि ॥१००॥

मदि आविउ करि सारइ काज, वइरी-तणां विध्वंसइ राज ।
पाडइ विसमा पोलि पगार,प्राण-तणउ नवि जाणइ[10] सार॥१०१॥

ऐरावण सुणीइ इन्द्र-नइ, जयमंगल हूंतउ तुम्ह-तणइ ।
बीजउ कोइ न त्रिभुवनि कन्हइ,प्रापति पाखइ[11]न रहिवा लहइ॥१०२॥

---

१. 'आकार' अ. २. 'वात करंतु बोलइ नारि' अ. । ३. 'मइं मङगल' अ. ४.'मन्दिर'अ. ५.'अजुगतउ' अ. ६. 'ति' आ. ७.'तु महारउ पंड' अ. ८. 'लीजंता दंड' अ. ९. 'अप्पाणि' आ. १०. 'लाभइ पार'अ. ११. 'विण किम रहिवा लहइ ?' आ.

(दूहा)

अम्मूलिक चिंता-रयण, जउ करि चडइ सुरंक।
तां घरि किराउ ते रहइ ?, जिराउ श्रोय-मयंक" ॥१०३॥

[आशंकित राजा-चित्त]

(चउपई)

मुहूतइं मंत्र-भार जउ भणिउ, तीणि राजा-मन धारिउ घूणिउ ॥
न सहि कोई नीसासा-फूंक, जाणे पूरव पूरिउ डंक ॥१०४॥

जे बहु नेह धरंतउ बाप, ते साचु तीणइं कीधु साप।
रोस चडाविउ सघली राति,[1] पुहुतु तिहां पहुवच्छ प्रभाति॥१०५॥

[रोषपूर्ण प्रभुवत्स]

फूंकी धमी धमाविउ एम,[2] जिम ते ततक्षणि त्रूटई[3] प्रेम।
बूड[4] बोलतां आविउ बंधि, सूदा-सरसी पाडी संधि ॥१०६॥

[अवस्यवत्स माता-वचन]

थिउ अवसर ऊलगनु जाम, माइं बेटउ बोलाव्यउ ताम।
"सूदा ! सुप्रभातनी वार, जई राजा-प्रति[5] कह जुहार" ॥१०७॥

[क्रुद्ध पिता मुख-दर्शन]

माता-वयणि सभागिउ सुद्द, तां राजा-मुखि[6] दीठुउ रउद्द।
सिर नामंतां बोलिउ राउ[7], हासा-मिसिइं भागां[8] हाड ! ॥१०८॥

नीचू नइं न-पाणीउ कूउ, तिह ऊपरि ढालइ[9] ढीकूउ।
वार वार पग[10] करइ प्रणाम, नीर-तणूं नीठाडइ[11] ठाम ॥१०९॥

---

१. 'पाछइ बोलाविउ परभाति' प्र. २. 'इम' प्र. ३. 'त्रोडइ तीम' प्र. ४. 'कूड' प्र. ५. 'राजानइ कहइ' प्र. ६. 'मनि' प्रा. ७. 'माड' प्रा. ८.'भजइ' प्रा. ९ 'मांडिउ' प्रा. १०.'तिथि' प्रा. ११.'नीवाउइ' प्रा.,प्र.

(गाहा)

मा जाणिसि खल नमीयं, जीहां जंपेइ अमीय-सा वयणं ।
ढीकू[1] कूप-विलग्गो, पय लग्गवि, सोसए जीयं ॥११०॥

(चउपई)

जे आकारइ ऊलखइ अंग, भमहि-तणउ जे बूझइ भग ।
[2]ते नर बोलिउ [3]बूझइ इसिउं, एह वातनूं[4]अचरिज किसिउं॥१११

वीर विचारी जोइउं सरूप, भमहि-भावि ऊलखिउ भूप ।
कुमर ततक्षणि विमासइ चिति, किसी कहीइ ज उत्तम रीति? ॥११२

(अडयल्ल)*

जिम जिम केसरि पइ ऊहटइ, जिम जिम विसहर नूली वटइ ।
दीन वयण जिम जंपइ मूरु, देमि देसि कीध्ह बहु पूरु ॥११३॥

[मदनवत्स पिता-वदन]

अणबोलिइं ऊठिउ कुंआर, जातइं [5]नरवर किद्ध जुहार ।
वारू लोक विमासण भरिउ, शिर नामी आघउ संचरिउ ॥११४॥

जे आपी अधिकारी हाथ, ते तिवार मुहि[6] लई नरनाथि ।
ते रणि रहइ जे हुइ लाजणउ, तेजी तुरय[7] न सहइ ताजणउ॥११५

[उत्तम-जन लक्षण]

संपदि हरिख न विपदि विषाउ, ए आगइ सतपुरिस सभाउ ।
जोउ करमनूं कारण आम, त्यजी[8] राज वनि जाई राम ॥११६॥

एक दिवस प्रभि किउ पसाउ, बीजइ सूदा रूठउ राउ ।
एकि राउल नइ बीजूं रान, सूदानइ मनि सहू समान ॥११७॥

---

१. 'जे' आ. २. 'प्रीछइ' आ. ३ 'कारण' आ. * टूंक ११३ प. प्रति* मां नथी. । ४. 'जातउ' आ. ५. 'लीधी' आ ६. 'किम साहइ' आ. ७. 'राजधार मनि' ८. 'प्रति' आ. ।

सभा-समाहि जे बोलिउ राइ, ते सूदउ जाणीनइ जाइ।
एउ सुपुरिस-नइ संबल साथ, एक हिऊं नइं बीजउ हाथ ॥११८॥

[सदयवत्स मातृ-वंदना]

बलीय वीर-मनि वसिउ विचार, जातउ जणणी करूं जुहार।
जस उअरि वसिउ दस मास, पाय प्रणामूं जणणी तास ॥११९॥

(गाहा)

जस ऊअरि वसीअ वासं, नव मास दिवस अट्ठ अग्गलिया।
पय पणमवि जणणी, तास करिमु निवासं विदेसम्मि ॥१२०॥

(अडयल्ल)

जई लागु जणणी-तणा पाय,
आसीस-वयण उच्चरइ माइ।
"कहि पुत्त! अज्ञु चलचित्त काँई ?"
'अम्ह ऊपरि कीय[1] कुदिट्ठी राइ'॥१२१॥

[पिता रोष कथन]

"मइ" मारिउ आसण-तणउ मत्त,
तीणि कज्जि कोप बहु छग्गइ तत्त।
जे पामिउ कल्लि दीउ पसाउ,
ते सयल अजूता जुत्त आउ ॥१२२॥

(दूहा)

आयस राउ-तणा पखइ, जे मइ कीधू आल।
बाल-स्त्री ऊगारिवा, कुंजर सिरि करवाल ॥१२३॥

एक अबला नइ बभणी, गब्भिणि गजि आरोडि।
जु देखी ऊवेखोइ, तु क्षित्ती-कुलि [2] खोडि ॥१२४॥

---

१. 'कुदिट्ठ' अ. २. 'खित्तातण' अ. 'अ' मा १ लीटी वधारे. 'तत्त जे पामिउ कालि पसाउ दाउ, ते आज सयल हऊ जिवाउ'.

बन्धेवा नइ कारणि, बहु माणस मेल्यां राइ।
जउ मनि मारण चीतवइ, तउ करि केत्यउ जाइ ? ॥१२५॥

[अन्यायी राजाज्ञापालन अशक्यता]

राउ-अन्याय जिसां सहइ, बेटा बधव बाप।
अहि ऊगमि तीह पहु-तणइ, मुहि दीठइ बहु[2] पाप ॥१२६॥

एकि अस्या छइ इह-तणइ[3], साहसवन्त सुभट्ट।
जे रणि सगमि अंगमइ, गुडीय महागज घट्ट ॥१२७॥

'रूठइ'[4] जीवन जोखिम-ह, त्रूठइं पयड़ पसाउ।
[सदय भणइ] स्वामीपणा, तीह जूठउ जस-वाउ ॥१२८॥

जस असंख सीआल-सिउं, इक्क सरोवरि सीह।
पीइ जल जमलां[5]-रहीय, लोपी न सकइ लीह ॥१२९॥

एक भलेरू भोगवइ, राजा-पाहिइं रज्जु।
अधिपति-पणूं एतइं अधिक, जे सहू मानइ मज्झ ॥१३०॥

राय-धम्मु तिहि[6] रायनइ, रूडू[7] दीसइ रज्जि।
जे अन्याई[8] अप्प-पर, लेखइ समउ सहज्जि" ॥१३१॥

[माता वचन]

"देसाउर दिन केतला, जाइस रूठइ राइ ?।"

[सदयवत्स वचन]

" देवि ! म [9]चिंतिसि दोहिलउ, वलिसु वहिल्लउ माई !" ॥१३२॥

---

१. 'वे बाधवा' आ. २. 'हुई' आ. ३. 'प्रभु-तणइ' आ.
४. 'रूठइ भेषिम नारि, तूडइं नही य' आ. ५. 'जमला-रहिया' अ.
६. 'तेडराउ नउ' आ. ७. 'रूडइ-राखइ' आ. ८. 'अन्याय' ६. 'चरिसि' आ.

श्रवणि सू ंश्राले[1] पाडिऊं,[2] कडूग्रां कथन कुमारि ।
धूजी घर-मंडलि पडी, जाणे[3] लीध श्रमारि ॥१३३॥

[माता–दु:ख-मूर्च्छा]

बेटा-केरे बोलडे, मा-मनि वसिउ विसाद ।
उत्तर आपेवा[4] भणी, नवि नीसरिउ साद ॥१३४॥

चित्ति चटकउ नीसरिउ, गड्वर गलइ न माइ ।
[5]ऊसासे नीसासडे, जाणे जीवी जाइ ! ॥१३५॥

बाला-केरे बीजणे, वारिणि-[6] छंटइ वाउ ।
मइं-हत्थिइं सूदउ करइ, जणणी जीवेवाउ ॥१३६॥

[7]महूरति एक जि माउली-मनि मूरछा जि भग्ग ।
"जावा दि जणणी ! भलूं :" [बेटउ बोलण लग्ग] ॥१३७॥

[सदयवत्स वचन]

"जाऊ तउ जीवी ऊगरू, रहूँ तउ[8] रूसइ राउ ।
कहि,[9] जणणी ! किम सासहइ, ए एवडउ अन्याउ ? ॥१३८॥

[10]मत्र मइलउ मती-ग्रण, जे पइसिउ पहु-कन्नि ।
तीए माडी ! मू ं मारिवा, राउ सोधिसिइ रन्नि ॥१३९॥

(गाहा)

वं तं जपति कहा, दूश्रणा होइ सव्व सारिच्छा ।
जम्मंतरे न होइ, जं नवि होइ जम्म'-[11]जम्मेहिं ॥१४०॥

---

१. 'साभल्यु' भा. २. 'करूउ ' ग्र. ३.'जोवी जइ' ग्र. ४. 'ग्रापेवा वणउ'ग्र. ५.'तं सभलि सूदामही,जाण जणुणीग्र मारो'ग्र. ६.'बीजी'ग्रा. ७. 'ग्रमूर्ति जणणी जवा दिइ नही' ग्र. ८. 'इग्रइ' भा ९ 'कहइ माडी' १०. 'मंत्री मयल्लु-मइ-मलिण' ग्रा ११. 'लकुवेहिं' इ. ।

नह माम भेय जिणाणो,[1] दोसुहलो हट्टि–खंडण समत्छो ।
तह विहि मज्झ वलयउ, नमो खलो नहि रण-सरिच्छो ॥१४१॥

(दूहा)

भद्दा भूप भ्रयगमह, ए मुह[2] दुहिलां हुँति ।
जे नवि जाणइ जालवी, ते वहिला विणसंति ॥१४२॥

[माता-दत्त शकुन-भोजन]

कारण जाणी कुमरनूं, वईसण मंडिउ मंड ।
सउण-भणी सीरामणी, प्रीस्यूं[3] दही अखड ॥१४३॥

सद्द[4] सुणवि धणि धवलहर, अंतरि[5] जोयुं जाम ।
कंत करइ सीरामणी, सासू-मुह थिऊ स्याम ॥१४४॥

जणणी जिमाडीय[6] अप्पिऊं, बीड़ूं बिहु करि लिद्ध ।
सदयवच्छ सामलि-तणी, भली भलामण दिद्ध ॥१४५॥

[सहयात्रा-गमनोत्सुका पत्नी सामली]

मा मोकलावी चल्लिउ,[7] असिमर[8] लेई हत्थि ।
पाछलि[9] नेउर सर सुणी, सामलि आवइ सत्थि ॥१४६॥

पय खचवि[10] प्रमदा कहिउं,[11] "देवि ! म धरिसि दुहिल्ल ।"

[सूदा-वचन]

"सुणि सामलि!" [सूदउ भणइः] "आविसु वली वहिल्ल ॥१४७॥

(अडयल्ल)[12]

मनि अप्पणइ सुणिन मनि माणिणि ! ।
किय पाय पथि पुलिसि ? ओ माणिणि ! ।

---

१. 'जणणीदो मुद्ध लोहटि' इ. २. 'चुहु' अ. ३. 'दीधूं' आ. ४. 'सूद' आ. ५. 'उतरि जऊ' अ. ६. 'यमाडी' ७. 'माचयुं' आ. ८.'असिचबण' ९. 'रिण झिगइ' आ. १०. 'षांची' आ. ११. 'कहई' अ. १२. 'घात' अ.

हूं गय-गामिरिण ! गमिसू[1] गिरी-कंदरि,
रहि रामा ! [2]अमिय-लोयरिण ! मंदिरि" ॥१४८॥

[सामली-वचन]

"जे सूर नर साखि करी, बापिइ बाधिया बेह।
सुरिण सूदा ! [सामलि भरगइः] ते किम छूटइ छेह ? ॥१४९॥

[नर-विहीन नारी-प्रतिष्ठा]

नर [3]विरग नारी [4]एकली, लग्गइ कोडि कलंक ।
अग्गइ एक मइ संसहिऊ, मुख-उप्पम जि मयक ॥१५०॥

नर-पाखइ नारी-[5]तरगइ, राउल [6]जारगइ रन्न ।
रन्नि जि प्रीय-सरिसी [7]धुलइ, राउल मानइ मन्न ॥१५१॥

शशि-विरग निशि, दिशि दिवस-विरगु, जिम नदी विरगु-वारि ।
[8]तिम सूदा ! [सामली भरगईः] नर विरगु न सोहइ नारि ॥१५२॥

माइ बाप बंधव [9]बहिनि, पोढी पीहर वेडि ।
[10]मइ मेल्ही जस- कज्जिहिं, कंत ! न छंडूं केडि ॥१५३॥

जे [11]सोहिलइ 'स्वामी' भरगइ, दोहिलइ छडइ पूट्ठि ।
नारी रूपी निशाचरी, जाणे [12]देव ति दुट्ठि ॥१५४॥

स्वामी ! सुहिल्ले दीहडे, सहुको वलगइ सत्थि ।
भाई [13]भी छति भामिनी, जे आदरइ [14]अरगत्थि ॥१५५॥

---

१. 'भामिसु' २. 'मृग लोयरिण' प्रा. ३.'पाषई'प्रा. ४. 'तणइ' प्रा. ५. 'सनइ' प्रा. ६. 'मानइ' प्रा. ७, 'भलूं' प्रा. ८. 'सुणि' प्रा. ९. 'बहू' प्रा. १०. 'तह्म करणि मइ परहरी' प्रा ११. 'सुहिलइ दीहडे दिइ' दुहिल्लिइ'प्र. १२.'देवविध्ध' प्रा. १३. 'भीछह' प्र १४.'प्रत्थि' प्रा.

[सदयवत्स-सामली प्रयाण]

अणबोलिउ चालिउ चतुर, नारी-[1]निश्चउ जाणि।
सामलि सासू - पय नमी, साथिइं थई सुजाणि ॥१५६॥

पय लगंतां प्रीय जणणि, "होयो अविचल आयु"।
एहि विवछिनू वयण सुणि, अमृत आरोगु माई[2] ॥१५७॥

(छंद पद्धडी)

गय-गमणी रमणी तुर गति गमंति,
[3]झड अनिल लग्ग अ गिहि नमंति।
पय-पकजि लंक [4]तलि वडवडंति,
पति-भत्ति चित्ति [5]धरि चडवडंति ॥१५८॥

[स्वर्लिंगी सामली रूप-वर्णन]

जस जंघ-जुअल वर रभ-थंभ।
[6]पिथल कि उरथल करिण-कुंभ॥
कर-पल्लव नव-शाखा अशोक।
सोवन्न वन्न साम-शरीर रोक ॥१५९॥
मुख-कमल अमल ससिहर-सरिच्छ।
निलवटि तिलय ताडीक मच्छ॥
कुंडल कि कन्नि पायार मार।
कोसीस निकर परिगर अपार ॥१६०॥
तिल-फुल्ल[7] नास-सजुत्त मत्त।
[8]त्रुटि दाडिम दंत, अहर राग-रत्त॥
अंजन मह खंजन सरिस नेत्त।
सीमंत-कुंत किरि [9]मयर-केत्त ॥१६१॥

---

१. 'निश्चन मन' अ. २. 'ढूंउ' अ. ३. 'कल अनल' आ. ४.'तिचउ वडंति' आ.५.'करि पउवडंति' अ. ६. 'प्रच्छल' आ. ७.'कुमुम नासिका' आ. ८. 'तुहि' आ. ९. 'मघरि' आ.

दूइ भमहि काम-कोदंड खड ।
कडि [1]बिब प्रलम्बित वेणि-दड ॥
उरि हार तार श्रेणी समान ।
[2]थण-मडल ग्रवर न उप्पमान ॥१६२॥

मजीर चीरि आवरीय सुअंगि ।
सारिच्छी सिरि मा सावलिंगि ॥१६३॥

(दूहा)

सुखासण आसण-पलइ, चरण न धरणिहि दिद्ध ।
सा सामलि पाली पुलइ, प्रीय-गुण-बधणि बद्ध ॥१६४॥

[सावलिंगा वचन]

"सुणजि [3]सदय कुमार ! हूँअ, नयरी-तणइ नीमारि ।"
वामणी पूछइ विगति, सावलिंगि सु-विचारि ॥१६५॥

भरि खप्पर भणती 'उदउ', जोगिणि जिमणी जाइ" ।

[सदयवत्स वचन]

"सुणि सामली ! [सूदउ भणइ:] तूमइ त्रिभुवन-माई" ॥१६६॥

[शकुन मीमासा]

अबला अंगि अनंकरी, कोरइ वस्त्रि कुमारि ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ:] निश्चइ लाभइ नारि ॥१६७॥

हय सुपल्हाणु समुहुउ, [4]गलि गज्जतु गज्ज ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ:] रानि [5]भमता रज्ज ॥१६८॥

---

१. 'ढलति लंब' आ. २. 'तन मडन उरवर-सिउ' अ. ३. 'सदय कुमार नइ' आ. ४. 'गज्जइ गज्जराज' आ. ५. 'बसती' आ. ।

बायस जिमणउ ऊतरइ, [1]डाउ ऊतरइ स्वान ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] पगि पगि [2]गुरिस निधान ॥१६६॥

खर [3]डाबउ सस्वर करी, जउ किरि जिमणउ जाइ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] सगपणि कलहु कराइ ॥ १७० ॥

तरु ऊपरि तेतर लवइ, [4]धूडि सर शिवा करति ।
सावलिंगि ! [सूदउ भणइः] एक्क अणेक वरति ॥१७१॥

अधूरां पहिलइ पुहुरि, जगलि जिमणा जाइ ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] मिलीइ [5]सुअण-समाहि ॥१७२॥

छीक डाबी धाह जिमणी, [6]भुंडनइ मुखि मास ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] सफल मनोरथ तास ॥१७३॥

संडसु सारसु खर तुरीय, डाबी लाली हुंति ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] अफल्यां [7]तांह फलति ॥१७४॥

वामा देवा वामा वायसो, वामी मीज भुकंति ।
मंमुंअ उरभय पुनह, विहू नाजि पामंति[8] ॥१७५॥

[गुणवान प्रशंसा]

(चउपई)

राजा-गुणि राउत रणि रहइ, प्रीय-गुणि प्रमदा दोहिलउ सहइ।
गुण-विण कोइ न किहनइ गमइ, जे गुणवंत ते [9]सविहूगमइ॥१७६

---

१. 'हुइ सावहू स्वान' भा. २. 'परख' भा. ३. 'डाबी दिसि ऊतरइ सुर करि'. भा. ४. 'धुडिइ सूडि सरि सेव' भा. ५. 'सजन सुखाइ' भा. ६. 'वारणो भालू' भा. ७. 'वृक्ष' भा. ८. 'भा' प्रति०मे नहीं ६. 'सबि करइ' भा.

[सहनशील सामली]

[1]सामलि चालंती मन-रगि, भूखी त्रिसी नवि जाणइ[2]अंगि।
मारगि नई-नीझरण-निनाद, मधुरा मोर सुहावा साद ॥१७७॥

तरुअर-तणइ [3]तलि सीली छाह, वाट-घाट विलगइ वर-बांह।
कंद [4]मूल फल अंब [5]अहार, इणि परि गम्या दिवस दसबार॥१७८

[निर्जन वन-प्रयाण]

पुहुता परवत पइली तीर, आगलि खारू रण, नही नीर।
सीसि सुर, तलइ वेलू-ताप, सावलिगि [6]त्रणि त्रिसा प्रताप ॥१७९॥

[सामली-प्रश्न]

(दूहा)

"नाह ! कुर गा[7]रंण-थलि, जल विण किम जीवति ?"।

[सूदा उत्तर]

"नयण-सरोवर प्रीति-जल, नेह-नीर पीयंति" ॥१८०॥

[सामली-प्रश्न]

"रत्ति न दीठु पारधि, अंगि न [8]लागु बाण।
सुणि सूदा ! [सामलि भणइ:] इह किम गया पराण ?" ॥१८१॥

[सूदा उत्तर]

"[9]जल थोड़ूं सनेह घण, तरस्यां बेऊ जणाह।
'पीय' 'पीय' करता सूकी गउ, मूआं दोय जणाह !" ॥१८२॥

---

१. 'चालती रनि वनि मन रगि' अ २. 'भंगि' अ. ३. 'तीरि' अ. ४. 'फूल' आ ५. 'अपार' अ ६. 'तव' आ. ७. आ. ८. 'रत्नि न देखूं' आ. ९. 'जणि' आ.

[तृषातुर-सामली]

(चउपई)

जिम हीमइं [1]कमलिणि कुरमाइ, जिम वसंति परजालइ जाई ।
तिम जल विण सामलि-सरीर, [2]देखी करइ विमासण वीर ॥१८३

[अद्भुत प्रपा-दर्शन]

दह दिसि [3]निरखइ नयणे जाम, पावरि परब भरइ स्त्री ताम ।
ते देखी नर हरखिउ हीइ, इसी [4]वाट विसमी न रहीय ॥१८४॥

वहिलउ थई पुहुतउ तीणि ठाहि-'जस भय-भंग नही मन मांहि ।
ऊभी अबला दीठी द्रेठि, मांडया गोला [5]मांडव-हेठि ॥१८५॥

शीतल जल सरवइं सवि ठामि, जीणि दीठइ मनि[6]भाजइ भ्राम।

[सूदा-वचन]

[7]"माई" भणवि शिर नामइ वीर, वहिलउ थई[8]नइ मागइ नीर१८६

"बाई ! वार म लाइ, स्त्री त्रीसी," तीणिइं बोलइ ते बईअर हसी ।
आऊं [9]अन-जाण पहुतउ आघ, जाणे किरि वउलावइ बाघ ॥१८७

[माता हरसिद्धि-प्रपा]

इणइ परबिइं कीजय पाप, आई [10]बाई म बोलसि बाप ।
पाणी पलीथ न पाइ कोइ, एह परब हरसिद्धिनी होइ" ॥१८८॥

'लीजइ लोही दीजइ नीर', तिणि वातिइं [11]विलकिलिउ वीर ।
"देस्युं लोही, वार म लाइ, प्रमदा त्रिसीय पाणी पाइ" ॥१८९॥

---

१. 'पोइणि' अ. २. 'पेखी वयल विमासइ' मा. ३. 'नयणि निहालइ' मा. ४. 'वात विमासी' मा. ५. 'मंडप' मा. ६. 'हुअ विश्राम' मा. ७. 'शरमनी नइ साहसवीर' मा. ८. 'नइ' अ. ९. 'अापन जाणइं आघ' मा. १०. 'माई म बोलसि' मा. ११. 'व्याकुलीउ' मा.

नारि वारि करवउ करि भरी, सार्वलिगि साहसी संचरी ।
अउ [1]तरुणी फीटउ त्रिष-ताप, "बोल आपणउ पालिन बाप:"।।१९०

[सूदा-रक्तदान प्रयत्न]

नर [2]नीसंक, न वयणि विरग, अणीआलिय मुहि ऊजिउ अंग ।
मच्छरि चडिउ छेदइ नस माम, न लहइ लोही-तणउ निवास ।।१९१

[3]वामइ करि सिर साही वेगि,जिमणइ जिम-दड ताकी तेणि ।
अउ मस्तक [4]वाढइ मन-शुद्धि,तउ हसी हाथि[5]साहि हरसिद्धि ।।१९२

[प्रसन्न हरसिद्धि-वचन]

करि [6]झालीनइ कारण कहीः "साहसीक तूं सूदउ सही ।
म्हे मइ जोइऊ ताहरूं माह, तूं [7]अजीह ऊजेणी-नाह ।।१९३।।

ऊजेणी माहरू अहिठाण, बोजूं पाटणपुर पहिठाण ।
हूं बउलावा आवी वोर !, जोवा ताहरूं साहस धीर ।।१९४।।

हूं जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवछित [8]रिद्धि ।
ताहरा [9]पवरिस नही कोइ पार तूं सूरा सविहू-शृंगार" ।।१९५

[सदयवत्स देवी-वर-याचना]

"जूअ सग्रामि ठामि [10]बहू जइत्त, [11]परमेसर-सू पामे पहित्त ।
प्रभु ऊठीनइ लागउ पाइ,मया किह्वारइं म[12]टालिसि माई !" ।।१९६

[वर-प्रदान]

काली कक लोहनी छुरी, [13]साथिइ काली कउडी खरी ।
ए बि आप्या 'बेटा' भणी, 'जय' जंपवि चाली जोगिणी ।।१९७।।

---

१ 'तिति त्रषानु भाग्गु ताप' २ 'नीसकपणा नइ नव रग, अणी आसी मुहि उरइ.' अ. ३.'वाम करिइं करि' आ. ४ 'छेदइ मनसिद्धि' आ. ५. 'साहिउ'आ. ६.'सारी नइ' आ. ७ 'अभंग' प. ८ 'सिद्धि' आ. ९ 'साहस न लहूं' आ. १०. 'बहु' आ. ११. 'परमेसर तूं पामे' आ. १२. 'मेल्हसि' आ. १३. 'बीजी आपी' आ. ।

[1]जोगिणी वली, टली ते परब, हुई वीर-मनि बिमणी बरब ।
जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेलां [2]तूठी हरसिद्धि ॥१६८॥
रलीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता-चित्ति वसिउ विषवाउ ।

[पति-दु:ख कारण सामली-क्षमायाचना]

"करूं अ बीनती बे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-बंधण छोडि॥१६६॥
तइं [3]मूं पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउं महाराजि ।
मइं आविइं गुण होसिइ एह,आगइ दूख,नइ सूकिसि देह!॥२००॥

[पीहरमा मूकवा विनति]

[4]पसाउ करी मूं [5]पीहरि आवि,मूं मेल्ही नइ स्वामि ! सिधावि ।
जाता कोइ न करइ [6]पचार, वली सव्हारइं करयो सार ॥२०१॥

[अवलाए चीतविउ उपाउ], तिहां [7]आव्यां तउ राखिसिइ राउ।
दाखिन पाडी देसइ देम, [8]रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस" ॥२०२॥

वनिता-तणा वयण [9]नय-वाच, सदयवच्छि ते मान्यो साच ।
"[10]मेल्हिसु लेई पाद्रि पहिठाणि,जई[11]ऊलगि सु अवरि अहिठाणि२०३

ऊलग लेई नइ आणूं करूं, तां लग स्त्रीइ-स्यूं केत्थउ फिरूं ? ।
जिहाँ उलगम्यिूं लहिसिउं तिहाँ लाख,
प्रमदा-पीहरि न[12]मेल्हउ पाख" ॥२०४॥

प्रमदा-मनि पीहरतूं राज, [13]चिंतइ कंत अनेरूं काज ।
'मनि बिहु जणां बोल जूजूउ', ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

---

१ 'योगिणि तणी बुली जुं' अ. २.'तूठी' आ. ३.'मू' अ. ४.'मया' अ. ५.'मझ' आ. ६.'ऊचार, वली वहिली' अ. ७. 'गया' आ. ८.'जिम पण' अ. ९. 'मनि' आ. १०. 'लेई मूकिस पाटण' आ. ११. 'उँलग्योउ' अ' १२.'मूंकिस' अ. १३. 'कंतह मनि' अ. ।

[सदाशिव वन-प्रवेश]

करइं वात बे चालइं वाट, छाँडिउं रम्ण नइं छांडया घाट ।
आगलि ऊमटिउं आराम, जिहां छइ सकल सदाशिव-ठाम ॥२०६

जिणि वनि [1]बारह मास वसंत, दीसइ कोइ न [2]पामइ अन्त ।
नहीं पापीयां-जीव प्रवेस, इसी [3]अछइ मरज्याद महेस ॥२०७॥

मोर मधुर-सरि करइ निनाद, कोइलि-[4]तणा सोहावा साद ।
सुसर शबद सूडा सालही, भमइं भमर [5]माल्हइ मालही ॥२०८॥

[6]सुरहा सीत सूंआला वाउ, जे लागा तनि टालइ ताउ ।
सवे सदा-फल रूडा रूख, [7]जेहनइ दरसणि भाजइ भूख ॥२०९॥

जिणि वनि योगी-[8]यति विश्राम, जिणि दीठइं [9]मनि भाजइ भ्राम
[10]पुहुतउ वीर तेह वन-मांहि, हूउ हरिख बिहु मन-मांहि ॥२१०॥

[वन-श्री वर्णन]

(छंद पद्धडी)

तिहां दिट्ठ तरूअर अति [11]कमाल ।
जावित्तीय जाईफल तज तमाल ॥
वनि अगर तगर चदन [12]किवार ।
कंकोल कलब घनसार सार ॥२११॥

कदली दल कोमल फल [13]अलंब ।
सहकार फणस फोफलि [14]बुलब ॥
तरूअर सिरि गुण गहगही गेल्लि ।
नवरंग निरूपम [15]नाय-वेल्लि ॥२१२॥

१.'बारह' आ. २. 'चांरवीइ' आ. ३.'मायादी छइ' आ. ४.'नादि' आ. ५.'मालइ ते मही' आ. ६.'सरही' आ. ७.'जिणि दीठइं मनि' आ. ८.'तणा' आ. ९. 'मुनि' आ. १०. 'पुहुतां ते बेहु.' प. ११. 'अति कमाल' आ. १२. 'तिवार' प. १३. 'गलंब' आ. १४ 'कुलंब' आ. १५.'नाग वेलि' आ. ।

[1]महमहइ मलय मालय महुल्ल ।
सेवत्ती जत्ती बकुल वेल्ल ॥
कणवीर कुसुम श्रीखंड सार ।
रयचंपु [2]पाडल जूहीय अपार ॥२१३॥

केतकी अट्ठदल कमल-वृंद ।
कृष्णागर वालु करल कंद ॥
वंकडीय कुलीय पयडीय पलास ।
[3]चिहु पखि वन पाखलि ति वांस॥२१४॥

तिहि-मज्झि सजल सरवर [4]सुरंग ।
उत्तुंग पालि पूरीय तरंग ॥
तिहां त्रिविध कमल कैरव कमोद ।
रस-[5]रुद्ध हंस पामइ प्रमोद ॥२१५॥

तरवरइं तीरि बहु बतक कक्क ।
चिहुँ पखे [6]कुरलइ चक्कवक्क ॥
नवकुंड अमीय उप्पम ति नीर ।
शीतल सुअच्छ गहिरूं गंभीर ॥२१६॥

[कैलासपति-मंदिर वर्णन]

[7]तस अग्गलि उमयापति-अवास ।
कैलास छंडि जिणि कीधु वास ॥
भड निबीड तुंग तोरण पयार ।
अपुव्व पुष्प दीसइ दूआर ॥२१७॥

---

१. 'महमहन्ति अति मलया अमाल,फूल बेवंत्री जाती विकल वाल' अ. २. 'पाउलनु नही' आ. ३. 'वन पाखलि बिहुपखि शबर्यनिवास' आ. ४. 'भज्ज' आ. ५, 'लीद्ध' आ. ६. 'करलइ' आ. ७. 'तिहिं' आ. ।

थिर पथरि मंडीय थोर थंभ।
पूतलीय-[1]रूप्प विभ्रम कि रंभ ॥
मंडपि गवक्ख चिहुँ पक्खि चार।
मणिमइ सलाका सिखर सार ॥२१८॥

कणयमइ दड ऊइइ सहित।
लहलहइ धवल धज वड विचित्त ॥
[3]आसन्नउ आगलि सोहइ सड।
पढिआर [4]नदी चडी प्रचंड ॥२१९॥

[सूदा-सामली मन्दिर-प्रवेश]

(चउपई)

निर्मल नीरि पखाल्या पाउ, [5]मानिनी स्यूं मन-रगिइ [6]राउ।
जां जाइ जगदीसर भणी, [7]देखी मडपि महिला घणी ॥२२०॥

[हरगौरी-प्रणाम]

बाहरि-थिकां बे जोडइ हाथ, प्रणमिउ प्रभु जडधर जगनाथ।
गरूउ गजर गभारा-माँहि, अबला एक तिहाँ ईस आराहि ॥२२१॥

बारू वन ते पेखी मनि, आणदिउ ऊजेणी-धणी।
पहिरी धोती सबल साँचरिउ, राणी-सरसु रा नीसरिउ ॥२२२॥

सामली पूछिउं [8]सूदा-पाहि, वनिता-वृंद [9]महावन माँहि।
प्रीय! प्रासाद-तणइ जालीइ, [10]ए कारण निरतिइ निहालीइ॥२२३

१.'अनोपम भ्रमति' आ. २.'कनक मचिइ कलस दंड' आ. ३.'आवास' आ. ४.'तन सोहइ' आ. ५.'प्रीय मानिनिस्यूं' आ. ६.'जाई' अ. ७.'पेखइ' आ. ८.'प्री पासि' आ. ९.'हुबवामी' अ १०.'कुतिग निरतिइ' आ.।

[राजकन्या लीलावती दर्शन]

(गाहा)

शिव जोय समे उपवासत्त, ये मज्झि रयणि सर-मज्झे ।
जल-केलि-करण मुक्कं, नीरस तरुइं नील [1]पगुरणं ॥२२४॥

तह पंगुरण-प्रभावे, पल्लवियउ सुक्क तरुअरो तिवारो ।
तिणि पल्लवेण पुज्जीय शिव, वच्छंति सदय भत्तारो ॥२२५॥

अवत्थयाय बालावत्थं, गहिऊण सुक्क वृक्षाणं ।
पिक्खेवि रूवराई, पणमिसु सुपल्लवा गौरी ॥२२६॥

[सदय-पति-प्राप्त्यर्थ षोडशोपचार पूजन]

(चउपई)

गलते [2]कृतिका किद्ध सनान, धवली धोति-तणू परिधान ।
निर्मल नीरिइ भरवि भृंगार, ढालइ ईश अखंडित धार ॥२२७॥

कापडि-स्यूं आलूंछइ अंग, बावनि चदनि चरचइ चग ।
बहु बिल-पत्र कुसुम कार लेउ, रचइं विविध-परि [3]पूजा देउ ॥२२८

कस्तूरी-[4]सिउं चंदन घनसार, धूप अगर-तणउ उपचार ।
नव नैवेद्य [5]अनइं आरती, करइ कंत-कारणि आरती ॥२२९॥

सवे समी रूडी रुद्राख, जपमाली-स्यूं जपइ सु लाख ।
नीम न चूकइ निश्चउ घणउ, [6]लय अखंड लीलावई-तणउ ॥२३०

[लीलावती-सखीमंडल-कृत गीत-नृत्य]

आपी वापिइं [7]सोहलो सही, सवे समाणी वय सोलही ।
तीणि अवसरि ते मांडइ [8]रंग, वाजइं गुहिरां मधुर मृदंग ॥२३१॥

---

१. टूंक २२४ थी २२६ 'आ'. मा नथी. २. 'करते' आ. ३. 'तेउ' आ. ४. 'धरल्ये' आ. ५. 'करइ' आ. ६. 'लिय खंड' आ. ७. 'साथिइ सोलसो वइं समाणी सवे.' आ. ८. 'संग' आ.

मूंगल भेरि तिवलि नइं ताल, वाजइ वंस [1]किरडि कंसाल।
रूपक राग रगि आलवइ, चतुर-तणां ते चित्त चालवइ ॥२३२॥

हुरतक हाव भाव बहु धरइ, नव नव पाडि पांगति करइ।
आपापणी कला [2]भूटवइ, जे तपि खरा तेहनइ खूटवइ ॥२३३॥

नाम भगति आणंदिउ ईश, वछित-दायक जे जगदीश।
तीणइं कांई कीउ उगाउ, जिणइं आगिउ ऊजेणी-राउ ॥२३४॥

[सूदा-प्रति सावलिंगी-प्रश्न]

सावलिंगि पूछइ पनि-रेमि, तुय पहुती प्रासाद-प्रवेमि।
जई प्रभु कारणि करइ प्रणाम, अबला [3]सवि आवरजी ताम ॥२३५

स्त्री एकली अनोपम रूप, ए काइ शिव-नगू सरूप ?।
दीसइ नही सखीय[4] न साथ,ते कारण जा णइ जगनाथ ! ॥२३६॥

कइ को नागलोकनी नारि ?, कइ को रूडी राजकु आरि ?।
कइ कहि अमरलोक ी एह ?, सवे मुहामणि पडिउ संदेह ॥२३७॥

[सावलिंगी-प्रति लीलावती-सखी-प्रश्न]

तीह-माँहि "साथिइ थई एक, जे [5]वूभइ वोलिवा विवेक।
पूछी वात विनय-सिउं नेणि,''कहु बहिनि ! दिसि आव्या केणि?''॥२३८

[सावलिंगी-उत्तर]

''आव्या दिसि ऊजेणी तणी'': राजकुमरि सा वाणी सुणी।

[लीलावती-ध्यानभंग]

सखेपइ शिव करी प्र णाम, लीलावई लाज छांडिउ ताम ॥२३९॥

---

१. 'करिडि' प्रा. २. 'प्रगटवइं' प्रा. ३. 'आश्रुजी' प्रा. ४ 'तम' प्रा. ५ 'ऊभी' प्रा. ६. 'ऊरखि' प्रा.

सार्वलिगि-सिउं सांई लिद्ध, बहु-मान मन-शुद्धिइं दिद्ध ।

[नीलावती-प्रश्न]

'बहिन' भणीनइ साही बांहिः"किम एकला पधार्यां ग्रांहि ?"॥२४०

[सार्वलिगी-वचन]

"नही एकला, ग्रछइ भल साथ, हूँ जुहारण ग्रावी जगनाथ ।
तुम्हे तुम्हारू कारण कहु, पाखलि ग्रबला ऊवर सिं रहु ? ॥२४१॥

राजकुंग्ररि कूंग्रारी ग्रजी, ग्रावी रानि राउलनइ तजी ।
कुण तम्ह माय बाप ? कुण ठाहि ?
कइ कारणि तू ईश ग्राराहि ?" ॥२४२॥

सार्वलिगि जउ [1]पूछइ सही, लीलावती तइं कारण कहइ ।

[लीलावती-वचन]

"गुहुर पथ मुझ पीहर वेडि, हूग्रा छः मास वसंता वेडि ॥२४३॥

(गाहा)

धग्वीर-[2]राउ धूग्रा, मुहमाले मुज्झ राउ नरवीरो ।
वर वीर सदयवच्छो, वह्लूं शिव-पुज्जिय ग्रयि सहीए ! ॥२४४॥

कलिजुगि [3]कामुक-तित्थो, परयतह [4]ग्रत्थसारए सयलो ।
खट माम ग्रवहि [5]ग्रग्गइ, मण-वञ्छिय दिइ माहेसो ॥२४५॥

(दूहा)

ते मूं ग्राज ग्रवद्धडी, पूगी [6]शिव पूजति ।
साँझ [7]समइ सूदउ मिलइ, कि [8]मूं मिलइ कियति" ॥२४६॥

---

१. 'राउ लर्गान' ग्रा. २. 'धीग्रा' ग्रा. ३. 'कामिक' ग्रा. ४. 'सारइ सयल लोयस्पा' ग्रा. ५. 'गमए' ग्रा. ६. 'सवि' ग्रा. ७. 'ञरद' ग्र. ८. 'मूं मिलइ उयंत' ग्र.

[सार्वलिगी-प्रश्न]

सार्वलिगि ते संभली, पूछइ [1]वयरा विसेस ।
"तइं किहि दिट्ठउ, किहि [2]सुरिगउ, सही ! ए सदय नरेस ?"॥२४७॥

[लीलावती-वचन]

"रायंगरिग राजा-तरगइ, बोलइं बंदिरा-वृंद ।
वीर-भरणी ते वन्नवइ, सही ! ए सदय नरिंद ॥२४८॥

वीर [3]माहारउ माउलउ, तात वदीतउ वीर ।
वीर भरणी सुरणउ वरू, कइ दवि दहूं शरीर ! ॥२४९॥

जिम जिम पारिग-ग्रहरा-नउ, अवसर जाइ अजुत्त ।
तिम तिम माय-ताइ-[4]नइ, चिंता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहू, वात विमासी एइ ।
बारू मारगस मोकली, बईठां बेटी देइ ॥२५१॥

कुमर किह्लारइं न आविसिइ, परणेवा परदेसि ।
तउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय रारगा भूमी भला, मागी रह्या महीस ।
माय बाप सहू बूभवी, सही ए सही न रीस[5] ॥२५३॥

तीरिग काररिग तप आदरिउ, मइं महेसर-पासि ।
पूरी ईस आसि अनेकनी, [6]परतु छट्ठइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमांहि अजुत्त ।
आवइ कोइ किह्लार ते, जे हुइ [7]पुण्य-पवित्त ॥२५५॥"

---

१. 'वली' आ. २. 'सांभल्यु' आ ३. 'मह्यारु' आ. ४. 'तनि' आ. ५. 'अ' मा दूंक २४३ नथी. ६. 'परता छठइ' आ. ७. 'पुनि' आ.

[सार्वलिगीं विमासण]

सार्वलिगि ते संभली, चित्ति चमक्कइ लग्ग ।
[1]सूदि जि सउण-विचार कीय, ते मूं परतखि पुग्ग ॥२५६॥

(चउपई)

लीलावतीइ कारण कहीय, सार्वलिगि ते संभलि रहीय ।
भ्रम चीतवइ अदीठइ भूप, सूदइं सहू संभलिउ सरूप ॥२५७॥
जाणी सूत्र तणूं जगदीस, सार्वलिगि तउ धूणिउं सीस ।
हर साहमूं जोईनइ हसी, लीलावती-नइं विमासण वसी ॥२५८॥

[लीलावती-प्रश्न]

"गोरी ! गुज्भ कहंतां कांइ, माथ धूणी मरक्यां कांइ ? ।
साचउ कहउ, सदाशिव आण, नहीतरि आहा आव्यां अप्रमाण"२५९
सूदइं सपथ दीजतउ सुणिउ, राजा-हृदइं बोल रुणझुणिउ ।

[सामली-विमासण]

सामली वली विमासण पडी, वहितां वाट सउकि सांपडी ! ॥२६०
एक अण-कहइं तउ एहनूं पाप, बीजउ वली सदाशिव शाप ।
रवि [2]ऊगइ जु विहाइ राति, तउ ए प्राण तजइ परभाति ॥२६१॥
आगइ एक माहरइ काजि, मस्तक ऊडविउं महाराजि ।
आ बीजी पग-बधण मानि, राजकुमरि प्रीउ पामिउ रानि ॥२६२॥
सार्वलिगि अति ऊतावली, अण-बोलतां हुई आकुली ।
लीलावतीइ [3]माडिउ लाग, ए मइं काइ पाडिउ पाग ? ॥२६३॥

[लीलावती-वचन]

"बाई ! कां [4]अण-बोल्यां रइउ, कांई जाणउ तउ कारण कहउ ।"

---

१. 'सूदइं सकन विचारियां', प्र. २. 'ऊगमणि विहाणी' प्र. ३. 'पाम्यु' या. ४. 'म म रइउ ? जु जाणइ', प्रा.

[सार्वलिगी-वचन]

"अबला जे तइं आराधिउ ईस, ते जाणे तूठउ जगदीश ॥२६४॥

वली म कांई पूछिसि पछइ, बहिनि ! बाहिरि ते ऊभउ अछइ" ।
[1]सार्वलिगि-सुवचन संभली, क्षामोदरी सवे खलभली ॥२६५॥

[लीलावती-सदयवत्स-दर्शन]

लीली-गई लीलावई नारि, आवी ऊभी देव-दुआरि ।
निय नयणइ नर निरखइ जाम, [2]किरि मूरतिमय ऊभउ काम!॥२६६

(गाहा)

[3]लीलावय सारिच्छा, समवडि लीलम्स रायहंसस्स ।
उअरि वेणी-दंडो, पुट्ठिवि सोहइ ए हारो ॥२६७॥

[4](दूहा)

"लज्जा संकटि दिट्ठ, प्रीय बोल सवणु न जाइ ।
लिउ रे नयणा ग्दिठ, ध्रउ, जा नवि अतरि थाइ" ॥२६८॥

(चउपई)

चनिउ सूदउ सहू सांभली, सार्वलिगि "साथि जई मिली ।

[सूदा प्रति सार्वलिगी-वचन]

भलउ भावि वीनविउ भूपः "स्वामी ! तुम्हि [6]सांभलउ स्वरूप॥२६९॥

ईश-सूत्र अवधारिउ आम, किहा ऊजेणी ? किहां आराम ? ।
कोधी वाड हूउ कूपसाउ, ते जाणि जगदीश-पसाउ ॥२७०॥

इम जावा जुगतू नही कंत !, आ वनितानउ सुणी वृत्तंत ।
एक हत्या, बीजउ हर-लोप, कहिता वात म करिसिउ कोप ॥२७१॥

---

१. 'लीला वतीइ' आ. २. 'जाण मूरित वंतुकाम' आ. ३. 'अहिली-बयण समरि सा, समवइ लीलमि राय हसस्स' आ. ४. टूंक १६८ 'अ' मां नथी. ५. 'सीकिइ' अ. ६. 'सांभलु' आ.

[सउकि (सपत्नी) विवरण]

आदि-[1]सकति कीधउ आग्रहउ, स्वामी ! सउकि किसी हुइ? कहउ ।
माखण-तणी महेसरि घडी, तीणइ तउ उमया वीर [2]बीगटी ॥२७२

खेडि मांहि अधिपति अधभाग, बेटा बंधव लखमी लाग ।
[3]सविहू-पाहिइ सपराणी सउकि, [4]वर वहिचवा चाली चउकि॥२७३

स्वामी ! कहिउं महारूं मानि, सिरजी सउकि [5]मिली मूं रानि ।
माहरी [6]काई म करउ लाज, अण-परणइ अनरथ हुइ आज ॥२७४

दिनि एकइं आगमि छः मासि, राणी राउ वीनविउ विमासि ।
कुमरि-तणू कारण जाणीइ, [7]अति आग्रहु मांडी आणीइ" ॥२७५॥

[धारापति(लीलावती-पिता)-चिंता]

राणी-वयण विमासइ राउ, पुत्रि-तणी प्रीछवण-उपाउ ।
सदयवच्छ नवि [8]जाणइ शुद्धि, कालि कुमरिनइ तपनी अवधि॥२७६॥

धारानयरि-राउ धरवीर, सभां बईठउ साहसधीर ।
मुधि पूछइ कुमरि-नइ काजिः 'कोई ऊजेणी आव्यउ आजि ? ॥२७७

लीलावतीइ लीधइ नीम, छमासि छइ थोडी सीम ।
"आणइ भवि अनेरउ [9]वरूं, कइ सूदउ कइ [10]जमहर करूं ॥२७८

फूत धतूरा धरणि पडइ, कइ महेसर-मस्तकि चडइ ।
त्रीजी गति नवि तीह लहीइ": तिम कुमरीइ हठ लीधउ हईइ ॥२७९

[बंदीजन-कथित सदयवत्स-समाचार]

राजा वयण सुणी तिणि वार, बंदिए एक करइ [11]जइकार ।
"हूं ऊजेणी आविउ आज, सूदा-मुधि साभलि महाराज ! ॥ ८०॥

---

१. 'शकनि लीधु' आ. २. 'चोघटी' अ. ३. 'सिवहू ' आ. ४. 'वर विहंचावइ ताडीउकि' अ. ५. 'वली' आ. ६. 'काई करसि' ? आ. ७. 'आग्रह करीनइ आंहा' आ. ८. 'संधि' आ. ९. 'वरुइ' अ. १०. 'साहस करू' अ. ११.'करवार' अ.

(दूहा)

ऊजेणी [1]अमरापुरी, अन्तर नहीं नरिंद ।
ऊजेणी पहुवच्छ [2]पहु, अमराबतीइं इंद ॥ २८१॥

इन्द्र-तणा आसण जिसिउ, मयमत्तउ मच्छराल ।
[3]सूदइ सोइ हत्थी हणिउ, [4]कज्झिहि बंभणि-बाल ॥२८२॥

ते पेखवि [5]हरख्यु हईइ, कीयउ पुत्त-पसाउ ।
मुहत्तइ मत जि [6]उद्दिसिउ, तिणि रोसाविउ राउ ॥२८३॥

सुद्द ति न रहिउ सासही, राजा रोस बहुत्त ।
ऊजेणी [7]ऊजड करी, वीर विदेसि पहुत्त ॥२८४

चउकि चुहट्टइ जूवटइ, हूंतु वीर जूआर ।
नित नित मग्गणि मग्गीइ, [8]जिहि मुंहि नही नक्कार ॥२८५॥

अम्ह सरीखा [9]अनेकि नर,-पाखलि पंखी बहुत्त ।
[10]ते सीदाता सदय-विण, ऊडी गया अनत ! ॥२८६॥

[सदयवत्स-गुणप्रशंसा]

[11](छप्पय)

राय [12]कलां नल भूप, रूपि कदप्प-सरिच्छो ।
[13]वाचि जुधिष्ठिर राउ, साचि गागेय परिच्छो ॥

प्राणि जिसिउ भड भीम, माणि बीजु दुज्जोहण ।
दानि कन्न अवतर्यंउ, बाणि अज्जुण [14]वइरोहण ॥

१. 'अमरावती' अ. २. 'छइ' आ ३. 'सूद्दि य् ज्जि' अ. ४. 'बंभणि-केरी बाल' अ. ५. 'पुहुवच्छ पहु' अ. ६. 'आठविउ' आ. ७. 'उज्जेअ' अ. ८. 'नहु जपइ' अ. ९. 'तीणइ नयरि' आ. १०. 'सीदाइ' आ. ११. 'सटपद' अ. १२. 'कुआगम भूप' आ. १३ 'वचनि' आ. १४. 'रिउ वीरत्ति' अ.

[1]खित्ति साहसि सुयसि, लीला मंगि मणुपमो।
इत्तिय गुणि पहुवच्छ-[2]सूनु, [3]न कोइ सुभट सूदा समो" ॥२८७

[धारापति-प्रश्न]

(दूहा)

[4]रा पूछइ : "सुणि बंदीयण ! कुण दिसि कुमर पहुत्त ?"।

[बंदीजन वचन]

[5]"उत्तर ऊजेणी- थिको, गिउ सामलि-संजुत्त" ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चिंतइ, भूप चिंतइ, निय मन-माँहि :।
"ए [6]काई कारण शिव-तणू, सूदा प्रति जे राउ रूठउ।
[7]कामुककुल जगि जाणीइ, लीलावई[8] जि तूठउ।
वयणि विमासी चालीउ, राजा लोक-सिउं राउ।
उच्छव ईसर-मंगणइ, संपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चउपई)

[9]लीला सूदउ सामलि संचरइ, वनिता सवे विमासण करइ।
[10]का जाई ? माठवइं उपाउ, तां राणी-सिउं [11]पुहुतउ राउ॥२९०
कोलाहल कीधउ कामिणी, बिइ वड़ वाहगि वद्धामणीः।

[सदयवत्स-वधामणी]

"अवसरि भलइं पधार्या आज, कूंअरि-तणां हिव सरियां काज२९१

१. 'कीरति साहस सिद्धि, जस लीला वयण' मा. २. 'तणु' म.
३. 'कोइतेहं सुभट सूदा समउ' मा. ४. 'पहु पूछइ; कहि' म. ५. 'का वालिउ ऊजेणी ! कथ जु' मा. ६. 'काईम परम तणउ क्षत्त, पुत्त पुहुवच्छ रूसइ' म. ७. 'कामिक लिगजु' म. ८. 'लावइ तुठो' म. ९. 'सा' म.
१०. 'वां काई' मा. ११.'मावित' मा.

जस [1]काजि तप तप्पउ छमास, ते परमेसरि [2]पूरी आस।
"स्वामी! दिसि आणी अवधारि, [3]आ सूदउ नइ सामलि नारि॥२६२॥

[धारापति आगमन]

माहेसर प्रति करी प्रणाम, रा चंचलि चडी चमक्कयउ ताम।
पूठउ-थिकउ [4]परि-थिउ सहू पूलिउ, "सूदानइ जई सीकिइ मिळ्यउ॥२६३॥

[बारहट्ट-वचन]

बारहट्ट बोलाविउ वीर: "सांभलि सूदा! साहसधीर!।
ऊभउ रहउ, अवधारि सरूप, तूं भेटेवा आवइ छइ भूप" ॥२६४॥

बदिण तउ बोलाविउ जाम, पय नचीनइ [5]रहिउ ताम।
आ राजा छाडी रेवंत, साई [6]दीधू सामलि-कंत ॥२६५॥

[लीलावती-पिता स्नेह-वचन]

सावलिगि नइ नामइ सीस, 'पुत्रि'-भणी [7]बोलावइ पुहवीस।
"माई महासति जे आगिली, ते तू अ भगतिइं दीसइ भली" ॥२६६॥

बारू वृक्ष एकनी छाह, [10]राउ सूदु बै बईठा तांह।
ऊजेणी- अधिपतिनइं आधि, सदय-[11]भेटिइं हुई समाधि॥२६७॥

[सदयवत्स विचित्र प्रश्न]

"ऊजेणी वसुधा विख्यात, सूदा नामि [12]अछइं सइ सात।
अण-ओलखिइ म आदर करउ, वात विमासी बांहइ धरउ॥२६८॥

ते किम [13]इम एकलउ भमइ?, ते किम पालउ पथि अवगमइ?।
तू धारा-नयरी-नायक, हुं पाघरउ अछउ पायक!" ॥२६९॥

---

१. 'कामिनो जि तप नप्पु' आ. २. 'पूगी' आ. ३. 'आ' आ. ४. 'बहु परि थ्यु पछइ' आ. ५. 'सूदा-केडि जइनइ मिलइ' ६. 'जोइ' अ. ७. 'लीधु' अ. ८. 'ते दिइ आसीस' आ. ९. 'तइ दीठइ' भावइ' आ. १०. 'राजा बेहु० प.११. 'दीठइ'' आ. १२. 'बसइ'' आ. १३. 'एकला वनमाहि' प.

[बारहट्ट-प्रवेश । परिचय-निवेदन]

(दूहा)

बारहट्टि [1]इरिगइ अवसरि, बंदियरग बोलिउ इम्म : ।
"सूद! [2]ति सहू अम्हि संभलिउ, तूं अ राउ रूठउ जिम्म ॥३००
ऊजेरगी-अधिपत्ति तूं, आ धारा-[3]धरवीर ।
मेलउ माहेसरि कीउ, छंडि विमासरग वीर!" ॥३०१॥

बंदिरिग-केरइ बोलडे, वसिउ सूद संकेत ।
परण्या पाखइ न छूटीइ, ए सहूइ हर-हेत! ॥३०२॥

[4]मिउरग समत्थि म अवगराइ, सूदइ सा महिलाउ ।
सार्वलिगि साधिइं सती, [5]तेह मुहु रक्खइ राउ ॥३०३॥

[लीलावती गुण-वर्णन]

(गाथा)

नर नारि सार परिवारे, पक्खलि [6]मिलिय नरिंद नर खंते ।
लीलावई लावण्य-वयरिग, न वुली बोलीय बलिहार मज्झम्मि ॥३०४॥

अह लीलावई नामं, लीला-गई रायहंसस्स ।
उयरि बेरगी पडिबिंबं, पुट्ठीय पडिबिंबिउ हारो ॥३०५॥

[7]शिव जोग समे उपवासत्त, ये मज्झि-रयगि सर-मज्झे ।
जल-केलि-करणं मुक्कं, [8]नीरस तरूइ नील पंगुरणं ॥३०६॥

तह पंगुरण-प्रभावे पल्लवियउ, सुक्क तरूअर तिवारो ।
तिरिग [9]पल्लवेरग पुज्जिय शिव, वच्छंति सदय भत्तारो ॥३०७॥

---

१. 'तेरगइ' प्रा. २. 'तुम्हें सहू मांभलिउ' प्रा. ३. 'नयरी धरि' प्र.
४. 'सूअण सवे मइं अवगण्या, सूदु अछइ सामइ' प्रा. ५. 'तेणइ' प्र.
६. 'तेह मरा जेहिमि' प्र. ७. 'शिव-योग उपवास समइ, पय-मझि' प्रा.
८. 'नी सस्य तरवि' प्रा. ९. तिणि पूजिसि, शिव-कठिनू' प्रा.

[1]मउडद्वय मंडलीया, भूपाला सकल सूर सामंता।
ते [2]अवगणिय आणाआ, लीलावय लग्ग लग्न सुद्दे ॥३०८॥
[3]अधिपति अधिकारी सावि, सेणाहिव बारहट्ट बहु बंभो।
पाणे पाणि-ग्रहणं किद्ध, सरिस सुदयवच्छस्स ॥३०९॥

[सदयवत्स लीलावती-पाणिग्रहण]

(वस्तु)

राउ [4]रिज्झउ, राउ रिज्झउ, सिद्ध स हि कज्ज।
[5]सयल लोक आणंदीउ, बंदीजण सुयस तस बोलइ।
विप्र वेद-झुणि ऊचरइं, हसगमणि हरखंति बोलइ।
ताडीय चउरा चंग तिहि, बिहु राजा रहि आवासि।
अघ-दल-सिउं अधिकारीउ, [6]मूंकिउ सूदा पासि ॥३१०॥
ताम [7]चल्लिउ, ताम चल्लिउ, मिलवि मनरंगि।
[8]राजासिउं राणी सवे, कुमरि-माई घरवीर-घरणि।
लीलावई-वर जोइवा, सावलिंगि-सिउं भेट-करणि॥
सदयवच्छि प्रमदा सविहु, कीधउ एक प्रणाम।
सांई देई सामलि-तणा, [9]बोलइ बहु गुण-ग्राम ॥३११॥

[सामली रूप-वर्णन]

(षट्पद)

आगइ अहर रस-रत्त, अनइ अहर विलासीय।
आगइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहिं कलासीय॥

---

१. 'मडा पा' आ. २. 'अवणीय प्रागप नथी' आ. ३. 'आ मां आ शब्द नथी. ४. 'रूठउ सिद्धि सह' आ. ५. 'हिइ महेसरसि मम्मिउ, कंत जि लीलावतीय लघु ततखि तीण दिणि तुरित लगन लेउ दिल करण किद्धउ' अ. ६. 'मेल्हिउ' ७. 'वलीय' आ. ८. 'राजा एसिइं' अ. ९. 'ते बोलइ गुणग्राम' अ.

आगइ थणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय ।
आगइ काम गायम धारि, अनइ झंझरि झमकारीय ॥
आगइ काम कीय कामिनी, अनइ वंस तन सि ऊजली ।
पहुवच्छ-तणउ भमर रंगि रसि,इसी नारि सूदा मिलो[1]॥३१२॥

[सार्वलिगा-सत्कार]

(चउपई)

आसणि बईसणि आदर बहू, [2]सार्वलिगि संतोसिउ सहू ।
बीडा आपइ आपण हाथि, जे घणि आवी धारणि साथि ॥३१३॥

साविलिगि सनमानी राइं, राणी सवि रलीयाइति थाई ।
ऊठी अबला आयस मागि, संतोषी सामलि सोहागि ॥३१४॥

चाली चद्रवदनि चमकंत, [3]किरि कदर्प लीलावई कंत ।
राजकुमारि रूपिइं रति-जिसी, सार्वलिगि सविहू -मनि वसी ॥३१५॥

[लग्न-निमित्त मिष्टान्न भोजन]

चडी कडाहि गमि बहु वहु, आदर-सिउं आरोगिउं सहू ।
लगनवार लीलावई-रेसि, सदयवत्स वर भरीइ सेसि ॥३१६॥

[वर-तुरग प्रशस्ति]

(राग : धउल धनासी)

आसण-तणउ अणाविउ ए ।
नरवरिइं तरल तुरंग, ए सखी ! ।

साहण-पति पल्लाणविउ ए, [4]पलाणि पवंग ।
तीणइ वरराउ चडाविउ ए ॥३१७॥

१.'टूंक ३१२ प्रमां' नथी.२. 'लीलवइ' आ. ३. 'काम त्रिस्यु' आ.
४. 'प्रति मानहर' आ.

(छंद चामर, त्रिताल)

चडंति खेवि जे जडंति, ते तुरंग आणीउ ।
जे [1]सुद्ध खित्त सालिहुत्त, लक्षणे वखाणिउ ॥
पायालि हुंति [2]कीग्रयउ, हो मदीय [3]आसणे ।
सोहति सदयवत्स वीर, ते तुरग आसणे ॥३१८॥

[4](धउल)

चिहुं दिसि च्यारि चमर ढलइ ए-आ-आ ।
सिरवरि ए सोहइ छत्र, विप्र वेय-धुनि उच्चरइ ए-आ आ ॥
आगलि ए, नाचइ नानाविध पात्र ।
बहु बंदिएा कलरव करइ ए ॥३१९॥

(छद चामर, त्रिताल)

करंति बंदिएा अणिक्क, मंगलिक्क मालयं ।
बिचित्त त्रित्ति, पत्त पाउ, राग रग तालयं ॥
चडी तुरंगि, चगी अ गि, [5]च्यार सु दरी रसे ।
ति चालवति, नारि च्यारि, चामरं चिहु [6]दिसे ॥३२०॥

[वर-यात्रा धवलगीत-वर्णन]

[7](धउल)

वर आगलि-थिउ संचरइ ए-आ आ ।
राएा ले ए सरिसउ राउ, पायदल पार न पामीइ ए-आ आ ॥

---

१. 'सिद्धि खित्ति' आ. २. 'पयाकिउ' आ. ३. 'मदीइ सासणे' आ. ४. 'संखिर सोहइ छत्र अलंब कि चिहुंदिसिच्यारि चमर ढलइ ए। बदियण कलिरव करइं बहूत, कि अगलि यात्रा नाटक करइ' ॥ ५. 'त्रिवारि सारि सुंदरी,' आ. ६. 'दिसि किंनिरी' ॥ ७. 'वर आगलि थिउ चालइ ए राउ कि पयदल पार न पामीइ, ए। ततखिण वस्तु नीसाण जे घाउ, कि हिइ हीसइ गज सारसी ए ॥' अ.

वालीय जउ ए नीसाण जे घाउ ।
हय दीसइं गयराय सारसी ए-म्रा म्रा ॥१२१॥

(छंद चामर, त्रिताल)

[1]करंति सारसी गइंद, सूडि-दंडि डंबरं ।
नीसाण [2]वाउ, ढक्क घाउ, ढोल वज्जइं अंबरं ॥
अवित वाउ, [3]दिन्न राउ, वेगि वावरइ करो ।
[4]प्रेमि सदयवच्छ वीर, संपत्त तोरणइ वरो ॥३२२॥

(धवल)

गय-गामिणि गुण वन्नवइ ए-म्रा म्रा ।
ससिमुखीय सुकोमल महमहइ ए ॥
करइ सिणगार, हार एकाउलि उरि ठवइ ए ।
कंकण कुंडल झलहलइ ए ॥३२३॥

(छंद चामर)

नरिन्द इंद मत्त लोय, लोय-मज्झि [5]सोहिइ ।
अदिट्ठ दिट्ठ माणिणी, [6]मणंत रंगि मोहिइ ॥
भवानि-पत्ति-पाय-भत्ति, कंत लद्ध कामिनी ।
ति [6]सूद वीर, वन्नवति, [7]गेलि गयंद-गामिणी ॥३२४॥

(धवल)

कंद्रप ए समउ कुमार, अहिणवउ इंद नरिंदवरो ए ।
सेसि भरंति कुमार, सदयवछो शृंगार करंति ॥
हरसिद्धि-भत्ति विप्र, वेदधुनि उच्चरइ ए ॥३२५॥

---

१. 'हय गय हीसइ सारसी कहि,' मा. २. 'ढोल ढक्का धाउ हूआ जाव अंबरं' अ. ३. 'दितिराउ' अ. ४. 'इणि परि सदयवध वीर, संपत्त हरिसी-तणो वरो' मा. ५. 'मन्न रंगि' अ. ६. 'ते सूद वीर' मा. ७. गेलिइ चायबर भाविनी' मा.

[1](मौक्तिकदाम छंद तत: कुंडलिउ)

पउमिणि हस्तिनि, चित्रिणि दारा, संखिणि सारइ किद्ध सिंगारा।
रति-पति रंगि, मिलवि सहि रामा, पेखिवि सदयवत्स वरकामा ३२६

जे काम-नरिंद-तणइ दलि सारा, गमइ मत्त पयोहर-भारा।
जे हेलि सा गिहिल्लि [2]चलइ चमकंति,ते सुद्द नरिंद स्यूं रंगि रमंति३२७

जे नेय भय-दिट्ठ कि तद्द कुरंगि, [3]यत्त सरेह सुनेह सुरंगी।
जे अपकि चंदनि अंगि गमंति, ते [4]सुद्द नरिंद-स्यूं रंगि रमंती ३२८

करइं नित मानिनी आणणि सोह,जे जाणि जुवाण तणइ मनि मोह।
जे पत्ति उरत्थलि नारि नमति, ते सुद्द नरिंद स्यूं रंगि रमंति।३२९

[5]ठवइ उरि हार कि तारय-श्रेणि, ढलति नितंब प्रलंबित श्रोणि।
जे तारुणि आरुणि नित्त घुमंति, ते सुद्द नरिंद-स्यूं रंगि रमति ३३०

[लीलावती सखी-विनोद]

(षट्पद)

"हे सही ! कहि कुण कज्जि, अज्ज उल्हास अंगि बहु ? ।
[6]कुंकुमि कज्जलि कणय-कुसुमि, सिंगार किद्ध सहु ॥
भरीय सेसि सीमंत, [7]कंत कंदर्प रायवरि ।
गुडीउ साहण मयमत्त, नित्त सरि सज्ज कि [8]उपरि ॥
माणिसि मयंक मधु-रति मधुप, [9]पहुवच्छ-तनय मुज्झ मनि वसिउ।
उल्हवण अनल[10]न कित्तु रयणि, सदयवच्छ सुखनिहि जिसिउ ३३१

अग्गइ [11]अहरा रत्त, अनइ वलि विलासीय,
अग्गइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहिं कलासीय,

१. 'मौक्तिक कुंडलिउ' प्रा. २. 'वलइ' प्रा. ३. 'जेउप्प' प्र. ४. 'ति सुदव वत्स सिउ रंगि रमंति' प्रा. ५. 'दिइ' प्रा. ६. जे तुरणी निच्छइ हरमंति' प्रा. ७. 'कुमरिति' प्रा. ८. 'कंत ठंक परिय' प्रा. ९. 'सपरि' प्रा. १०. 'पुहर मनि सनूककसु ११. 'न कितु रणमरि' प्रा.

अग्गइ [1]थगहुर थोर, अनइ हाराउलि भारोय,
अग्गइ गय मंधारि, अनइ [2]नेउर झंकारीय,
अग्गइ कामुकीय कामिनी, अनइ [3]वसंत निमि उज्जली ।
पहुवच्छ-तणउ भमर रगि रसि, [4]इसी नारि सूदा मिनो॥३३२॥

[लीलावती वरप्राप्ति-धन्यता]

[दूहा]

लीलावई मनि चीतवइः "ईसरि किउ पसाउ ।
ऊजेणी-थिउ आणिउ, सदयवत्स पहु-जाउ ॥ ३३३[5]॥
जस कारणि मइं एकली, तप कियउ छः मासि ।
ते आशा [6]मुझ पूरवो, सामी लील-विलासि ॥३३४॥
हारि दोरि ककणि-हिं, सयल शृंगार किद्ध ।
लीलावई मन रंगि [7]रसि, सदयवच्छ कर लिद्ध ॥३३५

[चतुर मंगल]

राय पखालइ पाय वर, सासू सेसि भरंति ।
विप्प अनइ वनिता सवे, मंगल चार करति ॥३३६

(छंद पद्धडी)

मंगल चार करंति, हत्थ लेई [8]हत्थे लावउ,
अंतरपट उद्धरीय, किद्ध बिहु कर-मेलावउ ।
संझ सूर स जोई, नारि वर नयणि निहालइ,
करइ सुकवि कइवार, राय वर-पाय पखालइ ॥३३७॥

---

१. 'सिहण सुथोर' अ. २. 'झंझरि' आ. ३. 'वसंत-निसि' अ. ४. 'अनइ सवर सुदा मिली' अ ५ टूंक ३३३ 'आ' मां नथी. ६. 'पूरी हुई' आ. ७. 'पुहती वस्मंडपि तिहिं' अ. ८ 'अथवालउ' आ. ।

(वस्तु)

नारि लद्धौ, नारि लद्धौ, नाह नव रंग ।
नारी लद्धी नवल, अमर वेगि[1]आ हस्ति पामीय ।
अध [2]संपत्ति अध रज्जस्युं, दिद्ध उदक सइहत्थि स्वामीय ॥
[3]वीर वली चिंता बहु, जिमजिम व्याहइ राति ।
हेम घणं हरसिद्धि भणइ, पुरिस [4]पुत्र प्रभाति ॥३३८॥

[विवाह-कुलाचार]

(चउपई)

[5]जउ मनरंगि विहाणी राति, दातण करइ कुंअर परभाति ।
तां [6]साला सवि आव्या सार, पुण्यवंतना पुत्र अपार ॥३३९॥
[7]तीणइं ते ऊजेणी-धणी, बोला विउ 'बहिनेवी'-भणी ।
शिर नामी बईठा सुविचार, ऊगम लगइ[8] जिके जूआर ॥३४०॥

[द्यूत क्रीडा]

सदयवच्छ सविहूं दिइ मान, प्रीति-सरिसां आपइ पान ।
[9]तीणइ मेल्ही पूंजी पड मांहि, जूअ मागइं सवि सूदा-पाहिं ॥४४१॥
ते बोलइं : "सूदा ! सुणि वात, करी सूथ अम्ह-स्यूं रमि रात ।
भूइं आपणी भलउ सहु कोइ,[10] पडि पियारी दुहिली होइ ॥३४२॥
सदयवच्छ लहुडपण सीम, जू आव्या [11] तां भणिवा नीम ।
रमिवा-[12]मसि असिवर ऊडवइ, हस्या[13]वीर कलकलिया सवइ ।३४३

१. 'आहुत्ति' आ. २. 'संपतिसु तस जुगत्त उदक दिउ' आ. ३. 'वीरवर' अ. ४. 'पत्र' आ. ५. 'भलइ भावि जागीउ जूआर, दातण करवा काजि कुंआर' आ. ६.'साला स्युं' अ. ७'.उत्त हे ऊजेणीनु धणी' आ. ८. 'खेलुउ'' अ. ९. 'जण मेली बईठउ' आ. १० 'पडह' आ. ११. 'तइं कहिवा' आ. १२. 'रसि' अ. १३. 'चीतिवउ बलीया' अ.

लिउ हथीआर हरावी सही, सूथ पाखइ [1]न [2]रमाडइ सही ।
गांठइ गरब न हाटि निखेव, सूदउ वीर मनावउ सेव ॥३४४॥

[हरसिद्धि दत्त-वर द्यूत-जय]

सदयवच्छि समरी हरसिद्धि, रामति-मिसि लूसी लिइ रिद्धि ।
पाडिउं [3]पइत [4]पहिलइ दाणि, साला हासारथ नइ हाणि ॥३४५॥

लीधा लाख हरावी हेम, ए ऊखाणउ साचउ एम ।
"[5]ग्या अन्य काजि, अनेरू थाइ, ते घाठी कहि कहिवा जाइ? ॥३४६॥

सालाने वानइं ते वांठि, [6]बहिनेवी ते बाधीउ गांठि ।
[7]ऊठ्या सवे ऊतारा भणी, अड पसरावी सूदा-तणी ॥३४७।

[सदयवत्सकृत द्यूतद्रव्य-दान]

राजा-नइ घरि जाणि जंग, मागणहार-तणइ मनि रंग ।
सदयवच्छि वरि माडिउ करण, हाथ ओडावी अढारइ वरण॥३४८॥

बारहट्ट पुरोहित पढीआर, [8]सूदा सामलि ? [9]भलाव्या सार ।
तिंह मन-शुद्धिइं दीधू मान, जुगता-जुगति दिवारउ दान ॥३४९॥

छः दरसण पाखंड छन्नवइ, [10]दानि मानि मागण रंजवइ ।
आपइ सविहूं काजि सुवर्ण, किरि अहिणवउ अवतरिउ कर्ण ॥३५०

[11]राज मानि माणस अति बहू, आपी अरथ संतोसिउ सहू ।
सूदउ वीर पडावइ नाद, [12]अढार वरण दिइ आसिर्वाद ॥३५१॥

पहिलूं [13]मोकलावी महेस, तउ ससरा प्रति-[14]गिउ नरेस ।
आयस मागी ऊभउ रहइ, ससरउ सदयवच्छ-प्रति कहइ : ॥३५२॥

---

१. 'रमांडुं नही' आ. २. 'मनायु' आ. ३. 'जइत' अ. ४. 'चिहुं' आ. ५. 'गणि कांउ नइ' आ. ६. 'तु पूजी पूंजी बाधिउ गांठि' आ. ७. 'लेई राजा' आ. ८. 'सूद वाल' अ. ९. 'तोडाव्या सुविचार' अ. १०. 'मानिइं मागण-मन' अ. ११. 'राज माहि' अ. १२. छः दरसण घरि पासि वदि' आ. १३. 'जई मोकलावइ ईस' आ. १४. 'नामइ सीस' आ.

[लीलावती पिता-धारापति वचन]

"ऊजेणी-अधिपति ! अवधारि, [1]पसाउ करी अम्ह नयरि पधारि ।
भोगवि अव-संपति अध राज, [2]मागि जि काई जोईइ काज ॥३५३

दे उर बहु कीधु-देव !, तुम्ह जावा जुगतूं नही हेव ।
आगइ एक नारिनउ साथ, बीजी- सिउं हिव बाध्यु हाथ" ॥३५४॥

[सूदा-वचन]

सूदु ससरा आगलि साच, बोलइ बोल ते ब्रह्मा-वाच : ।
"लीलावती नइ माथिइं लेगु, सामलि पोहरि पुहुचाडिसु ॥३५५॥

करीय रहण पहिलूं परदेसि, तउ [3]आणिसु अबला बिहु रेसि ।
जउ सासरइ रहूं सुख-भणी, तउ [4]लाजइ ऊजेणी-धणी ॥३५६॥"

[कवि-वचन]

जिणइ-तात तणइ अधबोल, छांडीउ राज करी तृण तोल ।
ते किम सूदउ सासरइ रहइ ?, सामलि-सरिसउ मारगि वहइ॥३५७

[प्रयाण]

बूल्या परवत विसमा घाट, आगलि इंद्र-वाहण-नउ थाट ।
वाघ सिंघ वानर वनि मिलइ, देखी वीर सुभट खलभलइ ॥३५८॥

मुपुरिस नसीह नामइ सयर, ते-प्रति दीध हरसिद्धिनु वर ।
मधुरइ सादिइं मोर कीगाइं, बावन-ना वध ढीला थाइं ॥३५९॥

[गाढ़ अरण्य-प्रवेश]

आगलि अनोपम अति कांतार, काठ-समुद्र न लाभइ पार ।
नवि जाणीय सवार असूर, वनमांहि पइसी न सकइ सूर ॥ ३६०॥

---

१. 'मया' प्रा. २. 'मागिन देव' प्रा. ३. 'प्राबिहु प्रबला' प्रा.
४. 'अम बाइ' प्रा.

पुहुतु वीर ते बन-मझारि, गाढइ करि करि साही नारि।
"स्वामी ! घोर अंधार अवधारि", विण वावी तिहां पाँचइ सालि३६१

संपत्त धान खडधान अपार, पंखि जाति नवि लाभइ पार।
मूडा नइ सालीही गहिगहइं, अढार भार वन देखो मन रहइं। ३६२

सजलि सरोवरि झीलइ हंस, परवत पाखिलि अति बहु वंस।
वंस घसाघस परवत जलइ, नई नीझरण गिरि-हि ऊतरइ ।।३६३।।

तिणि नीरि उन्हाइ आगि, गज बे मडन्नि जई लागी धागि।
केलि करमदा दाडिम द्राख, नालिकेरि लींबूइ-ना लाख ।।३६४।।

[चक्रवाकी प्रति-सार्वलिगा-अन्योक्ति]

वासु वीर नीर-तटि रहिउ, सामलि सूदु बोलावीउ :।
"स्वामी ! आ साविज अवधारि, कांठइ बईठां करइ पोकार ।।३६५

च्यारि पुहर चक्रवाक इम रडइ, जाणे पाटणि पुहरा पडइ।
विहस्या कमल, विहाणी राति, प्रीति प्रीय पामिउ परभाति ।।३६६।।

मासइ पडयाँ ते साहमू जोइ, सार्वलिगि मुख दीठउ रोइ।

(उपजाति)

विलोक्य बाला मुख चन्द्र-बिबं। कंठे च मुक्ता-मणि-हार तारं।
पुनर्निशा विभ्रम-भीति हेति। सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी ।।३६७।।

(चउपइ)

मूंकिउ नयर सहीं निटोल, मूकिउ वन ते बोलइ बोल ।।३६८।।

[द्यूतकार-स्वरश्रवण]

जां अवगमइ पंथ अति घणउ, तां सुर सुणिउ जूआरी-तणउ।
हाथ-मांहिल्या हीरा सोइ, एक भणइः "ए जीता जोईइ" ।।३६९।।

बहु दिसि नयणइ निरखइ वाट, सुणिउ सुरग मांहि गहिगाट ।
गिरिवर-तलि वन गहन मझारि, गुरुई शिला दीठी गुफा-बारि ॥३७०

[सपत्नीक सदयवत्स-गुफाद्वार-प्रवेश]

शिला ऊघाडी साहसघीर, पइठउ विवर-मांहि वड वीर ।
गरव करइं गहिला केतला, भला माहि भड भेटइ भला ॥३७१॥

ते पाँचइ आलोचिउं ईम, "शिला ऊघाडी आविउ किम ? ।
नारी सरिसउ [1]नर वइरानि, एहू नर कोइ नही समानि ॥३७२ ॥

एक सूथ छइ नारी साथि, [2]बीजूं असिवर दीसइ हाथि ।
पांचे बईसारिउ पड-माँहि, रमि राउ [3]तूं जूउ रमिवा आहि" ३७३॥

[सूडा-वचन]

सूदउ सइं हथि काढइ मूंठि, गरव-वचन तिहां बोल्लिउ गूढि ।
"राउत ! ए पड न जाणि, शिर ओडी नइ रमूं सुजाण !" ॥३७४

[धूत-पट उपरि-सूदा-विजय]

वीर-वचनि [4]राउत-मनि रीस, समरो सकती ऊडवीउं सीस ।
पडु[5]पाडिउं पहिल्लइ दाणि, एक-तणूं शिर जीतूं जाणि ॥३७५॥

इणि परि ते जीतां शिर पंच, पावे वीरे रचिउ प्रपंच ।
आपी [6]कुमर कटारी काढि, "स्वामी [7]सइ हथि माथा वाढि" ३७६

[सदयवत्स-वचन]

[8]"जे तम्ह-तणइ वासि वीसमिउ, जे [9]तम्ह-सिउ हूं रामति रमिउ ।
तिह शिर[10] [11]वाढण किम कर वहइ?"सदयवच्छ[1] [1]सविहूँ प्रति कहइ३७७

---

१. 'हीडइ रानि' आ। २. 'असिमर उभ्रण' आ. ३. 'ते जउत' आ. ४. 'सूदा' आ. ५. 'पयता जे' आ. ६. 'करि' आ. ७. 'सि-हथि मस्तक' आ. ८. 'जे जे भह्म-तणइ' आ. ९. 'भह्म सरिसु' आ १०. 'सारण' आ. ११. 'वीरह' आ.

तउ ते पाँचइ लागा पागि: "स्वामि ! जि कांई जाण ति मागि ।
[1]"सरव शिर ए माहरू सहू" :सूदु भणइ "सिउं बोल्यउं बहु"? ३७८

[2]सामलि-नइं सिर नामइ सवे, [3]सा अम्ह सेवक-भणी लेखवे ।
जां परि करइ परगणा तणी, तां ऊठिउ ऊजेणी-धणी ॥३७९॥

पीधूं वीर न पाणी पली, काढी कोडि-तणी कांचली ।
पांली-सिउं गाढी गोपवी, खेडा-तणइ बोलीइ ठवी ॥३८०॥

[द्यूतकार वृत्तांत-पृच्छा]

[4]सरधत एक बि लीधा साथि, पिरि सघली पूछी नरनाथि : ।
"नाम ठाम [5]कुल कारण कहउ, रानमाहि कुण कारणि रहु?"॥३८१

[6]ते बोलइः "सूदा ! सुणि वात, घोर अंधारि घणां घर [7]घात ।
निशि [8]निरंतरि चोरी भमूं, मघलउ दीस [9]गुफामाहि रमूं"॥३८२॥

[चोर प्रति समभाव]

सूदइं सहू प्रीछिउं सरूप, 'भाई'-भणी रहावइ भूप ।
ग्रास न कांई देसि देव, [10]साथिइं थिका अम्हि करिसिउ सेव ॥३८३

रहाव्या पुरुष ते मोटइ प्राणि, सामीय ! [11]आ शिर ताहरां जाणि
'सेवक'-भणी ग्रह्य करिजो सार, समरे संकटि वार किव्हार"॥३८४॥

रहिया वीर, राजा संचरिउ, साहसि जसि परवरिसि परवरिउ ।
चालइ सावलिगि नीचालि, तु देखइ परवत नइ पालि ॥३८५॥

---

१ "शिर सरवसु ताहरां सहू" सूदय भणइः "मम बोलु बहू"? म.
२. 'सावलिगि' मा. ३. 'माता पुत्र भणी' मा. ४. 'सरघता बि' मा. ५. 'कुण मा. ६. 'मजउ ममउ सूली से बाल' म. ७. 'काल' प. ८. 'नयरंतरि' म. ९ 'ईणि गुफि' म. १०. 'साथि मा तह्म' मा. ११. 'ए' म.

[पर्वत-प्राकार प्रवेश]

परवत-शिरि पोढउ प्राकार, जस कमाड कोसीसां पार।
दीसइं हट्ट, धवलगृह श्रेणि, रा मंदिरि जई [1]रहिसु तेणि ॥३८६॥

[अनाथ स्त्री रुदन-श्रवण]

(दूहा)

राती रोम्र ती सांभली, नीधणीआई नारि।
सूदइ सा पूछी विगति, धणि [2]धावल-हर मझारि ॥३८७॥

पूछी तां प्रमदा कहइः "[3]सांभलि साहसधीर !।
हूँ निधि नंद नरिंदनी, सूद्द ! विलसजे वीर" ॥३८८॥

[नंद नरेन्द्र-निधि दर्शन]

सार्वलिगि नवि संभलइ, नारी निद्रा लिद्ध।
सदयवच्छ [4]रवि ऊगमणि, पेखीय सयल [5]समृद्धि ॥३८६॥

धण मणि मुत्ताहल रयण, हीरा हेम अपार।
अवलोई सूद्र सहू, उरी दिद्ध [6]दूआर ॥३६०॥

[निर्लोभी सदयवत्स]

बलि बाकल पूजा पखइ, लच्छि न लीधी हत्थि।
दीठी अण-दीठि करी, [7]संपय मूकी समत्थि ॥३६१॥

[पुण्य-प्रशसा]

(वस्तु)

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, सकति सुर सच्छि।
पुण्य प्राणि वनिता वरी, [8]पुण्य पुव्व पयरहण लब्भइ।

---

१. 'रहीआ' आ. २. 'धवल' आ. ३. 'सूणि हो' आ. ४. 'सूवि' आ.
५. 'संपद्धि' आ. ६. 'बार' अ. ७. 'मूंकी सूबइ' आ. ८. 'पवर-पुण्य' आ.

दान दिइ ते धन्य नर, [1]अदयवंत बीहइ न खब्भइ ।
पुण्य ज पुव्वय भव पखइ, [2]वंछित सुख न होइ ।
[3]पुण्यवंत पुण्य ज करउ, सुख मंतोष सवि होइ ॥३६२॥

[नगरी-अवलोकन]

(चउपई)

[4]सविहु परि गढ जोयउ फिरी, चालिउ [5]वीर मनि चिंता करी ।
परमेसर जउ करइ पसाउ, तउ ए रूडउ रहिवानउ ठाउ ॥३६३॥

दिवस च्यारि वनि [6]वहिउ नरेस, आगलि दीठउ वसतउ देस ।
[7]पुर प्रासाद नइ घट्ट निव्वाण, गामि गामि गिरूआं अहिठाण ।३६४

वारू लोक-तणा तिहां वास, [8]पेखी पथिक करइ उल्हास ।

[मार्गे भाट-मिलाप]

जां जि जाइं [9]वहतां वाट, तां सर-पालिइं भेटिउ भाट ॥३६५॥

[10]नर एकलउ अवारउ जाइ, पूठिइं प्रमदा पाली [11]पाइ ॥
भाटि बोलाविउः"सुणि हो शूर!,रहि राउत! [12]अति थिउ असूर"५६६

भाट भोगवइ [13]गाम ति ग्रास, आदर-सिउं आणिउ आवासि ।
पेखी अंग-तणउ [14]आकार, ते आवर्जन करइ अपार ॥३६७॥

तेडाविउ वालंद तिवार, मर्दन देवा काजि कुमार ।
ऊतावली हुईय अंघोलि, भोजनि शालि दालि घृत घोलि ॥३६८॥

---

१. 'अडवडंत पण पुण्य थुब्भइ' अ. २. 'जि सुख शरीरि' आ. ३. 'पुण्यइं ए पामीय सहु संपइ सूदइ वीरि' अ. ४.'गाढा गुहरि' प. ५.'चीत चीतवणी' अ. ६. 'वसिउ' आ. ७. 'पूरव' अ. ८. 'पेखीय हृदय' आ. ९. 'वसती' आ. १०. 'दीसइ नर एकलु जि' आ ११.'काइं ? आ. १२. 'वड' आ. १३. गामनु आ. १४. 'अधिकार' अ.

"नवरइ मंदिरि निद्रा ठाम, ऊठउ पथिक ! करउ विश्राम ।"
जां बे जण बईठा एकंति, तां कामिणि बोलावी कंति : ॥३९९

[सूदा-वचन]

"सुणि सामलि ! बोलिउं माहरूं, कोस पंच पीहर ताहरूं ।
दिवस पंच रहि [1]चंड-प्रदेशि, हूँ पूहचूं पहिठाण प्रदेसि ।.४००॥

प्रहि ऊगमि पेखू पहिठाण, जई जू-ठाणइ मारू ठाण ।
जे [2]सूरा समरथ जू-जाण, तीह-ऊपरि माइरूं मंडाण ॥४०१॥

लीलां लाछि हरावी [3]लिउ, तेहनउ अरथ दोसीनइं [4]दिउं ।
तूं पहिरेवा सरीखा सार, बुहरू वस्त्र विविध शृंगार ॥४०२॥

बाट-हडी नइ वस्त्र विहीण, इम जाती तू दीससि दीण ॥
पहिरण पखइ पीहरि गमिसि, तउ माहरी माम नीगमिसि ॥४०३॥

[चारण-गृह-निवास सूचन]

बंदिण-तणइ बहिन क्षत्रिणी, क्षत्रिणी मानइ 'भाई' भणी ।
ए नातरूं नवूं नहीं आज, भाट-भुवनि रहिता[5]नही लाज ॥४०४॥

[6]जे भड माहि भवाडइ भला, जीवणि मरणि नही एकला ।
[7]रूठारा मागी लिइं मंड, क्षामोदरि ! क्षत्री-गुरु चंड" ॥४०५॥

सामलि सूदानूं सुणिउं वयण, नारी नीर भर्या बे नयण ।
"पाणी वल जे पेखइ प्रदेसि, पंच दिवस प्रीय ! किमइं रहेसि?४०६

नारी 'देव'-भणी नर गिणइ, नरनइं नारी पय-लूं छणइ ।
इम करतां [8]नर न रहइ ठामि, ते नारी काइ सिरजी स्वामि"?४०७

---

१. 'छंड' प्रा. २ 'सूथा' प्र. ३. 'ल्योस' प्रा. ४. 'बोल' प्रा. ५. 'नवि' प्रा. ६. 'जे रणि चडया' प्रा ७. 'रूठरा' प्रा. ८. 'जे' प्रा.

[सूदा-वचन]

सूदउ भणइ "सामलि ! सुणि वात, नर जाइ जोयण सइं सात ।
राति दिवस महिला मनमांहि, जिहां अबला तिहां आवइ ठाहि" ।४०८

[सामली-वचन]

"स्वामी ! ए उत्तर अवधारि, धरथी घणूं विसासइ नारि।
नर नवनवइ भवनि रसि रमइ, सुकुलिणी दीह दूखि नीगमइ" ॥४०९

[1]कणय रयण मुत्ताहल हार, हीर-चीर सोवण शृंगार ।
ए [2]सहू समप्पइ अबला-हाथि, बीजा-सरिसउ आवइ बाथि" ॥४१०

नीणि उत्तरि ते अबला रही, वात एक [3]पुणि वरनइं कही।
"सामीय ! कहिउं माहरू मानि, प्रीय ! पाटण ते नथी समानी ४११

[सदयवत्सवचन]

[4]सदयवच्छ प्रभ पूछइ इसिउ :"कहि कामिणि! ते पाटण किम्यूं ? ।"

[सावलिगा वचन । नगर पाटण-वर्णन]

"[5]स्वामि ! सहारइ आपूं छेक, लागइ दव दीहाडउ एक ॥४१२।

जिणि पाटणि पोढा प्रासाद, मेरु-शिखर-सिउ [6]वहइ विवाद ।
[7]गरूउ गढ ऊंचा आवास, किरि अहिणव दीसइ कैलास ॥४१३॥

माहि महेस विष्णु नइ ब्रह्म, सहू समाचरइ कुलोचित [8]धर्म ।
[9]दिनकर-भगति-तणउ अति भाव, अधिकउ परमेसरी प्रभाव ॥४१४

बावन वीर वसइं तिहां वासि, पूजइ जिनवर फलीइ आसि ।
जिन-शासन गाढउ महगहइ, जीव-दया देखी मन रहइ ॥४१५॥

---

१ 'भाणि माणिक'प्रा. २. 'सहूइं आपणइ' प्रा. ३.'नरवर नइं' 'प्रा. ४. 'ओटी' (४१२) 'प्रा' मा नथी' ५. 'सुदयवच्छ कहि प्राधू' प्रा. ६. 'मोंडइ वाद' प्रा. ७. 'गढमढ गुख' प्रा. ८. 'कर्म' प्रा. ९. 'दिन करनी भगति प्रति भावि' प्रा.

जे जोगिणि चउसठिनूं [1]गाम, चउरासी चेटकनूं तिहि ठाम ।
[2]व्यंतर भूत पिशाच नइ प्रेत, साचउ साकिणि-तणउ संकेत ॥४१६॥

गणपति क्षेत्रपालनी ख्याति, दिवस पाहिइं रूडेरी राति ।
ठामि ठामि मडल [3]मडाइ, ठामि ठामि नित गुणीआ गाइ ॥४१७॥

ठामि ठामि ढोणां ढोईइं, ठामि ठामि जोणां जोईइ ।
सातइ [4]वसण [5]सांवलीइ जोउ, माहि घणा छइ माणस तेउ ॥४१८

इकि लीलां लखिमी [6]लई जाइ, भोला भमहि सान वीकाइ ।
मणा न कामण मोहण-तणी, वरतइ धूरत-विद्या घणी ॥४१९॥

वसइ वासि छत्रीसइं कुली, मांहि [7]चुहु मुडधा नइ मंडली ।
चउरासी सूरा :सामंत, च्यारि महाधर मंत्रि अनंत ॥४२०॥

चउरासी चुहटांनी जुगति, वरणावरण तणी बहु विगति ।
उत्तम मध्यम लोक अपार, भामा भला न लाभइ पार ॥४२१॥

करइ राज सालिवाहण राउ, [8]वइरी-तणउ विधसइ ठाउ ।
अऊठ पीठ पहिलूं पहिठाण,सामीय आलि-तणूं अहिठाण"॥४२२॥

[पंच दिवसावधि सदयवत्स-गमन]

भाट भलामण दीधी भली, कीधी कंति अवधि अेतली ।
"पंच दिवसि आविसु तुझ पासि,मृगलोअणी ! घणूं म विमासि॥४२३

[9]सदयवच्छि तां जोयूं जिसिउं, नारीय नयर वखाणिउ तिसिउं
राजा रंगि अंगि उल्हसिउं, हंसगमणि नइं बोलइ हसिउं ॥४२४॥

१. 'ठाम' भा. २.भा लीटी 'अ' मां नथी ३. 'मंडावइ'भा. ४.'व्रिसन' भा. ५. 'संसालइ' अ. ६. 'हरी' भा. ७.'मोटी बहुत्तरी' अ. ८.'अरियण-सिरि दि डावउ पाउ' भा. ९. 'सदयवच्छ प्रतिति' भा.

[सावलिंगा-वचन]

(वस्तु)

"कंत संभलि, कंत संभलि, कहइ [1]कमला लच्छि ।
जु मर्याद लुप्पइ मेरुहर, तेह न पालि पच्छउ करिज्जइ ? ।
सीह विछूडइ संकलह, ति किम देव ! दोरी धरिज्जइ ? ।
हत्थी अंकुस अवगणइ, किम साहीज्जइ कन्नि ? ।
तिम [2]तू प्रीय ! पधारतां, [3]मज्झ विमासण मन्नि" ॥४२५॥

(गाहा)

सुणि सदयवीर ! वयणं सच्चं" [जंपवइ सावलिंगी ए ।]
पीय ! दिवस पच पच्छइ, तिहिं गमिस जिहिं ![4]मुन पक्खेसि" ॥४२६

[सूदा-वचन]

तिणि वयणि सुद्द जंपइः "मणिधरि रोसो हसेवि मुहकमले ।
तिहूअणि ते को ठाणं, जिहि जुवई रहइ ? मह महिला ! ॥[5]४२७
वयण रासी नयण मई, हंसगई उरि [6]करिंद मग्गि ।
हीरा कणय पहाण, अंगणी जच्छ तया पक्खे जीवीयं मरणं ॥४२८

[सावलिंगा-समाश्वासन]

[7]तीणि वयणि सुद्द वीरो, गहिबरिउ गलित चलितोमि ।
"गयगमणि ! म धरि[8]अंदोह, निवारि नयणं नीर[9]भरीयंमि" ४२९

[सूदा-प्रयाण]

(अडयल्ल)

चलिउ रमणि रोअंती वारइ, लोयण लूही सकज्जल वारिइ ।
अबलि ! जुं नावूं बोलिइ वारिहिं, जं[10]मनि होइ करइ तिणि वारहि४३०

---

१. 'इम लच्छि' २. 'प्रीय ! तम्ह' अ. ३. 'सुक्क' अ. ४. 'न' अ.
५.'टूंक ४२७' 'आ' मा नथी. 'वरिद' आ. ७.'गलइं सबल तोसि' अ.
८. 'दुहिलउ' अ. 'भरियीइं' अ. १०. 'पुणइ सुसं करे विचारि हिं ' अ.

[प्रतिष्ठान पुर-प्रवेश]

पामिउ पुर पहिठाण-प्रवेसह, नयणि निहालइ नयर-निवेसह।
तौ सरोवरि जल भरइं सुवेसह,चतुरि चतुर्विध नारि निवेसह॥४३१

[विरह-विलक्षित पुरुष प्रसंग]

ग्रागइ विरहि [1]विलक्खो पाणी, लागी ग्रंगि [2]तरस सपराणी।
कज्जल लग्ग दिट्ठु दुउ पाणि, पीधउं पुरुसि पशू जिम पाणी॥४३२

'नर नवरंग सही सवे जल, किणि कारणि पशू जिम पीइ जल?'।
नारि-[3]नयणि करि लग्गउ कज्जल,तिणि [4]दीठइ नर भरइ न ग्र जल४३३

(दूहा)

ईणि नयरि जे [5]निद्धणह, तेह-तणी घर नारि।
बारू माणस जे [6]वसइ, तेह [7]नहु पाणीहारि॥४३४॥

पाणीहारिइं परखीउ, नर पीयंतउ नीर।
सदयवच्छ त सभलि, चित्ति चमक्यउ वीर॥४३५॥

[ग्रमंगल कबंध दर्शन]

पढमं पेखइ नयणि, पोलि प्रवेसि प्रवीण।
पुरुष एक पय-पाणि-विण, सरडु श्रवण-विहीण॥४३६॥

[गणपति मन्दिर प्रवेश]

तं पेखवि पाछउ वलिउ, गिउ गणपति-प्रासादि।
ग्राणि ग्रसुउणि ज ईणि नयरि, पडीइ वडइ विवादि॥४३७॥

तिणि ठूंठइ ते ऊलखिउ, ए ग्रम्ह पेखि वलंति।
ग्राणि भलेरूं भेटणूं, देउल-[8]मज्झि मिलंति॥४३८॥

---

१. 'घल्यरबइ' ग्रा. २. 'तिहां सप्पाणी' ग्र. ३. 'नर-करि' ग्र.
४. 'भोज्जय-भय' ग्र. ५. 'निम्रच्छ' ग्र. ६. 'ग्रछूइं' ग्र० ७. 'तनहु' ग्र.
८. 'माहि' ग्रा.

(१) देखिये पृष्ठ ६२ कड़ी ४३२-३३
'पीधउ पुर्हास पशु ज्रिम पाणी ।'
और (२) पृष्ठ १७०-१७१ कड़ी ३२९
'पसूआ जिम पाणी पीयइ ।'

पूग-पत्र-फल फूल सिउं, आणी अमृत आहार।
लीलां लेतउ उलखिउ, जाणी किद्ध जुहार ॥४३९॥

[ठूंठा-जन-कृत सूदा-वन्दन]

सउण भणी [1]ते बंदीयां, लीधां पूगी पान।
'भाई' भणी बोलाविउ, दिइ मनशुद्धिइं मान ॥४४०॥

[ठूंठा जन आत्म-परिचय]

जूठाणइ जूय केतलूं ? [2]केतूं जाण जूआर ? ।
उडइ नइ उडिउं सहइ, ते अम्ह दाखि विचार ॥ ४४१॥

(वस्तु)

मित्र संभलि, मित्र संभलि, मुझह वीतक्क ।
हुँअ स्वामी सीघल-तणउ, कुंअर कोडि कंचण सहित्तउ ।
सइं गय हय सय पंच, लेइ ए पाटण पेखण पहुत्तउ ॥
ते हेलां रसि हारिउं, नाक पाग कर कन्न ।
ईणि जूठाणइ जूअ रमइं, बलीया भड बावन्न ।।४४२॥

(चउपई)

सूघ न कांई देखूं स्वामि !, जूउ-दंड पडइ ईणि ठामि।
असिवर एक-मू ठि हारीइ, बीजा काजिइं बाजी सारीइ ॥४४३

[कामसेना गणिका जूठ-प्रसंग]

[3]वे जण पाटण-मज्झि पहुत्त, दीठउं देउलि लोक बहुत्त ।
"कहि भाई ! कोलाहल किसिउ ? ए अण-खाधइ पाणी-रिसउ ४४४

"कामसेना जे नाचिणि नाम, लिइ पंच सइं सोन्ना द्राम ।
सुहणइ सोमदत्त माणिउ, ते इहां ऊहडी नइ आणीउ ॥४४५॥

---

१. 'सहु बंदीउं' आ. २. 'केता रमइं जूआर' आ. ३. 'तं सुणि' आ.

[1]गणिकानी मा अतिहि रढील, विवहारीउ मनाबिउ मिल।
डोकरी मंडिउ गाढउ डोह, अर्ध आपतउ न छूटइ छोह" ॥४४६॥

[सदयवत्स-वचन]

[2]सदयवच्छ बोलइ : सुणि मित्र !, ए खोटू अति करइ अखत्र।"

[ठूंठा-वचन]

"देव ! अनेरउ नथी अन्याउ, माती रांडइ वीटिउ वाउ ॥४४७॥
एक भांडणिया ऊठी भाड, बीजउ महि मूकिउ साडी।
त्रीजी राउल-वाई रांड, [3]इणि कारण टलीइ मॉड" ॥४४८॥

ते जोवा पुहुतु प्रासादि, डोकरि दीठी वढती वादि।
"नर नवयौवन छइ नवरगि, ए बोलिस्यइ अम्हारइ [4]अंगि" ॥४४६

एकदंति बोलइ: "सुणि साह !, अम्हि परठया छइ राउत आह।"
सेठि-कुमर ऊचरइ सुजाण, "आपण बिहु जण एह प्रमाण" ॥४५०

तव तीणइं बिहु कारण कही, राउति वात विमासी सही।
सदयवच्छि विचि लीधा साद, तेह-नउ निरवाल्यु वाद ॥४५१॥

[सदयवत्स-कृत चतुर न्याय]

एक सेठि हकारिउ ताम, "आणि विच्छे दिइ दर्पण ठाम"।
सेठिइ जे जण बोलाविउ, अरथ आरीसउ लेई आवीउ ॥४५२॥

धन रेडी ओडिउ आरीस, एकदंति तव दिइ आसीस।
आघी थई लेवानइ अर्थ, "दरपणमांहि गिणी लिउ गर्थं ॥४५३॥"

[गणिका-कपट उपहास]

हाथि ताली देई हसिउ लोक : "रांडइ लीधा टंका रोक !।
अ तरि तेडावी डोकरी, काढी बाहरि बाँहि धरी ॥४५४॥

---

१. 'इतनी अति आडली रढील' २. 'सुदय भणइ सुणि ठूंठा मित्र' अः ३. 'ए मुंह' अ. ४. 'मंगि' आ.

इकि छांणिइ, इकि छांटइ छारि, इकि खीजवइं अनेरइ खारि।
एकदंति तव [1]ओपी इसी, राय राजा छवि राणी जिसी ! ॥४५५॥

तेह-तणाइ छोकरि नही छेह, डोकरी देखी हरखी तेह ।
वादिइं विवहारोइं हरावी, टंका ठीक रोक लेइ घरि आवी ! ४५६ ।

[गणिकाप्रति कुलस्त्रीजन-घृणा]

आगणा धवलहर धसी, अबला सवे आवी उद्धसी ।
"कहउ, किसी-परि जीतउ वाद ?," बोली न सकइ बईठउ साद ॥४५७

जीणइ घणा घासव्या ति घाठी, कला बहुत्तरि-सिउं बुद्धि नाठी ।
त्रिणि दिवस जि लांघणइ लाघी, घणे घावू ए कीवी घांघी ॥४५८

परख्या पाखइ पुरुष वीससी, नयर-मांहि नर सघलइ हसी ।
"कांई रे छोडी ! पूछइ काज, हारिउ वाद [2]विगूती आज" ॥४५९॥

[सदयवत्स प्रति कामसेना-आकर्षण]

कामसेनि संभलिउं स्वरूप, ते राउत-नूं [3]जोईइ रूप ।
तेडिउ सघलउ सपरदाउ चातुरि चतुर जोएवा जाउ ॥४६०॥

पुहती मंडपि [4]मूंधा दीती, वाजिउ [5]गजर सघुडिउं गीत ।
बशकारि सातइ सुर सारि, आलति कीधो आलतिकारि ॥४६१॥

उडीमान उडवीउ ताल, [6]झणझुण करइ मृदग रसाल ।
धुरी धूआनी धूरली आदि, रही रेख [7]रविनइ प्रासादि ॥४६२॥

नयण [8]वयण मन मस्तक नास, हावभाव [9]कटि-तणा कलास ।
उर कर चरण लगइ वालवइ, इम जूजुआ अंग जालवइ ॥४६३॥

---

१. 'देखी' आ. २. 'विगोई' आ. ३. 'जोयं' आ. ३. 'जोवा नइ तिहां' आ. ४ 'मधि आदित' आ. ५. 'गुहर सुद्ध सगीत' आ. ६. 'रणझिण' आ. ७. 'देवनइ' आ. ८ 'मयण' आ. ९. 'करइं' आ.

[कामसेना-विह्वलता]

उत्तर ऊजेणी-पति दिट्ठ, बईठउ मत्त बारणइ बलिट्ठ ।
कामसेनि [1] थई काम-विकाम, माणस कोइ न जाणइ माम ॥४६४॥

[2] लेउ चलावी भणी अवास, त्रूटी नाडि, न [3] सलकइ सास ।
नयर-[4] नरेसर बाहर करइ, इसिउ पात्र अण-खूटइ मरइ ॥४६५॥

[उपचार]

राजवेद जई जोई नाडि, एउ विकार नही अम्ह पाडि ।
देस-विदेसी बीजा बहू, राजा-[5] आर्यास आविउ सहू ॥४६६॥

एकि भणइः "ऊतारउ [6] आच," एकि सेक दिवरावइ पाच ।
एकि भणइः "आलस छाडीइ," एकि [7] भणइः "मडल मांडीइ" ॥४६७

एकि भणइः "अम्ह हलूउ हाथ," [8] एकि भगइः "दिइ कहूउ कवाथ" ।
आपापणी कला सवि कहइ, [9] गुणीया नइ वईद गहगहइ ॥४६८

[गूर्जर वंद्य-निदान । अनंग-रोग]

गूर्जर वंद्य तिह्वारइ हसिउ, जाणे धरणि-धनतरि जिमिउ ।
दीठइ रूपि सरूप ओलखइ, वेद अनेरू रा आगलि भखइ ॥४६९॥

"एहनइ अगि अगलउ अनग, नरवर ! को दीठउ नवरग ।
महूरति एकि मूर्छा भाजसिइ, मिलिउ लोक देखी लाजसिइ" ॥४७०

तास वचनि कालमुहा थाइ, वलिउ चेत, [10] वैद ऊठ्या जाइ ! ।
बाहरि वरतइ भोडाभोड, प्रमदा पचबाणनी पीड ! ॥४७१॥

---

१. 'हूइ कामिनी काम' प्रा. २. 'लेई' प्रा. ३ 'लाभइ' प्रा. ४. 'नरेस न' प्रा. ५. 'इसि ते' प्र. ६. 'लाच' प्र. ७. 'कहइ' प्रा ८. 'एक थाइ छत्रीमु काथ' प्रा. ९. 'गुणीआ नोकारकि' प्रा. १०. 'वेगि ऊठो' प्रा.

[राजपुत्र-आनयन-उपाय]

नाचिणि [1]जस नायिकीदे नाम, ते तेडीनइ कहिउं काम।
"तूं [2]डाही डांखरी म जेडि, रवि-[3]मंदिरि जई राउत तेडि ॥४७२॥

उत्तरि बईठउ ऊंची पाटि, भड जे पाखलि वीटिउ भाटि।
केकि-कला सिरि भाटि भमाल, आगलि ऊडए अनइ करमाल ॥४७३

[वृद्धा एकदंति विरोध-दर्शन]

एकदंति तीणि बोल्हिइं बली, [4]रीसिइं पुरुष एक ऊछली।
"जिणि [5]हलूई कीधी आज, ते टीटउ तेडिइ [6]कुण काज ? ॥४७४॥

राय राणा [7]भूतलि [8]जेतला, विवहारीया कहूँ केतला ?।
करइं साद कोडिसर केडि, केहा गुण तूं राउत तेडि ? ॥४७५॥

[गणिका-द्रव्यहरण-नैपुण्य]

पारखि-सिउं जउ कीजइ प्रेम, पाडी दिइ पीयारू हेम।
ओछी वानी तउ घणउ विराम, सारी लोइसू [9]सारा द्राम ॥४७६॥

दोसी [10]कोर कापर्डा दियइ, लूगड-मांहि ति बिमणूं लीयइ।
काज सुरहीउ सारइ घणूं, आपइ सदा सुरहू धूपणूं ॥४७७॥

सोनी काजि [11]किह्वारइं [12]वाहि, सूध चउथ लिइं सूना-मांहि।
पहिलू घाट घडीनइ हाटि, घरि आवइ घडामण माटि ॥४७८॥

बांभण-सिउं बहु नेह म करइ, मास पक्ष पूठिइं परिहरइ।
भाट भलउ हुइ दोह बि च्यारि, जां जूवटइ न थालइ हारि ॥४७९॥

---

१. 'जे' ग्रा. २. 'गाढी' ग्रा. ३. 'मडपि' ग्रा. ४. 'दीसइ' ग्रा. ५. 'हूं हालू' ग्र. ६. 'शू' ग्रा. ७. 'भूपति' ग्र. ८. 'जे भला' ग्रा. ९. 'आला' ग्र. १०. 'कापड वारू' ग्रा. ११. 'जिह्वारइं' ग्रा. १२. 'पाहि' ग्र.

तंबोलीनी थोडो तीम, जिहनइ पान पांचनी सीम ।
टींटा देखी टाले द्रेंठि, साहमी जईनइ मनावे सेठि ॥४८०॥

माली आपइ [1]सुरहा फ़ल, जे वारू नइ अति बहुमूल ।
मोटा झोटा अनइ छड छेक, तेह-नइं दीजइ वहिलु छेक ॥४८१॥

फ़टरसी नइ [2]फरफट कूंच, हाथ किह्लारइं न मेल्हइ मूंछ ।
ते उलगू-नइ म देसि अडाउ, कूडी [3]करगर लाउ नसाउ ॥४८२॥

[धनवान परीक्षण]

नाणावटि नागू [4]निरखीइ, निम आपणइ पुरुष परखीइ ।
[5]"जिहां जिहा दीसइ द्रव्य जेतलउ, तिहा आदर कीजइ तेतलउ" ॥४८३

[कामसेना-वचन]

कामसेना नइ चडिउ कोप, नायकदे प्रति दीध निरोप ।
"ए बूढी-तणा बोल म विमासि, राउत नेडो आणि आवासि" ॥४८४॥

गई रामा [6]रवि-मंडप भणी, कही व्याधि ते कामिणि-तणी ।

[सदयवत्स-प्रति वचन]

"सुणि सावज्जल साची वात, कामसेना तूं-राती रात ॥४८५॥

हूं पाठवी तीणइ तू अ पासि, [7]पसाउ करी अम्ह आवि आवासि ।
धरथ धनेथि अछइ [8]अम्ह घणउ, ते वनिता [9]विक्रम तूं अ-तणउ ॥४८६

वार म लाउ, वहिलउ थइ देव !, टाला-तणी [10]टली छइ टेव ।
मरइ अखूटइ मोटूं पात्र, तइ दीठइ दुःख फीटइ गात्र" ॥४८७॥

---

१. 'सरस्य नेह मन' आ. २. 'फाफट' आ. ३ 'कद घस लाउ' आ. ४. 'परखीइ' आ ५ 'जेहनउ भाव दीसइ' अ. ६. 'रघि' आ.७. 'मया' आ. ८. 'अति' आ. ९. 'विभ्रम' आ. १०. 'म करिसिउ' आ.

[ठूंठा प्रति सूडा-वचन]

सुड़ भणइः "सुणि ठूंठा मित्र !, इणि मांडिउं एवडूं चरित्र।
[1]इम तेडइ [2]तिम कारण कहइ, एहू वात विमासण लहइ" ॥४८८॥

[ठूंठा-वचन]

ठूंठु भणइ : [3]"नवि जाणिउ भेद, खारि रांड-तणइ मनि खेद।
[4]देहरा-माहि दूहवी जेम, डस वीसरइ न डोकरि तेह ॥४८९॥

इणि वीसासी वाह्या वीर, इणि [5]खाइ पाडया घर-धीर।
[6]इणि वेसाइं विगोया भला, इणि रोल्या राउत केतला ॥४९०

वेसा-तणउ म करि वीसास, वेसा-वयण ते मुहि गली पास।
[7] मच्छ जेम मांस-नइ धरइ, जीव-तणउ जीवी अपहरइ ॥"४९१

[सूडा-वचन]

सूड़ भणइः "हूं म्र जाणूं सहू, वेसा तणी वात छइ बहू।
जउ भाई ! भय कीजइ एह, छयल्लपणानउ भाविउ छेह" ॥४९२

[ठूंठा-वचन]

"एह अनेरउ नही उपाउ, एहनइ विषय-तणउ विवसाउ।
इहनइ मनि माटीनी आस, इहनइ लहइ विदेसी वास" ॥४९३

[परिचारिका निवेदन]

परिचारिकि जे [1]पूठिइं वही, तीणइ घरि जईनइ कारण कही।
"ते धीरउ भावेवउं करइ, पणि ठूंठीउ [9]कूटाइ करइ ॥" ४९४॥

१.'तिम' म २.'प्रति' आ. ३.'मइं' आ. ४.'हारिउ बाद विगोइ जेह, ए वीसरइ' आ. ५. 'थ्या छइ' म. ६. 'ईणइ व्यास विगोया घणा' आ. ७. 'माणस जेम मछिनइ' आ. ८. 'वहसी' आ. ९. 'पूछो रही' आ.

तउ वीजी बोलावी बाल : "जई चालवि ठूठउ चंडाल ।
मानी लांच लोभवि घणूं, कामिणि काज करे आपणूं" ॥४९५

[1]लउ तीणइ खिनकी-नइ खूंट. हलावी बोलाविउ ठूंठ ।
लाच-तणउ देखाडिउ लाभ, कांइ ए क्षित्री-कारणि शोभ? ॥४९६॥

[ठूंठा ने लाचनुं प्रलोभन]

[2]लांच आच नवि ठूठउ सहइ, काई कथन अपूरव कहइ ।

[ठूंठा-वचन]

"कामसेनि-लहुडी चित्रलेख, नेह ऊपरि माहरी अभिलेख ॥४९७॥
ते जउ रातिइ मइ-सिउ रमइ, तउ ए गेहि तम्हारइ गमइ ।
बीजू [3]काइ म बोलि आल, [4]ठूठइ-सरिस न चालइ चाल ।४९८।
मनि आपणइ आलोचीय साच, वेशा ठूठइ लीधी वाच ।
चतुरा राउ ऊठाडयउ तेहि,आणिउ गयगामिणि नइं गेहि" ॥४९९॥

[कामसेना आवासे सूदा-गमन]

नाचिणि नर आवंतउ देखि, आपणपू मंवरी सुवेखि ।
कणय-कलस भरि निर्मल नीर,दिइ आचमण विच्छे दिइं वीर ।५००

[सत्कार]

आदर-सिउ अवास मझारि,[5]आणी आवरजइ वर नारि ।
भोजन भगति युगति जूजूई, मिलियां राति सुरंगी हुई ॥५०१॥
वडइ भनकि जागिउ जूआर, दांतण करिवा काजि कूंआर ।
कामसेनि आयस उल्लासि, दांतण लेईनइ आवी दासि ॥५०२॥
"दांतण सारिइ, [6]ऊग्यु सूर, आविउ ठूठः म करउ असूर ।"
बीडूं आपी बोलइ बोल, "राउत ! रखे करउ [7]विगोल ॥" ५०३॥

---

१ 'हुराई' प्र २.'वाटे करीनइ खलकी खूट' प्रा. ३ 'पेशा-वचन'प्रा. ४. 'बहु प्रा. ५. 'इस्युं भणिइ ठूठु चंडाल' प्रा. ६. ते आवर्जन करइ अपारि' प्रा. ७. 'सबरइ' प्र. ८. 'प्रति काल' प्र.

कामिणि [1]कपट न विमास्यूं चीति, खेडूं खडग विलायुं भीति।

[द्यूतस्थान-प्रति गमन]

आरति टली ऊतारा-तणी, भड चालिउ जूम्र [3]ठाणा भणी ॥५०४

ता जूआर बईठा जूवटइ, जा लगइ अवर [4]कोइ ऊमटइ।
तां लगइ कूडी काढइ मूठि, [5]पडिय-सिउ बोलाव्या ठूंठि ॥५०५॥

तीणइ जाणिउ नवउ जूआर, ठिगि सघले [6]जई कीध जुहार।
पड चापी बईठउ चउपट्ट, नही नर बोजा [7]मानि मरट्ट ॥५०६॥

तीणि थानकि सपराणा सही, एकइ पुरुषि परीक्षा लही।

[सूदा-द्यूतचातुर्य परीक्षा]

आघउ थईनइ बोलउ इसिउ, ''सूदा ![8]सूध पूछीइ किसिउ ?॥५०७।

राउत!रमतउ म करिसि काणि इणि पडि जीपिसि ग्रोडथा प्राणि।
लाख-लगइ हू पूरिस हेम, [9]ओडि अरथ मनि आणे एम'' ॥५०८॥

[प्रसिद्ध द्यूतकार उपस्थिति]

आविउ सूद्रक सकतिकुमार, आविउ वीरभद्र भंकार।
आविउ कामसेन नइ कालूउ, आविउ [10]रिणवत रीसालूउ ॥५०९

आविउ वंकट नइ वाघलु, आविउ रीमट नइ राघलु।
इम जूटवइ जूआरी मिल्या, वीरइ वीर बईसंता कल्या ॥५१०॥

१.'कथन' अ. २. 'चमकिउ' आ. ३. 'वासा' आ. ४. 'को न' आ. ५. 'पुरुष एकसिउं' अ; 'वइ भूंटि' आ. ६. 'विचि दीधउ ठाहार' अ. ७. 'मुनि' आ. ८. 'सूथ' आ. ९. 'तिम मोडे जिम जाणइ तेम' आ. १०. 'रोषु' आ.

[सदयवत्स द्यूतजय]

सदयवच्छ नइ सकतिकुमार, [1]बि जरण रूडा रमइ जूआर।
बावन वीर बहुत्तरि राण ऊपरि-थ्या भड भाखड दाण ॥५११

हैला-मांहि हराविउ राउ, [2]जीतु सोवन लक्ख सवाउ।
तीणइ बीजा ऊपरि उद्रक, रमता थिउ साम्हउ सूद्रक ॥५१२॥

सूद्रक-सरसी समवडि जाइ, वीरिइ वीर न पाछउ थाइ।
बिहु जरण जमलूं दोसइ जयत, सूदइ पोढूं पाडिउ पहित ॥५१३॥

काल-पास शिव जोगिरिण जेउ, जाणइ [3]जूअ-तरणा भल भेउ।
ते नर हारी ऊठ्या आथिः एक भरणइ ! "ठिग ठू ठउ साथि"।५१४

धन ऊसरडी ढिगलु करइ, खोडउ बईठउ खोलउ भरइ।
ऊठिउ कुमर ऊतारइ जाइ, धन वेचंतउ कुरिणइ न रहाइ !॥५१५॥

[द्यूत द्रव्य-दान]

अरण-मागंता ओडावइ हाथ, सूदा-जम जारणइ जगनाथ।
[4]सूदउ सविहूं आपइ जीप, जूअ रमिवानूं एह जि कीप ॥५१६॥

[सावलिंगा अर्थे वस्त्राभरण-विक्रय]

चउपट मल्ल चुहटइ संचरइ, दोमी-हट्ट दीठइ सभग्गइ।
[5]सावलिंगिनइ सरखा सार, वुहरइ नानाविध शृंगार ॥५१७॥

कस्तूरी केसर कप्पूर, [6]धूप धूपणां अनइ सेंदूर।
[?]ार सुगंध वस्त [7]घरण लिद्ध, ते बांधी दोमीनइ दिद्ध ॥५१८॥

१.'ए बि' आ. २.'सूद्दूर' म. ३.'जवटनु' आ. ४.'आपइ सविहूं कारणि कीप, कूडे रमता अछइ केही कीप ?' आ. . ५ 'पहिरवा पवित्र, न'वरि वुहुर्यां वस्त्र विचित्र' म. ६. 'घुति धूपणइ सरिस' म. ७. 'बहु' आ.

कामसेना-घरि जरा जेतला, ते जोतां हींडइ तेतला ।
तां अढलक [1]आवइ आफरणी, भ्रणतेडिउ ऊतारा भरणी ।।५१९।।

हंसगमरिए-नइ आपिउं हेम, मांडइ लेखा अधिक प्रेम ।
तीरणइ [2]रंड-मनि फीटी रीस, एकदंति तव दिइ आसीस ।।५२०।।

भोग भगति आवर्जिउ इसिउ, च्यारि राति राउत तिहां वसिउ ।
दिन पंचमइ व्याहाणा वार,हुई हथीआर-तरणी [3]मनि सार ।।५२१।।

[म्यान मध्यगत अमूल्य कांचली]

[4]असि ऊतारी जोइ जाम, अबला [5]ओढणी वलगी ताम ।
खेडउ झाटकतां खडखडी, सूकी खोली आगलि पडी ।।५२२।।

खोलि-मांहि अमूलिक जिसिउ, तेह सरीखूं कहीइ किसिउं ? ।
सवा कोडी-[6]तणी कांचली, चंद्रवदनि [7]देखीनइ चली ।।५२३।।

काममेना [8]प्रभु लागी पागि, "स्वामी ! जि कांइ जाणत मागि" ।
मनि आपणइ सुणी महाराजि, अलविइ आपी अबला काजि ।।५२४

[9]हूउ चतुर बोलिवा सचींत, तव जूय-ठाणइ चमकिउ चींत ।
जां [10]आराधण आरति हुइ, तिहां लगइ जई आविउं तोइ ।।५२५।।

[कामसेना कंचुक परिधान]

कामसेनाइ पहिरी कांचली, रंगिइं राज-भुवनि [11]समवली ।
कीधउ सोहंतउ सिरणगार, [12]उपरि एकाउलि मोती-हार ।।५२६।।

---

१. 'ऊतारा मरणी, प्रणतेडयु आविउ आपरणी' प्रा. २. 'वामइ' प्रा. ३.'संभाल' प्रा.४.'इसि' प्रा ५.'ओढणि दीधी' प्रा.६.'केरी' प्र.७. 'तीणइ दीठइं' प्रा. ८. 'जई वलगी'प्रा. ९. 'हउउ चतुर चालवा सैचंति,तव जू-ठाणइ गिउ मन-भांति'प्रा.१०.'मारोगण' प्र ११.'सांचरी'प्रा.१२.'वरि'प्र.

पात्र राउ ईसी पालखी, [1]साथिइं संपरदाउ नइ सखी।
चतुरि चिहुदिसि घालइ द्रेठि, चहुटइ साम्हउ[2]मिलिउ सेठि ॥५२७

[श्रेष्ठीए काचली जोई]

[3]सेठिइं सा बोलावी नारि, रंगिइं जाती राज-दुआरि।
छडउ रतन-जडित कंचूउ, देखी नर निरखंतउ हूउ ॥५२८॥

[चोरी मा गयेली काचली ओलखी]

निरखी उलखीयां अहिनाण, [4]तु हूउ युगति विमासइ जाण।
रा-मंदिरि मानीतुं पात्र, किम एहि-सिउ [5]पडावइ खात्र ? ॥५२९

[महाजन श्रेष्ठी पासे फरियाद]

पांच सात तेडी आवंत, मनि आपणइ विमासिउ मंत।
नुहि एकला जि पुरुष प्रभाव, [6]मिली महाजनि कीजइ राव ॥५३०॥

[महाजन श्रेष्ठी नाम]

तेडिउ तेजपाल [7]तारसी, तेडिउ [8]धांधउ नइ धारसी।
बहिलउ थई नइ वीरम तेडि, [9]जेसल नइ करणउ करि केडि ॥५३१
[10]तेडिउ संतिग [11]सामल सार, आवड, [12]बांहड अभयकुआर।
पाल्हउ [13]पासनाग जसनाग, माहव मोकल नइ वरणाग ॥५३२॥
[14]धाईउ धीधु नइ जसराज, पेथु पूनुसाह महिराज।
[15]हादु हरपति अनइ हरराज, हांमु जागु नइ मकराज ॥५३३॥

१.'मागइ लि' आ. २.'जोई बोनइ' आ३. 'चुहटइ' आ.४.'एहु'आव ५. 'खराबू' अ. ६. 'मेल्या सामंत' आ. ७.'तेजसी' प. ८.'धाणिग' आ. ९. 'नही सुगति जे कीजइ नेहि' अ. १०. 'सोलउ' अ. ११. 'ना. साहारा' अ. १२. 'भोमउ' अ. १३. 'पासउ आनउ माल माडण केहुउ' भाइउ साहाल' आ. १४. १५.:'आ' सीटी'अ' माँ नथी.

[1]राजु भोजु नइ वलीकु जगु, नाइउ नीसल नरपति नगु।
धरणिग धारण ताहरूं काज, ऊठउ महाजन मिलीइ आज ॥५३४

[2]आसड पासड पूनसी सेठि, मिलिउं महाजन वडली-हेठि।
धमक्या सवि चुहटानी वाट, हूं हूं [3]करी संभेरइ हाट ॥५३५॥

['हाट-मांहि पाडी हडताल']

[4]हाट-मांहि पाडी हडताल, चाल्या [5]कामसेनाना काल।
माथूं धूणइ वुहरइं "माम, [6]गूंगलि करी बीहावइं गाम ॥५३६॥

दंतुमेठि मेलावउ करइ, [7]राउलि जई पोकारव करइ।
[8]रायंगणि जई ऊभा रहइ, [9]नामइं कांध, नवि कारण कहइ ॥५३७

[राजसभा-प्रवेश]

मान देई बोलिउ महाराज : "मिलिउं महाजन केहा काज ?"।

[श्रेष्ठी वचन]

तउ श्रीमुखि बोलाविउ सेठि, "तम्ह ऊपरि कुण[10]जोइ कुद्रेठि?"५३८
"स्वामि ! कुद्रेठि न जोइ कोइ, अम्हे वाणीए न वसिवूं होइ।
बे जोईइ [11]निर्भय नइ काजि, वारी हुइ ते ताहरइ राजि॥"५३९॥

[संदिग्ध वचने आशंकित राजा]

सालिवाहन समस्या लहइ, नंद-लोकनइं निश्चिइं कहइः।
"बीहता कांई म[12]करिसिउ माम, निर्भय[13]थ्या भाखउ नर-नाम"५४०

१. 'भा लीटी' म मां नथी २.भा लीटी 'म' मां नथी.३.'करइं' म. ४. 'हाटि सवे' म. ५. 'सान' भा. ६. 'गूगरि' भा. ७. 'हाहुलि साहुलि तं पोकरइ'म. ८. 'राउ आगलि' भा.९. 'सिर नामइं' भा. १०. 'करइ' भा. ११. 'वारिमइ काजि, पडइ देव ! ताहरइ' म. १२. 'बोलु' भा. १३. 'थई हवइ भाखउ नाम' भा.

"नरवर ! नर तीह नाम न होइ, [1]कंद्रप-कटक कहइ सहू कोइ ।
[2]तेह-तणइ उर-मंडण अत्थि, सरव समोप्पइ हूं [3]तिहि हत्थि।।"५४१

[राजा शालिवाहन-वचन]

राइं सा बोलावी रमणि : "कहि, काचली समोपी कवणि ? ।
पूछ्या-तणउ [4]पडूत्तर नाप, तू सूली घाल्या नहीं पाप ।।"५४२।।

[कामसेना-वचन]

तीणि[5]वचनि चमकी तइ चिंति, "स्वामी! सांभलि अम्ह घररीति ।
उत्तम मध्यम लांमा भला, साघ चोर कहोइ केतला ? ।।५४३।।

आठ पुहुर एकि आवइ जाइ, भोला भूपति ! पूछइ कांइ ? ।
वाट, वृक्ष-फल, नइनूं नीर, नयर-[6]सोहा सिणि-तणूं शरीर ।।५४४

[7]संतति सुपुरिस-केरी दानि, स्वामी ! सविहूं सरीखा मानि ।"

[अप्रसन्न राजा]

तीणि वचनि रीसाव्यउ राउ, काममेनाइ कीधउ कुपसाउ ।।५४५।
रूडइ [8]बोलिइं नापइ राउ, मारी कूटी पूछउ माउ ।

[चोरी नूं आल]

राज-दूतइ रा-आयस लही, गयगामिणी चोर जिम ग्रही ।।५४६।।
निवड बधि बाधी-नइ नारि, मारइ महिला विसमे मारि ।
इम विनडी ती न कहइ वात, सूली-तणी पूछमु हुई सात ।।५४७।।

---

१. 'कूडूं कपट' आ. २. 'तेहनु उरि जे मडण अछइ' आ. ३. 'ते पछइ' आ. ४. 'तू उत्तर' आ. ५. 'वातइं सा चमकी चीति' आ. ६. 'सालि' आ. ७. 'सुपूरिस दाता घणां छइ' अ. ८. 'पूछी कहइ' आ.

बाजि [1]काहल लोक घरण मिल्या, एकदंति-नइ कहिवा चल्या।

[एकत्रित गणिका-नाम]

एकदंति ऊठी उद्धसी, मिली [2]मेलि गणिका-नइ किसी ॥५४८॥

हीरू हासलदे [3]हरखली नारी, सीगालदे सोमलदे सवि वारि।
कांऊ करणू नइ काह्नलो, नागलदे नामलदे भली ॥५४९॥

माऊ [4]सहिजू नइ सहिवली, वाछू मीणलदे वरजली।
[5]नागू नायकदे नागिणी, माजू माह्लणि [6]नइ कमिणी ॥५५०

राजू रतनादे रूपिणी, भाऊ भावलदे रखिमिणी।
लुहडी वडी [7]विलासिणी घणी, [8]राज-भुवनि आवी रुणझुणी।५५१

[गणिका-समुदाय राजसभा-प्रवेश]

[9]रायनइ सवे दिइं आसीस, सुंदरि [10]गाढउ ढांकिउ सीस।
"राज! [11]रांड-परि सिउं रोस?, कामसेनाइ कुण कीधउ दोस?॥५५२
मूली भणी चलावी स्वामि!, ए आचार अछइ तम्ह गामि।"

[राजा-वचन]

राउ रीसाविउ बोलइ इसिउ, "का रे [12]राडु! पूछउ किसिउं?॥५५३॥

सातउ चोर, नइ थाइ साध, अनइ वली पूछउ अपराध?।
नयर-सेठि-केरी काचली, घर [13]फाडिउं घरवा रत [14]फली ॥५५४

---

१. 'लागि' प्रा. २. 'श्रेणि' प्रा. ३. 'कामलि किसा, खेतू खीमिणी जल्हणि जिसी' प्र. ४. 'सूहवदे' प्र. ५. 'नाकू' प्रा. ६. 'कारेमिणी' प्रा. ७. 'सुहासणि' प्रा. ८. 'रंगइ राज भुवनि सवि वली' प्रा. ९ 'बूटी' प्रा. १०. 'माफइ माढइ' प्रा. ११. 'काय किस्युं ए' प्रा. १२. 'काज कहिवउ' प्रा १३. 'भाडूं' प्रा. १४. 'वलो' प्रा.

पहिलूं सूली घालउं पात्र, पछइ 'पूछूं सघलूं खात्र ।"

[गणिका-मन भय-संचार]

इस्यूं [2]सूणी तइं चमकी हीई, वेशा भणइः"न ऊभां रहीइ ॥५५५

चमकी चोति, वसिउ संकेत : "ए ठू ठउ हूउ अम्ह केत ।
भागइ वादि विगूती जाणि, ऊपरि अधिकी हाणि कवाणि" ॥५५६

एकदति बोलइ आकुली, "काइ रे मवि मूं-पाखलि मिली ? ।
रोता नवि छूटउ छोकरी, जोउ चोर चिहु चहुटइ फिरी ॥"५५७॥

[चोरनी शोधना]

चउरासी चुहटा नइ ठाणि, पुर पइठाण-तणइ अहिठाणि ।
चरि चाचरि चुहटइ चउवटइ, इकि चाली जोवा जूवटइ ॥५५८॥

[द्यूत स्थाने सदयवत्स-मिलाप]

जां जूवटइ बहु रमइ जूआर, पाखलि प्रमदा मिली अपार।
"राउत!ताहरो रामनि बालि !, ए काचला हुई अम्ह कालि!॥५६५।

चोर-तणी परि बांधी बंधि, काममेनि आहणिवा कंधि ।
सूली भणी चलावी सही !" सुणी वात न रहिउ सासही ॥५६०॥

[वृतांत श्रवणजन्य आघात]

किरि हाकी ऊठिउ हनुमंत, किरि [3]कोपानलि चडिउ कृतंत ।
चडवडि चुहटउ चालिउ ईम, किरि आविउ भारथ-गुरु भीम ॥५६१॥

सूली हेठि [4]दिट्ठ सा नारी, लाजिउ मनि आपणा मझारि ।
बाढथा [5]"बंध, विछोडी वेस,"[6]रे आव्या उत्तर हूं देस" ॥५६२॥

---

१. 'सुंघु' प्रा. २. 'भणिइं' प्रा. ३. 'कोपांजलि' प्रा.
४. 'दीठी नारी' प्रा. ५. 'बंधन छोडी' प्रा. ६. 'प्राणु सिबहूं' प्रा.

[तलार-सहु सदयवत्स-युद्ध]

तं संभलि [1]तव चडिउ तलार, बोलाव्या श्रोलगू अपार।
चोटि धरीनइ बहु बाँधिउ बंधि, [2]असि लोह-सिउं श्राहणु कंधि ।।५६३

चिहु दिसि चउरा पायक मिल्या, लउहड लाकड लेई वल्या।
एक तणे ऊदाली डांग, सूदइ सविहूँ भागां श्रांग ।।५६४।।

'हणि ! हणि !' भणी, लिद्ध हथीश्रार, हाकइं ताकइं[3]घाइं अपार।
जे सुभड भला ते पाखलि[4]फिरइ, श्राघउ[5]थईनइ घाउ न करइं।५६५

हठिइं चडिउ तलार हाकलइ, जे जीव राखी 'रहज्जो' कलइ।
भ्रूंटि धरी मनाव्यउ भाक, कोटवालनू वाढगूं नाक ।।५६६।।

"जा बापडा ! म बोलिसि बर्व, गाढा सविहूं ऊतारूं गर्व ।
श्रा श्रोलगू जि विहूँ वलउ लहइ, तिह मारतां किम कर वहइ ? ।।५६७

मोकलि जे गाढा बलवंत, [6]मोकलि जे सूरा सामंत।
मोकलि राउत रणि वाउला, मोकलिजे श्रंगि ऊतावला" ।।५६८।।

[तलार-विमासण]

बली तलारि विमासिउं इसिउ, "छेदिइ नाकिइं [7]छूटीइ किसिउं ?
जउ नरवर वीनवीइ श्राम, तउ मूं ठाकुर[8]फेडेसिइ ठाम।।" ५६९।।

[राजा-प्रति निवेदन]

बण मोकली जणाविउः[9]"स्वामी!,[10]दैत्य कि दाणव श्राउ संग्रामि।
कामसेना-ना वाढया वध,श्रम्ह-सिउ कीधी श्रालि[11]'श्रणंध"।।५७०।।

---

१. 'तुहि' प. २. 'खडग' श्रा. ३. 'घीर' श्रा ४. 'श्रमइ' श्रा.
५.'थई कोइ नवि श्रागमइं' श्रा.६. 'श्रंगि जे श्राउला' श्रा.७. 'जीवइ'श्रा.
८. 'फोडसि' श्रा. ९. 'राउ' श्र. १०. 'दैव' प्र. ११. 'श्रनूंब' श्र.

[शूलि-स्थाने संमिलन]

कोटवाल-नूं कारण सांभलिउ, चुहटूं चाली जोवा मिलिउं ।
तिहि साथिइं-थिउ आविउ सेठि, सूदउ दीठउ सूलो हेठि ।।५७१।।

[सदयवत्स-उपस्थिति-जन्य श्रेष्ठी-वचन]

देखी सूदु सेठि टलवलिउं, मांन उपगार विमासी वलिउ ।
"[1]सुणि साहसिक पुरिस सुपवित्त,[2]ए कुण आल चडाव्युं मित्त?"५७२
सूदु भणइः "ए आल म मानि, मइ कीधूं नर-वहिस निदानि ।

[आत्म-गुह्यवृत्त-कथन]

"सभलि मित्र ! माहरूं गूझ, थोडइं कहिइं घणूं तूं बूझ ।।५७३।।
हाथि ताली देई जाऊं देखतां, किम [3]झूझू आ ऊवेखतां ? ।
कामसेनि-नूं विणसइ काज, पुरुष अनेरा आवइ लाज ।।५७४।।
[4]चूकइ अवधि दिन पंच प्रभाति, महिला मरइ, नही मनि भ्रांति ।
भाट-गामि छइ मुझ भालवण, कागल जाइ तउ हुइ जाण ।।५७५।।
मुझ अहिनाण-तणइ आलापि, कागल लेई कागलीआ आपि ।
दोसी-तणू [5]निरोपम नाम, जिहाँ थापिणि मूंक्या छइ द्राम ।।५७६
ते हूं मागीनइ मोकलावि, जे तू चीति [6]चहइ ति चलावि ।
उछउ अधिकउ[7]न बोलइ बोल, नर निरतउ मोकलइ निटोल ।।५७७

[आशंका-ग्रस्त श्रेष्ठी]

सेठि विमासी जोई वात, ए [8]को वारू वीर विख्यात ।
इणइ[9] अम्ह कीधउ उपकार,[10]हिव वलतउ वालूं विवहार ।।५७८।।

---

१. 'सुण सुण साहसीक सुपवित्त' आ. २. 'कुणहिइ आल बिलायू' अ.
३. 'झुझ' अ ४. 'डूंकइ' अ. ५. 'निरोपिउ' आ. ६. 'वसइ' आ.
७. 'म' आ. ८. 'तां' आ. ९. 'मु' आ. १०. 'वां' आ.

[अर्थ- सदुपयोग]

जिणि अथिइं न भाजइ भीड़, जिणि न टलइ परनी पीड।
मागण मित्र काजि टालीइ, ते संपति सघली बालीइ !॥५७९॥

अरथिइं सघलां सीझइं काज, अरथि आपणि कीजइ राज।
अरथिइं सविहि ढांकीइ अखत्र,[1]देईं अरथ विछोडि सुमित्र ॥५८०॥

[वणिक्-सहनशीलता]

मेलइ वाणिया विवसा जोडि, वेलां [2]लाधी वेचइ कोडि।
जीव-तणउं जे जीवीय कहइं, तेहनउ बाढ वाणीउ सहइ ॥५८१॥

बाध्या राउ विछोडइ बंध, पडी कुवेलां ऊडइ कंध।
ठाणि गाढिम नवि सीझइ अर्थ, तिणि वेलाँ वाणिउ समर्थ ॥५८२

[3]मरडी मूंछ सेठि संचरिउ, राउत वली विमासण-[4]भरिउ।
"ईण विछोडया वेसिइं ग्राम,तउ माहरी पणि[5]भागी माम"॥५८३॥

[सदयवत्स साहस]

पाछउ तेडिउ भाई भणीः "एक वात संभलि अम्ह-तणी।
मुझ छूटेवा-तणी अछइ ग्राहि,कांइ वित्त वेचावूं तुम्ह पाहिं? ॥५८४॥

[6]मांह हकारिउं न करइ किह्वार, तउ मोटु मानूं उपगार।
[7]न्याय नीति नरेस संभालि, कामसेनि नइं [8]कंदल टालि ॥५८५॥

साध चोर आवइ इह बारि,चडिइं चोरि[9] कां विनडीइ नारि ?।
ए एतलूं करीनइ काज, कागल कापड मोकलि आज ॥"५८६॥

---

१. 'वेचो' आ. २. 'आवी' आ. ३. 'मोडी' आ. ४. 'पडिउ' आ. ५. 'जासइ नाम' अ. ६. 'जु तु बाद करइ विचार' आ. ७. 'न्यायनी वात' आ. ८. 'कद घस' ब. ९. 'कां नडीइ' आ.

(वस्तु)

राज-मंदिरि, राज-मंदिरि, सेठि संपत्त ।
ना राउ रोसिइं धडहडइं, कोटवाल कारण परीछयउं ।
एक चोर [1]नवि अंगमइ, . सइं हथि सेनाहिव हि होच्छयउ ॥
तीणि अवसरि पय लगि करि, पहु वीनविउ [2]राउ ।
चडीइ चोरि [3]स्त्रीय विनडीइ, एहु देव [4]अन्याउ ॥५८७॥

[सदयवत्स-वचन]

"अधिपति ! चोर एह नवि घटइ, ईणि कंचूउ जीतउ जूवटइ ।
"आणी चोर आपउं कालि,ता लगइ ईणइ थानकि मूं झालि" ।.५८८

[प्रधान आलोचना]

पहु-परधानि आलोचिउ इसिउं:[5] "मूक्यउ चोर आवेसिइ किसिउ ?।
हणइ चोर सिउं आवइ हाथि ?,ए[6]उच्छखल लीजइ हाथि ' ॥५८९॥

"स्वामि ! किन्हारइ न आवइ एह, तउ हूं [7]अवधिम धारउ छेह ।
पहिलूं सेठि खात्र[8]पुरसिइ,पछइ सवालाख[9][10]द्रम्म आपसिइ। ५९०

ईणि आव्यइं ऊसकल थाइं, ईणि आव्यइं ऊठी घरि जाइ ।
करूं वीनती पहु परधान, ए एतलूं दिउ मुझ मान" ॥ [11]५९१॥

---

१ 'ना गमई' प्र. २. 'निभाउ' प्र. ३.'स्त्री' प्र. ४. 'माइ घाउ' प्र.
५. 'जंपि प्राणी आपू ' प्रा. ६. 'काढिइ नारी' प्रा. ७. 'अछांछलु' प्रा.
८ 'अविधउ' प्रा. ९. पूर्यसि' प्रा. १०. 'वित्त बोल' प्रा. ११. प्रा टूं क 'प्रा' मां नथी.

दीधउं मान सेठिनइ सही, कामसेनि [1]कदर्थ न सवि रहइ ।

[सखयवत्स प्रति श्रेष्ठी भावना]

मित्र [2]तणइ मनि पूगउ रंग, साहसि कि श्रोडविउं श्रंग ॥५६२॥
"जा जा मित्र म श्राविसि पछइ,श्रर्थ[3] श्रनंतउ श्रम्ह घरि श्रछइ ॥"

[बारहट्ट-गृहे सावलिगा-परिस्थिति]

जां नयरि-थिउं [4]नावइ नाह, तां गयगामिणि मांडिउ गाह ॥५६३॥
भाई भणी [5]बोलाव्यु भाट, वडी वार [6]लगी जोई वाट ।
[7]टलो गोल तव त्रूटी श्रास,करउं पर-तनउ पीहर वास" ॥५६४॥

[बारहट्ट-वचन]

"बाई ! बोल म बोलि इसिउ, पीहर-वासु पर तनु किसिउ ? ।
[8]श्रति ऊतावलि हुइ असूर, एतां सही सुलक्षण सूर ॥ ५६५॥

[शूरजन-प्रशंसा]

सूरउ सूरिज गलीइ राहि, सूरउ श्रगनि उदकि उह्लाइ ।
सूरउ सीह श्रजाडी पडइ, सूरउ दैवत सूरा-नइ नडइ ॥५६६॥

मरवा-तणा मरम छइ कोडि, [9]इम मरतो तम्ह लागइ खोडि ।
जउ चूकिसिउं स्वामी-संघात, [10]तउ हत्यानउ श्रोडउ हाथ" ॥५६७॥

---

१. 'कटंब' प. २. 'तणउ जइ पूरिउ' मा. ३. 'श्रनूचउ' प. ४. 'श्रावइ' मा. ५. 'बोलावइ' म. ६. 'लग' म. ७. 'टली गो ब्रतु छाँडो' मा ८. 'करु' मा.९. 'श्रम्ह मरता तम्ह श्रावइ' मा. १०. 'तुउ तुम्हें श्रोडउ हत्थ' मा.

[सार्वलिगा-प्राणत्याग-निश्चय]

[1]गई समशानि सजाई करी, भाट-तणइ मनि पईठो [2]छरी ।
नीचु ऊंचुं चडइ अपार, करइ वेग नइ लाई वार ॥५९८॥

[सार्वलिगा अंतीम प्रार्थना]

देखी दिवस-तणी [3]गति खीण, करी सनान दान दिइ दीण ।
करइ साखि त्रिकम नइ तरणि,''जनमि जनमि[4]सूदा-पय-शरणि'।५९९

(दूहा सोरठी)

सूद ! तम्हारी साथ, थिउ आंतरूं [5]अति ऊरतउ ।
हिव जोसि जगनाथ, साहसि सामलिआ-[6]धणी ! ॥६००॥

ऊले अंतरि एहि, तड पहिलूं पामिउं नही ।
बाहण [7]विहि-वसि होइ, न रहइ नीजामा पखइ ॥६०१॥

नीसरि सूदा साथि, जीव ! मा हारी प्रीय-पखइ ।
ने जाणइ जगनाथ, नाह- विछोडयां माणसा ॥६०२॥

ऊभी आस करेहि, अबला आहेडी-तणी ।
दरि पईठउ वि मरेहि, केसरि नइं ए किम नीसरइ ? ॥६०३॥

नाह ! तम्हारा नेह, किम ओसींकल एक भवि ? ।
जइ दस वार हि देह, ए आपणउ ज होसीइ ! ॥६०४॥

माणिक मूठि [8]भरेही, पडइ तउ प्रापति न पामीइ ।
नाह [9]नावरइ देहि, दरसणि देखेवूं थिउं ॥६०५॥

---

१. 'जइ' आ २. 'भरी' आ. ३. 'दिसि' आ.४. 'मुं सूदा-चरणि' आ. ५. 'छइ अति घणूं' आ ६. 'मणइ' प. ६१० 'प' मां टूक नथी. ७. 'विधिविहि लेहि' प ८ 'जलहि पायखि विरा नइ पामीइ' आ. ९. 'नावरे' प.

आसा-लूधो एक, पीहरि मेल्ही [1]परणी नइ ।
[2] आज [3]ऊचाट अनेकि, तिहनइ थाइ ऊपांपना ॥६०६॥

सूदा ! सउकि सु राख, मनि माहरइ काई नही ।
सहि समोवड [4]लाख, कीधा आज [5]अणोसरा ॥६०७॥

जिणणी काजि दीह, आंक्या आवेवा तणा ।
तिह लिखी तौं [6]लीह, करी [7]कुडेरू दाझिसिइ" ॥६०८॥

(चउपई)

जां सहस-[8]किरण-नइ करइ प्रणाम, जां 'नारायण' भाखइ नाम ।
तां धसमसतउ [9]धायउ धीर, आगलि दीठउ आविउ [10]वीर ॥६०९॥

[वत्सवत्स-आगमन-आनन्द]

हुउ हरिख गहगहीउं गाम, बंदीजन [11]फीटउ बदनाम ।
धातउ हूंतउ थापणि मोस, ते अम्ह देविइं टालिउ दोस ॥६१०॥

राज-वस्त्र नइ[12] रूडां ठाम, आणी अवल समोप्या ताम ।

[प्रतिज्ञा-पालनार्थं पुनर्गमन]

रहिउ राति निज नारी-ठाहि, चालिउ वली विहाणा-मांहि ॥६११॥

मूंक्यां हाटि अछइ हथीआर, तिहि लेतां [13]तउ लागइ वार ।
लागी वारइं विणसइ काज, ते लेई आवउं छउं आज ॥६१२॥

---

१. 'परह नइ' मा. २. 'तिह नइ आज अनेकि ऊचाटइ' प. ३. 'साच' प. ४. 'साच' मा. ५. 'अणीसरा' मा. ६. 'लही' मा ७. 'कुमेद' मा. ८. 'कर' प. ९. 'आविउ' मा. १०. 'आविउ वीर' मा. ११. 'टलीउ बरदनाम' मा. १२. 'मूंडा' मा. १३. 'लेवां मूं' मा.

वाघा अविचल वीर दयाल, [1]मांटीनउ मांटी मछराल।
आवी ऊभउ सूली हेठि, [2]राउति ऊसरावरण कीधउ सेठि ॥ १३॥

[श्रेष्ठी- सभ्यता]

सेठिइं मांडिउ अति अंदोह, [3]आविउ छयल लगाडी छोह।
जिम किम जाणत तिम नर वहत, लोक-माँहि पण-महत्त ज रहत ॥६१४॥

हाकइ हसइ करइ किलकिली, आव्यां मोटां माणस मिली।
"ए कांचली-तणी कुण मात्र ?, मइं पाडया छइ मोटा खात्र" ।।६१५॥

[कंचू-चौर्य]

मानी चोरी हडहड हसिउ, राय-राणा-मनि विस्मय वसिउ।
एह वात विमासण जिसी, साचू जूठूं जोईइ कसी ॥६१६॥

कामसेनि [4]तेडावी ताम, [5]राय-मुहूतइं पूछी जाम ः।
"कांइ एहनूं छइ अहिनाण, जे पेखी ओळीइ प्रमाण ?" ॥६१७॥

[करवालांकित सदयवत्स नाम]

कामसेनि आण्यउ करवाल, त [6]देखी चमकिउ भूपाल।
[7]वेगिइं अख्यर जोइ जाम, तां "श्रीसदयवत्स"-नूं नाम ! ॥ १८॥

[शालिवाहन-सदयवत्सपरिचय]

जाण्यउ खडग जमाई-तणूं, राइं वयणि [8]विमासिउं घणूं।
[9]आपोपइं थाइ असवार, आविउ उपरि करि गजभार ॥६१९॥

---

१. 'मुणस मनइ' प्रा. २. 'सह्‌ी ऊसीकस' प्रा. ३. 'आवी मोटा राखो मिली' प्रा. ४. 'बोलावी' प्रा. ५. 'रायमुहइं सिउं मूघइ माय?प्रा. ६. 'देखत मांडीइ मंडाण' प्रा. ७. 'वेगि' प्रा. ८. 'विणसइ' प्र. ९. 'आपणपइं' प्रा

भाट-पांहि पूछावइ भूपः "कहि, खांडानूं किसिउ सरूप ? ।
मूं-सिउं जूटवइ रमिइ जूआर, खांडउं लेई वाल्यउ भार ॥६२०॥

ऊभां [1]करि न डाढ काढोइ, ऊभां सिंह [2]न नह वाढीइ ।
ऊभां साप न मणि मोडीइ, ऊभां सुदृ न खांडूं जोडीइ" ॥६२१॥

[चोर-धारण युक्ति]

पहु [3]पूछइः "सांभलि परधान !, तूं तां बहु गुण-बुद्धि-निधान ।
ते प्रपंच ते बुद्धि कराइ, जांणइ ए जीवतउ धराइ" ॥६२२॥

तउ मुहुतइ आठविउ मर्म, जे हाथीया सीखवीआ सर्म ।
[4]ते ते दोई नइ चांपीइ, [5]सुंडाहलि सरिसउ झांपीइ ॥६२३॥

तउ मयमत्ता मयगल गुडचा, जे [6]भड भला ते उपरि चडचा ।
आंकुसि हण्या न आघा थाई, [7]पसूम तणी परि नाठा जाई॥६२४॥

सिगी-[8]नाद तीणइं कोधुं ईम, जिम [9]हाथी छांडो ग्या सीम ।
हाथी-तणी जि हूंनी हाम, तेहू [10]पोढी भागी माम ॥६२५॥

दलनायक [11]थ्यु रोसायकी, पाखलि थिउ बोलइ पायकी ।
'स्वामी ! [12]सइंहथि बीडू आपि, [13]ऊभा-ऊभि लिउं शिर कापि
॥६२६॥

---

१. 'बज' पा. २. 'बाघ नमुह' पा. ३. 'जपइ' पा. ४. 'ते बोई बोई नइ' पा. ५ 'सुडिइं-स्यु झाली' प्र. ६ 'बोइं भला' पा. ७. 'ढोर तणी' पा. ८. 'तणी परि नाडइ' पा. ९. 'मत्ता' पा. १०. 'मोटेरी' पा. ११. 'स' पा. १२. 'सम्हारइ' पा. १३. 'जिम हेला' पा.

[चोर वचन]

बीडउं मागिइं बोलइ चोरः "हाक्या ऊभा प्रांगणि मोर।
जन्म लगइ जे खाधू राज, हिव बीडूं लेई करसिइ काज" ।।६२७।।

बंभण बाल [1]अनइ स्त्री-पीड, संकटि समइ प्रजानी भीड।
बीडाँ वाट [2]जोइ तिणि वार, तिहि मुहि [3] आणी घालउ छार ।।६२८।।

तीणि बोलिइं दलनायक [4]बलिउ, परिगह असि ऊभा लेई चलिउ।

[युद्ध वर्णन]

[5]डमडम विसमा वाजइ ढोल, उर कमकमइं ति कायर [6]निटोल ।।६२९।।

झब्ब झब्ब झबकइ भालोह, घसमसंत घसमसिया जोह।
[7]धूसण-तणां कसण कसकसइं, गाढइ गुणि सीगिणि त्रसत्रसइं ।।६३०।।

[8]सावलोह सिरि तोमर तीर, भाले-[9][10]सिउ भेदीइ शरीर।
[11]जे मच्छरि मुहि आवी चडइ, ते पायक पग आगलि पडइ ।।६३१।।

ऊदाली लीधां हथीयार, कोटवालना जीवन सार।
खे भडनउ [12] गाढउ भडिवाउ, तिहि टाली नवि [13]घातइ घाउ ।।६३२।।

दल-नायक बल बोली बहू, आघू थिउ आरोली सहू।
घोडे-स्यूं घोल्या असवार, अश्व पायक नवि लाभइ पार ।।६३३।।

---

१. 'बीयनी' प. २. 'जि जोइ वार' पा. ३. 'छाणी' पा. ४. 'परध-सिउ अजासी बल्यु' पा. ५. 'हमडम डमक्यां' पा. ६. 'कोल्ह' पा। ७. 'जे दीठइ सहू पामइ मोह' पा. ८. 'भांग' पा. ९. 'सवे' पा. १०. 'नवि' पा. ११. 'बाधे पा उंघि जे मुहि' पा. १२. 'मोटउ' पा १३. 'बालइ' पा.

हुडहुड चोर हाकतां हसिउ, धुरि सेलहत सूली-[1]तलि धसिउ ।
[2]थोडइ वादिइं विगूतउ घणउ, केवलउ एक कांचली-तणउ ॥६३४॥

भागी माम भला भड-तणी, राउत सवि कीधा रेवणी ।
ऊलिउ माणस-मांहि तलार, [3]दल विदलिउ नमिउ गजभार ॥६३५॥

[बावन वीर सह युद्ध]

तां सविहूं नूं ऊतारिउ नीर, [4]हवइ हकारउ बावन वीर ।
आव्या वीर सवे ऊपडी, झलकइं झांटि त्रिपा खीत्रडी ॥६३६॥

(वस्तु)

तीणि अवसरि, तीणि अवसरि, कलह-पीय तेणि ।
नारदि न्यानि परीछिउं, मृत्य-लोइ को करइ कदल ।
एक गमइं [6]नर एकलउ, [7]मिलीयति बीजइं गमइं घण दल ॥
पच वीर [8]पय भरि करीय, वली विलायउ वट्ट ।
केवु [9]तव कंचू-तणइ. संकटि पडिउ मुट्ट ॥६३७॥

(चउपई)

नारद-वयण सुणी नर पच, आपापणा करइ परपंच ।
नर निरतइ नीसरीआ विमर, [10]जिहनी आलि न सहीइ अमर ॥६३८॥

घर छांडी गयणगणि गम्या, पुर पहिठाण ऊपरि भम्या ।
सघलूं सेन विमासइ इसिउं, परवति पॉख नीसरी कि सिउं ? ॥६३९॥

---

१. 'सिउ कसइ' आ. २. 'थोडु वाद विगोउ' आ. ३. 'दल वीनम्यु' आ. ४. 'तउ बोलाविया' आ. ५. 'कंतेणि' आ. ६ 'मड' आ. ७. 'बीजइ गमइ दल सहित नरवर' आ. ८. 'बीस लेई वर बल्यू' आ. ९. 'कांचू तह्य-तणउ' आ. १०. 'जेहुनां प्राण रूप छइ अमर' आ.

जां सूदु नइ [1]सूद्रक जडया, तां पांचइ ग्रावी पगि पडया ।
पायक छतां न झूझइ नाथ, हवि तूं जोइ ग्रम्हारा हाथ ॥६४०॥

ग्रागइ एकनइ धरिवा ग्राहि, [2]ग्रनइ पंच पुहुता पड-माँहि ।
ग्रति ऊंचा नइ ग्रंजन देह, किरि महि-मंडलि ग्राव्या मेह ॥६४१॥

घोर ग्रंधार ग्रधारूं करइ, दिनकर-[3]तणां किरण ग्रावरइ ।
सेवा लीयउ [4]वरतावइ सीत, वइरी-तणां कंपावइ चीत ॥६४२॥

सूली-भजण भजइ ग्रंग, जिणि दीठइं पायक हुइ पंग ।
ग्रजउ ग्रमउ वेहू भड भला, [5]ऊडी तइ सिरि तोलइं शिला ॥६४३॥

इस्या वीर सूदानइं साथि, बावन सरिसा ग्रावइ बाथि ।
ग्रणी धार नवि लागिइं ग्रंगि, बीजूं झूझि न ग्रावइ [6]रंगि
॥६४४॥

ऊभा भड झूंटि लिइं लोह, तीह ग्रागलि कुण जीपइ जोह ? ।
राइ तइं हयवर हाथी बहू, [7]ग्राघउ थिउ ग्रारोली सहू ॥६४५॥

निवड निहाय धरणि धमधमइ, वूंबारव गयणांगणि गमइ ।
खेहा रवि नवि सूझइ सूर, रणि विसर्या वाजइं रण-तूर ॥६४६॥

मयमत्ता दंतूसल मोडि, [8]थानकि-थका ऊपाडया कोडि ।
घोडे-सिउं घोल्या ग्रसवार, रथ पायक नवि लाभइ पार ॥६४७॥

---

१. 'साथिइं जडया' ग्रा. २ 'पांचइ 'जण' ग्रा. ३ 'तणुं तेज संहरइ' ग्रा. ४. 'चडावइ' ग्रा. ५. 'ऊपरि-थ्या वे तोलइं' ग्रा ६. 'छंगि ग्रा. ७.ग्रा टूंक 'ग्रा'मा न थी. ८. 'दीइं घाउ कडयडइं' ग्रा.

ऊमा वीर सवे ऊपडी, पहु परधान विमासण पडी ।
"निश्चिइ नरए रूपि इसिउ, पांडव-मांहि पुरुषोत्तम जिसिउ ॥६४८॥

प्राण विनाण सहु परिहरउ, [2]माम-माँहि ईणि सिउं सल करउ ।
जिणि गोरू कीधा [3]गजमार, जिहनी [4]झड न सहइं झूझार ॥६४९॥

बोजी "बुद्धि न आवइ बंधि, बलीउ चोर तु कीजइ [5]सांध ।"
सुणीबात व्यापारी-तणी, चालिउ चोर-नइ मिलवा भणी ॥६५०॥

पंच [6]जणे-सिउं पालउ थाइ, आयुध [7]मेल्ही आविउ राइ ।
सदयवत्स चालीनइ वीर, साहमु पुहुतु साहस-धीर ॥६५१॥

साईं लेई लागउ पाइ, तां वांसइ अवली गम राइ ।
ते देखी हरख्युं नरनाह, साचइ सदयवत्स [9]हुइ आह ॥६५२॥

[युद्ध सदयवत्सवीर-परिचय]

जाणी अंग-तणउ आकार, खाँडइ सदयवत्स श्रीकार ।
तां ऊलखिउ उजेणी-स्वामि, तउ नरवरि बोलाविउ नामि ॥६५३॥

सूदु वयणि विमासइ ताम, नरवर बोलाविउ लेई नाम ।
हिव एह-सिउं उलवण रही, सुधि-तणी वात पूछी सही ॥६५४॥

[सावलिंगा पिता-वचन]
"कहइ, कुमरि छइ केणइ ठामि ?,"
"तम्ह बेटो बंदीजणगामि" ।
[सूडा-वचन]
पंथ वीर थानिक पाठवइ, सूउ अवर बुद्धि आठवइ ॥६५५॥

---

१. 'राउ' प्रा. २. 'साहमा जईनइ सेवा करउ' प्रा. ३ 'मार' प्रा. ४. 'झट' प्रा. ५. 'वाह' प्रा. ६. 'कवि' प्रा. ७. 'बलइ-मिउ' प्रा. ८. 'मूठो' प्रा. ९. 'जे प्रा.

(छंद पद्धडी)

जं वयरा पयासइ सदय सार,
तिरिग सालि-राय सारांदकार ।
बोलाविउ सुत सकतिकुमार,
करि वच्छ ! [2]सजाई म लाइ वार ॥६५६॥

[सावलिंगा-आनयन आदेश]

छइ कुमरी [3]कविजन-तरगइ आवासि,
[4]आरगू करेवि [5]आराउ आवासि ।
सु तस ततखिरा कुमरि किद्ध,
पालखी [6]परियह सत्थि लिद्ध ॥६५७॥

[उत्सव]

हुई तलीया तोरण हट्ट वट्ट ।
संपत्ता [7]शकति-रूपिणि भट्ट ।
चउमासि जल-राशि जिम्म ।
किरि कमल नयरि पुहतु तिम्म ॥६५८।
पय लग्गवि वहिनर किउ प्रणाम ।
आसीस अखय भरिण दिट्ठु ताम ।
सिंघासणि संथप्पी सुवेस ।
बहु उत्सवि पट्टणि किउ [8]प्रवेस ॥६५६॥

(गाहा)

संपत्तो सदयवच्छो, ससुरालयं सावलिंगि-संजुतो ।
अदिणुण अणागए रवि, [9]चित्ति न चाहिज्ज ए वीरो ॥६६०॥

---

१ 'ता तणइ सुघि' प्रा.२. 'वेगि लाउ सि वार' प्रा. ३. 'बंकीजन' प,
४. 'आणु' करि' प्रा. ५. 'आणू तम्ह' प्रा, ६. 'सुखासण' प्रा. ७, 'परि
दुआर, संपत्त भूयण सकतिकुमार' प्रा. ८. टूंक 'प्रा.' मां नथी.
६. 'वित्त भावधारा मां पच्छितह पूर ए भरयो' प्रा.

[मित्र लाभ]

कीय मित्त मण-गमंतय, विप्पो वणिक्क इक्क खित्तिउ ।
तिहि [1]परिसत्त-परिछ्ण, अवलोइ कम्म घण घोरं ॥६६१॥

जूवटइ वत्त विसुणीय, पंथी पासंमि [2]एक्क अप्पुबी ।
नित्त मडू नित धाह, विवहारी तणइ तं सुपुरो ॥६६२॥

[3]निच्च्र निच्छ तवइ [4]नवे जणि, जा लिज्जइ चरणि चंपिवि हेइ
मज्झंमि ।
ताँ ते पुरिस पहिल्लो, पुहुच्चइ ए मंदिरे [5]मडउ ॥६६३॥

(दूहा)

[6]इम अवगमी अणेइ दिण, थिउ वाणोउ विलक्ख ।
जे परिजालइ [7]पिंड इह, तिहिं दिउं वित्त लक्ख ॥६६४॥

[शवदाह प्रसंग]

(चउपई)

सुणी वात किल्किलिउ वीर, सदय नरेसर साहस-धीर ।
मित्र-तणउ मेलावउ लेऊ, तीणइ नयरि [8]आव्या तेऊ ॥६६५॥

जाँ आबी ऊतारु किद्ध, राँधिणिनइ घरि [9]राँधण दिद्ध ।
तां नयरी डाँगरा-निनाद, साते सेरी तेह जि साद ॥६६६॥

---

१. 'पुहसत्त' प्र. '२. 'एय' प्रा. ३. 'नित्त नित्त' प्रा. ४. 'नव जण बालय करइ चरण संपवि' प्रा. ५ 'मेरू' प्रा. ६. 'इम इम गमीय प्रणेग' प्रा. ७. 'पंडिमहं' प्रा. ८. 'आविउ घइ' प्रा. ९. 'राँधवा' प्रा.

छइलिइ जई [1]छीतउ डाँगरउ, "कां रे [2]अति गाढा गाँगरउ ? ।
तउ आपे बापडा वि लाख, जउ ए दही देखाडउं राख" ॥६६७॥

[3]सेठि विदाधिउ बोलइ वयणः राउत [4]रक्त थयाँ बे नयण ।
"जउ लहुडा बालइं तू ह् बाप, तउ अम्ह काँई अधिकूं आप"
॥६६८॥

"अधिक ऊछानी ए कुण बात ?, [5]एक-तणइ कुमरि दिउं रात ।
जे ए वडउ टालइ ऊचाट, तिहि-सिउं [6]भव सगपणनी वाट" ॥६६९

[शाकिनी-संतापित विप्र-कन्या]

करी सेठि-सरसी दृढ वात, चाल्या [7]तिहि ऊचलिवा तात ।
तां पुरोहित-घरि जागर पडइ, कुमरि कूंआरी शाकिनि नडइ
॥६७०॥

वरस दिवस लगइ वाजइं डाक, ऊपरि गुणीया हाको हाक
बापिइं बेटी छांडी आस, टालइ दोस परणाबूं तास ॥६७१॥

सदयवच्छि जई जोई द्रेठि, आवी पात्र बईठउ पग हेठि ।
"जास हाथि हरसिद्धि-हथीयार, तिह-सिउं अम्ह केहउ अहंकार?
॥६७२॥

नीरी करी [8]दइसई दीकिरी, साथिईं वि तिह कारणि वरी ।
आव्या सेठि-तणइ अहिठाणि, ता ते मडूं [9]पडयू ं भंपाणि ॥६७३॥

---

१. 'लछीउ' आ. २. तम्हे 'गाढइ' आ. ३. 'विदोगिई' आ. ४. 'रांति रमत थियां नयण' आ. ५ 'तेह नइ' आ. ६ 'भावह' आ. ७ ' च्यारिकुं वर विख्यात' आ. ८ 'घोस' आ. ९ 'जडिउं जंपणि' आ.

काढो कुकई काँबलि बंधि, एकइं खोखूं कीधूं कंधि ।
सूकट[1] लेई लाखिउ समसानि, महाजन भणइः "ए विस्मय मानि" ॥६७४॥

सेठि अणावि अगर नइ आगि, ऊठी काजि आपणइ लागि ।
राति निचींतु निद्रा करे, बोल्या बोल सवे साँभरे ॥६७५॥

[सूदा वचन]

सूदउ भणइः "सुणउ अम्ह मित्र !, ए दीसइ छइ देव[2] चरित्र ।
इणिइं कोई वसिउ वैताल, [3]आज लगइ इणि मंडिउ आल ॥६७६॥

[प्रथम प्रहर कार्य]

(छप्पय)

पुहुरि पहिल्लइ विप्प, राउ जागंतु जोइ ।
तां निसि भरि नारी, मसाहणि सूली-तलि रोइ ॥
"परिठवि पुठि दया, [4]पर दया मर पत्तउ ।"
कामिणि पूछीय कज्ज, कंधि घरि ऊभउ हुंतउ ॥
भोजन दियंत मिसि डाकणी, खाइ माँस मच्छरि चडीय ।
उत्तम तिवार असि वावरी, करिय चूडि त्रुट्टवि पडी ॥६७७॥

[द्वितीय प्रहर कार्य]

बीजइ पुहरि प्रधान-पुत्र, बलवंत बईट्ठउ ।
तां उल्हाणउ अगनि, तेज दूरिट्ठिय दिट्ठउ ।

१. 'बोखट' प्रा. २. 'वैव' प्रा ३. 'दाणव देत हुसिंई विकराल' प्रा. ४. 'परवई' प्रा.

पायक कज्जि पहुत, प्रेत परवरियउ पख्यलि ।
विचि खीचड कलकलइ, वद्ध बावीस कुमर तलि ।

मुझ स्वामि होमसइ पंच नउ, एक्क गहीय बीजा गहिसि ।
घसि लिद्ध धगंतउ लक्कडूं, तीणि ऊडी ग्या सइं सहस ॥६७८॥

[तृतीय प्रहर कार्य]

त्रतीय त्रीजइ पुहुरि, दैत्य नयरी दिसि दिक्खइ ।
वित्तर [1]वंसइ बांधे, पूठि-थ्थु परिकम्म पेखइ ॥

सत [2]कमाड ऊघाडि, राय-सुति सूती लीधी ।
आणी आपण पासि, युवति जागंती कीधी ॥

"मुझवरि कइ समरि जीण [3]ऊगिरइ, षिहु त्रीजउ समरू सुभट
[4]पड छाँडि ऊभु [5]असिवर सरिसु, कीय कंकाल विखड घट ॥६७९॥

[चतुर्थ प्रहर कार्य]

चउथइ चतुर चकोर, वर वंसधर जग्गइ ।
नां [6]ऊट्ठवि मढ्ढूं मुरेडिउ, जूअ जीअ [7]उट्ठवि मग्गइ ।

मुद्द भणइः "तन सार, पट्ट [8]कवडी न कडंतइ ।"
तीणि ततखिणि आण्यउ पाट, जिणि राय रमतह ।

सिर-कमल हराविउं हेलि रसि, प्राण प्रेत-गृह टालिउ ।
त्रिहु मित्र [9]अजग्गिइ, एकलइ [10]तिह ति पिंड प्रजालिउ ॥६८०॥

---

१. 'वइसइ' आ २. 'कमाड' आ ३. 'ऊगरइ' आ. ४. 'पखछाहि आ. ५. 'सूर जिसिउ' आ. ६. 'सिर मोडवि मडउ' आ. ७. 'खड़ाग' आ. ८. 'कुडीय' आ. ९. 'अजग्ग' आ. १०. तेणि मढूं पर' आ.

(चौपई)

जाग्या मित्र पेखइ परोहडूं, तां तीरिण बलइं बालिउ मडू ।
च्यारि पुहर सेविउ समसान, ऊठी कीधूं सविहूं सनान ॥६८१॥

[श्रेष्ठी-प्रति प्रतिज्ञा-पालन-कथन]

करी सनान बोलाविउ साह, "[1]आपि वित्त, नइ करि विवाह ।"
सेठि भणइः "तम्हि कूडूं किद्ध अम्ह देखतां दाघ नवि दिद्ध" ॥६८२।

मिल्या रोस-भरि राउलि गिया, राइं रूडी परि पूछिया ।
विरण संकेत न मानइ सेठि, "कांई [2]उदाहरण दाखु द्रेठि" ॥६८३॥

[शवदहन-प्रमाण निदर्शन]

पहिलइ पुहरि जि जागिउ तांह, तीरिणइ आणी आखो बांह ।
बाढी [3]चोरि जि चूडा काजि, ते कूडूं मानिउ महाराजि ॥६८४॥

"ए राणी-नउ हुइ हाथ", सुरिण वात सोधइ नरनाथ ।
दीसइ नही निशाचरि भमी, किरि आकासि भणी ऊपमी ॥६८५॥

बीजे तउ बोलिउ तिरिण वार, कां रहीहि राजकुमार ? ।
सहुवुं काजि सोधावइ सामि !, [4]देव न दीसइ कीराइ ठामि ॥६८६॥

नयर-नराहिव सोधइ कुमर, पर प्रासाद अनइ वर विमर ।
एकइ तां वीनविउ अधीस, [5]पउढया पोलि [6]बाहरि बावीस ॥६८७।

सुणी वात स पुहुत्त् दूत, सूतउ [7]ऊपाडिउ प्रपूत ।
जाराइ वितर विलग्यु वली, ऊठया कुमर सवे खलभली ! ॥६८८॥

---

१. 'मागि वित्त अनइ' आ. २ 'दारुण दीठुं' आ. ३. 'दोरी चूडी-नइ' आ, ४. टूंक ६८५ 'अ'मां नथी ५. 'पडया' आ. ६. 'वीर' आ. ७. 'ऊगम्यु सूत' आ

[1]लेई आव्या आदीसर पासि, बईसार्या अभि आपण पासि ।
तउ बेटा बोलइ "सुणि तात !, ए संकट-नी विसमी वाट ॥६८९॥

[2]कुलदेव तिके कीधी सार, पूंठिइं पाठवीआ पडिआर ।
पाणीवल जउ आवइ पछइ, तउ ते [3]सवि संघार्या अछइ ॥६९०॥

[4]वांसइ वितर [5]करि करवाल, लीधू लाकड झांपी झाल ।
तीणइ भइरवि भडकाव्या भूत, [6]सवि ऊठी आकासि पहूत ॥६९१॥

एक एक-पाहिइं अति भला, अधिपति-तणा कुमर [7]एतला ।
सवि [8]ऊगार्या साहस धीरि, पोलि लगइ पहुचाड्या वीरि ॥६९२॥

तउ श्रीजा-प्रति पूछइ [9]पहू, कारण कहिसिइ कुमरी [10]यहू ।
सात कमाड तणि करि सार, किम ऊघाड्या विमर [11]द्वार ?
॥६९३॥

तीणि वात वसिउ [12]विववाद, कुमरी काजि करावइ साद ।
निद्रालूई नराहिव-वच्छि, पिता पासि ते पुहुती [13]लच्छि ॥६९४॥

[कुमारी-स्वानुभव कथन]

[वस्तु]

"तात ! संभलि, तात ! संभलि, वात ति जि वीत ।
हरी निशाचरि निशि समइ, निद्द-भरि निज सयणि सुतीय ।

---

१. 'आव्या आधीसर पावासि, बइसारइ अभ' आ. २. 'काई कुल देवी' आ. ३. 'सघला' आ. ४. 'वाह्या' आ. ५. 'सवि' आ. ६. 'तिम ऊडया जिम एक महंता' आ. ७. 'केतला' आ ८. 'ऊवाह्या' आ. ९. 'एहु' आ. १०. 'वहु' आ. ११ 'विचार' आ. १२ 'रा विखवाद' आ. १३ 'अच्छि' आ.

कांमिइं वरि कांई को समरि, [1]लेई विवरि खित्तिय ।

पडछाहि ऊभउ सुभट. ते मइं समरिउ स्वामि ! ।
तीणि ततखिणि दैत [2]दलि, एणइ पुहचाडी ठामि ॥६९५॥

[चउपई]

हणिउ दैत्य जोवा [3]जण घणा, अधिपति पाठविया अति घणा ।
विवर-मांहि ते पडिउ प्रचंड, दीठउ दाणव-देह विखंड ॥६९६॥

जस भुइं पुहरि पोलि दीजती, जस भुइं कोडि जतन कीजति ।
ते भय भव सुधि टालणहार, एअ कुमरी करि अंगीकार॥६९७॥

सदयवच्छ बईठउ ते सूर, जउ बोलइ तउ भावइ [4]भूर ।
बीजउ पुत्री जउ [5]जण लेउ, [6]सुणीय हुई मनि हरखिउ तेउ॥६९८॥

चउथइ ठामि जि जागइ सुभट, ते नरवरि बोलाविउ निकट।
"तम्हे तम्हारूं कारण कहउ, माणइ राजि धणी-थिया रहउ"
॥६९९॥

तउ सूदइं [7]मोकलावि मित्र, [8]अति डाहउ अधिकारी-पुत्र ।
कही अहिनाण अणाविउ पाट,सोनानउ श्रीकारिउ घाट ॥७००॥

पासा पाट सोगठां सार, देखी नरवर बसिउ विचार ।
"लिउं भंडार-तणी सुधि सहू, पछइ पूछउं कारण कहू ॥७०१॥

---

१. 'लिउ' प्रा. २. 'हणिउ तेण' प्रा. ३. 'रणझिण्या राइ'' प्रा. ४. 'सूर' प्रा. ५. 'जल' प्रा. ६. 'भणी हुउ' प्रा. ७. 'मोकलिउ' प्रा. ८. 'उत्तम ठामि' प्रा.

तालानउ हर हालिउ नही, पासा पाट कढाणा किही ? ।
प्रति ग्रादर-सिउं पूछइ राउ, "कहउ देव ! ए कवण उपाऊ ?"
॥७०२॥

[1]सूदइं प्रेत-पराक्रम [2]कहिउ, तीणि राजा [3]रोमांचिउ रहिउ ।
एह-सू खित्ति नही समानि, एक-एक-नइ विसमा मानि ॥७०३॥

(वस्तु)

तीणइं ग्रवसरि, तीणइं ग्रवसरि, [4]कहइ कर जोडि ।
[5]विनयग्गल विवहारीउ, महाराज प्रति मान मागइ ।
"ऊतारउ ग्रम्ह घरि घटइ", सदयवच्छ पय-कमलि लागइ ॥
तिह पुरिसत्तण पेखि करि, मणि [6]ग्राणंदिउ साह ।
लिउ देव ! सविसेस करि, वित्त ग्रनइ वीवाह ॥७०४॥

[विवाह]

(चउपई)

विप्पि कीधउ कन्या-दान, सेठि-तणइ परणिउ परधान ।
राउत-नइं [8]राइं दीधी पुत्रि, हरखिउ सूद, मंडाणइ मित्रि ॥७०५॥

जे जे खाखर [9]ग्रनइ खंखाल, ग्रठ पुहर जे [10]सघाइ ग्राल ।
इस्या भूछ भंडि पूरा कीध, ग्रास वास [11]मुहि माग्या दीध ॥७०६॥

[12]लीधा [13]हयवर नइ हथीग्रार, कीधा सुभट-तणा शणगार ।
कणय-कप्पड उलगू ग्रनंत, लेई चालिउ लील।वई-कंथ ॥७०७॥

१. 'सूदउ' ग्रा. २. 'कहूइ ग्रा. ३. 'रोमाच्यु रहइ' ग्रा. ४. 'एकनी ग्राधिकी मानि' ग्रा. ५. 'कहईग्र करजे' ग्रा. ६ 'बिनय लगइ' ग्रा. ७. 'साणंदिउ' ग्रा. ८. 'ग्रधि पति नी' ग्रा. ९. 'घज' ग्रा. १०. 'सीधइ काल' ग्रा ११. 'तुहि' ग्रा. १२. 'कीधा' ग्रा. १३. 'हवइ वरनइ' ग्रा.

करी कटक संचरिउ सूर, वाज्यां रण-काहल [1]रण-तूर।
जिहां श्री [2]नर-इंद निवास, तिहां समहूरतइ मांडिउ वास ॥७०८॥
[3]वीरकोट [4]तिहां नगरी नाम, दीधूं देखी उत्तम ठाम।
नई नीझरण अनइ आराम, [5]वारू लोक तणा विश्राम ॥७०९॥
लोभ दिखाडी वास्या लोक, आपइं [6]सांथ समाहण रोक।
पुण्य-श्लोक प्रजा-प्रतिपाल, भू-मंडण भूसण भूपाल ॥७१०॥
आणी वास्या [7]वन्न अढार, तिणि पुरि उच्छव [8]जयकार।
कर्म आपणउ सहूको करइ, राम-तणी परि राज [9]उद्धरइ ॥७११॥
[पुण्य महिमा]

[वस्तु]

पुण्य रूसइ, पुण्य रूसइ, सकति सूर सिद्ध ।
पुण्यइ प्राणि वनिता वरइ, पुण्यइ पवर पयरहण लब्भइ।
ठाण-भट्ठ निद्धंत नर अडवडत, सुउण पुणि धुज्झइ ॥
पुव्वह भव-तणा पखइ, न सुख शरीरि ।
पुण्यइ एउ पामी सहू, संपति सूदइं [10]वीरि ॥७१२॥
[सावलिंगी लीलावती आनयन]

[चउपई]

सावलिगि [11]लीला जिहां ठवी, ते [12]लेवा प्रधान पाठवी।
हुँती सुसरालइ जे बेउ, आणउ करी अणावी तेउ ॥७१३॥
राणी बिहुं [13]प्रति दीइ बहु मान, रंगि रमतां [14]हूआं आधान।
क्रमि क्रमि जउ पुहता दस मास, [15]पुत्त-जनमि तउ पूगी आस ॥७१४॥

१. 'नइ' आ. २. 'नंद राय' अ. ३. 'वीर कोटि' आ. ४. 'तस' अ. ५. 'वारू' अ. ६. 'साथ' अ. ७. 'वर्ण' आ. ८. 'जय जय कार' अ ९. 'हरइ' अ. १०.टूंक 'आ' मां नथी. ११. 'लीला वइ' आ. १२.'तिहां' आ. १३. 'प्रतिइं प्रति' अ. १४. 'हवूं' अ. १५. 'पुत्ति-जन्मि' आ.

[उभय पुत्र-जन्म]

वीर विभाउ जि सामलि-तणउ, वरवीर लीलावई-तणउ ।
[1]बे डाहा बे लक्षणवंत, रोसि चडया आणइ अरि-अंत ॥७१५॥

[पुत्र शिक्षण]

[2]भणइं गुणइं [3]सवि विद्या सार, [4]वडइ वडावइ चडया कुमार ।
भणइं [5]दंडायुध नउ मर्म, बेउ [6]भालि उदयवंतु कर्म ॥७१६॥

सभां [7]बईठा सदय उछंगि, राजकुमर बोलावइ रंगि ।
बिहु कुंअरनूं करइ वखाण, आवइ भाट कहइं '[8]कल्याण' ॥७१७॥

[उज्जयिनी भाट-आगमन]

करइ [9]वखाण पहवच्छह-तणूं, [9]दान मान दीधूं अति घणूं ।
पुह भणइ:"तुम्हि किहां निवास?"ते भणइ:"अह्म ऊजेणीवास"॥७१८

भाट प्रतिइं इम बोलइ भूप; "[10]कहि कांई ऊजेणि-सरूप ?"
"ऊजेणी अरि-कटकि आवरी,तउ अम्हि आव्या[11]आंहां नीसरी"७१९

[शत्रु-आक्रांत उज्जयिनी-वृतांत । सदयवत्स प्रतिज्ञा-ग्रहण]

तं [12]जाणी राउ कोपिइं चडिउ,[13]जाणे अगनि-माँहि घृत ढलिउ ।
"बीजी वार तउ भोजन करूं, वइरी-तणुं सेन संहरूं ! ॥" ७२०॥

---

१ 'बेय छोटा नयू' आ. २. 'पढइं' अ. ३. 'सूत' आ. ४. 'चडइ वधइ वइ वयौ कूंआर' अ. ५. 'डंड युद्ध' आ. ६. 'भाई' आ. ७. 'बइठो सूदा उछंगि, तू राजा पूछइ मन रंगि' ८. 'कल्याण' आ. ९. 'राजादान दिवारइ घणू' अ १०. 'कहु ऊजेणी किसू स्वरूप' आ. ११ 'ईह' आ. १२. 'संभलि' आ. १३. 'विश्वानरह जिम धडहडिउ' अ.

[सदयवत्स-कुमार युद्धोद्योग]

वीर विभाउ अनइ वरवीर, बोलइ कुंअर बि साहस-धीरः।
"सभामांहि बीडूं लिइ वच्छ!, अम्हे ऊवेलउ रा पहुवच्छ" ॥७२१॥

[1]हयदल पयदल आपी सार, [2]बोलाव्या वारू झूझार।
जि रहि जीए जीवरखीय लेउ, वारी [3]कटक संचरिया बेउ॥७२२॥

छडे पीयाणे ग्या ऊजेणि, ढोल नीसांण वजाव्या तेणि।
जे वईठा गढ पाखलि फिरी, ते [4]ऊडया जिम ऊडइ खुरी ॥७२३॥

[राय प्रभुवत्स-चिंता]

राउ पहुवच्छ विमासण करइ, "गढ [5]पाखलि हय गय तरवरइ।
जे दलि भागुं इह भडिवाइ, [6]सही [7]समरथ को मोटउ राइ॥"७२४॥

राय पहुवच्छि [8]मोकलिउ भाट, पेखइ [9]पयदल घोडा [10]घाट।
[11]तेडी भाट भणइः "कुण तम्हे ?"

[सदयवत्स-कुमार उत्तर]

"सदयवच्छना नंदन अम्हे" ॥७२५॥

बदीजण तउ करइ वखाण, [12]आपइ हेम करह केकाण।
प्रायस मागी ग्या गढ़-माहि, सदयवच्छ आविउ[13]तिणि ठाहि॥।२६॥

[सदयवत्स-आगमन]

भाट भणइः "तम्ह किरणा उली," तिणि वयणि राउ हरखिउ वली।
प्रमदा-सिउं पुहुतउ सदयवच्छ. सूत-सिउं [14]प्रणम्यु राउ पहु-
वच्छ ॥७२७॥

---

१. 'गल' प्रा. २ 'बलाविया जिकि' वि. प. ३. 'विकट संख्याया छेउ' प्रा. ४. 'सवि ऊडीग्या जिमछरी' प्रा. ५. 'पाखलिइं मसणि.' प. ६. 'ए' प. ७. 'ए कोइ मोटेरो राय प्रा ८. 'मोकलीय' प्रा. ९.'गयदल' प्रा. १०. 'घाट' प. ११. 'भेटी' प्रा. १२ 'आप्या' प्रा. १३. 'तिउह' प्रा. १४. 'सुत-सूं पय प्रणमइ सुदयंवच्छ'।

[वस्तु]

[1]राउ हरखिउ, राउ हरखिउ, [2]सुत-हृ संपत्त ।

तव नयरी आणंद हूय, पंचशब्द वाजित्र वज्जइ ।
माय ताय [3]जुहार कीय, गरूय वीर गंभीर गज्जइ ।।

अवसरि पय प्रणमीय, सदयवच्छि तिणि वार ।
माडी [4]आसीसह दिइ, राउ सिरि समोप्युं भार ।।७२८।।

[स्वजन मिलन]

[चउपई]

कुंअर सवे आवीनइ मिल्या, मान-सहित गाढा जलहल्या ।
राज करइ राय-सिउं सवे, भणइ गुणइ उच्छव तिहृ घरे[5] ।।७२९।।

[वस्तु]

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, शांतिशर शच्छि ।

पुण्यइ प्राणि वनिता वरी, पुण्य-पवर पवर पयरहृण ।
लब्भइ ठाण निद्धंतर नर, पुण्य-घोसि चडवडंत पण ।।

पुण्य जि पुब्वह भवतणां, परखइ न सुख शरीर ।
पुर्ण्यांहि ए सहू पामीयइं, संपत सुद्द वरवीर ।।७३०।।

इति श्री कविभीमविरचित श्री सदयवत्सवीर प्रबंधः
सम्पूर्णः ।

---

१. 'राय' आ. २. 'पुत्त' आ. ३. 'जोहार कीछ' आ. ४. 'करइउ अरिणां राय समोप्यइ भार' आ. ५. टूंक ७२९ 'अ' मां नथी ।

अंतिम पृष्ठ । सत्यवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि सवत १५९० (देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०५)

अंतिम पृष्ठ : सदयवत्स वीरप्रबन्ध · लिपि संवत १४८८ [पोथी असमग्र] (देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०५)

'अ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवत्स वीरचरित्रं समाप्तं।

संवत १४८८ वर्षे फाल्गुन ...... भौमे श्री .. पत्तने लिखितं विद्वज्जन मनः प्रमेमोऽयं विनोदमात्रम्। [प्राच्य विद्यामंदिर। नं० ४२६२]

'आ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवच्छ चुपइप्रबंध समाप्त। शुभम् भवतु।
श्री सं. १५६० वर्षे मागसर वदि ५ रवौ (पं. श्रीचंद लिखितं) (जैन साहित्य भंडार, पालीताणा)

'इ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवच्छ कथा समाप्ता। श्रीशं भवतु। कल्याणमस्तु। संवत १६६१वर्षे प्रासु सुदि १ दिने धनकनाम संवत्सरे। महाराजाधिराज महाराजा श्री रार्यसिघजी विजयराज्ये, श्री खरतरगच्छे भट्टारक, श्री जिनचंद्रसूरि गणि पं. श्री २ श्री चारित्रमेरुगणि तत् शिष्य पं. श्री १ सीहा तत् शिष्य चेला हीरा लिखितं। श्री फलवधीमध्ये।

[फलोधी जैन भंडार]

परिशिष्ट १

सदयवत्स सावलिंगी पाणिग्रहण चुपई

॥ दूहा ॥

सरसति सामिणि पाय नमी । मागुं एक पसाय ।
सदयवच्छ-गुण गायतां । सुभ मति देयो माय ॥१॥

मात मया मझनइ करे । आपे अविरल वाणि ।
तुझ प्रसादि गुण वर्णवुं । मूरख हुं अणजाण ॥२॥

जउ तुं माता मुखि वसइ । तु हुं करुं कवित्त ।
सदयवच्छ नरपति-तणउ । भविय ! सुणु इक चित्ति॥३॥

कवण नगरि ? ते किहां हूउ ? । किम तिणइ पामिउं राज ? ।
लघु वेसिइं ते किम फिरिउ ? । किम कीआं तिणि काज ? ॥४॥

॥ चुपई ॥

ऊजेणी नगरी सुविशाल । गढमढमंदिर पोलि पयार ।
वाडी वन अति रुलीआमणां । वावि सरोवर तिहां छइ घणां ॥४॥

नवतेरी नगरी विस्तारि । वास-तणउ नवि लाभइ पार ।
गूख जालीआं मन्दिर घणां । पार न पामुं देउल-तणां ॥५॥

चुरासी चुहुटां अति चग । नगरी जोतां अति आणंद ।
कलहटकोलाहल हुइ घणा । पुहुचइ कोड सहूकी तणा ॥७॥

घरि घरि दान दीइ अति घणां । दालिद छेदइ दुखीआ-तणां ।
ब्राह्मण वेद करइ उच्चार । सहू राखइ आपणा आचार ॥८॥

आदि पृष्ठ । सदयवत्स सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई । [लिपिसंवत नहीं है] देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०६ । प्राच्य विद्या मंदिर बड़ोदा ।

अंतिम पृष्ठ । सदयवत्स सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई । [लिपि संवत नही है ।] देखिये ग्रंथ पृष्ठ १३४। प्राच्य विद्या मंदिर, बड़ोदा ।

बावन सई भइरव तिहां वसइ । चउसठि योगिणि हुड हुड हसइ।
सूली-भंजन नामी ओड । चोर खापरु संकल-मोड ॥९॥

पहुवच्छराय करइ तिहां राज । सकल लोकनां सारइ काज ।
न्याय रीति ते पालइ खरी । तस कीरति दहदिसि विस्तरी॥१०॥

तास घरणि सुमंगला नारि । रूपिइं रंभा-नइ अवतारि ।
सतीशिरोमणि नारी तेह । राजा-सरिसु धरइ सनेह ॥११॥

तास उअरि हूउं आधान । मुक्ताफल जिम सीप समान ।
पूरे मासे सुत जनमीउ । सदयवच्छ तस नाम ज दीयु ॥१२॥

बीअ-तणउ जिम वाधइ चंद । सविकहिंनि मनि अति आनंद ।
वाधइ दिनि दिनि तस घरि बाल । रूपवत नइ अति मयाल ॥१३॥

राय तणइ घरि छइ परधान । पुष्पदंत नामि गुणग्यान ।
मदनसिंह नाम सुत ज तणु । रूपगुणे ते रलीआमणु ॥१४॥

राजकुमरनी सेवा करइ । मित्राचार सदा परिवरइ ।
वेश्या मदनसेना तिहां वसइ । पुष्पदंत चित्त तिहा उल्लसइ॥१५॥

दिवस राति गणिका-सिउं रहइ । सदयवच्छ ते भेद नवि लहइ ।
एक वार ते गूखिइं चडी । राजकुमरनी दृष्टिइं पडी ॥१६॥

ते देखी कामातुर थयु । सदयवच्छ तस मंदिरि गयु ।
राजकुमर देखी हरख धरइ । मदनसेना बहू आदर करइ ॥१७॥

सदयवच्छ रयणी तिहां रहइ । पुष्पदंत हीयइ दुख वहइ ।
प्रहि ऊगमि निअ मंदिरि गयु । मंत्रिपुत्र हीयडइ दुख थयु ॥१८॥

पुष्पदंत देखी नवि सहइ । कुडकाट ते हीयडइ वहइ ।
'एहवु कांई करूं उपाय । ए कुंअर छंडावुं ठाय' ॥१९॥

राजकुंयर यौवन-वय हूउ । राजा पासि जुहारीणे गयु ।
कुंअर देखी हरखिउ भूपाल । यौवन-वेसि हुउ ए बाल ॥२०॥

राजामंत्री करइ विचार । "यौवन वेसि हुइ कुमार ।
ए सरखो तुम्हें कन्या जूउ। एता दिवस तुम्हें नवि कहिउ॥२१॥

सदयवच्छ मनि मानइ जेह। राजकुमरि निरखु हिवि तेह।
देशविदेसि जोई मंत्रीस। पूरु कुंअर-तणा जगीस" ॥२२॥

राय-आदेसि मंत्रि सज्ज थयु। सदयवच्छ ते साथिइ लीउ।
मंत्रीसर नइ राजकुमार । चाल्या रायनइ करी जुहार ॥२३॥

अनुक्रमि मेदपाटि ते गया। आहडि नगरि पुहुता थया।
बिहू डाहा बिहू गुणवंत । ईश्वर-देहरइ जाई पुहुत्त ॥२४॥

शिव प्रणमी तइं बइठा बारि। शिवपूजण आवइ नरनारि।
सदयवच्छ निरखइ एक-चित्ति। कोइ न मानी आपणइ चित्ति॥२५॥

जितशत्रु रायतणी कुंअरी। रूप अनोपम जिसी अपछरी।
शिव पूजनि ते आवी नारि। साथि सखी-तणइ परिवारि॥२६॥

बसंतसिरि नामि कुंअरी। शिव पूजी पाछी संचरी।
कहइ मंत्री, "मनि मानइ एह ?। गुणलक्षण नवि लाभइ छेह"॥२७॥

सदयवच्छि मुख मोडिउं ताम। "मंत्रीसर ! मूंकु ए ठाम" ।
तिहांथिकी माहआडिइं गया। जेमन्तमेरि पुहुता थया ॥२८॥

देहरइ जई तइ बइठा तेह। तिहां नारी बेहु निरखेह।
महीपाल पुत्री गुणमाल । सखी सहित तिहां आवी बाल॥२९॥

सदयवच्छ तस निरखइ रूप। ते देखी मुख मोडइ भूप।
'मंत्रीसर ! मेहलु एह ठाण'। गूजर देसि गया गुण-माण ॥३०॥

त्रंबावतीइ पुहुता छेह। देहरइ जई तइ बइठा तेह।
बसंतसेन तिणि नयरि राय। मनमोहनी कुंअरी तस ठाय ॥३१॥

पूजा विष्णु-तणी ते करइ। दासी पांचसात-सिउं फिरइ।
सदयवच्छ-नइ मंत्री कहइ। 'एहवी नारि अवर नहीं लहइ'॥३२॥

सदयवच्छ मनि मानइ नहीं । तिहांथिकी वली चाल्या सही ।
कुंकणदेसि पुहुता तेह । श्रीपुर नयर तणउ नही छेह ॥३३॥

कामसेन तिणि नयरि राय । निरखइ देहरइ बइठा जाइ ।
तिलकसुंदरी राजकुंअरी । देहरइ आवी सखी परवरी ॥३४॥

देवभवनि ते पूजा भणी । मलपती आवी गजगामिनी ।
निरखी सदयवच्छ तव रहइ । पुष्पदंत तइ वलतुं कहइ ॥३५॥

॥ दूहा ॥

"देशविदेशि बहू फिरिया । निरखी नारि अनेकि ।
अति सुन्दर गुणि आगली । जे लहइ सकल विवेक ॥३६॥

तुझ मनि एकइ नवि वसइ । तु किम सीझइ काज ?" ।
पुष्पदत इम वीनवइ । 'चलउ अब ती-राजि' ॥ ३७ ॥

नगरि अवंती आवीआ । नरवर कीउ जुहार ।
पूछइ नरवर मंत्रि तइं । "कहु सुत-तणउ विचार" ॥३८॥

तव मंत्री वलतुं भणइ । "तात सुणउ, तुम्हे राय ।
कहुं चरित्र कुंअर तणउं । सुणतां अचरिज थाइ ॥३९॥

च्यारि खंड प्रथवी फिरया । नारि-रूप नही पार ।
अति सुंदर गुणि आगली । कला - तणउ भंडार ॥४०॥

मोटा नरपति जे अछइ । तेहनी निरखी बाल ।
कुंअर-मन मानइ नही । किम किजइ भूपाल ?" ॥४१॥

इस्यां वचन नरपति सुणी । बोलइ वचन विरुद्ध ।
'कुंअर सुरकन्या वरइ । सार्वलिगि वर सुद्ध' ॥४२॥

॥ चुपई ॥

तात-वचनि कुंअर चमकीउ । सार्वलिगि ऊपरि चित धरिउ ।
'हुवि हूं कामिनि एह जि वरउं । कइ प्रवेस अगनि मांहि करउं !'॥४३॥

मदनसिंघ नइं कहि कुमार । 'तात-वचन सालइ जिम साल' ।
सकल मरम मित्र प्रति कहइ । मदनसिंघ हीग्रडइ संग्रहइ ॥४४॥

तेहनु कांई करुं उपाय । सालिंग जिम ठावी थाइ ।
मंत्री बुद्धि विमासण करइ । हवि ए काम किणी परि सरि?॥४५॥

॥ दूहा ॥

हीग्रा मनोरथ तं करइ । जे करवा ग्रसमत्थ ।
तरुग्रर स्वर्गिइं मुहुरीया । तिहां पसारइ हत्थ ! ॥४६॥

॥ चुपई ॥

शृङ्कार मंडाविउ राय । वाटघाट वली विसमइ ठाइ ।
देरासरना योगी यती । बांभण भाट ग्रनइ बहूमती ॥४७॥

देइ ग्रन्न नृप पूछइ भेद । इणी परिइ एहनु लहु विछेद ।
ततक्षण कुंग्रर सजाई करइ । ग्रन्नपान सहूइ परवरइ ॥४८॥

दिवस केतला इणि जाइ । ब्राह्मण एक पुहुतु तिणि ठाइ ।
'कहु जोसी किणि थानकि रहु?। सकल वात ग्रम्ह ग्रागलि कहु'॥४९॥

तेह कहइ हवि पूछइ भेद । वनतु उत्तर दिइ विच्छेद ।
'सुणु बात, मंत्री नृप तुम्हे । सवलउ उत्तर देसिउ ग्रम्हे ॥५०॥

दक्षिण देस विचक्षण नारि । तेहना गुण नवि लहीइ पार ।
मुंगीग्रापुर-पाटण पहिठाण । शालिवाहन राजा ग्रहिठाण ॥५१॥

देवलोकनी उपम लहइ । देखी सुर नर मन गहगहइ ।
वास-तणु नवि लहीइ पार । नवतेरी नगरी विस्तार ॥५२॥

लीलावई राणी गुणवंत । सील शिरोमणि सहज रुंत ।
तास कूखि जूग्रल ग्रवतार । पुत्री पुत्र सकोमल सार ॥५३॥

शकतिकुमार बेटानुं नाम । शालामती बेटी ग्रभिराम ।
रूपवंत नइ रुलीयामणी । विद्या सर्वकला ग्रति घणी ॥५४॥

यौवनमइ ते कुंअरी हुई। तात पासि जई ऊभी रही।
पुत्री देखि पिता गहगहइ। वर-चिंता ते मनमांहि वहइ॥५५॥

ए सरिखु वर अम्ह-नइ मिलइ। मनह मनोरथ सघलु फलइ।
कही वात ब्राह्मण संचरइ। मन्त्रीसर ते मनमांहि धरइ॥५६॥

एह वात मनमांहि राखीइ। हुआ विना ते नवि भाखीइ।
काज सरइ अथवा नवि सरइ। लोकमांहि हासा विस्तरइ॥५७॥

कुंअर कहइ, "मंत्री! तुम्ह सुणु। सारउ काज तुम्हे अम्ह तणउ।
तुम्हविण किम्हइ न सीझइ काज"। सदयवच्छ कहि छांडी लाज॥५८

सीघ्र थई तइ पुहुतु तिहां। मुगीपुरपाटण छइ जिहां।
पाणीपंथा घाडा लेय। पवनवेगि चालइ छइ जेय॥५९॥

सवा कोटि दीधु वरवीर। जोईइनु वली लेयो धीर।
दाइं उपाइं करयो काम। वहिलु वलण करयो आम॥६०॥

मदनसिंह चालिउ तिणि वारि। सदयवच्छ नइ करी जुहार।
"हेज म छड्डु कुंअर! तुम्हे। निश्चिइ काज करवुं अम्हे"॥६१॥

इम कही चालिउ मंत्रीस। वाटिइ वहइ राति नइ दीस।
अनुक्रमि पुहुतु पुर पहिठाणि। शालिवाहन राजा प्रहिठाण॥६२

देखी नगर-मंत्री गहिगहिउ। मदनसिंह हीअडइ हरखीउ।
नगरी जोतां दृष्टि पडी। कामसेना गणिका गुखि चडी॥६३॥

मोहिउ रूप देखी अपछरी। कुंअर वात सवे वीसरी।
तिणि मंदिरि ते पुहुतु जाम। वेशा आदर दीइ ताम॥६४॥

मदनसिंह गणिका-सिउं रहइ। घणा दिवस इणिपरि निरवहइ।
सकल द्रव्य वेशा नइ दीउ। कुमर-तणउ काज नवि कीउ॥६५॥

एक दिवस कुमरी-घर बारि। कामिनि गाइ मंगल च्यारि।
वाजइ पंच शबद वाजित्र। नाटिक नाचइ नव नव पात्र॥६६॥

सुणी शबद मंत्री पूछे य । "ए उच्छव हुई कुण गेह ? ।
चउघडीआनी वेला नही" । सवे वात गणिकाइ कही ॥६७॥

"सार्वलिंगि नृपपुत्री-तणउ । लगन लीउ पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
कामविणाय गछइ ठउ एह"। सुणी वयण दुख पामिउ देह ॥६८॥

पूछइ मंत्रीः"कवणह ठाम?" । काममेना गणिका कहइ ताम ।
"रयणायरपुर नगर विसेसि । रत्नसारराजा तिणि देसि ॥६६॥

रत्नसेखर कुंअर तस तणउ"। हुसि वर, पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
पञ्चर दिनि होसिइ वीवाहु । मंत्रीसर मनि पडीउ दाह ॥७०॥

मंत्रीसर तव चिंतइ इसिउं । "दैव ! सूत्र ए हूऊं किसिउ ? ।
मि मूरखि ए कीधुं किसिउ ?। घरि जई मुह किम दाखसिउं?॥७१॥

नरपति-काज कांई नवि सरिउं । एता दिवस रही सिउं करिउं ? ।
हविऊं काई करुं उपाय । जउ किम्हइ काज सिद्धइ थाइ ॥७२॥

चीठी तीम लखी मंत्रीस । नरपति ब्राह्मण नइ मंत्रीस ।
तेणइ नगरि ते चीठी लेय । तव परोहित-घरि आविउ तेय ॥७३॥

करी प्रणाम बइठउ परधान । तव परोहित दीइ बहुमान ।
"कहु कुंअर,किम आव्या इहां ? । कुणथानकि?क,मंदिर किहा"?॥७४

मदनसिंह बलतु इम भणइ । एक चित्त थई परोहित सुणइ ।
"मालवदेस नयर ऊजेणि । पाय न छीपइ नासि तेणि ॥ ५॥

पहुवच्छ राजा पालइ राज । लोक सवेना सारइ काज ।
सुमंगला पटराणी तास । सदयवच्छ सुत लीलविलास ॥७६॥

यौवनवइं कुंअर देखीउ । राइ मंत्री बोलावीउ ।
कहइ, कुंअर-नइ गमती जेह । मंत्रीसर परणावुं तेह ॥७७॥

तु मंत्रीसर साथिइ लेय । मही सघली कन्या निरखेय ।
कुंअर मनि एकइ नवि गमइ । ऊजेणी वली आव्या तिमइ ॥७८॥

सुणी पिता रोस मनि धरइ। कहइ कुंअर देवकन्या वरइ।
सार्वालिगि वरसिइ सही बारि। रंभ तिलोत्तम नइ अवतारि"॥७६॥

तात वचन श्रवणे सांभलो। सार्वलिंगि नामि मनि रुलो।
ते विण अवर न परणुं नारि। एह विण हुं न रहुं संसारि"॥८०॥

तिणि कारणि अम्हे आव्या इहां। कहु पुरोहित ! ते कन्या किहां ?।
अम्ह परोहिति तुम्ह घरि मोकल्या। चीठी लेई तुम्ह भणी चल्या॥८१

पुरोहित चीठी दि परधान। वांची लेख लहिउ अनुमान।
"तिम करयो जिम सीझइ काज। घणुं किसिउं ? तुम्ह-नइ
छइ लाज"॥८२॥

पुरोहित कहइ, "तुम्हे सांभलु वात। हवइ किसिउं न चालइ रात।
मास दोइ पहिला आवता। मेलापक जोई थापता" ॥८३॥

पुरोहित कुंअर मंत्रि-घरि गया। करि प्रणाम तिहां ऊभा रहिया।
"बुद्धिसागर मंत्री ! तुम्हे सुणु। एह लेख वाचउ तुम्ह-तणु"॥८४॥

वांची लेख लहिउ सवि मरम। तव मंत्रीसर भाजइ भरम।
जिणि कारणि तुम्हे आव्या हेव। एह काज तुम्ह नु हुइ देव॥८५॥

अवर कहु तुम्हे जे बाल। रूपवंत कला गुणमाल।
छल बल करी देवाडं अम्हे। काज करीनइ जाउ तुम्हे"॥८६॥

मंत्री नृप मंदिरि लेई जाइ। राज-सभा जिहां बइठउ राय।
चीठी दीधी करी प्रणाम। नरपति लेख वंचावइ ताम॥८७॥

सुणो लेख नृप हरखिउ घणु। वलतु लेख लखिउ आपणु।
"जिणि कारणि पाठवीआ तुम्हे। सकल वात जाणी नृप अम्हे॥८८॥

कनकसेन राजानु पूत। जेहनी आण वहइ रजपूत।
सार्वालिगि-कुंअरी तेणइ वरी। एह वात तुम्हे मानउ खरी"॥८६॥

ए कुमरी जु बीजु वरइ । सदयवच्छ कुंअर सही मरइ ।
सुद्धि करुं कुंअर प्रति एह । जिम जाणइ तिम करसिइ तेह" ॥९०॥

तु कुंअर अवंती जाय । दिन आथिमतइ भेटिउ राय ।
देखी कुंअर हरख चिति धरइ । सदयवच्छ आलोचन करइ ॥९१॥

"जिणि कारणि मोकल्या तुम्हे । ते सवि वात सुणावुं अम्हे ।
सीह?सीआल?कहु हवि वीर"। कुंअर कहइ"जंबूक" धुरिधीर॥९२॥

सकल वात मंत्रीसर कहइ । सदयवच्छ अंतरि दुख वहइ ।
"विषम काम नइ थोडा दीह । हुइ काम जु थाउं सीह" ॥९३॥

मदनसिंह तइ कही तव वात । "तुम्हे आवु अम्हारइ साथि ।
सालिवाहन-कुंअरी हुं वरुं । नहीतरि अगनि-प्रवेस जि करुं"॥९४

सुणी वचन नयणां जल भरइ । "एहवां वचन कांइ उच्चरइ ?
जिहां तुम्ह जीव अम्हारु तिहां । एह बोल अम्हारु इहां" ॥९५॥

करी मंत्रणुं दोइ सज्ज थया । अश्व रत्न साथि दोइ लीया ।
देवतणी गति चाल्या जाइ । सांझि पुहुता तेणइ ठाइ ॥९६॥

मुंगीआपुर पाटण छइ जिहाँ । शालिवाहन राजा छइ तिहाँ ।
नगर-मध्य जई ऊभा रह्या । देखी नगर हीअडइ गहगहिया ।९७।

देखी लोक सहू करइ विचार । "किहाँथी ए आव्या असवार ?
अमररूप ए आव्या इहाँ त्रिभुवन-माँहि नथी एहवा किहाँ।९८॥

अश्वरत्न ए नही संसारि । भूपति सयल तणइ घरि बारि ।
मनुष्य रूप एहवाँ नवि होइ । नरनारी जंपइ सहू कोइ ॥९९॥

पूछीइ लोक "ऊतारु किहाँ ?" । "जे परदेसी आवइ इहाँ ।
चाँदू मालिणि तइ घरि हेव । तुम्ह ऊतारा थानक देव !" ॥१००॥

चाँदू मालिणि तइ घरि गया । दोइ कुंअर जई ऊभा रह्या ।
चाँदू-नइ तव कहइ दासि । "ऊभा कुंअर दोइ आवासि" ॥१०१॥

सुणी वचन आवी घर बारि। तेतलइ कुंअरइ करिउं जुहार।
"अम्ह ऊतारा थानक कहु"। मालणि कहइ "इणि मंदिरि रहु"॥१०२

कुंअर कंठि मुगताफल हार। ते मालणि नइ दीयु ऊतारि।
"सुणु बहिनि, अम्हे ताहरा वीर। परदेशी पहिरावु चीर" ॥१०३॥

मालणि हीअडइ हरख न माइ। पलिंग तलाई दिइ समुदाय।
पुष्पमाल आपइ तिणि वारि। जिमण सजाई करइ अधिकारि॥१०४

सत्तर भक्ष भोजन ते करइ। राजकुंअर जिमवा संचरइ।
सोवन थाल कचोलां सार। बेहू कुंअर बिठा तिणि वारि॥१०५॥

चांदू मालिणि प्रीसइ हाथि। बे कुंअर बइठा इक साथि।
निज करि करी पवन ते करइ। कुंअर-नइ मनि आनंद धरइ॥१०६

आरोगावी, आप्यां पान। इणी परिइं दीइ सनमान।
चूआ चंदन अगर कपूर। कस्तूरी परिमलगुण भूर॥१०७॥

सुख-सज्जाइं पुहुढया जाम। चांदू मालणि पुहुती ताम।
चांदू पूछइ मननी वात। "एणइ नगरि किम आव्या भ्रात?"॥१०८॥

सवि संखेपि ऊत्तर देय। कारण-तणु कहिउ सवि भेय।
सावलिंगि कुंअरी ए वरइ। कइ निश्चि अणखूटइ मरइ॥१०९॥

सुणी वयण मालणि मुरकाइ। "निरास्वाद आव्या इणि ठाइ।
जिणि कारणि आव्या मझ वीर। सावलिंगि दीधी बडधीर॥११०॥

नेमु लगन लीउ तस तणु। [चांदू कहइ] कुंअर! तुम्हे सुणु"।
मदनसिह मालणि प्रति कहइ। "करु उपाय कुंअर जीवतु रहइ॥१११

एक अम्हारुं करु तुम्हे काज। सावलिंगि देखाडु आज"।
तिणि वयणे रीसिइ धडहडी। कुंअर-नइ कहि कोपिइ चडी॥११२॥

"तुम्ह कारणि मझ मरि ठाइ। अम्ह मंदिर वली लूसइ राइ।
एह बात अम्हि नवि थाइ। तुम्ह बाति मझ जीव ज जाइ!"॥११३॥

कुंअर हाथि अछइ मुंद्रडी । सवा कोटिनी हीरे जडी ।
आंदूनइ वली दीधी तेह । "कहइ, तुम्हथी हुइ काम ज एह?"॥११४

मुद्रा देखि हीइ गहगही । "एह काम हवि होसि सही ।
तु तुं माहरुं लेजे नाम । सार्वालिगि आपउ एणइ ठामि"॥११५॥

ततक्षण मालिणि करी सिणगार । जाई पुहुती राजदूआरि ।
घरभीतरि + + +   + + +   + + + ॥
+ + +   + + +   + + +
+ + +   + + +   + + +ण जिमण करीसि इहाँ ॥१५४॥

अरहटि बइठउ गाइ गीत । तिणि राणीनुं मोहिउं चीत ।
राणी तणउ चित्त तव चलिउ । मनमथ सैन्य अति खलभलिउं॥१५५

सु दीनवचन ते आगलि चवइ । वली वली राणी वीनवइ ।
तीणइ वचनि ते पुरुष ज हसिउ । एक वार तइ कारण किसिउ॥१५६

निरास्वाद पापिइ छूडीइ । थोडइ केहवइ सत न छांडीइ ।
जे माणस नवि लाभइ छेह । तिह सिउं किमइ न कीजइ नेह॥१५७

बलतुं राणी बोलइ इसिउ । जेहनुं मन जे साथि वसिउ ।
तेह तणउ नवि त्रूटइ नेह । जाँ लगइ जीव हुइ इणि देह ॥१५८॥

कहिउ अम्हारु तुम्हे करु । माहरइ साथि पंथि अणुसरु ।
मारुं राजि एणइ काजि । पछइ होसिइ आपणुं राज ॥१५९॥

द्रव्य आपणइ छइ अति घणउ । मनोरथ सारउ तुम्ह तणउ ।
इसी वात ते सरसी करी । जोज्यो हेज स्त्रीनु चित धरी ॥१६०॥

इम करतां राजा आवीउ । भोजन समुद सव ल्यावीउ ।
राणी कहइ "सुणउ महाराज । वात एक मनि आवी आज ॥१६१॥

● प्रतिमां, एक पत्रनी त्रुटि होवाथी कडी, १२६ थी १५३-५४ अंक सुधी खंडित छे. —सम्पादक.

तुम्ह देही सुकोमल जाण । थया एकला करम बिनाणि ।
काम काज तुम्हे ढीलइ करु। माहरइ जीवनइ होइ छइ मरु ॥६२॥

नफर एक राखीजइ भलु। जि हुइ चीत सदा निरमलु ।
राजा कहि, "सुणि राणी वयण। एहवु पुरुष राखीजइ कवण ? ॥६३॥

आपणनइ तेहवु न मिलइ कोइ। माणस मेहली साथि होइ ।
निराधार एहवु कुण मिलि। राति दिवस जे साथि पलइ ?" ॥६४॥

राणी कहइ, "राजा साभलु। आ पुरुष विदेसी छइ एकलु ।
मि सघली एहनइ पूछी वात। एहनइ कोइ नथी संघात ॥६५॥

वीतक सुणीआं एहनां घणां। जिम वीतक हूआं आपणाँ।
आपणी वात एणि सवि कहि। ते सांभली अचंभइ रही ॥६६॥

खित्री एक अवंती वास । अछइ घरणी गंगा तास ।
गंगा-मात अवंती वसइ । आणु करवा आवी अछइ ॥६७॥

आणु नही करावुं अम्हे। पाछा घरे पधारु तुम्हे ।
लोक कहइ आवी छइ माइ। ए किम ठाली पाछी जाइ ? ॥६८॥

गंगा-मात पीहरि संचरइ। केता दिवस तिहां निस्तरइ ।
तब कायथ नामि कल्याण । आणु करवा करइ प्रयाण ॥६९॥

वाटिइ वहितां हुई राति । तेह तणी हवि सुणयो वात ।
नगर अवंती उत्तम ठाण । चुसठि योगिणीनुं अहिठाण ॥७०॥

बावन सइं भइरव कलकलइ। ठामि ठामि तिहां दीवा बलइ।
सिद्ध-वडइ आविउ एकलु। रोती नारि शबद सांभलिउ ॥७१॥

[वस्तु]

तैणि अवस तेणि अवसरि गंधमतारिग ।
नारीरुदन ते हिं सांभिलिउ । करइ आक्रंद बहू परि ।
ते निसुणइ ऊभउ रहिउ । सुणी साद चीतवइ चित्त धरि ।
साहस धरी तिहा आवीउ । रुदन करइ जिहां नारि ।
इणि वेलां गेइ इहां । ते मझ कहइ विचार ।।७२।।

[दूहा]

बलतुं नारी इम भणइ । "सांभलि साहसधीर ।
कहुं वीतक जे माहरुं । तुं सांभलि धरधीर ।।७३।।

एणइ नगरि एक नर वसइ । तेह तणी हुं नारि ।
पतिवरता पालुं सदा । आण बहू निरधार ।।७४।।

ते विण भोजन नवि करुं । न पीउं वारि लगार ।
त्रणि काल पग पूज करि । नाम जपुं भरतार ।।७५।।

चोरी - आल ज तेहनइ । सूली दीधु कंत ।
दिवस त्रणि इणिपरि हूआ । किम्हइ न जाइ जंत ।।७६।।

अन्नपान मि आणीउं । जाणिउ दिउं आहार ।
मुखि एहनइ पुहुचउ नही । किम करि दिउं आहार ? ।।७७।।

तिणि कारणि हुं टलवलुं । सांभलि साहस धीर " ।
वचन सुणी नारीतणां । दया ऊपनी वीर ।।७८।।

कंधि चडावी आपणइ । कहइ करि निश्चल चित्त ।
"भगति करे भरतारनी । किसी म राखसि भ्रंति" ।।७९।।

[चउपई]

पुरुष कंधि नारी तब चडी। काती लेई मडां-नइ ग्रही।
मांस भखइं तइ हउहउ हसइ। पुरुष तणइ मनि कुतिग वसइ ॥८०॥

ग्रामिष खंड विछूटउ तिसिइ। पुरुष पुंठि त्ते लागु इसिइं।
तव ते ऊंचु जोइ जाम। ग्राघुं मडुं भखो रहो ताम ॥८१॥

नारी तिहा ग्रचोडी करी। नाह तउ जाइ ऊजेणी पुरी।
तव केडिइ ते नारी धसइ। नगर-पोलि देवराणी तिसइ ॥८२॥

पोलि तणी जे बारी ग्रछइ। ते उघाडी दीठी पछइ।
एक पग तव भीतरि दीउ। बीजउ बाहिरि तिणि स्त्रीइ लीउ ॥८३॥

पग-विहूणउ ग्राडु पडइ। तिणि वेदनि ते ग्रति ग्रारडइ।
पुन्य माटि लिउं प्रगटिउं इसिइं। खेडीदेवति ग्रावी तिसिइं ॥८४॥

"ग्रहो पुरुष तुझ कुण दुख दहइ?। संसतु धाई, मझनइ कहइ।
किणी परि खाधउ तुझ पाय। किणिपरि नगरि पुहुतु ग्राय ॥८५॥

कथा पाछिली सघली कहइ। देवि कहइ तु उभु रहइ"।
ततखिणि देवति वाचा हुई। नवपल्लव पग ग्राविउ सही ॥८६॥

हरखिउ हीइ विमासइ इसिउं। नारो प्रणुं पुन्य इहाँ बसिउ।
करम- उदय ग्राविउं माहरूं। नारी पुंन्यि थयुं वर हुउ ॥८७॥

इम चींतवतु घर-ग्रंगणि गयु। जाई बारणइ कान ज दीयु।
ऊभउ कुतिग जोइ जिसिं। सभलजो तिहां वात ज तिसिइ ॥८८॥

घरमांहि दीवु परजलइ। ग्रामिष खंड करी करी गलइ।
बेटा प्रतिइ कहइ तव मात। ए ग्रामिषनी कहइ मझ वात ॥८९॥

बरस साठि मझ हूग्रा इहाँ। ग्रेहवु स्वाद न दीठउ किहाँ।
सांभलि माता वात एह तणी। ए तु जांघ जमाई तणी ॥९०॥

बेटा बेटी तेह्यो जोड । जमाई वाह्लु अति होइ ।
तिणि कारणि ए मीठउ घणु । कह् बेटी माता तुम्हे सुणइ ॥१९१॥

बेटी नइ तव माता कहइ । "कुण थानकि ते वेदन सहइ ? ।
आपण बेहू जइई तिहां । ऊगडी नइ आणीइ इहां ॥१९२॥

जउ प्रभात किमिइ थाइसि । आपणा हाथ थिकी जाइसि" ।
इस्यां वचन श्रवणे सांभली । तव तिहां-थउ नाहठउ खलभली ॥१९३॥

थयु प्रभात तइ घरि आवोउ । सर्व रिद्धि ते बांभण दीउ ।
मन वइराग धरी चालीउ । फिरतु फिरतु इहां आवोउ ॥१९४॥

वइरागिउ दिन रयणी रहइ । तिणि कारणि हरिना गुण ग्रहइ ।
माया मोह सवि छांडी कर्म । हवि ए चालइ तपसी धर्म ॥१९५॥

तेह-भणी साथिइ लिउ एह । जिम सुख हुइ आपणइ देह ।
तु तिहाँथी त्रणइ चालीआँ । मथुराँइ अनुकमि आवीआँ ॥१९६॥

यमुना नदी वहइ असराल । धरम तणी जिहा वरतइ चाल ।
नारीय भणइ "सामो सुणु । आदितवार अछइ अति भलु ॥१९७॥

ए तीरथ छइ निरमल नीर । पापरहित कोजइ शरीर ।
राय तणु चित निरमल जाण । पहिरी पोत नइ करइ सनान ॥१९८॥

राणीइं ठेली नाखिउ तिसि । पूरमाँहि तव चालिउ तिसिइं ।
रायनइ छइ तरवा अभ्यास । चालिउ जाइ न सेहलइ साहास ॥१९९

वहितु गयु घणी भुंइ राइ । नगर तणइ परसरि तव जाइ ।
चिंतइ नारी जोज्यो काज । जेह-नइ अरथि चूकु राज ॥२००॥

दुख धरतु नगरी-माँहि गयु । राजसभा जई ऊभु रहिउ ।
तिहाँ ते आदर पामिउ घणु । हवि राणीनी वात ज सुणु ॥२०१॥

पाप तणउ फल तेहनइ भयु । रूप हतुं ते कोढी थयु ।
पीप तणा ते रेला वहइ । तेहनी गंधि कोई नवि सहइ ॥२०२॥

कर उमाहि बईसारइ घरी । रूई तणां पुहुल ते करी ।
देस देसाउर इणिपरि फिरइ । करंड लेई नइ माथइ धरई ॥३॥

गाइ गीत राग आलवई । तेणइ जननां मन रंजवई ।
लोक सहू इम बोलइ वाणि । सती नही ए समवडि जाणि ॥४॥

देश विदेसि फिरतां रहइ । दान मान ते गीतथी लहइ ।
इम करतां तिणि नयरि जाइ । आगिल-थी आवी जिहां राइ ॥५॥

राजसभामांहि लेई जाइ । सरलइ सादि आलवी गाइ ।
तेणइ राजा-मन रंजीउ । घणउ गरथ अरथ तस दीउ ॥६॥

स्त्री-नइ राजा पूछइ वात । कहउ तुम्ह हुउ किम संघात ? ।
रूप-तणु तुज नही छेह । एहवी किम तुझ स्यामी-देह ?" ॥७॥

"सात वरसनी हुई जाम । माबापि दीधी एहनइ ताम ।
रूपि मदन समाणउ जोइ । करम-वसि हवि कुष्ठी होय ! ॥८॥

औषध तणउ न लाभइ छेह । एहनु तुहिइ न वलिउ देह ।
तीरथ-करवा-नइ नीसरी । भली एह राजनि चिति धरी" ॥६॥

बलतु अजितसेन ऊचरइ । "कहु बात जउ सहू चित धरइ ।
एहना सील-तणउ नही पार । यमुना-मांहि नाखिउ भरतार ॥१०॥

वात कही सघली आपणी । तब लज्जा गई नारी तणी ।
जोउ सतीतणु सनेह । अरध आयु जिणइ आपिउ देह ॥११॥

जेहनइ मनि अस्त्री वीसास । जाते दीहे सही निरास ।
अस्त्री कूडकपट-की भली । अस्त्री तुहइ कहिनइ भली" ॥१२॥

वात सुणंता तव लडथडी । मूरछा आवी धरती पडी ।
नारी प्राण गया तिहां सही । सुणी सभा सहु अचिरज हुई ॥१३॥

ते नर मूरख हुइ समान । अस्त्री कारणि तजइ पराण ।
सारलिंगि ए वातज कही । राजा सरिखु मूरख सही ॥१४॥

सदयवच्छ तव बोलइ हसी। "एह वात तुम्हे कीधी किसी ?।
सुपुरिस वाचा-लोप नवि करइ। सकल रिद्धि जन तेह परवरइ॥१५॥

सार्वलिंगि ! निसुणउ तुम्हे वाणि। तुम्ह कारणी ग्राव्या इणि ठाणि।
तात वचनि घर छांडो दूरि। तिम ग्राविउ जिम-जल निधि पूरि॥१६॥

तुम्हबिण किम जईइ तिणि ठाणि?। लोक हासारथ ग्रनइ बहू हाणि।
मान तिजी जीवई नरनारि। निफल जनम तह संसारि" ! ॥१७॥

सार्वलिंगि कहइ, "मासी सुणु। ए उपाय सघलु ग्रम्ह तणउ।
इणि वार्ति ग्रम्ह ग्रावइ लाज। पिता-तणउ सवि विणसइ काज १८

वर वरीउ किम थाई दूरि ? । ए दुख मोटू जलनइ पूरि।
इहाँ साप इहाँ मृगराज। ते परि सकल थई ग्रम्ह ग्राज॥१६॥

पिता-वचन किम परहुं करुं ?। किणीपरिं हत्या ग्रादरुं ?।
दया मया करी दीधी वाच। सदयवच्छ प्रति बोली साच॥२०॥

लगन तणइ दिनि जायो तिहाँ। बंकदूग्रार ग्रछइ ग्रम्ह जिहाँ।
सांझ समइ तुम्ह थई ग्रसवार। ऊभा जइ रहियो तिणि बारि॥२१॥

तिणि वारि हुं ग्राविसु सही । एह वातनु सांसु नही"।
वाचा देई कुंग्ररि घरि जाइ। सदयवच्छ मनि हरख न माइ॥२२॥

सार्वलिंगि-फूलहर्कां फिरइ । सदयवच्छ जोवा संचरइ ।
नयणि नयण मेलावु होइ । नेह-मरम नवि जाणइ कोइ॥२३॥

लगन-तणइ दिनि ग्रावी जान । तेहनइ दीजइ झाझाँ मान ।
घणइ महोच्छवि कीउ प्रवेस । ऊतारा ग्रापइ सांवसेस॥२४॥

जिमण तणी सजाई करइ। ततखिण जिमवा तेडां फिरइ।
सवि रावत कीजइ एक ठामि। रहिउ वीसरिउ सो धावइ ताम २५

(दूहा)

सदयवच्छ तिणि अवसरि । अश्वि थयु असवार ।
मंत्री-सुत साथि करी । ऊभउ बंक दूआरि ॥२६॥

प्रच्छन्नगति जाई रह्यो । कोई न जाणइ मर्म ।
अन्तराय फल भोगव्यां । विना न छूटइ कर्म ॥२७॥

(चउपई)

तिणि थानकि जई ऊभा रहइ । तेहनु भरम कोइ नवि लहइ ।
भोजन-सार करइ नरराय । कोइ सुभट रखे वीसरी जाइ ॥२८॥

आदर देई आणउ इणि ठामि । अम्ह-सरसा आरोगइ ताम ।
गुंडु नापित तिहाँ फरइ । कुंवर देखि बहू आदर करइ ॥२९॥

सीध्र थई पुहुचु धरि धीर । भोजन करवा तेडइ वीर ।
तुम्ह तणी सहू जोइ वाट । जु आवउ तु बइसइ ठाठ ॥३०॥

ऊतर करी बुलाविउ तेह । किम आवउ अम्हे नरपति-गेहि ? ।
अम्ह असबाब न राखइ कोइ । नापित रिदय विचारी जोइ ॥३१॥

नरपति-सिउं जई नापित कहइ । "दोइ सुभट एक ठामि रहइ ।
माहरा तेडया नावइ राय । तु नरपति आवइ तिणि ठाइ" ॥३२॥

नरवर वचन न लोपिउ जाइ । सदयवच्छ आविउ तिणि ठाइ ।
नापित हाथि अस्त्र तिणि दीया । अवर ज वस्तु समोपी गया ॥३३॥

नापित जाति हुइ सत-हीण । सकल सनाह पहिरिउ तंखीण ।
एक अश्व ऊपरि जई चढइ । बीजउ दोरी हाथिइ धरइ ॥३४॥

तिणि अवसरि आथमीउ सूर । जोवा मिलीउं माणसपूर ।
लगन तणी सामग्री करइ । सावलिंगि वाचा चिति धरइ ॥३५॥

लही अवसर चाली तिवार । आवी ऊभी बंक दूआरि ।
नापित-तणउ न जाणइ मरम । गुंडुं तिहाँ न भाजइ भरम ॥३६॥

सार्वलिगि थई असवार । लेई चाली नगर-दुआरि ।
रयणि माँहि छाँडिउ निज देस । अवर देसि कीधउ परवेस ॥३७॥

रत्नादे-पति ऊगिउ जाम । तव कुमरीइ निरखिउं ताम ।
"फटि पापी ! कीधु कुणकाज ? । मनना गया मनोरथ भाजि ॥३८॥

अश्व तणउ अधिपति किहां रहिउ । कइ मारिउ कइ जीवतु धरिउ ।
गुंडु मरम कहइ तिणिवार ? "ते जीवंतु छइ गुणधार" ॥३९॥

सकल मरम तव नापित कहइ । सार्वलिगि हीअडइ सग्रहइ
तेहनी हवइ किमी तुम्ह आस ? । अम्ह-सरिसिउं तुम्हे करु विलास ॥४०

फटि पापा ! निरगुण चंडाल । ताहरा जीवनु आविउ काल ।
अम्ह सरिसु बछइ सयोग । हुइ हाँणि तुझ आवइ रोग" ॥४१॥

वड-हेठली लीधु बिसराम । नापित हूउ निद्रा-वसि ताम ।
छेदिउं नाक लेई नइ छुरी । इम सीखामण दीधी खरी ॥४२॥

कूक करतु नासी गउ । पुरुष-वेस तिणि नारी लीयु ।
एक अश्व कुंअरी असवार । बीजउ हाथि कीउ तिणि वारि ॥४३॥

तिहां थिकी आघी संचरइ । नगर छोडि उद्यानि फिरइ ।
झूरइ कामिनि मन-ह-मझारि । सार्वलिगि दुख नावइ पार ॥४४॥

मनमांहि चितइ "किसी परि करुं ? । कुण थानकि जाई अणुसरुं ?"
सार्वलिगि तव करइ विलाप । "केहा भवनुं लागुं पाप ? ॥४५॥

बेहू पक्षथी दूरिइ टली । मन-आशा एकइ नवि फली ।
गयु कुमार, गयु भरतार । सदयवच्छ विण जीविउं धार ॥४६॥

दुख धरती आघी संचरइ । वडहेठलि जई वासु रहइ ।
वृक्ष डालि बांधिया बि तुरी । वड-हेठलि जागइ सुन्दरी ॥४७॥

गरुड पख तिहां वासि रहइ । तेहनइ च्यारि पुत्र गहगहइ ।
चुणि काजि ते जूजूआ जाइ । राति आवी प्रणमइ पाइ ॥४८।

पूछइ पिता: "तुम्ह लागो वार । ते मुं आगलि कहु विचार" ।
आप-आपणा दाखइ मरम । सुणी वात अम्ह भाजउ भरम ॥४९॥

"दक्खण दिसि पाटण पहिठाण । सालिवाहन राजा अहिठाण ।
तस घरणि छइ लीलावती । सार्वलिगि पुत्री गुणवती ॥५०॥

रतनपुरीनु राजा चलु । रतनसेखर नामि गुणनिलु ।
तेह-सरिसु मिलीउ वीवाह । आवी जान हूइ ऊछाह ॥५१॥

कुंअरीइ वाचा अवस-सिउं करी । लगन-वेलां बाहिरि संचरी ।
गुंडुं नापीतइ वसि पडी । राति समइ चाली चडवडी ॥५२॥

थयु प्रभात नइ सूर ऊगीयु । कुंअर ठामि नावी निरखीउ ! ।
नावी पूछिउ वडइ विछेद । सदयवच्छ-नु कहिउ सवि भेद ॥५३॥

जेतलइ नावी नीद्र-वसि थयु । नाक कान तब बाढी लीउ ।
तिहां-थकी तव नासी करीं । नावी आविउ पाछल फिरी ॥५४॥

चिंतइ कुमर विदेसिं फिरुं । सार्वलिगिनी शुद्धि ज करुं ।
जउ जोतां मझनइ नवि मिलइ । तु करवत मेहलाबुं गलइ ॥५५॥

मदनसिंह नइ कहिइ वात । घेरे तुम्हारइ पुहुचउ रात ।
ए देही तुम्ह-सरसी अछइ । तुम्ह-विण सिउं करवी छइ पछइ ? ॥५६॥

इसिउं कहीनइ ते नीसर्या । कासी तीरथ भणी संचर्या" ।
बीजा तणी वात साभलु । रतनसेखर जे आविउ भलउ ॥५७॥

लगन तणउ अवसर वही गयु । मातु पिता-हीअडइ दुख थयु ।
सकल लोक वाणी विस्तरी । सार्वलिगि कुंणइ अपहरी ? ॥५८॥

जान तणउं मेहली संघात । अवधूत वेसि चलि परभाति ।
करी प्रतन्या चालिउ तेह । निश्चि मरूं जउ न मिलइ एह" ॥५९॥

एहवी वात कही जेतलइ । बीजउ पंखी बोलिउ तेतलइ ।
"मालव देसि अवंती नामि । पहुवच्छ राज करइ तिणि ठामि ॥६०॥

सुमंगला पटराणी सुराउ। सदयवच्छ कुंअर तस तराउ।
बार वरसनु कुंअर थयु। तव ते नारी जोवा गयु ॥६१॥

जोतां कोइ चित्ति नवि वसइ। राइ कुअर बोलाविउ तिसि।
"जो को नारी चित नवि धरइ। तु निश्चि इंद्राणी वरइ ॥६२॥

सार्वलिंगि कइ परगाइ सही"। इसी बात मुखि नरवइ कही।
पिता-वचन मन-माँहि राखीउ। तव कुंअर अदृष्टउ थयु ॥६३॥

तु तिहां सहू मनि दुख धरइ। घरि घरि शोक निरंतर करइ।
नगर माँहि सवि उच्छव रह्या। ते जोइं अम्हे आव्या अरहा" ॥६४॥

एवडी वात कही जेतलइ। श्रीजउ आवी कहइ तेतलइ।
"पूरव दिसि छइ उत्तम ठाम। चंद्रावती नगरीनुं नाम ॥६५॥

जितशत्रु राय राज तिहाँ करइ। सैन्य सहित आहेडु करइ।
बार वरसना बालो वेस। वत्रीस लक्षरा अवधू-वेसि ॥६६॥

रायतणी ते नर्जार पडया। कंद्रप-रूप अभिनवा घडया।
हठ करी राजा पूछइ तिहाँ। "अवधू-वेसिइ जाउ किहाँ ?" ॥६७॥

सदयवच्छ बलतु इम कहइ। "सार्वलिंगि अम्ह हीअडइ दहइ।
मझ सरसी वाचा तिरिग दीध। ते अस्त्री नइ कुराइ लीध ॥६८॥

जउ ने कामिनि हुं नवि लहु। तु शिर ऊपरि करवत वहुँ"।
"अरे कुंअर तुं खरु अयारा। अस्त्री काररिग तिजइ पराग !॥६९॥

पुष्फावती कुंअरी अम्हतणी। ते कन्या करु तुम्ह तणी।
तुम्ह-नइ सुंपुं सघलु राज। घरे अम्हारइ आवु आज" ॥७०॥

सदयवच्छ बलतु इम भगाइ। "राजतणी खप नही अम्ह तराइ।
सार्वलिंगि ते वन-माँहि फिरइ। माय ताय तइ सुख परहरइ ॥७१॥

सोइ काररिग दुख देखइ सही। सुख भोगवुं हुँ किम रही ?।
समुद्र मर्जादा लोपइ किमइ। तुहि सत्य न चूकुं अम्हइ !" ॥७२॥

इसिउं कही कुमर चालिउ। [कहइ पंखी] हुं इहां आविउ।"
कामिनि बात सवे साँभली। चुथु पंखो बोलइ बली ॥७३॥

"कुंकण देश शंखपुर गामि। नरसिंग राज करइ तिणि ठामि।
मतिसागर मंत्री तस तणु। बात तेहनी तुम्हे सुणु ॥७४॥

आँखि नवि देखइ परधान। कुष्ठी-राजा रूप निधान।
अहनिसि अरति छइ अति घणी। मंत्रीसर नइ राजा तणी ॥७५॥

जे डाहा वेदन-ना जाण। ति सवि तेडाव्या तिणि ठाणि।
मंत्र तंत्र औषध उपचार। पणि ते कहिथी नही उपगार ॥७६॥

तव नरपति दीधउ आदेस। ढढेरु फेरु कहु वसेस।
'नृप मंत्रीनुं जे दुख हरइ। अरधराज्य नइ कन्या वरइ' ॥७७॥

वली मंत्रीस्वर कन्या देय। वित सारु उपगार करेय।
ते निसुणी हुं आविउ इहाँ। राजा मंत्री दुखी तिहाँ ॥७८॥

आप तात जाणउ उपचार। अम्ह आगलि तुम्हे कुहु विचार"।
पंखराय वलतुं इम भणइ। [सार्वलिंग चित देई सुणइ] ॥७९॥

"अम्ह विष्टानु संग्रह थाइ। जे लेई तिणि नयरि जाइ।
सीतोदक-सिउं खरडइ देह। जाइ कुष्ट नही संदेह ॥८०॥

उष्णोदक-सिउं अंजन करइ। ततखिण दृष्टि चिहु दिसि फिरइ।
दीठि तारा देखइ सही। एह वातनुं संसय नही" ॥८१॥

त्रीजइ पुहुनु पूछइ बात। अम्ह आगइ तुम्हे भाखु तात।
सवयबच्छ सामलि तु कहु। मलवा बात सवे तुम्हे लहु" ॥८२॥

पंखराय वलतुं इम कहइ। सार्वलिंगि सवे संग्रहइ।
शंखपुरी मिलसि सहू कोइ। सुदु सार्मलिनु वर जोइ ॥८३॥

ए सविनु मिलिस्यइ संयोग। मानव भव सुर लहसि भोग।
तिणि अवसरि ऊगिउ ते सूर। नाठौं तिमिर जिम जलहल पूर ॥८४॥

लेई विष्टा शंखपुरी जाइ । सीह-दूआरि पुहुती थाइ ।
तिणि अवसरि ढंढेरु फिरइ । सार्वलिंगि जाई अणुसरइ ॥८५॥

छवी ढंढेरु चाली नारि । जण लेई आव्या राजदूआरि ।
नरपति-नइं जई करइ प्रणाम । तव आदर दीइ बहू ताम ॥८६॥

"वैद्यराय ! किणि थानकि रहु ? । आज अम्हे धनवंतरि लहिउ ।
तुम्हे आवि अम्ह-सरीआ काज । पूरव पुन्यि प्रगटया आज ॥८७॥

एह व्याधि जिणि थाइ दूरि । ते उपचार करु जे सूर ।
पछइं कहण न पावइ कोइ । तेह भणी सहू निसुणउ लोइ ॥८८॥

सकल लोक कुमरी-प्रति कहइ । एह व्याधि तुम्हथी नही रहइ ।
जे जाणउ ते ओषध करु । व्याधि एह तुम्हे दूरि हरु" ॥८९॥

आण्यउ मनि तव हरख अपार । जे जाणउ ते करु उपचार" ।
नरपति अंगि लेप तव करइ । खिणि खिणि रायतणउं दुख हरइ ।९०।

तिणि औषधि तव गई व्याधि । राजा-सयरि हूई समाधि ।
मंत्रीसर कर जोडी कहइ । "अति धणउ नयणां अम्हनइ दहइ ॥९१॥

मिं उपचार करया अतिधणा । निःफल हूआ सविकहइ-तणा ।
पूरव पुन्यि मिल्या तुम्हे आज । निश्चिइ सरसि अम्हारूं काज" ॥९२

"तु उष्णोदक सिउं अंजन करइ । तिमिर नयण तणां दुख हरइ" ।
दिवस सात-मइं नाठा व्याधि । नरपति मंत्री हुई समाधि ॥९३॥

वैद्यराय प्रति आदर करइ । सार वस्तु ते आगलि धरइ ।
धनवंतरी परतखि आवीउ । नृप मंत्री दुख दूरि कीउ ॥९४॥

विनय कर नरपति इम भणइ । "पुत्री एक अछइ अम्ह-तणइ ।
वनमाला नामि गुणवंत । सील शिरोमणि सहिजि संत ॥९५॥

कृपा करु अम्ह ऊपरि आज । ते कुंअरी परणउ गुणराज ।
तु अम्ह वाचा निश्चि पलइ । दुख-दालिद्र सवि दूरि टलइ ॥९६॥

मंत्रीसर-निज कन्या देय । मदन-मंजरी नामि जेह ।
मया करी अम्ह मोटा करइ । अम्ह कुंअरी तुम्हे निश्चि वरइ ॥९७॥

उच्छव अमन लीउ तिणि वारि । नगरी वरतिउ जय-जय-कार ।
वेवराय दोइ कुमरी वरइ । मुखि नरपति मंत्री उच्चरइ ॥९८॥

गाई कामिनि मंगल च्यारि । नृपमंत्री मनि हरख अपार ।
अरधराज आपइ नरपाल । मंत्रीपद दोई सुविशाल ॥९९॥

हय गय रथ पायक परिवार । रिद्धि तणउ नवि लहीइ पार ।
सोवन थाल कचोलां जेह । पलिग तलाई आपइ तेह ॥३००॥

एक मंदिर दीइ नरराय । दंपति कारणि रहिवा ठाय ।
वर परणी चालिउ निज गेहि । निज मंदिरि जई पुहुता तेह ॥३०१॥

अष्ट भोग कुमरी परिहरइ । तजी सेजि संथारु करइ ।
तेहनु मरम न जाणइ कोइ । इणि परि दिन ते नीगमइ सोइ ॥२॥

तव कामिनि मनि विसमय थाय । अहनिस शोक वहइ ए कांइ ? ।
सकल भोग ते दूरि करइ । तपसीनी परि ते रहइ ॥३॥

एक वार ते पूछइ मरम । सावलिंगि ते भाजइ भरम ।
"भोग तणउ मि कीधु नीम । मित्र न पामुं तां मझ सीम ॥४॥

दाण-मांडवी अछइ जिहां । निज सेवक मोकलीआ तिहां ।
कुमरी सीख दीइ अति घणी । सदयवच्छ मेलापक तणी ॥५॥

जे जडीआ योगी अवधूत । तपसी लिंगायती नइ भूत ।
रूपे परावृत फेरी फरइ । एहवा वाटिइ जे संचरइ ॥६॥

विण समझि सेहलउ कोइ । एहवइ वेसि जे जे होइ ।
छलबल करी करी आणेयो इहां । रखे कोइ चाली जाइ किहां ॥७॥

केता दिवस इणीपरि जाइ । वरिउ कंत आविउ तिणि ठाइ ।
अवधू-रूपि दीठउ तेह । विरहि करीनइ सोसिउ देह ॥८॥

दाण-मांडवी आगलि आइ। अवधू-वेसिं आणिउ तिणि ठाइ।
नव-यौवन देखी सुकमाल। पूछइ, "किम मेहलिउ जंजाल ?" ॥९॥

निज मन तणी वात ते कहइ। "सावलिंगि कुमरी चिति वहइ।
तिणि विरहिं लीधु ए वेस। हींडुं तेणइ देश परदेस ॥१०॥

महीअ मरम तव नेपुं करइ। घरभीतरि ते लेई धरइ।
सुखि समाधि रहइ तिणि ठाइ। जे जोईइ ते देई पठाइ ॥११॥

सदयवच्छ आघु नीसरिउ। दाण-मांडवीआ तेणे धरिउ।
"कहु योगी, चाल्या कुण देसि ?। किम तुम्हे छांडिउ सयल
कलेस ?" ॥१२॥

सदयवच्छ बलतु इम भणइ। "कामिनी-विरहु छइ अम्ह तणइ"।
संखेपि करी ऊतर देय। जाणी मरम चलाविउ तेय ॥१३॥

सावलिंगि आगलि लेई जाइ। देखी कंत हीइ चमकाय।
सावलिंगि पूछइ तव भेद। "अवधू ! ऊतर दिउ विछेद ॥१४॥

सालिवाहन नृप-कुंवरी जेह। सावलिंगि नामि छइ तेह।
मालणि मंदिरि वाचा करी। ते सुंदरि कहनइ घरि हरी ! ॥१५॥

तिणि कारणि अम्हे लीधु योग। छांडिया विषय तणा सवि भोग।
तिणि कारणि अम्हे लीधु नीम। न मिलइ कामिनि ता छइ सीम"॥१६

सावलिंगि कुमरी इम कहइ। "नारी काजि कवण दुख सहइ ?।
सवि मूरख-मांहि तुम्ह रेह। विण-हुरणि दुख दाखइ तेह" ॥१७॥

सदयवच्छ तव बोलइ वाणि। "ए संसार असारि ज जाणि।
वाचा सार एणइ संसारि। ते वाचा दीधी तेणीइं नारि ॥१८॥

सावलिंगि जउ जीवइ नारि। वाचा-लोप नही करइ संसारि।
ति विण अवर नारि नवि वरूं। जइ गंगा करवत अणुसरूं ॥१९॥

जीभ खंडि करि तजुं पराण। इणि वाति सांसु म म जाणि।
'जनमि-जनमि मझ नारि तेह'। इम करवत वाहिसु देह" ॥२०॥

सुणी वयण तव सामलि हसी । कनक-तणी परि जोयु कसी ।
कंत-तणउ नवि लाधु छेह । मझ कारणि दुख दाखइ देह ॥२१॥

"अरे कुंअर ! तुं म करि अकाज । सावलिंगि तुझ मेलिसु आज ।"
तिणि वयणि हीअडइ हरखीयु । ऊतारा थानक तव दीयु ॥२२॥

प्रथम कंत बोलावइ तेह । 'तजो शोक तुम्हे जाउ गेहि ।
सावलिंगि तुम्हनि नही मिलइ' । सुणी वयण हीअडइ दव बलइ॥२३॥

तेहथी रूपि अधिक आगली । राजकुमरि परणावुं वली ।
गुणमाला-नरपति कुंअरी । परणावी मोकलीउ पुरी ॥२४॥

हरख वदन तव नयरीइ जाइं । मात पिता नइं लागु पाय ।
अति आनंद हूउ तस घरी । सयल कुटुंबनइ सारी पुरी ॥२५॥

मदनमंजरी मंत्रि-कुआरि । मदनसिंह परणाविउ नारि ।
तिहां सहूनइ हरख ज करिउ । सावलिंगि सदयवच्छ वरिउ ॥२६॥

सदयवच्छ नइ सामलि कहइ । "इणि थानकि रहिवुं नवि लहइ ।
जउ नरपति ए लहसि मरम । सकल वातनु भागइ भरम" ॥२७॥

सकल सैन्य-सिउं चाल्यो राय । सालिवाहन नृप-केरइ ठाइ ।
मात पिता मनि दुख अति थणु । करतां होसि मुं बेटी-तणुं ॥२८॥

नारि-वचनि चालिउ वरवीर । सदयवच्छ मनि साहस धीर ।
नयरि पासि जब पुहुता जाण । वागां जांगी ढोल नीसाण ॥२९॥

निसुणिउं दूत-वचनि तिहां राय । तव बेटी-नइ साहमुं जाइ ।
पहुवच्छराय-तणउ सुत जेह । सावलिंगि वर परणिउ तेह" ॥३०॥

इसिउं सुणी मनि हरख न माइ । सावलिंगि तइ मिलवा जाइ ।
सालिवाहन नृप पालु पलइ । सदयवच्छ साहमु आवी मिलइ ॥३१॥

सावलिंगि तव प्रणमइ पाय । मात पिता मनि हरख न माइ ।
"कहु कुंअरी! तुम्ह-तणउं चरित्र । तु अम्ह काया हुइ पवित्र ॥३२॥

कीधां करम न छूटइ कोइ। राजा रिदय विचारी जोइ।
ब्रम्ह चरित्र नवि लाभइ पार। कुमरीइ कहिउ सवि सुणीउ विचार ॥३३॥

लगन जोई कीजइ वीवाहू। तु हुइ हरख, नइ भाजइ वाहू।
तु हवि ग्रम्ह मनोरथ फलइ। पुत्री-विरह दुख दूरिइ टलइ" ॥३४॥

सालिवाहन नृप माडिउ जंग। नरपति धरिउ छव बहूरंग।
दान मांन दीजइ अतिघणां। हुइ उछव वीवाहा तणा ॥३५॥

वर घोडइ हुउ असवार। गायइ कामिनि मंगल-च्यारि।
लूण ऊतारइ वर कामिनी। वद्धावइ वारु भामिनी ॥३६॥

नर नारी तिहां बोलइ घणां। जोयो फल ए पुन्यह-तणां।
सदयवच्छ नइ सामलि नारि। सरिखु योग मिलिउ संसारि ॥३७

वर-राजा तोरणि आविउ। इंद्र सरीखु सोहावीउ।
वर पूंखो आणिउ मांह्यरइ। सिंहासनि जई आसन करइ ॥३८॥

विप्र समय वरतावइ जामि। कर-मेलापक हूउ ताम।
सोवन-चउरी करइ नरेस। तिणि थानांक कीधउ परवेस ॥३९॥

वर-कामिनि तिहां फेरा फरइ। ब्राह्मण बईठा वेद ऊचरइ।
करे भाट तिहा जय-जय-कार। विनइ करी दिइ दान अपार ॥४०॥

कर-मेहनामणि नृप दिइ दान। हय गय रथ परघु बहूमान।
पाय लागी नृप दि आसीस। "दंपती जीवयो कोडि वरीस!" ॥४१॥

वर लाडी परणी घरि जाइ। हीग्रडइ अति आनंद न माइ।
सदयवच्छ सामलि वर नारि। विलसइ सुरक न लाभइ पार ॥४२॥

सालिवाहन लीलावई तणी। मननी इच्छा पुहुती घणी।
सदयवच्छ सामलि-सिउं रहइ। राति दिवस अंतर नवि लहइ ॥४३॥

केता दिवस इणि परि जाय। सदयवच्छ चिंतइ मन-मांहि।
मात पिता दुख होसि घणउं। करता होसि ग्रंदोह ग्रम्ह-तणु ॥४४॥

सावलिगि नइ कहइ वात । "दुख धरतु होसि मझ तात ।
विरहि करी निज छंडइ प्राण । तु हवि जईइ पुर पहिठाणि ॥४५॥

इहां रहिवा-नु युगतु नही । सुदा रहोइ विचारु सही ।
सासरडइ रहितां हुइ लाज । पिता-पक्षनु विणसइ काज ॥४६॥

[दूहा]

स्त्री पीहरि नर सासरइ । संयमीग्रां सहि वास ।
मांन-रहित निश्चिइ हुइ । जु मांडइ थिर वास ॥४७॥

जं जं घोवत मिठडुं । सज्जन तांह विदेश ।
अंब घरंगणि मुहुरीउ । करूग्रतण पामेसि ॥४८॥

[चउपई]

इम विनी चालिउ तिणि बारि । ससरानइ जई करिउ जुहार ।
"कृपा करु, ग्रम्ह दिउ ग्रादेस । नयरि ऊजेणी करुं प्रवेस ॥४९॥

पिता ग्रम्हारु बहू दुख धरइ । ग्रहनिसि माता शोक ज करइ ।
सवि सुख छाडयां तेणे दूरि । ते दुख-सागरि पडीग्रां भूरि ॥५०॥

तुम्ह प्रसादि ग्रम्ह पुहुती ग्रास । परणिउ कुमरी लीलविलास ।
ग्राज ग्रम्हारी वाचा पली । मन-वंछित कामिनि ग्रम्ह मिली" ॥५१॥

वलनु राजा एहवु कहइ । "तु रूडुं जउ इहां रहइ ।
पुण्य-प्रभावि ग्रम्हनइ मिलिउ । कलप-वृक्ष ग्रम्ह ग्रंगणि फलिउ ॥५२॥

इम कांइ तुम्हे दाखु छेह ? । खिण एक मांहि छांडु नेह" ।
कर जोडी नइ करइ प्रणाम । देई ग्रालिंगन चालिउ ताम ॥५३॥

सावलिंगि मोकलावा जाइ । माता पिता-ना प्रणमइ पाइ ।
सीख लेई-नइ चाली साथि । सदयवच्छ स्वामी नरनाथ ॥५४॥

सालिवाहन वुलावा भणी । ग्रावि तेतलइ सीम ग्रापणी ।
करी जुहार नइ पाछउ वलइ । पुत्री-विरहि मीन जिम मिलइ ॥५५॥

नयरि ऊजेणी पुहुतु वीर । सदयवच्छ नृप साहस धीर ।
मात-पिता-ना प्रणमी पाय । आलिंगन दिइ माघु थाइ ।।५६।।

सार्वलिंगि सासू-पाए पडइ । आलिंगन देती अडवडइ ।
सविकहिंनि मनि हूउ आणंद । जिम चकोर खग देखी चंद ।।५७।।

निज कुटंब-मेलापक हूयु । ए अधिकार हूउ छइ जूयु ।
सुमंगला मनि पुहुती आस । सुख भोगवइ तिहां लील विलास ।।५८।।

मनगमता पाम्या संयोग । पांच प्रकारिइ विलसइ भोग ।
ए पहिलुं हूउ अधिकार । कवि कहि जोई चरित्र आधार ।।३१।।

।। इति श्री सदयवच्छ सार्वलिंगि पाणिग्रहण चुपई ।।
।। समाप्तमिति भद्रम् ।।

परिशिष्ट २

मुनि केशव (कीर्तिवर्धन) रचित

सदयवच्छ सावलिंगा चउपई

[दूहा]

स्वस्ति श्री सोहग सुजस, वंछित लील विलास।
दायक जिण-नायक नमुं, पूरण आस उल्हास ॥१॥

[1]सरस वचन द्यो सरसती, सकल कला दातार।
सुप्रसन्न प्रणमुं सदा, वरदाई सुविचार ॥२॥

जे क्युं जगि दीसइ अछइ, आसति मति गुण ग्यान।
सो प्रसाद सदगुरु तणो, धुरि धरूं तस ध्यान ॥३॥

रस नव ही अति सरस हुई, अपणी अपणी ठांमि।
उतपति सबि शृंगार की, सहु जन-कूं अभिरांम ॥४॥

रसियां विण शृंगार रस, शोभ न पामइ [2]युद्ध।
कामिणी विण कामो पुरुष, दीसइ वृद्ध [3]विबुद्ध ॥५॥

तिण रस को कारण [4]त्रिया, वली नायक सु प्रधांन।
कवियण तिणि कारणि कहइ, रसिक-हेतु धरि ध्यांन ॥६॥

रस वंछइ जिको रसिक, सज्जण सगुण सुहाउ।
सदयवच्छ की वारता, सुणु रसिक सिरराउ ॥६॥

[चुपई—राग मारु]

पूरब दिसि सोहग सु प्रकास। कूंकण विजयपुर विविध विलास।
अमरमणी पदमणी गुणवंत। योगीजण जिहां सुख विलसंत ॥८॥

१. 'सरस वचन कविगुण सुमति' २. 'मुद्ध' ३. 'विशुद्ध' ४. 'त्रिया'

[1]महीपाल पालइ तिहाँ राज। राज करइ जाण कि सुरराज।
क्षमा त्याग निकलंक [2]नरेश। सोहग वास विलास [3]विशेष ॥९॥

तस कुल-मंडण साहस धीर। निरमल गुण गंगा नुं नीर।
सदयवच्छ तस सुत सुविचार। जाणिक हरिकुल मदनकुमार ॥१०॥

[दूहा]

गुण-रागी त्यागी गुहरि, सोभागी सकलाप।
सदयवच्छ सोभागिलो, [4]पल पल चड़त प्रताप ॥११॥

तन-सुख मन-सुख नयण-सुख, सुख वयणे ही सार।
सुख [5]क्रमि-क्रमि महाराज-सुत, सहु जण-नइ सुखकार ॥१२॥

बीजोही बालक सदा, दीठां जावइ दाई।
राजकुंमर रलियांमणों, कहो किणने न सुहाइ ? ॥१३॥

[चौपई]

तो राजा नइ बुद्धि-भंडार। सोम नाम मंत्री सुविचार।
सावलिंगा नांमइ तस जांणि। पुत्री जीव-पराण-समान ॥१४॥

[दूहा]

मधुर चालि लोचन मधुर, मधुर रूप मति मांण।
मधुर बोल बोलइ मधुर, रीझइ रांणो रांण ॥१५॥

हिव इक दिन प्रह सम हुवइ, सुंदर सदयकुमार।
पिता-पाइं प्रणमइ जई, जुडियो जिहां दरबार ॥१६॥

[चौपई]

देखी नयणे सुत दिदार। महाराज मनि थयो विचार।
पुत्र भणावी करूं सुजांण। विद्या विण नर पशू-समांण ॥१७॥

१. 'सालिवाहन करइ तिहां राज' २. 'निसंक' ३. 'सलक्ष'
४. 'दिनदिन' ५. 'माणइ'

(श्लोक)

[1] प्रथमे वयसि ना धीतं, द्वितीये नार्जितं धनं ।
तृतीये नार्जितो धर्मः, चतुर्थे किं करिष्यति ? ।।१८।।

(दूहा)

सूरवीर प्रति साहसी, रूपवंत दातार ।
विद्या विण बिलखइ वदन, जिम प्रिय [2]मन विण नारि ।।१६।।

सहु सज्जण सहु पापणा, सगलइ ही सनमान ।
[3]एकणि विद्या-तणइ वसि, धरम धरा धन थ्यांन ।।२०।।

(उक्तं च)

[4]विद्या घेणु जिहा नरां, किस्यो अगूरो त्यांह ? ।
[5]खिण दूझइ खिण दूझवी, विमूकसो मूग्रांह ।।२१।।

(चोपई)

इम जांणि महाराज ति वार, श्रोभो तेडाव्यो मतिसार ।
भणिवा घाल्यो तिण लेसाल, सीखइ कला सकल सुकमाल ।।२२।।

हिव इक दिन मंत्रीसर सोम, देखि सुना उल्लहसीयो रोम ।
ए गति मति रूप तोहि ज सार, जो जांणइ कमु सास्त्र विचार ।।२३।।

रूपवंत नइ गावइ गीत, इक वल्लभ नइ हुवइ सुविनीत ।
इक विद्यानइ न करइ मांन, चतुर मनइ मांनइ राजांन ।।२४।।

---

१ माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
सभा मध्ये न शोभिस्ते हंस मध्ये बको यथा ।।

२. 'ज्यूं त्रिय विण भरतार' ३. 'एकेण विद्या बाहिरा' 'नरकी है जिय स्थान ।'

४. 'विद्याहीणा' ५. 'मुकहीन त्रिसूकसि, जो सीखइ नवरांह'

अेक सोनूं नइ वलि होई सुगंध, सींह अनइ पाखर संबंध ।
अेक सुता नइ सास्त्र-सुजांण, तो बाधइ अधिको विन्नाण ॥२५॥
इम जांणी [1]ओझो मतिसार, तेडाव्यो मुंहतइ तिण वार ।
आसण बैसण आपि उदार, वचन कहइ करि निज आचार ॥२६॥

(दूहा)

कर जोडी मुंहतो कहइ : "सुणि, ओझा ! सुविचार ।
एह भणावो अम्ह तणी, पुत्री रति अणुहार ॥२७॥
भणइ घणा लेसालीया, ओझा तुम्ह लेसाल ।
तिहां-थी ए मुक्त राखवी, गुपतपणइ ए बाल" ॥२८॥
हरखइ हाकारो भणइ, ओझो घरि अधिकार ।
जिम आव्यो तिम पाठवुं, रंगइ राजकुमारि ॥२९॥

(चोपई)

हिव सुभ लगन मुहूरति धरी, भणिवा घाती सा कुंअरी ।
छांनइ तिणि ओझा नइ पासि, दिन प्रति करइ कला-अभ्यास ॥३०॥
तिणि ओझानइ अति अभिरांम, गृह पासइ इक छइ आरांम ।
वृक्ष अनेक अछइ जेहमइं, जिण दीठां दिन सुख मां गमइ ॥३१॥
जाई जूही मुचकुंद सकुंद, पुहकरणी-जल-मइं अरविंद ।
बोलसिरी पसरो चहुं ओर, मदोन्मत्त नाचइ जिहां मोर ॥३२॥
मालती तरु महकइ [2]महुकार, [3]गूं गूं सबद करइ गुंजार ।
खिण बईसइ, खिण ऊडी जाइ, [4]रति वांछिक जिम आतुर थाय ॥३४
नालिकेरी जंमीरी द्राख, [5]लूंबालूंबि रही जिहां साख ।
कोईल टहुकइ अंब संयोग, [6]जिम-नव-त्रीय करइ प्रथम संयोग ।

---

१. 'छेडो' २ ,'सहकार'३, 'खटपद गुंगुं करइ गुंजार' ४. 'रीति वंछति' ५, 'लूंषि रहिया जिहां साख' ६. 'जिम कामणी करइ प्रथम संभोग' ।

शालि-खेत्र तिण बाग-मझारि, [1]ओझा आरोगइ सुविचार ।
शालि तणी रखवाली भणी, वारी मांडी [2]जण-जण तणी ॥३५॥

(दूहा)

लेसाल्यां-सिरि [3]बड थयो, [4]भणतइ राजकुमार ।
पाटी देई अवरां प्रति, सगलो कहइ विचार ॥३६॥
हिव यौवन-वय आवीयो, सदयवच्छ सुविचार ।
अंग अंग अति उल्लहसइ, [5]कज्ज दरसण दिनकार ॥३७॥
अवरहिं गति मति पिण अवर, अवर रूप गुण घोर ।
आबो वय यौवन अवर, [6]जाणि कि छइ सवि ठोर ॥३८॥
मांन दान महीयल महत, गरूंअ वांन गुण ग्यान ।
माया जोवनि आवतां, ए पांचे परधांन ॥३९॥
वय जोवन अरू निपुण-पण, घरि धण विनय अथाह ।
ए च्यारे तउ पामीयइ, जउ तूसइ जगनाह ॥४०॥
[7]गति मति छति गुण-गण निपुण, राव तणइ परभाव ।
ओझो पणि अधिकउ गिणइ, दिन दिन दोठो दाव ॥४१॥

(चोपई)

इक दिन पूछइ ओझा भणी, कुंवर वात तिणि कुंवरी तणी ।
"लेसाल्या सहु बाहरि भणइ, मांहि भणइ कहु तुम्ह तणइ" ॥४२॥
कहइ ओझोः "सुणि सदयकुमार, जे छइ माहरइ गेह-मझारि ।
अ पुत्री साम मंत्रीस्वर तणी, सार्वलिंगा सैंज्यम तिणि भणी ॥४३॥
राजकुंमर देखइ नही तिणइ, ते छइ अंधी, मांहि ज भणइ ।"
इम कहिनइ भाख्यो सहु मर्म्म, बीजो क्युंही न भाख्यो मर्म ॥४४॥

---

१. 'ओझा आरोगण सुख सार' २. 'चेलातणी' ३. 'वट' ४. 'भणतो' ५. 'मदन महा मसराल' ६. 'जाणिकि सेल न ठारे' ७. 'घरि धव विज्जु अथाह' कडी ४२ केटलोक प्रति० मां नथी ।

कुमरी मनि घरिण अलजो थयो, सदयकुमर-नइ देखण लगो।
गुरुजी-नइ पूछइ सा इमइ, "कुमर कहु नावइ इहाँ किमइ ? ॥४५॥

ओझो कहइः "सांमलि कुंवरी, कोढी कुंवर देही अति बूरी।
कुंवरी न देखइ कोढी मुख, बाहरि तस राखुं तहु दुख्ख" ॥४६॥

हिव इक दिन ओझो मतिसार, जात्रा लागो नयर मझारि ।
जातइ भाख्यो सूदा भणी, सहुनइ दई पाटी आपणी ॥४७॥

परिण मत खोलउ ए ओरडी, आंधो-नइ रहिबा दीज्यो ऊंडी ।
तह त्ति कुंमर ओझा-नइ भणइ,पुरि पुहुतो ओझो तिरिण खिणइ।

(दूहा)

तिरिण अवसरि सूदा तिहाँ, सावलिगा-रो साद ।
सुणि भणतां, बोल्यो सदय, अधिक धरि उनमाद ॥४९॥

"हे अंधी ! खोटउं भणइ, खरउं न भाखइ कांइ ?।
फूटी चखि तुझ बारीली, तिम ही ज ग्रहीजे, माँहि" ॥५०॥

कहइ कुमरीः "सुणि कोढीया !, खोटउं न भणुं क्युंहि ! ।
पाटी-मइं लिखीउं अछइ, वाचूं छूं हूं त्युंहि" ॥५१॥

सुणि सूदो संकित थयो, [1] "भाखइ वात स्युं एह ? ।
अंधी कहु, किम वाचसी. [3]लिखीउं छइ जे लेह ?" ॥५२॥
[4]इम चिंतवि आकुल अधिक, करि करि ऊंचो वास ।
दीठाँ निज चखि कुंबरनां, कांति वयण सुविलास ॥५३॥

---

१. 'खरो भणावो कोढ़िया, लिख्यो छइ जिममाँहि' २.'भाखइ' ३- अक्षर लखिया मेह'
४- "इम चितवी खोली ओरडी, देखी कुमरी रूप ।
 कुमरी देखइ कुमर नइ, अन्यो अन्य देखे स्वरूप ॥"

[1]हा हा रूप सुख, ग्रखि हसइ, विकसित सुगलि विलास ।
सदयकुमर संसय पडयउं, ईषत अधिक उल्हास ॥५४॥

[2]जे नर रूपइं आगला, ते नर निगुण न होई ।
केसर केरी पंखडी, सहि सुरंगी जोई ॥५५॥

(चोपई)

दीठी अपछर नइं अगुहार, सदयवच्छ कुंमरि तिणिवार ।
चित्र-लिखी जाँणइ पूतली, रंग चंग चंपक-नी कली ॥५६॥

कइ रंभा इन्द्राणी जाँणि, [3]कइ गोरी आई घरि माँणि ।
कइ रतिपति-रामा रति रूप, चिंतइ मनि ए किस्यूं सरूप? ॥५७॥

(दूहा)

सर वीणा, पद-तल कमल, वयण अमी विस्तार ।
धरितालां लोचन चतुर, नयण न खंडइ धार ॥५८॥

तनु सरली, पूरण रली, सकल रूप सुकमाल ।
कलप-वेलि कहीयइ तिको, एहि ज रूप रसाल ॥५९॥

इण सम संसारि त्रिया, कीनी नवि करतार ।
बिगताला वयणइ वदइ, अमीय वयण सुविचार ॥६०॥

(चोपई)

अति सुंदर सोहइ आकार, अद्भुत तनु सुकुमाल उदार ।
अकुलीणी बाली सुविचार, कामवेलि कुवली अणुहार ॥६१॥

फूल तूल मखतूल अमूल, कोमल स्यांमल केस समूल ।
चिहुर: [4]मूल बंध्यो चाँदलो, सेस सीस मणिमय बिंदलो ॥६२॥

१-'हा हा रूप मुखचंद्र हंसे, विकसित युगल विलास । आहा रूप अवो अकइ'
२- केटलीक प्रति मा० नथी । ३. 'कइ गोरी अरथंभ वखाणि' ४: (दृढ)

ओपइ भाल बिशाल अनूप, नभ-दीपक टीली ससि रूप ।
भ्रूहि पुहपञनु करि सुभवास, मधुकर आइ करइ आवास ॥६३॥
शंकित चकित थकित मृगबाल, लोचन परि लोचन सुविशाल ।
निरमल नीकी जस नासिका, जाँणि अखंडित दीपक शिखा ॥६४॥
माखण मुखमल परि सुकमाल, कंचण बरण सरीसा गाल ।
गुरु प्रिय वयण वयण सुमार, अमृत पूरण करण उदार ॥६५॥
चिहुं दिसि चलकइ कुंडल नूर, जाणि कि [1]सेवइ ससि नइ सूर ।
मधुर अधर वर चग सुरंग, हिंगलू नइ परवाली रंग ॥६६॥
दंत-पंति दीपइ ऊजली, कइ मोती कइ दाडिम कली।
नह केसरि आंगुलि पाँवुरी, कर बे नालि सु बाहाँ खरी ॥६७॥
उरबर जोवन राजइ आप, पूरण परिघल तेज प्रताप ।
कुच दुंदभि जोडि बाँजति, कंचुकी दल-वादल छाजंति ॥६८॥
केसरि-लंक नितंब विशाल, केलि-गरभ जघा सूकमाल ।
रकत कमल पल्लव परि पाइ, अति कोमल सुचि रंग सुहाइ ॥६६॥
[3]मयमत्ती उनमत गज गेलि, चालि हरावइ हंसाँ ढेलि ।
ठमकि ठमकि रिमझिम पय ठवइ, वेखो तस वसि कुंण नवि हुवइ ?७०

(दूहा)

मानिनी मोहन-वेलडी, मुखि झलकइ महकार ।
दंतश्रेणी दीपइ तिमइ, चपला-को चमकार ॥७१॥
गिरुआ गुण-गण तिणि निपुण, संकेतइ संचारि ।
चतुराई धरि चूंपस्यूं, कीधी ए किरतार ; ॥७२॥

(दूहा-सोरठीया)

रमणी सा संसारि, जस त्रिहुं भुवन ओपम नहीं ।
अबला अवरि बिचारि, कह्रीयइ निच्चइ कवीयण ॥७३॥

---

१. 'बमइ' २. 'करकज' ३. 'मयगली हारविणोनी चालि, हालि'

(चोपई)

अद्भुत रूप अनुपम गात, इणिस्युं सुख बोलइ दिन राति ।
देखिदेखि तस रूप विलास, कुमरी पणि फिर देखइ तास ॥७४॥

(दूहा)

नयण-बांण नारी तणे, सदयवच्छ सुकुमाल ।
बीध्यो अति व्याकुल अधिक, तेह थयो असराल ॥७५॥

गाहा-रस कवियण वयण, मधुर बाल संलाव ।
हाव भाव हरिणांखीयां, क्युं न हरइ मन-भाव ? ॥७६॥

उर लागा अति आकरा, नयण बांण अणीयाल ।
नयण निमेख लीये नही, मगन थयो महिपाल ॥७७॥

तां लज्जा तां सूरपण, तां विद्या तां माम ।
नयण-बाण नारी तणां, होयइ न लग्गां जाम ॥७८॥

सज्जण दुज्जण सुखिकरण, प्रथम उपावण प्रीत ।
सुखकारण संसार सहु, नयण-ह केरी रीति ॥७९॥

(दूहा-गाहा)

अण जांणीयाण संगो, नयण कुणंति धरंति बहु पिम्मो ।
लख्मा कह विन फुट्टइ, अलख गई परम सा भणीया ॥८०॥

पुव्वि करेइ पिम्मं, पच्छा पुण गिन्ह ए मणो तस्स ।
सज्जण जण सुहजणणं, चक्खु परम वसीगरणं ॥८१॥

(दूहा)

नयण पदारथ नयन रस, नयणे नयण मिलंत ।
अणजाण्यां-स्यूं प्रीतडी, पहिलां नयण करंत ॥८२॥

नयणां सोइ सराहीये, जिण नयण-में लाज ।
बड़े भये अरु विख भरे, कहो सजन, किण काज ? ॥८३॥

सयण ठगारे ठगी गई, दे गइ चोट अचूक ।
बहोत भाँति ओखद कीए, मिले न दोउ टूक ॥८४॥

नयन नयन पैं जात है, नयन नयन-की हेत ।
नयन नयन की बात है, नयन नयन कह देत ॥८५॥

नेनां कह्यो नेनां सुएयों, उत्तर दीयो नैन ।
नयन नयन सूं मिल गए, कहे कोसूं वयण ? ॥८६॥

उतावला न मलूकीइ, सनैः सनैः सब होय ।
सदैव वाडी-रूखडाँ, सफल फलंतां जोय ॥८७॥

नयणाँ केरी प्रीतडी, बूझै बीरला कोई ।
जे सुख नयणे पाईइ, ते सुख सेज न होई ॥८८॥

सज्जन दुर्जन सज्जन करणं, प्रथम उपजावण प्रीति ।
सुखकारण संसार सहू, नयणाँ केरी नीति ॥८९॥

नयण मिलंतां मन मिले, मन मिले वयण मेलत ।
वयण मिलंतां कर मिले, इम काया गढ भेलंत ॥९०॥

जीर रखवाला पंच जण, समदाँ जेंहा सयण ।
कायागढ़ तोहि मिले, जां भेदे समये नयण ॥९१॥

नयण समो वैरी नीको, प्रत्यक्ष लागे ध्याय ।
आग पराइआं तणी, आप अग लगाय ॥९२॥

नयण बाण जिणकुं लगे, ओखद-मूल न तांह ।
ससक ससक मरी मरी जीवै, उद्धत कराह कराह ॥९३॥

नयण-बाण जिणकुं लगे, कीधो ओखद तांह ।
कुच टको पर पेटी भुज, अधर-पान पग बांह ॥९४॥

नयण मिलंतइ मन मिलइ, मन मिलि वयण मिलंति ।
वयण मिल्यइ सहु संपजइ, कारिज सिद्ध चढ़ंति ॥९५॥

(चोपई)

कुंमर कहइ : "इम धरीय उमेद,इतरा दिन नवि लाधो भेद।
जोवन विण योवन सुविलास,म्राज सफन मुझ थया सु प्रकाश ॥९६॥

(दूहा)

म्रतरा दिन म्रोझा मुझइ, भोल्यो भोलइ भाव ।
हिव मे तुझ बोलण तणी, ढोल पलक न खमाय ॥९७॥

धन माणस तेही ज धरा, सहुकवि दइन सु-साखि ।
चाहि करइ तिण-सुं चतुर, हिसि बोलइ हित दाखि ॥९८॥

हाम राम माता मुरारि, सयणां तणो सभाव ।
बोलण हसण धुन छज्जही, जांणे मूरिख राव ॥९९॥

तन-खिलमण मन-उल्हमण, वयण सयण सम वाणि ।
चख-निरखण धन विद्रवण, मानव-भव सुप्रमांणि ॥१००॥

सयण सरूप सोहामणो, मेला विण किणि ज्ञान ?।
काथइ विण भेलइ कियइ, जांगे चोली पांन ॥१०१॥

हास भाम नही जास मुखि, गया जंम्मारो त्यांह ।
जांण कि महकी मालती, सूना जंगल-मांहि ! ॥१०२॥

विरस-स्यूं नहो जस विरस, चाहक-स्यूं नहीं चाहि ।
गांहिलो योवन-नो परि, गयो जम्मारा त्यांह ॥१०३॥

पालइ नितु म्रति प्रेम रस, म्रांखि वयण-प्रवीण ।
म्रवसरि मेलो म्रप्पही, ते साचा सुकुलीण" ॥१०४॥

वयण नयण सयणह तणे, इंगित नइ आकारि ।
कुंमरी ज्याण्यउ कुंवरनउ, चित थयु सुविकारो ॥१०५॥

(चोपई)

वार-वार मन कुंवर विचार, कुमरी जाण्यो एस विकार ।
कुमर चित्त आवइ जेतलइ, सांम्हो तन कुमरी मोकलइ ॥१०६॥

(दूहा)

'आउ' नहीं आदर नही, नेह-हीण निरखंत ।
तिण दिसि कदे न जाईये, जो कंचण वरखंत ॥१०७॥

आउ कहे आदर दीये, आसण वेसण सार ।
उठि मिले मन मेलिनइं, तिहाँ जाईये सो वार ॥१०८॥

नयण नयण मिलिया नि हसि, पूठे मन परधाँन ।
नयण नयण मन मिल्याँ, सयण थया सुविहाँण ॥१०९॥

(चोपई)

निरख्यो कुंअर कुंअरी नयण, मोहाणा मनि जाग्यो मयण ।
पल पल देखइ नयन पसारि, खिण विहसइ खिण बिलखी नारि ॥११०॥

आलस मोडइ भाँजइ अंग, मरट धरइ लेवा मन द्रंग ।
खिण नीसास करे ऊससे, काँमदेव जागत कसमसे ॥१११॥

वाँम चरण अंगूठा नखे, खिणि नीचो जोइ भूमि लिखे ।
कुमर-नि जरि साम्हो ते देखि, संभालइ निज चीर विशेषि ॥११२॥

प्रेम प्रकास करइ मनि रली, कुमरी तस विरहइ आकुली ।
कुमरइ दीठो तस आकारि, धनि धनि ए नारो संसारि ॥११३॥

आतुर हुवइ बोलइ अकुलाइ, कुंअर-वतइ खिणि नवि रहिवाइ ।
प्रीति नीति मन धरि आपणी, गाहा रस बोलइ ते गुणी ॥११४॥

(गाहा)

विण दीहे ग्रह भणायं, विण महुरे होइ ग्रमीय सारिच्छं ।
रे कम्र-रेण-सहियं, ग्रह चुंबुं मो सही देहि ॥११५॥

[सावलिगा वाक्यं] (दूहा)

ग्रमीय-निवासो ग्रहरि सुणि, गुण पास्सब सम जास ।
चख-मिभल मन विहलपण, तिण जगि हुवइ परगास ॥११६॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

पत्थर विणाण घसीयं, विण गंधेण[1] सीतलं होइ ।
कान्हा मात्र सहितं, सखो मो चंदनं देहि ॥११७॥

[सावलिगा वाक्यं]

चंदन चतुर विचारि लइ, चतुरंगां चतुरंग ।
चंदा विण चंदण दीयुं, पडहो वजाडइ ढंग ॥११८॥

(चोपई)

इस बोलइ खोलइ मन बात, हसि घसि रसि जब बोलइ गात ।
ग्रालिगन चुंबन जब करइ, ग्रोभो ग्रावइ तिणि ग्रवसरइ ॥११६॥

कुंवरइं गुरू दीठो ग्रावंत, मत जांणइ ग्रांणइ मन भ्रांति ।
हलफल करि ग्रावइ घर-बार, मूंकत मनवि लहइ लगार॥१२०॥

(दूहा)

भाणा-खडहड खग-भड, वाल्हां-तणा विछोह ।
एतां वानां जे सहइ, तिण-रा हियडा लोह ॥१२१॥

रेहा नेहा मन-तणा, प्रिय तिय नयण सुहाउ ।
ए छूटंतां दोहिला, जइ सिरि जाइ तो जाउ ॥१२२॥

(चोपई)

सदयवच्छ व्याकुल अति घणू, हिव बरण फिरीयउ मुख तणउ।
तिण अवसरि ओझइ मतिसार, दीठा कुमर तणा आकार ॥१२३॥

ओझे ते दीठी कुंअरी, सदयवच्छ विरह करि भरी।
चास भास दीठो तस चेत, ओझइ जांण्यउ विणठो वेत ॥१२४॥

यतः

आकारैरिंगितैर्गत्या, चेष्टया भाषणेन च।
नेत्र वक्त्र-विकारेण, ज्ञायतेऽन्तर्गतं मनः ॥१२५॥

(दोहा)

ओझइ सगलो अटकल्यो, मनमाँ विहुँ-रो मेल।
मुहि क्युं ही आख्यो नहीं, एह विधाता खेल ॥१२६॥

गिरुआ सहजइ गुण करइ, जो अवगुण लख होइ।
खाँगो वाँको ही लखइ, मरम न छेदइ तोहि ॥१२७॥

(चोपई)

ओझे मरम बिहुनो लह्यो, तो पणि मुखि क्युं ही नवि कह्यो।
सावलिग नो थयो वियोग, सदयवच्छ[1] मन हूवइ शोग ॥१२८॥

आसण बेसण पाँन फूलेल, मूक्याँ काम-कतूहल केलि।
न करइ क्युंही बीजूं काँम, जप-माला फेरइ तस नाम ॥१२९॥

(दूहा)

खाताँ पीताँ खेलताँ, क्युं ही तृपति न थाइ।
सदयवच्छ सावलिगा-तणो, खिण विरहो न खमाइ ॥१३०॥

१. 'मक्या सवि भोग'

भगणग गुणग भोजन भगति, हास भास हित हाँम ।
सदयवच्छ नवि संभरइ, इक निस-दिन तस नांम ॥१३१॥

सोकि तणो संगम सुणो, नींद पुरातन नारि ।
निमख लगइ ही निस भरइ, भींटइ नहीं भरतार ॥१३२॥

यतः

एक द्रव्याभिभाषित्वं, परमं बैरि-कारणं ।
विशेषेण सपत्जीनां, भाषायां सरलता कुतः ?॥१३३॥

(चोपई)

चटा जिके भणता चट शालि, एकेकणि रखवाली शालि ।
ग्रौभइ कुमरी-नइ दीयो ग्रादेस,राखण तिण वनि कीयो प्रवेश १३४

ग्रोभो भाखइं सूदा भणी, "कुमर ! ग्राज वारी तुम्ह-तणी" ।
मांन्यो कुंमरइ वचन ज तेह, ग्रंतरगति थयो ग्रंदेह ॥१३५॥

(दूहा)

ग्राज किहिनइ स्युं हतो, रखवाला नो हेत ।
करतां एम विचारतां, कांइ धरइ नहीं चेत ॥१३६॥

हूं उणिरौं उवां माहरो, साद सुणंता सार ।
इतरो हो सुख ग्रम्ह-तणो, साँख्यो नहीं करतार ॥१३७॥

नयण रहो, मन ही रहो, रहो सुवयण विचारि ।
सयण रहइ जिण दिसि तिका, कांइ खोस्यइ करतार ?॥१३८॥

(चोपई)

मन दृढ़ करि पुहुतो मतिमंत. तिण वनि तिहाँ सुणिज्यो विरतंत ।
तिणि खिणि तिहाँ जाइ ऊभो रहइ, तिणिखिणि वयणसयण सर दहइ ।।१३९।।

(दूहा)

कइ कोइल कुहका करइ, कइ वंशी वीणानाद ।
सुणि सूदो संकित थयो, ग्रनि चित-माँ उनमाद ।।१४०।।

(चोपई)

चतुर चूंप पेखइ चिहु ग्रोर, चातक जिम पेखइ घनघोर ।
तिहाँ-थी ते ग्राघो संचरइ, सा दीठी चंपक-ग्रांतरइ ।।१४१।।

(दूहा)

न्याँनो नयनाँ सारिखो, नहीं कोई संसारि ।
विकसइ प्रिय-जन देखिनइ, सो वरसे ही सार ।।१४२।।

विह ग्राँणइ विह मेलवइ, विह मंडइ उपचार ।
ग्रलगो ही नैडो करइ, ए विधि-तणउ विचार ।।१४३।।

तन मन जीवन दिन सफल, ग्राज कीया करतार ।
वीछडीया साजण मिल्या, पुंहुतइ पुन्य प्रकार ।।१४४।।

(चोपई)

कुंमरी पिण चिंता थी घणी, हुँती निज प्रिया मिलिवा तणी ।
ते ग्राँणी मेल्यो जगदीस, गई ग्रारति, पूगी सुजगीस ।।१४५।।

प्रिय दिठ्ठो भर प्रेम प्रकास, अंगि अंगि बाध्यो उल्हास ।
कंकट कंचु अति उलहसइ, प्रिय संगति हुई तिण हसइ ॥१४६॥

(गाहा)

पुर पट्टणे निवासं, पंडिय पासं च निश्चला रिद्धि ।
तरुणी नयण विलासं, पामिज्जइ पुन्न-रेहांइ ॥१४७॥

(दूहा)

जोराबरि लीधो हुंतो, विरह मदन निवास ।
फिर मदनइ पते पुरलीयो, ए विधि-नो सुविलास ॥१४८॥

बेउ मन मिलिया बहसि, साँई आई दीध ।
घण दिवसो विरहो हुंतो, नयणे तृपति न कीध ॥१४६॥

(चोपई)

अति सुंदर मंदिर आराम, निपुण नाह वामा अभिराम ।
देखि देखि एकंतइ ठाम, कहु किणनो नवि जागइ काम ? ॥१५०॥

यतः

हड़-कच्छा कर-वरसणा, बोलंता मूंह मिट्ठ ।
रण-सूरा जगि वल्लहा, ते मइं विरला दिट्ठ ! ॥१५१॥

(चोपई)

बिरह-चिंत हुंती ते गई, कामिनी पणि काम-वसि थई ।
वंक नयण मुखि वंका नयण, इणि अहिनाणि [१]जाणि मयण ॥१५२॥

१, 'जाणे'

कुंमरइ तब तिणि कुंमरी तणो, कर पकडयो मनि ऊलट घणो।
वीण मधुर बाला दाखवइ, मुखि सोहग ग्रमृत रस स्रवइ ॥१५३॥

मन ग्राकर्षि कीयो वसि ग्राप, थयो ग्रंगि उनमाद ग्रमाप।
स्परर्णालिगन चुंबन सार, बहि-रति सात करइ तिणवार ॥१५४॥

(दूहा)

"सावलिगा !" सूदो कहइ, "एह वयण ग्रवधारि।
ए ग्रवसर ग्राराम ए. सफल करो सुविचार ॥१५५॥

(गाहा)

जच्छ विजलं न छाया; छाया जलं न मीतलं होई।
छाया जल-संजुता, ए संजोगो दुल्लहा होई" ॥१५६॥

[सावलिगा वाक्यं]

नयण चमक्कयो वयण रस, सगुणां एम सुहाइ।
¹नाउं मज्जाणों-ह-स्यूं, चम्मो चम्म घसाइ ॥१५७॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

ग्रंब पक्के बहु भांति, कि टूक इक खाइये।
वाडी बन-फल होइ, तो तोडि चखाइये।

गागर पाँणी होइ, तो पंथी पाईये।
परिहाँ, रख्या कहि कहो होइ, मरेई जाईये ॥१५८॥

१: 'मूरख-हंदि प्रीतडी चाम्यो चाम घसाइ'

सो जौवन सु-पसाउलो, सो तन धन गुण-ग्राम ।
पर-काजे पूरा करे, प्रीन तणो तस नाम" ॥१५६॥

[कुमरी वाक्यं]

"लूखो सूखो खाई-नइ, ग्राधी काढइ ऊख ।
काची कली न तोडीयइ, जो लागइ लख भूख" ॥१६०॥

तिणि खिणि वायु-तणइ वसइ, ऊड्यो कुमरी-चीर ।
सूदग्रो तस तन देखिनइ, ग्रातुर थयो ग्रधीर ॥१६१॥

वाये ऊडइ पंगुरण, कुंमर चलीयो चित्त ।
प्रथम राति वाचा तिणंइ, सदयवच्छ-स्यूं दत्त ॥१६२॥

(चौपई)

शीतल जल चंपक-सुवास । छाया सेज कुसुम सुविलास ।
पोढ़या बेउं प्रेम पियास । उर मेली ग्रधिको उल्हास ॥१६३

ग्रोझे चटडा मेल्हया चारि । लेवा तिहां बेऊंनी सार ।
जोई तिहां खिण इक नवि रहइ । पाछा ग्राइ ग्रोझा-नइं कहइ ॥१६४

(वेसालीया वाक्यं)

"गुरुजी ! उइ सूग्रो उवा सूई । कुसुम सेज पाथरे सूइ ।
ग्रहरे ग्रहर बिलंबीया । सागरे खालि खनि सूईय ॥१६५॥

(दूहा)

सांझ समइ जाग्या सही, ग्रंतरगति एकलास ।
बोलडतां बोलइ बयण, सार्वलिग सु-विलास ॥१६६॥

'सूदा !' [सार्वलिगा कहइ], 'एह' ज ग्रधिक सनेह ।
राखो भाखो मत किहां, दाखो कदहि न छेह ॥१६७॥

ए चंपक ग्राराम ए, बलि मन-मेलो एह ।
जिहां तिहां चीत धारिनइ, धरिज्यो ग्रधिक सनेह ।१६८॥

(चौपई)

स सहेली आया चटसाल । ओझो चित संकयो ततकाल ।
पूछइ ओझो कुमरी प्रतइ । ऊरो मइं आपुण-रे मनइ ॥१६६॥

(श्लोक)

पद्म-पत्री विसालाक्षी, कर्णे सोभंति कुंडला ।
येन कार्ये वने गता, सकाम सफलं कृतं ? ॥१७०॥

[सार्वलिंगा वाक्यं]

"अजेस कुंमर अयांणो, कर ग्रहि लीडंति छंडिया सांमा ।
त्रिया एह सभायो, ना ना करतां वाधए प्रेमो ॥१७१॥

(चौपई)

सांझ समइ आया निज गेह । विहुआं विरह त्रियाकुल देह ।
सार्वलिंगा भोजाई पासि । बईठी अवर सखी सुखी वास ॥१७२॥

विज भत्रीजो लेई उछंग । खेलावइ अधिकइ मनरंगि ।
खिणमइं लावइ अवर पियास । भिडइ कांम जणावइ तास ॥१७३॥

आंचल मुखि आपइ उल्हसइ । मुख-स्यूं मुख मेलीनइ हसइ ।
नणंद प्रति भोजाई कहइ । "लाज सहु तुम्ह अलगी रहइ ॥१७४॥

(गाहा)

बाला मुख म लाइस बालं, अपजस वज्जसी नयर मझालं ।
बालो लहसी अवर सवाद, ते बालो तजसी खीर-सवादं ॥१७५॥

(चौपई)

"किस्यूं करो ? रहो सांसतां, दूरि करो बालक-मुख हूंतां ।
पूरण लख्यण थयां तुम्ह-तणां, वयण कहइ कुमरी आपणां ॥१७६॥

(चौपई)

[सार्वलिगा वाक्य]

(दूहा)

घण जोवण भीग्रल छिले, विरहू ग्रंगि न समाइ ।
सखी सलज्जी गोठडी, कहता किणहि न जाइ ॥१७७॥
सखी सलज्जी गोठडी, नीलज नयण निहीर ।
तुम्ह ज्यूं ग्रम्हे पयोहरा, कदे वहेसी सीर ?" ॥१७८॥

(चौपई)

तिण ग्रवसर तस बंधव सार । सिंह ग्रावइ तिण महल मझारि ।
सार्वलिगा जाइ ग्रलगी रहइ । तव भाभी सहु वारता कहइ ॥१७९॥

"सुणि प्रीतम ! बाई तुम्ह तणी । कामवंती मनि इच्छा घणी ।
जोवन विरहइ ग्रे ब्याकुली । परणावो पूरो मन रली" ॥१८०॥

सिंह सुणि मनि थयो विचार । ब्राह्मण इक तेडयो तिण वार ।
सात दिने साहो थापीयो । पुहुपावती पुरि कागल दीयो ॥१८१॥

सार्वलिगा परणावण काजि । सिंहइ सघला कीया समाज ।
उच्छव मडया ग्रधिक ऊछाह । निस दिन कुमर निहालइ राह ॥१८२

खातां पीतां भोग विलास । रलीयाली तरुणी रंग रासि ।
हय गय रथ सोहग परिवार । राय न करइ सूदो तिण वार ॥१८३॥

(दूहा)

रजवट घट हय गय तणी, नव परणी वर-नारि ।
सूदी सार्वलिगा विना, क्युं नवि मानइ सार ॥१८४॥

सगलइ गज लाभइ सदा, खान पान सनमान ।
पिण रेवा तिण हैवा नहीं, तिम तसु कुमर निदान ॥१८५॥

मन वंको मन वावलो, चंचल चपल सुचार ।
केसव मन जिहां रय करइ, ते गति अलख अपार ।।१८६।।

सो घर सो पुर नगर सो, ज्यासूं सयण चार ।
जिण-सूं मन लागो रहइ, सो कोईक संसारि ।।१८७।।

सारीखो राचइ सदा, सारीसि सद भाई ।
सारीसा संगम विना, फल कच्चइ मन जाई ।।१८८।।

महीयल जण बहुला मिलइ, अद्भुत रूप उदार ।
मनगमता मांणस विना, सूनो सहु संसार ।।१८९।।

आवइ दिन-प्रति सदय नृप, लुवध थको लेसाल ।
विण कुमरी व्यापइ विषम, विरहानल असराल ।।१९०

जिम चातक जलहर सदा, चाहइ चंद्र चकोर ।
कुंवर सुकुमरि न देखतो, ईषइ च्यारों ओर ।।१९१।।

ना घरि, नां पुर नारिस्युं, नवि नेसालइ नेह ।
विण तिणि खिर वेवइ नहीं, सूदो सुख-ची रेह ।।१९२।।

दीठो सुदय दयामणो, इक दिन ओभइ आप ।
मिसि करि सुदय दयामणो, एहवो करइ अलाप ।।१९३।।

[ओझा वचन]

"आज कालि नावइ इहां, सावलिगा पढ़वाह ।
सात दिवसमां तेहनो, मंडाणो वीवाह ।।१९४।।

(चोपाई)

सुणि सूदो इम वयण विचार । आतुर मिलिवा थयो अपार ।
तिहां थी आयो वेस्या तणइ । धन आपि मांनइ अति घणइ ।।१९५।।

राजपुत्र आयो इम जांणि । आपइ आदर करइ प्रमोण ।
सवि शृंगार बिछावइ सेज । हाव भाव-सूं मंडइ हेज ।।१९६।।

ततखिण बोलइ सुदय नरेस । "काम नही रतिनो, सुणि वेस ! ।
अवर काजि आया अम्ह आजि" । कहइ वेस्या:"फुरमावो राजि"।१९७

अरथ किस्यू आवेस्यइ पछइ, वात जणावो पुण ते अछइं ।
राजि तणि नवि आवइ कामि, जलि जावो गुण ते सुणि सांमि॥१९८

(दूहा)

ओ वाल्हो निय सयणो, ओ बंधव अभिरांम ।
लाखीणो अवसर लहइ, आवइ आपुण कांम ॥१९९॥

यतः

अपसर चुक्कइ रस गयइ, आदर करइ अयांण ।
जे रिण गुण-विण वाहीयां, ते किम लग्गइ बांण ॥२००॥

(चौपई)

"तेह तणो मंडयो वीवाह । हुं जाई न सकूं तिण राह ।
जनम जीव मुझ तो परमांण । देखूं जो ए कुमरि सुजांण" ॥२०१॥

वेस्या कहई हीयडो उल्हस्यो । "एह वातनो दोहिलो किस्यो ? ।
[ति कहइ] वयण हीयइ निज धरो"। कुंमर कहइ, "ढील
सी करो ?" ॥२०२॥

"कुंमर ! वेश करो स्त्री-तणो । आवइ तसू ऊलट घणो ।
वेस्या बे सार्वलिगा पासि । आवे बोलइ वचन विलास ॥२०३॥

(गाहा)

पावस रूद्रा रयणी, पिय परदेस विम्मह्रा पंथी ।
पर पुरुषांणइ नेहं, पामिज्जइ पुन्न-रेहाइं ॥२०४॥

(चोपई)

सार्वलिगा सुणीयो तस वयण । फिरि बोली बंकी करि नयण ।
मनि भावइ पणि नवि जांणवइ । तेहवो वयण कहइ ते हवइ ॥२०५॥

(गाहा)

पिय-मिलणी कुल-छलणी, अपजस-पडहो, वज्जसी नयरे।
सरसव-पमाण सुखं, दुखं तह होइ मेरु-सारिच्छं ॥२०६॥

(चोपई)

मुह गारी वेस्या नइ तिणइ। पाछी फिर आई तिण खिणइ।
फिरतो बोल्यौ सदयकुमार। हरखि निरखि संसनेही नारि॥२०७॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

(गाहा)

बद सत्ता ससीवयणी। हार अहार वाहणा नयणी।
जलचर मग्गा गमणी। सा सुंदरि कच्छ पामेसि ? ॥२०८॥

(दूहा)

जाण्यौ ए तो वल्लहो, जिणि-सूं कीधौ बोल।
निरखि मुल कि कहइ माननी, एक ज वयण अमोल ॥२०९॥

नगर मज्झे सालूरं, सगति रूप पाडिया बिंबं।
[... ....] ॥२१०॥

[सावलिंगा वचन]

(दूहा)

"देहरू नगरी-मंही अछइ, जस सालूरह नाम।
सगति-रूप देवी जिहां, तिहां पामिसि ते ठाम" ॥२११॥

सुणि वाणी हरखित थयो, करि संकेत सुकंथ।
वेग देई वेस्या तणो, आयौ निज घरि जत्थ ॥२१२॥

मोरी जिस मेहाँ तणी, ईषई बाट ऊछांह।
राई तिमइ जोवत रहइ, कदि आवइ दिन ताहि॥२१३॥

(चोपई)

दिन जाणी आणी उल्हास । आज हुस्यइ कुमरी मुझ पासि ।
आवइ ठामि इक चूंप घणी । करइ सझाइ अमलां तणी ॥११४॥

(दूहा)

आफू विजयादिक अमल, चूरण करि चखचोल ।
सदयकुमर बैठो जई, देवल अधिकइ लोल ॥२१५॥

(चोपई)

लगन दिवस आइ तस जान । सावलिंगा परणी सुभ वांन ।
सयण भुवण ति नारी नइ नाह । आया अंगि अधिक उछाह ॥२१६॥

चूवा चंदन मृगमद घनसार । सूंघा पहिरया तन सुखकार ।
सखरो सीसा अधिक सुचंग । परिमल कुसुम सुवास पलिंग ॥२१७॥

तिण उपरि बैठो जई आप । मदनराय फेरी सिर छाप ।
जाग्यो मयण दीठी त्रिय नयण । कहइ, "अरहां इम आवो इथ अयण" २१८

(दूहा)

नाहइ तिण नारी-तणइ, कर करीयो उरसार ।
सावलिंगा तिण अवसरइं, संको चित्त मझारि ॥२१९॥

[सावलिंगा स्वगत वचन]

"बालपणइ बोल्यो हुतो, वयण सुदयन्नूं साथ ।
ते जो निर्वहूं नहीं, तो मुझ नइ धिक्कार ! ॥२२०॥

सुंदर निपुण सरूप सुभ, नितु भव नेह निवांच ।
निज वाचा पालइ नहीं, ते मांणस के हइ ध्यान ॥२२१॥

जावो धन अरणी धरम, गुण आदिम अति प्रेम ।
सति या सति जावो सहू, पिण वाच म जाज्यो तेम ॥२२२॥

मुझ वाचा साची करू', संगति सदयकुमार।"
इम चींतवि प्रीतम प्रतइ, वाचइ वचन विचार ॥२२३॥

(चंद्रायणा)

"अंब पका बहु भांति, मरू'गी डालीयाँ ।
मेरे हीयडे हाथ न घालि, कि द्यु'गी ग़ालीयाँ।
गहिला मूढ अबूझ, अयाण कि बावला ।
परिहां, हु' मालणि रखवाल, कि आंबा रावला ! ॥२२४॥

सुणि बोल्यो सारथ सुतन, एहो वयण म आखि ।
अम्ह अमोलिक अंब ए, लीधा जाणइ लाख" ॥२२५॥

(चंद्रायणा)

रहु मूघ ! अयाण, बात न अखीये ।
एणि समइ रस-रीति, कि प्रीति सु रक्खीये ।
बात न अखइ कोइ, किमा खासहू जणा ? ॥
परिहाँ, कुण रावल रखवाल, कि आंबो अम्ह तणा ?" ॥२२६॥

कहइ सावलिंगा कांमिणी, "आई युंही ज इण हीय।
मै आप्यो तिण वचननो, सुणि परमारथ प्रीय ॥२२७॥

(चोपई)

बालापणे हु' रमती बाल । सगति-पूज करती प्रहकाल।
देवी तूठी प्रेम प्रकार। "सु'दर वर पाँमिसि सुविचार ॥२२८॥

सुणि कु'मरी ! तू' रति-अवसरइ। पहिली जात्र अम्हारी करै।
जात्र बिना जो करसि संभोग। पति मरिस्यइ पडिस्यइ घर सोग २२९

आखूं हूं तिणि एहवी बात। सगति-तणी मुझ करिवी जात्त ।
सेवक महइः "वेगा हुवइ। रंगरली रयणी बालिवइ" ॥२३०॥

कुमरी कहइः "हिव डाँस्यो काँम। प्रह जाई करिस्यूं प्रणाँम।
"वां हिवणाँ जावो ' कहइ नाह। सावलिगा मोठि लीधउ राह॥२३१॥

(दूहा)

निज मंदिर सुंदर निपुण, नाह व्याह उच्छाह।
तजि तृण जिम ए सहु सुरत, पाली बोल प्रवाह॥२३२॥

आसा करि यूं ही रहइ, वहसि न पालइ बोल।
पुहवी ते पापी प्रथम, माँणस कवड्डी-मोल॥२३३॥

बोलइ थोडा बोल, बिहचइ निरवाहइ घणा।
ते माँणस रो मोल, लाखेही लाभइ नहीं॥२३४॥

(चोपई)

ऊमगि मगि चालइ मयमत्ति। राति अंधारी प्रतिभय अति।
चोर खापरा नइ कोडोयो। देखि कुमर साहस मनि कीयो॥२३५॥

बोली तिण अवसरि सा बाल। करि करि ऊंचा सगति विसाल।
हाकाँ करि मुखि बोलइ हसइ, धू कल करि कूदइ धसमसइ॥२३६॥

'माँगि, माँग तूठी हूँ माय।' तिण खिण बे प्रणमइ तस पाय।
"जो माँग्या तू आपइ दान। जीमण आपि मलीदो दान॥२३७॥

(दूहा)

नक-मोती दीधो नवो, देवी रूपइ दाखि।
भोजन करिज्यो भगतिसूं, मोल इयै-रो लाख॥२३८॥

अरधो कज्जल सावलो, अरधो कुंकुंम-वन्न।
चोरे ले पाछो दीयो, ए चिर मी नर-तन्न॥२३९॥

हाहा जोज्यो गुण निपुण, चढीयो निगुणाँ हत्थ।
मोती ही घण मोलनो, मिल्यो गुंजाहल सत्थ॥२४०॥

(चोपई)

सोवन-नेउर निज पगतणो । देवी दीय तउ माहि घणो ।
देवहरइ आई तिणवार । दीठो बैठो सुदयकुमार ॥२४१॥

पासि जाई ऊभी खिणभणी । बोलइ नही, थई वेला घणी ।
कुमरी कर लीधो तस हाथ । तो पिण कुंमर न घालइ बाथ ॥२४२॥

(दूहा)

नवि बोलइ चालइ नही, न धरइ तिलभरि नेह ।
'सुणि साहिब ! [कुमरी कहइ], ग्रजी किसूं ग्रदेह ? २४३॥

भीम भुयंग भेदीयो, छलीयो किणहि छलाव ।
घम टेरैं घूमइ घणूं, ज्यूं तरबर बसि बाव ॥२४४॥

अहि खील्यो गारूड अधिक, नवि वाहइ विस झाट ।
हाथ खाचि रहीयो हिवइ, सूदो केही माट ? ॥ २४५॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], हिवइ पूरो हांम ।
हूं आई हेजा लवी, किसी रीस विण कॉम ? ॥२४६॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], समरइ केही रीसी ? ।
चूक पड्यो बगमा चतुर, विलसो सुख सुजगीस ॥२४७॥

तजि निज मदिर नाहलो, मन्वर तुलाई सेज ।
तुझ कारणि आई त्रिया, जोवइ हिवइ सीजे ज ॥२४८॥

तुझ मुझ बेउ मन तणो, अधिको हुंती आस ।
अवसर मू का आजनो, नाह ! काइ हुवइ निरास ? ॥२४९॥

आज लगइ तुझ मुझ अछइ, परघल प्रीति अपार ।
एक रूखो आदर भणी, आज जिस्यो अधिकार" ॥२५०।

मेल किस्यो मूकयो कहयो, भॉमिणि सेती भाउ ।
बोलायो बोलइ नही, झखि झखि सहु जण जाउ ॥२५१॥

(दूहा)

म जाणसि वीसरीयं, तुह मुह-कमलं विदेस गमणंम्मि ।
सूनो भमइ करंको, जत्थ तुमं जीवियं तत्थ ॥२५२॥

जम्मतरे न विहडइ, उत्तम महिलाण जं कियं पिम्मं ।
कालदी कण्ह-विरहे, अज्जाव काल जलं वहइ ॥२५३॥

(दूहा)

नेह सुकुल नारी तणो, नवि विहडइ प्रिय दिट्ठ ।
त्युं सूदा-सावलिगा-तणो, जाँणे रग मजीठ ॥२५४॥

म जाँणे प्रिय मेहणो, दूरि विदेस गयाँह ।
बिमणो वाधइ साजणाँ, ओछो होइ खलांह ॥२५५॥

जोगीसर जोगासणइ, मंत्री जिम आलोच ।
तिण परि सूदा ! ताहरो, आज पडयो सो सोच ॥२५६॥

आज निहोरा अति घणा, नवि लायह सूदो नाम ।
वात न मडइ कावली, करि लिखीयो चित्राँम ! ॥२५७॥

उंचो लेईनइ जोईयो, सूदो सुदय नरेस ।
जिणि उरि दोइ नारिंग फल, सो तूं कत्थ लहेसि ? ॥२५८॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], हवइ एवडो स्यो हठ ? ।
मोडी आई माँनिनी, तिण घरयो मन मठ ! ॥२५९॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], कुमर न जाँणे कत्थ ।
जिणि कारणि मइं लाईया, छाती चंदन हत्थ ॥२६०॥

नीद्रइ कवण न छेतरया ?, जोवन कुण न विगुत्त ? ।
जो प्रिय भीडूं उरहस्यूं, तोही सुवइ नचित ॥२६१॥

जिम सालूराँ सरवराँ, जिम धरती अरू मेह ।
चंपावरणा वल्लहाँ, इम पालीज्जइ नेह" ॥२६२॥

उर भीडइ चुंबन करइ, वलि वलि करइ विषास ।
सूदो अमलि सके लीयो, नारी थई निरास ॥२६३॥

बोलायो बोलइ नही, नयणे नोद निपट्ट ।
जाती ए गाहा लिखी, कुमरि मेल्हि कपट्ट ॥२६४॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], साची प्रति ससार ।
देखइ देव मिलावडो पुहपा-नयर मझारि" ॥ ६५॥

मुख नीसासा मूकती, नयणे नीर प्रवाह ।
गाहा लिखी पाछी वली, मूका मन उच्छाह ॥२६६॥

(चोपई)

आई सावलिगा आवास । फीकि मनि थई अधिक उदास ।
प्रीय कहइ, "करि आया जात्र ? । बिलखा किम दीसो ?
कहो वात' ॥२६७॥

कुमरि कहइ "पाली मइ वाच । तोही सगति न मानी साच ,
मूल नगर तुम्ह पुन्पावतो । देवि कहइ मुझ तिथि तिहाँ हता ॥२६८

देवल नवो करावो तिहा । मूरति करो सरीखी इहाँ ।
तिहाँ मानिसि यात्रा तुम्ह तणी । तब लगि मत भेटे तू धणी ॥२६९

विलखी हू तिणि मुगि वालभ ! दिन ग्हवा जायइ किम ग्रत ? ।
हिवइ हालो नगरी आपणी । यात्र करा जिम देवो तणी' ॥२७०॥

भोजन भाते जीमी जाँन । उपरि दीधा फोफल पान ।
भगति जुगति भल भूषण भेद । ले चाल्यो निज नगर उमेद ॥२७१॥

हिव चाल्यो ते सदयकुमार । अमल ऊतार हूओ तिणवार ।
नीद गई विकमी दुइ नेर । आलस मोडि थयो सावचेत ॥२७२॥

विकस्या कमल सुपरिमल वास । पीली दिसि पूरब सुप्रकास ।
तिणि खिणि मति विकसि पणि तास ।
'हा' मुझ मूक्यो तिणइ निरास ! ॥२७३॥

(दूहा)

पीपल पांन जु रुणण्या, निसि अंधारी लोई ।
रहि रे हीयडा ! मुट्ठि करि, इहां न आवइ कोई ! ॥२७४॥

किहां नाबी ? तूं किथि गयो ?, रहि हीया, म म झूरि ।
पीड न जाणइ तांहरी, सहू निज कारिज सूर ॥२७५॥

करियल करियल उर आफरयो, वलि रस्याथनो त्रेह ।
तिसो नेह नारी-तणो, झटकि दिखाडइ छेह ॥२७६॥

निज प्रिय मारइ हत्थसूं, अनाचार आचार ।
नि-सनेही नारी-समो, सुणीयो नहीं संसार ॥२७७॥

नीची गति मति निरति रति, नीचह-सोती नेह ।
ऊंच तणो आदर नहीं, अचरिज त्रियनो एह ! ॥२७८

(यतः)

सीयां तीयां पांणीयां, इयां त्रिहुं एक सभाव ।
ऊंचा ऊंचा परिहरइ, नीचां उपरि भाव ॥२७९॥

(दूहा)

रवि-चरीयं गह-चरीयं, तारा-चरीयं च राहु-चरीयं च ।
जाणंति बुद्धिमंता, महिला-चरियं न जाणंति २८०॥

जल-मझे मच्छ पयं, आकासे पंखीयां पय-पंती ।
महिलाण पहिथ मग्रं, तिन्नवि लोए न दीसंति ॥२८१॥

(चंद्रायणा)

जांणकि रंग पतंग, को दिन दुइ च्यार हुइ ।
पावस मास सु पूरन, वलहां ठारहइ ।
पूरव प्रेम प्रवाह, कि वहतां ही वहइ ।
परिहां, निश्चल नारी नेह, कदेही नां रहइ ! ॥२८२॥

मुखि कहइ 'तूं मुझ यार', अरु नहु प्यार हइ ।
जांणइ मुगधा लोग, किए सहु सार हइ ।
मन तन अवर, अनेरां सूं करइ ? ।
परिहाँ, नारी तणों सनेह, न को जन मन धरइ ॥२८३॥

मांडइ प्रीति अखंड, कि जांणइ साच हइ ।
आउंगी तुझ पासि विलास, कि मेरी वाच हइ ।
मेल्ही तास निरास, कि और स्यूं भोगवइ ।
परिहाँ, एकणि वार अपार, चरित त्रीय केलवइ ॥२८४॥

एक समि मइं आस, आस की पूरवइ ।
ताकूं दाखि सराप, कि आप सती हुवइ ।
खिणिक दोस, खिणि रोस, खिणिकि इकमां वहइ ।
परिहाँ, काती कुत्ती जेम, फिरत्तो तिम रहइ ॥२८५॥

(दूहा)

जीहा मुखि जाती रहइ, नेह न धारइ चित्त ।
तल काठइ गल लेइ नइ, एहवउ नारी-चित्त ॥२८६॥

अणमिलतां आवी मिलइ, मिलतां धरइ जु मांन ।
ए गति नारी नी अछइ, सुणिज्यो चतुर सुजाण ॥२८७॥

तिय वैसास मत को करो, तियां किसकी-नाँहि ।
मुझ मूक्यो इहाँ विलवतो, रंग रली रस-माँहि ॥२८८॥

धिग तेहनइ धिग मुझनइ, धिग मन जनम धिक्कार ।
वाचा करि आइ नहीं, नीलज नारि निक्कार ॥२८९॥

रोस भरी नइ उठीयो, जंपइ सदयकुमार ।
..................., तिसो त्रियनो पियार ॥२९०॥

आयो तिहाँ ऊठिनइ, सदयकुमर निज गेह ।
पग-डगमग भड धूमतो, नारी-स्यूं निस नेह ॥२९१॥

गलइ हार लागी रह्यो, नयणइ रंग तंबोल ।
कज्जल अहरे देखिनइ, बोलइ निज त्रीय बोल ॥२९२॥

"बिण लग्गइ गलि न्नार, कि कत किहाँ पावया ? ।
नयणे भख्या तबोल, मुखि नहु भाखिया ।
कज्जल काला रेह, कि दीसइ अहर-तले ॥
परिहा, जइ खाई जइ पर मास, कि मू ढ म बाँधी गले ! ॥२९३॥

(दूहा)

सुणि मूदो मनि सकीयो, ईषि सहुव आकार ।
अत-रग आलोचिनइ, बाचइ वचन विचारि ॥२९४॥

'रहु रहु' 'मू च' अयाँणा, कि हामा जि न करो ।
आपणा जाघ उघार, लाजा नाँ मरो ।
बालक पट्टा चीर, कि पत्थर किम ताडीयइ ?
परिहा, गायइ गिल्या रतन्न, उदर क्यु फाडीयइ ? ॥२९५॥

[पुनः स्त्री वाक्य]

"हमस्यू छाँडि कि प्रीति, अनेरा-स्यूं करइ ।
हम हइ तुम्हचे दास, और जि न मनि धरइ ।
उहा हइ नेह अछेह, इहा नहु लेखीयइ ।
परिहा, रोटो मोटी कोर, पराई देखियइ" ॥२९६॥

(दूहा)

सुणि वाणी नारी तणी, बोल्यो सदयकुमार ।
दुख मन ए भूली गये, ठाँमि ठाँमि करतार ॥२९७॥

(चद्रायणा)

सारंग नेत सुचंग, काँम नहु आवीया ।
सोधन गयो निगध, वास नहु पावीया ।

नागरवेलि कीय निफल, सफल कीय आंबिली।
करिहाँ, राँकाँ दीघ रतन्न, विधाता वावली ! ॥२९८॥

(दूहा)

कर भारी पांणी भरी, अम्ह दाँतण नइ सत्थ।
दासी लेइ आंणी दीयइ, कुंअर-ह-केरइ हत्थ ॥२९९॥

कर बे बे भेला कीया, चलू करेवा चाह ।
तेणि समइ नारी तणा, अख्यर दीठ उछाह ॥३००॥

चख लगी तिण चाह-सूं, न लीयइ निमख-मेख ।
"सूरति मूरति आगलि सही, जिम भाविक सुविसेष ॥३०१॥

सावलिगा आई सही, पाली पूरी प्रीति ।
निरभागी जाग्यो नही, तिण ए अख्यर नीति ! ॥३०२॥'

फाटि फाटि रे तूं फाटि तूं, हीया ! हिवइ मर हेसि।
उ देवलउ वा कामिनी, वलि कत्थ लहेसि ? ॥३०३॥

हीयडा ! फटि पसाव करि, केता दुख सहेसि ?।
सावलिगा विरहि सगुण, जीवी काहु करेसि ? ॥३०४॥

(गाहा)

रे हीय वंकि न लज्जसि, नहु जाणी जेण आगया सामा ।
अनह किं न कहिज्जइ, सो भूलो चंप लोवि तुम्ह ॥३०५॥

रे हीया ! वज्जह घडीयं अहवा घडीयं खिबज्जु सारित्थं ।
बल्लह-वियोग काले, कि न हुयं खंड खंडेण ? ॥३०६॥

रे नयणां ! तुम्ह धिग्ग हूम, नवि लखी आई नारि ।
पेम उपायो पहिल थी, किण कारण विण कारि ? ३०७॥

(दूहा)

करवतडा करतार, जो सिर दीजइ ताहरइ।
तो तूं जांणइ सार, वेदन बोछडीयां-तणी ॥३१०॥

हसत वदन हे जालवी, हरखवंत हितकार।
नवरंगी नारी सुणी, किहाँ पाँमिस करतार ॥३११॥

चंदा-वयणी मृग-नयणि, वे पख-वंस-विशुद्ध।
हसि हंसि नेह ज दाखवइ, मेलि विधाता मुद्ध ॥३१२॥

वहु गुणवंती शसि-मुखी, रंगि रमे रस-लुद्ध।
चंपक-वरणी अति चतुर, मेलि विधाता! मुद्ध ॥३१३॥

दीन हुवइ कर देखि, वेदन अंगि न खमाइ।
नीकालइ नीसास-मिसि, पिणि नवि आधी जाइ ॥३१४॥

एक दुखीया वेरागीयां, जो नीसास न हूंति।
हीयडो रत्न-तलाब ज्यूं, फुट्ट वि दहदिसि जंति ॥३१५॥

(चोपई)

नारो मालमु लोक परिवार, हय गय रथ पायक विण पार।
चंदन चीर पटंबर वास, सूंधा वास सुवास विचार ॥३१६॥

माय ताय निज राज भूं काज, बंधव मित्र कुटंबह लाज।
सहू मूकया वीर तेवइ वाग, कंचुक जिणि परि मूकइ नाग ॥३१७

नीकलीयो मूंकी नरदेव, सार्वलिगा-री करिवा सेव।
कर धरि एक करवाल सहाय, प्रिया-नेह बीजो संगि थाइ ॥३१८॥

(गाहा)

किज्जइ प्रकज्ज करणं, छंडीज्जइ वास सहास····।
घरि घरि भीख भमिज्जइ, किं पुण मह्व चुज्जए नेहो ॥३१९॥

(चोपई)

लंघइ वाट घाट वन वाग, लंघइ विण सायर विण थाग ।
निसि चालइ वाटइ वहइ, पलक एक लगि किहीं नवि रहइ ॥३००॥

वाट वहत आव्यउ तिणवार, कामावतीपुर सदयकुमार ।
तिहां छइ जोगी-नो विश्राम, कुमर आय पूछइ निज गाम ॥३२१॥

'जोग' 'जोग' करतो जागीयो, आलस मोडि मुखि वोलीयो ।
सुणि बाला बाला विरहाल, गोरख जागइ दीन दयाल ॥३२२॥

(दूहा)

पंथी चालि, न बिलंब करि, रहसि न राति दीहेण ।
सावलिगा सालइ हीयइ, श्री गोरख जागेण ॥३२३॥

(चौपई)

प्रायस वचन सुणी हरखीयो, कुमर तणो दुख सवि गयो ।
ठांमि ठामि गोरख-नो नांम, जंपइ सदयकुमर पणि तांम ॥३२४॥

मारग श्रम तृस व्यापी घणी, ईंच्छा मनि थई पांणी तणी ।
सर दीठो भरीयो जलसार, नव तरूणी जिहां रहइ पणिहार ।३२५।

जल निरखी हरख्यो निज चित्त, जांण्यो पांणी एह प्रवित्त ।
प्राखर गहलण बीहइ करी, मुख स्यूं नीर पोयइ सुख धरी ॥३२६॥

(दूहा)

गोडा दुइ नीचा करी, धर टेके दुइ हत्थ ।
नीर पीयइ मुख-स्यूं कुमर, जाँणि बयल्लां नत्थ ॥३२७॥

तिणि सरि पाँणी भरण-नूं, वहइ पणिहार अनंत ।
माहो-माँहि निरखी कहइ, ए केहो विरतंत? ॥३२८॥

चंगो माढू हे सखी, पंथी किसी अवत्थ? ।
पसूआं जिम पाँणी पीयइ, नीर न मेलइ हत्थ ॥३२९॥

रातो थों परनारि-स्यूं, चलण कहह्यो थो सत्थ ।
इ वारू नी इण लूहीयो, कज्जल-लग्गो हत्थ ॥३३०॥

चंगो माढू हे सखी, कांइक उलू अंगि ।
कर राखइ कर भींजवइ, पांणी पीयइ कुढंगि ॥३३१॥

पसुआं पांणी नां पीयइ, मृग जिम पीयइ मृगेण ।
कइ कर कुंकुम गह लीया, कइ गाहा लिखी रसेण ॥३३२॥

चंगो माढू हे सखी, सुंदर तन सुकमाल ।
पसुआँ जिम पाँणी पीयइ, पांणी सरवर-पालि ॥३३३॥

रातो थो परनारि-सूं, आवण कह्यो थो रत्त ।
हवा आई उ न जाणीयो, तिण अक्खर लिखीया हत्थ ॥३३४॥

(चोपई)

शीतल छाया तिह सुरसाल, पणहट विट पण,हारी बाल ।
खिण इक लगि तिहाँ, सारी कुमरी व्याकुल थियाँ ॥३३५॥

(दूहा)

"पंथी पालि,नवि लंबि करि,"...................................॥३३६॥

(चौपई)

इम कहिनइ माधु संचरइ, पुहपावती चख दीठी नरइ ।
पुर बाहरि सरवरनी पालि, सूतो देवल पडीय बियाल ॥३३७॥
.... , पंथोडा देवल सरण ॥३३८॥

(दूहा)

"कहा मुझ मंदिर मालीया, हय गयह सम हजार ।
मा हुं ज सूतो एकलो, जोज्यो नेह विचार ॥३३९॥

सूरवीर साहस सकज, जस जस रस जग-मझि ।
नर ते परिण नेहइ निपट, विकल हुवइ विण-वुज्झि ॥३४०॥

गति मति छति सत महत गुण, दीपति सुन्दर देह ।
खिण खिण सगला खूटनइ, नारी—केरो नेह" ॥३४१॥

नीसासा मूकइ सबल, निसा विहावइ निट्ट ।
घर घण देखुं नाह विण, धण विण नाह न दिट्ठ ॥३४२॥

बिरहानल वेध्यो विहल, साल्यो कुंमर साल ।
बिलवइ सूतो मूघ बिण, सदय थया बिहबाल ॥३४३॥

सो कोवि नत्थी सयणो, जस्स कहिज्जंति हियय दुखकांइ ।
मार्वंति जंति कंठ, पुणो वितथेव तत्थेव ॥३४४॥

(दूहा)

केलि वेलि मिलि करण, सगुणी प्रति ससनेह ।
रस-लूघी रमती रमणि, देहि विधाता तेह ॥३४५॥

सिरज्या किमि संसार-मइ, विण त्रिय-रसइ छयल्ल ।
रूप कला गुणनइ मनइ, कां नवि कीया वयल्ल ? ॥३४६॥

केता सूणि विह कूकूआ, सांमी करू पुकार ।
मेलि केलि करती झुझनइ, नवल सुरंगी नारि ॥३४७॥

(चोपई)

इम अनेक तिहाँ करती विलाप, पुण्यवंत लागा किरि पाप ।
कसमस करि ऊगायो भांण, गई राति फूल्यो सुविहाण ॥३४८॥

ऊट्यो सदयकुमार दुख घणउ, उमाहो पणि देखण-तणउ ।
करि दाँतण कुरला ससि सार, तिहाँ थी आयो नगर-मझारि ।३४६।

गाँम नाँम सगलो पूछीयो, कुंभकार घरि डेरो लीयो ।
ततखिण गृह सार्वलिगा तणइ, चुणीयइ अंग रहण आपणइ ।३५०

लागइ तिहां सिलावट घणी, वनि जे अरथी रोजी तणी ।
सार्वलिगा नइ तस भरतार, चोपड खेलइ मेइलइ मझारि ॥३५१॥

फिरयो पुर-मांहि कुमर प्रभाति, देखण तणी न पूजइ घाति ।
कुमरी देखण अलजोयो घणो, कीध्यो वेस मजूरां-तणो ॥३५२॥

तेवे जिहाँ खेलइ नर नारि, लागइ जण जिण महल अपार ।
पूछि मजूरी लागो तेह, खेलत त्रीय दीठी ससनेह ॥३५३॥

(दूहा)

खेलंतां दीठी खरी, सार्वलिगा ससनेह ।
हरखित बोल्यो हेजस्यूं, जाणा विण निज देह ॥३५४॥

"सार्वलिगा !" सूदो कहइ, ओ चंपलो चितारि ।
नयणां तणा पसाव करि, भइ बइदानो गारि ॥३५५॥

महल सहल मइं मुकुले, खेलत पासा रंग्रि ।
सुरित त्रीया सुणि वचन, ते संकी चित-मझारि ॥३५६॥

बांध्यो रखे जणावसी, कोइक एहवी किज्ज ।
पासा मिस बोली प्रिया, राखण लज नइ कज्ज ॥३५७॥

"रे रे पासा गमण करि, बांधी जोडी म मारि ।
पासो तो परवसि पड्यो, सकइ तो सीस ऊगारि" ॥३५८॥

(चोपई)

इम कहिनइ बोलइ 'पो-बारि', प्रियनइकहइ, हिवइ सारी मारि ।
सूदो वयण सुणी तेहनइ, मतउ करइ विच त्रिय नेहनइ ॥३५९॥

महल-थकी वेस निवारि, निज डेरे आयो तिण वार ।
आई वेस कीधा अद्‌भूत, मारि लंगोटो लगाइ भमूति ॥३६०॥

करि कुतका धरि कोतिक काजि, सेख भेख बणीयो महाराज ।
धरि कर-महि खप्पर सुविसेस, धावि तिणइ धरि कहइ 'अलेख' ३६१

कण घातण एक आई दास, धुरि 'माई मूंडी' कहइ तास ।
एक अवरले आई भीख, तिण नूं पणि ते दीधी सीख ॥३६२॥

हाकाँ करि कूदइ हल फलइ, गाल वजावइ नइ ऊछलइ ।
सार्वलिगा-विण धरनउ साथ, कण घइ पणि नवि मंडइ हाथ ।३६३

न ल्यइ दांन किणही हाथ नो, थयो दुमन मन सहु साथनो ।
मुंही जांण न द्यां तेहनइ, 'जिम ल्यइ तिम आपो एहनइ' ॥३६४॥

यतः

अतिथि यस्य भग्नाशो, गृहात्प्रतिनिवर्तते ।
स तैव पातकं दत्वा, पुण्यमादाय गच्छति ॥३६५॥

(दूहा)

ततखिण सावलिगा तुरत, सरस सुरंगी साल ।
लेइ आवी देवा भणी, हाथे थाल विसाल ॥३६६॥

उवां दायक उवो लायक, उपर नीचइ हत्थ ।
कर को नवि पाछो करइ, जाँणकि लोभी सत्थ ॥३६७॥

नारी निरखे ना हले, नारी निरख्यो नाह ।
प्रेमोदधि पेखत तिहाँ, उलट्यो घणू प्रवाह ॥३६८॥

ओर ओर निरखइ नही, न करइ अवर विचार ।
उ उणमइ डवा तेहमइ, थिगत थया सुविकार ॥३६९॥

लख देखइ लख जण हसइ, लख बारइ लख हेलि ।
लुबध थका नवि क्यु लखइ, मिलिया नयण मेलि ॥३७०॥

नाँ ओ ल्यइ नाँ उवाँ दीयइ, इयुंहि कर जोडि ।
ते भख लेवानइ तुरत, कागा पडइ करोडि ॥३७१॥

तव तिहाँ तिण राजा तणी, कुंअरी उपरि गेह ।
काग पडंता देखिनइ, आपइ वचन सु एह ॥३७२॥

"इण नगरी मुरिख वसइ, पंडित वसइ न कोइ ।
कर उपरि कागा भखइ 'को को' 'करइ न कोई' ॥३७३॥

वाँणी सुणी तिणकुं अवरनी, कुंवरइ धरीयो कोप ।
बीजो को बोल्यो नहीं, इणिनइ केही ओप ॥३७४॥

पुहपावती-थी निज पुरइ, जाउं करूं बल जोर ।
मो रूठइ इण कुंवर नइ, लागां पाप अघोर ॥३७५॥

चोल करी निज चख बिन्हे, आयो नगरी बहार ।
चीतवतां ईं चित्त-मइं, आइ मिल्या असवार ॥३७६॥
हीसा नेह हय थट घटे, कटक नहीं को ग्यान ।
सुत वांसइ मूक्यो पिता, स आई मिल्यो परधांन ॥३७७॥

पुन्य प्रकार पोते प्रबल, हूई तस पूगी हाँम ।
भाइ मिलइ चित चाहतां, मनवछित सहु काँम ॥३७८॥

पूछइ निज परधान तूं, लिखियो कुंवर लेख ।
पुरे भोजराजा दिसे, वाँचइ विगति विशेष ॥३७९॥

दूत जिकूं अम्ह दाखवइ, सो जाँणे सहु बाच ।
नही तो ऊडंतो लखे, नगर-मुहे नाराच ॥३८०॥

प्रभु-कागल ले दूत सों, आयो पुरि अधिकार ।
सामि काँमि आखइ करी, आप तणउ आचार ॥३८१॥

"मुझ राजा सुणि राजवी !, इम आखइ अम्ह साथि ।
कुमरो तुझ बाँधी करो, आपे एणइ साथ ॥३८२॥

खुसाँय वे-खुमीये करी, जो न कीयउ ए काज ।
ता तूं जाँणे तो भणी, रूठो सही जमराज!" ॥३८३॥

सुणि राजा अति कोपीयो, सहीयो वयण न तास ।
सीह कदेई नाँ सहइ पाखर अनइ पर-आस ॥३८४॥

यतः

तेमी न खमइ ताजणो,……… ॥३८५॥
जा जा रे चर जाइ तूं, तोस्यूं केही रीस ? ।
आयो जाँणइ सदय नं, पूरण भोज जगीस ॥३८६॥

(चोपई)

भोजराज रण-झूंभण काज, कीधो सगलो ही तव साज ।
गिर समवडि गड हूति, मदोन्मत्त बहु मधुप भ्रमंति ॥३८७॥

काठी प्रति ऊंचा कूदरणा, ते तेजो देखीता भला ।
चचल चपल चलत चतुरंग, चग तुरंग कि गंग तरग ॥३८८॥

पयदल सबल बिमल चत्रवंत, चढीयो नृप दल मेलि अनंत ।
सदयकुमार चढियो इणि वार, सिधूडइ वाजंतइ सार ॥३८९॥

कंचुक कवच कसइ कसमसइ, धरे धीर पणि अंग घसइ ।
साँमल वरण धरण मद धीर, सुभट घटा घन घट गंभीर ॥३९०॥

(दूहा)

अनए रावण सम समुद, मदवारण मातग ।
चढीयो तिरण गज सदय नृप, सिर सिंदूर मुरग ॥३९१॥

बेऊं दल मिल्रिया बहसि, मिलिया बे रणभूमि ।
परसिरि खुरसाणे चढे, हूम्र हथियार सधूम ॥३९२॥

थगति इंद्र सुरगरण सकल, सूरिज थयो सकस्स ।
धर कंपइ गिर थरहरह, इसीयाँ सूराँ रस ॥३९३॥

धर धूजइ दल धूंकनइ, कायर चित कंपाइ ।
सूर पतंगा रंग-स्यूं, भुकि भुकि मांभि भंपाइ ॥३८३॥

धड कूदइ सिर ऊछलइ, गूथी हर वरमाल ।
सगति रगत पाँमी करी, धाइ तिरण धकचाल ॥३९४॥

(चौपई)

असि कृपाँण तोमर अर कूंत, तीर वहइ किरि गगन सकूंत ।
सुभट-सुभट गज-गज अस-आस, वहइ खाल रगता मिष रास ३९५

बहइ वेपू डी दस बार, सदय कटक सकस तिणवार ।
भाजे कटक गयो तब भागि, छूटो भोज सुदय पगि लागि ॥३९६॥

आंण्यो सदय भोजइ निज पुरी, परणाई सा निज कुंअरी ।
कर-मूंकावण करकेकाँण, द्यइ पण कुंअर न करइ प्रमाँण ।३९७

कुंवर कहइ एहने घरवार, जे छइ नर नारी परिवार ।
पील्हो सहु घाणी महिं घाति, मत राखो एहनी तिल जाति ॥३९८॥

सदय कहइ द्यो मुझ ससनेह, बाँधी धनदत्त सेव सगेह ।
वात गेर कीधी तव तास," सेठि बांधि आण्यो नृप पासि ।।३९९।।

सेठ कहइ "ल्यो धन भण्डार, खून बिना ए वडी मारि ।
भोजराज परधानि फिरइ," इसी बात साहिब किम करइ ॥४००॥

आखइ कुमर सुणो नृप बात, सावलिगा नारी विख्यात ।
जो थतेइह तो छूटो एह, आप धन नइ सूं गेह ॥४०१॥

भोजराज धनदत्त-नइं कह्यो, सेठइ पणि ते सहुं सर दह्यो ।
समझाया सुत बंधव याति, सगले ही मांनइ ए वात ।।४०२।।

(श्लोक)

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामार्थे च कुलं त्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे सकलं त्यजेत् ।।४०३।।

(दूहा)

"पायो सुख इणथी नहीं, करे नवि धरीयो तिण नेह ।
व्रतग्राही परि बोलव्या, इणि दिन अपणइ गेह" ।।४०४।।

(चोपई)

इम आलोचि दोधी सा बाल, नर नारी मिलिया सु-रसाल ।
परहत्थ चढी ए कीधी मोल, जोज्यो इहा विधाता-खेल ।।४०५।।

(दूहा)

किण-रो ही किणनइ दीयइ, आंणइ बलि तसु पासि ।
जन कोई न विलखि सकइ, जे विधि तणउ बिलास ।।४०६।।

(गाहा)

राउ करेई रंको, रंको पुण करइ राउ सारिस्सो ।
जंन घरिज्जइ हीयए, विहिणा तं किज्जए सब्ब ।।४०७।।

कह मंती कह राया, कह उज्झायस्स तहय अज्झयणं ।
कह पुष्फावई मिलणं, पिच्छिबह विहिए रि सासंती ।।४०८।।

नियडं करेइ दूरे, दूरत्थं चेव आणए नियडं ।
जह सो वाय नरिंदो, मिलीयो विहि बिलसीया तत्थ ।।४०९।।

जं चंदणम्मि अहिणो, संझा समयम्मि मायरंबत्था ।
मिलियो बहु दिवसाउ, तहैव कुमरो रमारम्भं ।।४१०।।

(दूहा)

"सूदा ! [सावलिगा कहइ"] धन्न सुवासर आज ।
प्रीतम मिलिय घृति हुई, कज्जाँ सहु सरीयां ज ॥४११॥
पूनिम-चँद मयंक जिम, दिसि च्यारे फलीयाँह ।

(चोपई)

ले रमणी उच्छक अति घणइ, चाल्यो कुमर नगर आपणइ ।
चढि साथि सेना अति घणा, सुणि लीयइ ततखिण सांवलो ॥४१२॥

मादल संख दमा मा वीण, मंगल गीत अनइ जुग मीन ।
पुत्र सहित युवती स्त्री गाई, विप्र तिलक मुखि वेद सुहाई ॥४१३॥

हाथी, पूरण घट कन्यका, दधि फल पुष्फ दीप वन्हिका ।
वेस्या सूहव स्त्री सुकमाल, पुलकित नयणी वयण रसाल ॥४१४॥

हरित द्रोब अक्षत ऊजला, सपलाँण तेजी अति भला ।
भद्र पीठ चामर नइ छत्र, गोरोचन घृत मइ सितपत्र ॥४१५॥

इम अनेक तम् नगर मझार, सकुन थया अति घणा सुखकार ।
दखिण-थी वामी दिसि जाई, मंगल तो कारिज सिध थाई ॥४१६॥

(दूहा)

अंगत घूणाह मंडलह, जउ निग्गमण करंति ।
जे घण नाह विवज्जोया, घरि कदही नावंति ॥४१७॥

जउ मंडल दाहिण सरइ, नयर-प्रवेस घरांह ।
तिहां जयमंगल सिर विजय, रिद्धि वृद्धि नरांह ॥४१८॥

ग्रांम प्रवेसि त्रिया-कजि, भय करइ नीसारि ।
दाहिण सुण होए रसो, लीजइ सार विसार ॥४१९॥

वायस जिमणा ऊतरइ, हुवइ सावडू ज स्वांन ।
सावलिगा "[सूदो कहइ], पगि पगि पूरिस प्रधान ॥४२०॥

एको बेठी लूकडी, अर सावडू सियाल ।
सावलिगा [सूदो कहइ], फलइ मनोरथ माल ॥४२१॥

डावो राजा जीमणी जइ भैरव किल लाइ ।
सावलिगा [सूदो कहइ] अफल्या वृक्ष फलाइ ॥४२२॥

वानर नकुल रू चीबरी, वले दाहिणो वास ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], फलइ मनां-री आस ॥४२३॥

सड वह सार सखर तुरी, डावा लाली हुंति ।
सावलिगा [सूदो कहइ], अफल्याँ वृक्ष फलंति ॥४२४॥

स्याल सूण काली चडी, वायस राजा तेम ।
ए सुंदरि वामा सदा, दीयइ अचित्यउ प्रेम ॥४२५॥

(दूहा)

जंबू हास मयूरे, भैरदा हेत बे हेव नोन लेय ।
दसण मेव पसिद्ध, दाहिणे सत्र वास वर्स नीपती ॥४२६॥

खर खमावि सहर जीमणो, डावा लाली हुंति ।
कंत मलेज्यो संबलो, संबल तेह दीयंति ॥४२७॥

कुंभ करे वो चीबरी, हणमंत नइ हिरणांह ।
एता लेई जीमणा, बीजा सहु वामाह ॥४२८॥

डावा उपरि जीमणो, जो वहि भैरव हुंति ।
सार्वलिगा ! [सूदो कहइ , कारिज सवे सरंति ॥४२९॥

जो परभाते स्वेत चिट, वामी दाहिए जाइ ।
सार्वलिगा ! [सूदो कहइ], लाभइ राज-पसाइ ॥४३०॥

डावा भला न जीमणा, लाली जरख सोनार ।
फेकारी बोली छुटी, चिहुं दिसि एक विचार ॥४३१॥

भखप भणंती उदो, जोगणि जीमणी जाई ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], संपति सुख बहु थाई ॥४३२॥

(गाथा)

वामोय खरो, वामोय वायसो, भहय चैव भेलंकी ।
वामा थूग्रड रडियं, पुत्तोहि विण ना पावंति ॥४३३॥

(श्लोक)

करे दंड धरइ सोम्यं समभाव प्रसन्न-दृक् ।
'धर्म लाभं' वदम् सम्यक्, श्रेष्ठः श्वेताम्बरः स्मृतः ॥४३४॥

विप्रः सतिलकः श्रेष्टः, सदंडो मुनिपुंगवः ।
नापितो दर्पण-करो, रजको धौतशिकः शुभः ॥४३५॥

(चौपई)

इम अनेक शुभ शुकने करी, आयउ सुदयकुमर निज पुरी ।
बिलसइ दिन दिन सुख सुबिलास, रलियाला निस दिन रंग रास४३६

(गाथा)

जहर मैं न लगि भमरो, रेवातईय कुंजरो रमए ।
सार्वलिगा मरिंदो, रमइ तह चैव दिए रत्ति ॥४३७॥

मांणस-सरे स हंसो, रमति कमलांणि नीर पूरम्मि ।
अहिणोहि चंदण वणे, ए सितह चेव तस ए राया ॥४३८॥

(दूहा)

रति-स्यूं जिम रतिपति रमइ, इंद्राणी जिम इंद ।
महादेव गोरी परइं, विलसइ सुख आणंद ॥४३६॥

संसारी सुख अनुंदनइ, बिलसइ ते वरो याँम ।
लखइ न ऊगों आथम्यो, करइ कतूहल काम ॥४४०॥

(चोपई)

वरस मास सम दिन सम मास, दिवस मास प्रहर परि उलास ।
प्रहर पलक पल खिण सम जांण, बोलावइ सुख मइं गुणजांण ४४१

दिन दिन प्रीति वधइ अति घणी, ओछी नवि हुवइ मन तणी ।
अधिक अधिक वाधइ जंस प्यार, ए सुणिज्यो उत्तम आचार ॥४४२।

(श्लोक)

सज्जनानां गुणज्ञानां, महतां मानसोद्भवा ।
सर्व्वदा सुखदा प्रीति, वर्ध्दते क्षीयते न च ॥४४३॥

(दूहा)

धण-लच्छी सु-गुणी तरुणि, सयण सरस सुख प्रीति ।
पुन्य बिना नरि पामीयइ, कहइ कवियण ए नीति ॥४४४॥

कबहु रति हासी सुरस, कबहीं करइ गुण ग्यांन ।
कबहू बहु प्रेमि करी, बूझइ मन संधान ॥४४५॥

कबहू बोलइ वक्र विधि, कबहु कोक की बात ।
कबहु पहेली बहु कहइ, विलसइ सुख बहु भांति ॥४४६॥

कवहू हय फेरइ हरखि, कबहूं गज रमणीक ।
सांमी ना बइसी करी, बूझइ प्रेम त्रिभोक ॥४४७॥

(यतः)

पीयरस तीय-रस सप्रसन्न रस, हय-रस हीयइ न जास ।
संकल-बंधा सुणह-ज्यूं, गयो जंमारो तास ॥४४८॥

उवा रजवटि उह रसिकता, दोउं मनज बिलास ।
सावलिगा उर थकी भए, पुत्र च्यारि सुप्रकाश ॥४४६॥

रीति नीति राजा रमइ, पासइ च्यारे पुत्र ।
मानूं हेमाचल मिले, दिग्गज च्यारि पउत्त ॥४५०॥

सदयवच्छ राजा सुपरि, भांमणि-स्यूं बहु भाव ।
प्रतपइ क्यारि पुत्र-स्यूं, दिन दिन दोढइ दाव ॥४५१॥

(चोपई)

श्रीखरतर गच्छ गमान दिणंद, प्रतपइ श्रीजिनहर्ष सुरिंद ।
शिष्य तास बहु विबुध विचार, दीपक दयारत्न दिनकार ॥४५२॥

मुनि कीरति-वरधन शिष्य तासु,बंधव जे राखण रंग राशि ।
गुरू अनुमति निश्र मति उल्हास,एह कीयउ मइं प्रथम अभ्यास ४५३

पामइ नर पदमिणि सुविलास, पदमणि पामइ नर सुख बास ।
भणता लाभइ बंछित भोग, सुणतां प्रीतम-तणउ संयोग ॥४५४॥

वालम प्रेम तणी विरहणी, जेहना बलि परदेसइ धणी ।
रति-वंच्छक जा निसुणइ सदा, पांमइ पदि पदि सुख संपदा ॥४५५"

(दूहा)

१ ७ ६ १

संवत निधि मुनि रस ससी (१६७६), विजयदसम ससिबार।
चर चाहि चोपई रची, मुनि केसव सुविचार ॥४५६॥
वेधक जो वाचइ सुणइ हुई तस वंछित ह्रांम।
ज्यूं सावलिगा सुख लह्यो, सदय मिल्यो सुभ थांम ॥४५७॥
तव मइ यह रचना रची, कविजन परम कृपाल।
सुणि कि सीखहु रसिक जन, कीज्यो दया दयाल ॥४५८॥

इति श्री सदयवत्ससावलिगा चउपई सम्पूर्णं।

सदयवत्स वीर प्रबन्ध

टिप्पणी

मंगलाचरण में क्रमानुसार ओंकार, ब्रह्माणी, सरस्वती, गौरीनंदन गणेश और, 'पूर्व सूरि' कहने योग्य कवियोंको प्रबंधकारने वंदन किया है।

कड़ी १ - **महामाई**-महामातृका।

६ **खित्तीय**-क्षत्रिय। **पहु**-प्रभु।

७ **पत्थतई**-प्रार्थयताम्। प्रार्थना करने वालों का अभिलाष (अर्थ) पूर्ण करता हैं।

८ **चउवेंई**-चतुर्वेदी-चौवे।

९ **निदण**-निर्धन। **कणवितिया जीवी**-कण वृतिआजीवी। देखिये कड़ी २४, कुलवित्ति।
घरणि-गृहिणी। **नराहिव** -नराधिप।
पच्चूसे-प्रत्यूषे। प्रभात में।

१० **पयासियं**-प्रकाशितं।

११ **सुविज्जउ**-सुविद्यः।

१२ **पुच्छइ**-पृच्छति। **जंपइ**-कथयति। कथ् धातुका प्राकृत आदेश।
दिट्ठि-दृष्टि।

१६ **बरलिउ**-उक्तवान्। तुम जो बके हो।

२० **त्रिह-पाहिइ**-तीन पेर वालेसे (अधिक)।

२२ **सरिस** सदृश। देखिये 'सुपुरिस-सरिसी' कड़ी १३।

२३ **भुंहिरइ** (सं.) भूमिगृहम्-भूमिहरं (गु.) भोंयरूं।

२४ **अलीअ** (सं. अलीक)-मिथ्या। (गु.) अेले, आलि,-आलें।
देखिये 'आलि,' कड़ी ९८।

२५ **तिलय नइ ठामि**-तिलकनइ ठामि-ललाटे।

२७ **मुणइ**-संज्ञा धातुका आदेश। **गज-पाखलि**-गजके पक्षमें आसपास

२९ **सलसलो सकइ**-हाली चाली सकइ।

लिखिचित्रामि-(सं.) चित्र+कर्म (प्रा.) चित-अम्म, चित्राम ।

३१ **धाइ**–'धाइ' वांचिये । (सं धावति) **किरि**-उत्प्रेक्षाके सूचक पद ।

३२ **संकल**- (सं.) शृङ्खला । **धार**-अणी ।

३३ **पगर**-(सं.) प्रकर–समूह ।

३४ **रेवणी**-(सं.) रेव् धातुसे ।
लाख इनाखइ । 'न' का 'ल' ।

३५ **दोसी**-(प्रा. दोसिस,सं. दूष्य-वस्त्र,दूष्येन व्यवहारित स. दौष्यिकः) कप्पड के व्यापारी ।
परिखि-परीक्षक.। सुन्ना चांदी के ।
फडीआ-(फा.) अन्न विक्रेता । **फोफलीआ**–(सं.) पूग फल (प्रा.) पोफल (जू.-गू.) फोफल, उनके व्यापारी । **सार**- (स.) सहकार, (प्रा.) सहआर, सार, साहाय्य, रक्षा ।

३६ **हालकलोल**-(प्रा. हल्लकल्लोल)
पोतां–(स. पोतानि) वस्त्र । **किरियाणां**-(स.क्रयाणकानि)

३७ **पाधरि**-(स.) प्राध्वरे । सरल मर्गा में । **लूसइ**-लूटे ।
सीकिइं-थ्यां-(सं.) शिकदें ।

३८ **गयद**-(स.) गजेन्द्र । **सुर-हट**–सुरा के हाट ।

३९ **पचायण**-(स) पंचानन, सिंह । **पाखरिउ**-स्वारी किया हुआ ।

४० **सुंडाहल**-(स.) शुंडाफल, दन्तूशल ।

४२ **पसाउ**-(सं.) प्रसाद, भेट-रूप पदार्थ ।

४४ **नवबारहिं**-(सं.) द्वार । देखिये, गीता । 'नवद्वारे पुरे गेहे' ।
आधरणि–(सं.) अग्रगर्भिणी,पहली बार गर्भ धारण करनेवाली कुलस्त्री ।
धवल–धूणि–धवल, मंगल गीत के ध्वनि (धूणि) ।
वेअ-वेद ।

४६ **सइंहथिइं**-(स.) सीमन्त केशों का ग्रथन । देखिये कड़ी ८४ ।

पस पूरइ-(सं.) प्रसृति। मंगल श्रीफल और अन्य द्रव्यों से हस्ततल का पूरना।

४७ **घाट**-रेशम का वस्त्र।

४८ **असुण**-(सं.) शकुन, (प्रा. सउण) अपशकुन। देखिये कड़ी ८१।

५० **गजर**-(स.) गर्जना। **सगूं सणीजूं**-सं. स्वकम्, सगूं। सं. स्नेह जं-सनेह,सणेहजं। देखिये कड़ी ९०।

५१ **राउत**-सं. राजपुत्र, प्रा. रा+उत्त।
वसह विशुद्ध- (सं. वंशस्य) विशुद्ध वंश के।

५३ **आहवि अहग**-युद्ध अभंग।

५४ **जूवटइ**-(सं. द्यूत+वर्त्म, प्रा. जूयवट्ट) द्यूत मार्ग, द्यूतस्थान।
पहुवच्छ-जाइ-प्रभुवत्स जातः, प्रभुवत्स का जाया, सदयवत्स।
दूहवइ-(स.) दुःखयति। **डारिउ**-डर बताया।

५५ **बाहर**-साहाय्य।

५७ **जम-मुहि**-यममुखे।

५९ **असिमर**-'असिवर' चाहिये। असिओंमें श्रेष्ठ। देखो कड़ी १४६

६० **करिमालि**-(सं.) कारवालेन।

६२ **मेगल**-(सं.) मदकल, मदसे कल मनोहर हस्ति। और 'मदगल,' जिसके गंडस्थल से मद गलता है।
पवरिस पार-(सं) प्रवर्षका पार।

६४ **पुहवि**-(सं.) पृथिवी, प्रा, पुहवी, पृथ्वी।

६५ **समोपो**-(सं. समर्प) सोंप दी। **जुहार**-(सं. जयकार) प्रणाम।
बिमणउ-(सं.) द्विगुण, (प्रा.) विउणउ, दुपट्ट।

६८ **लज्जरयउ**-पढिये। लज्जित हुआ। देखिये कडी ६९।
तीसरी पंक्ति-सुधार के पढ़िये। गजगंजण। लज्ज जइ (लज्जि किमइ।'
चतुर्थ पंक्ति-सुधारके पढ़िये। 'किम कि जय-सह सुसुमर तिमइ

७० **राणिमनइ**-'राणिम नइ' पढ़िये,राजत्व, राणाका पद 'राणिम'।

७१ **पवाडउ**-(सं.) प्रवाद प्रशस्ति ।

७१ **पसाइ**-प्रसादेन । कृपा से । **पहीस**-(सं.) पृथ्वीश ।

७३ **चाचरि**-(स.) चत्वर, अगन मे । लुहड (लहुड) पणा (सं.) लघुकत्वेन, छोटेपण । **अंगी-करू** अंगीकरू । देखिए कडी ८७ ।

७९ **गूडीय वन्नर वालि**-(सं. वन्दनमाला) देखिये । नंददासकृत मानमंजरी । "क्षुद्रावलि जनु मदनगृह,बाधा वंदनमाल" । छोटी धजा और तोरण ।

अगालि (स:) अकाले ।

८० **वद्धावी** (स.)वर्धापन, (प्रा) वद्धावणी बधावा निमित्त ।

पडसद्द-(सं) प्रतिशब्द, पडधा ।

८१ **कइवार**-सत्कार ।

८३ **कणय**-(सं.) कनक, सुवर्ण । **कच्छाहि केकाण**-कच्छ देश के प्रसिद्ध अश्व ।

८४ **मुत्ताहल**-(सं) मुक्ताफल, मोती ।

८६ **मुहुत्ता**-(स.) महामात्र, अथवा महत्तर से संबधित मुख्यमंत्रीं । महूतक, महेत्ता, मुथा आदि अपभ्रंश रूप प्राप्त हैं।

भूप जमलउ (सं.) यमल, बराबरीके, एक जोड़ीके, ऐक सरीखे ।

९१ **रूसइ**-(सं.) रुष धातु रोष करे ।

९२ **मतिपयइपणु** -(स.) मंत्री पद । इधर षष्ठीके द्विर्भाव प्रयुक्त हैं । 'इ' (स्य) और 'पणू' (सं त्वन, पण) ।

९३ **पाली**-एक नाप जिसमे सात सेर कच्चा रहता है ।

अरक-(स.) अर्क-सूर्य ।

९५ **कालमुहुअ**-(स. कालमुख:)श्याम वर्ण: ।

९६ **ताग**- क्षत ।

१०० **अहिठाणि**-'आ' प्रतिका पाठ 'अप्पाणि' विशेष युक्त है । सं. अधिष्ठान । **उलग**-सेवा ।

१०३ **सुरक**-सु रक सु-क्षत पढ़िये । सुतरां रंक: अत्यंत रंक, ऐसा अर्थ

भी हो सकता है।

चिंतारयण-चिंतारत्न, चिंतामणि। जो चिंतवन करे सो प्राप्त कराने वाला अमूल मणि। **कित्तउ**-(स. कियत्), कितना भी। **बीय मयक**(सं.) द्वितीया (बीज बीय) का मयंक (सं. मृगांक), चन्द्र। शुक्ल द्वितीया की चंद्रलेखा घडी भर के लिए दृश्यमान होती है।

१०६ **धमी धमाविउ**-धमीधमाविउ (एक शब्द), धमधमाया।
सदस्यवत्स-'सदयवत्स' पढ़िये।

१०७ **ऊलग**- सेवा।
जुहार जयकार, जयहार, जउहार, जुहार, प्रणाम।

१०८ **रउद्द**- रौद्र, रुद्र स्वरूप, भयंकर।
हासमिसिइ-(स. हास्यमिषेण) हास्य का निमित्त बताकर।

१०९ **नीच**-नीचु। दृष्टांत अलंकार। **निठाडइ**-निढाडइ। तिरस्कार करके निकाल देना।

११० **जीहां**-(सं. जिह्वा) 'जीहा' पढ़िये।

१११ **भमहि**-भ्रू, भृकुटि।
अचरिज-(स. आश्चर्य, प्रा. अच्छरियं)।

११३ **ऊहटइ**-(स) अवघटयति।

११४ **ताजणउ**-(सं. तर्जनकम्) चाबूक।

११७ **राउल**-(स. राजकुल) राजका निवास-स्थान।
रान-(सं.) अरण्य; (प्रा. रण्ण, जू. गु. रान) जंगल।

११८ दूसरी पंक्ति सुभाषित के रूप में प्रसिद्ध है।
संबल-(सं. शम्बल) भाथुं; (सं. भक्तोदेनम्)। भत्था।

११९ **प्रणीमूं**-प्रणामूं पढ़िये।

१२२ **मइमारिउ**- मइं मारिउ। पढ़िये।
घरइ-घरइ पढ़िये। **सयल**-सकल।

१२३ **आयस**-(सं. आदेश) आज्ञा।

१२४ **बंधेवा**- (सं. बद्धम् प्राकृतमें तुम्का एवं एव्वा) हवर्थ कृदंत। बन्धन करने के लिये। देखिये कड़ी १३४, 'आपेवा भणी', और कड़ी २६४।

केत्थउ-(सं. कुत्र, प्रा. कत्थ) किहां।

१३६ (राज अन्याय) **जिसां सहइ**-जि, सासहइ, जे को सहन करे। देखिये कड़ी १३८, 'किम सांसहइ'।

१२८ **पयड**-(सं. प्रकट) स्पष्ट रूप मे।

१३० **राजा-पाहिइं**-(सं. पार्श्व; प्रा. पास पाह-पाहिं, पइं, पें) एवं अनेक रूप मे प्रयोग मिलते है।

१३६ **महि हत्थिइ**-'सहि हत्थिइ' पढ़िये। (सं स्वहस्तेन) अपने हाथमें

१३९ **मइलउ**-(सं. मलीन) अपवित्र, दोषयुक्त।

१४० **सव्व**-'सप्प' पढिये (सं. सर्प)।

१४१ पहिली पंक्ति सुधारके पढ़िये। 'नह मास मेय जणणो, दो मुहलो हड्डि खंडण समत्था।'

१४३ **मंड**-ग्येहु की मिष्ट रोटी। गुजराती में मुहवरा है 'मनने गम्या ते **मांडा**, ने लोक कहे ते गांडा।'

१४३ **सउणभणी**-(सं. शकुन प्रा. सउण) शुभ शकुन माननेके लिए देखिये कडी २४६।

१४४ **सद्द**-(सं. शब्द) आवाज। **धवलहर**-धवलगृह।

अंतरि-(सं. अंतःपुर, प्रा. अन्तेउर) अन्तेउरि पढिये। स्त्रियों का निवास स्थान।

१४६ **असिमर**-'असिवर' पढ़िये। श्रेष्ठ तलवार।

१४९ **सूर**-'सुर' पढ़िये।

१५३ **माइ**-माई। **पीहर**-(सं. पितृ गृह, प्रा. पीइहर) पीहर।

१५४ **पूठ्ठि**-'पुट्टि' पढ़िये।

१५९ **जंघजुअल**-जंघ जुअल (सं. जंघा युगल)।

१६० **निलवट**-(सं. ललाट पट्ट) ललाट में।

ताडीक–'ताडंक' पढ़िये।

१६१ **मयरकेत**-(सं. मकरकेतु) कामदेव ।

१६२ **खड**-'खंड' पढ़िये ।

१६६ **'उदउ' भणइ**- उदय हुआ ऐसी आशीष भणती जोगिणी दाहिनी जाती हैं ।

१६९ **डाउ**-'डाबउ' (बाम बाजु) पढ़िये ।

१७५ **देवा**-देवी ।

१७६ **सबिहूंगमइ**-सविहू गमइ ।

१७६ **सुर**-(सं. सूर्य) 'सूर' पढ़िये ।

१८८ **पलीथ**-'पलीय' पढिये।

१८९ **बिलकिलिउ**-व्याकुलीउ व्याकुल हुआ ।

१९१ **नस मास** 'नस माँस' पढिये ।

१९४ **अहिठाण**-अधिष्ठान । **पहिठाण**-प्रतिष्ठानपुर ।

१९५ **पबरिस**-पौरुष ।

१९७ **कउडी**-(सं. कर्पादिका प्रा.) कवड्डिया कउडा । **कौंडी** । द्यूत खेलन में इसका उपयोग होता है ।

१९८ **भव भगति**-सारा आयुष्य भरकी की हुई भक्ति । **हेलां**-रमत मात्र मे ।

२०१ **पचार** उपचार अर्थ में समझना चाहिए ।

२०३ **उलगि**-'उलगि सु' पढ़िये । उजगि स्यूं सेवा करूंगी ।

२०५ **ऊखाणउ** (सं. आभाणकम, प्रा. आहाणउ) उपाख्यान, लोकोक्ति । देखिये कड़ी ३४६ ।

२०६ **रण्ण**-(सं. अरण्य) । देखिये 'रान' कड़ी ११७ ।

२०९ **सुरहा**-सुरहि (सं. सुरभि) सुगंधा ।

२१२ **वुलंब**-'फुलंब' पढ़िये । **नायवेलि**-नागवेलि ।

२१४ **अंकडीयाकुलीय पयडोय पलास**-समान भाव के लिय देखो 'बसन्त विलास', लिपिसंवत १५१२ का दूहा ।

'केसू-कली अति वांकुड़ी, आंकुड़ी मयण ची जाणि ।
विरही नां इणि कालि, कालिज काढ़इ ताणि ।।'

लिवास निवास पढ़िये ।

२१६ **कक्क** 'बक्क' पाठ होना चाहिये ।

२१९ **धजवड** (सं. ध्वजपट) । **पडिग्रार**–(सं. प्रतिहार) मन्दिर के प्रतिहार के रूप में स्थित ।

२२३ **सूंदा पाहि**-'सूदा पाहि' पढिये ।

१३२ **ग्रालवइ**-(सं. आलपति) आलाप करती है।

२३३ **पांगति** (सं. पंक्ति) ।

२३६ **सांइ**-(सं. स्वामी) स्वाँमीने सार्वलिंगीकी सावि लीलावतीको ली

२४२ **जुहार**-(सं. जयकार) जय बोलने के बाद प्रणाम ।

२४३ **पुहर पंथ**-एक प्रहरमें पहुच सके इतना दूर । अति दूर नहिं ।

२४४ **धूग्रा**-(सं. दुहिता का ये प्राकृत रूप है) पुत्री ।
वछूं-'वंछूं' पढिये ।

२४६ **ग्रवद्धडी**- (सं. अवधि) ।

२४९ **माउलउ**-(सं. मातृकुल प्रसिद्धः) ।

२५४ **परतु**-(सं. प्रतीत) सच्चाई का अनुभव ।

२५९ **गुज्झ**-(सं. गुह्य) छुपाने लायक कोई वात ।

२६० **सउकि**-(सं. सपत्नी) ।

२६६ **लीलीं-गई**-'लीलागई' पढ़िये ।

२७३ **सपराणी**-(सं. सप्राणा) चेतनवती, उत्तम श्रेष्ठ ।

२७८ **जमहर**-(सं. यमगृह, प्रा. जमहर) राजपूत इतिहास में शत्रु का विजय देख के राजकुल की महिलायें 'जमोर' करतीं थीं। ये अग्निकुंड में भस्मीभूत होती थीं । यमगृह प्रवेश अथवा आत्मघात का अर्थ में प्रयुक्त है।

२८६ **सीदाता**-(सं. सीद् धातु) दुखित होना, दुख पाते हुए ।

२८७ **गांगेय**-भीष्म । **माणि** अभिमान रखने में । कविका महाभारत

के पात्रों का अच्छा परिचय इस प्रशस्ति से प्रतीत होता है।

२९१ **बड वाहुमि**-बड़े (संदेश) वाहक ने वर्द्धापनिका दी।
बद्धामणी (सं. वर्धापनिका) अभिनन्दन।

२९३ **सौमिइ**-'सोमिइ' (सीमाडें में) पाठ ठीक रहेगा।

२९९ **पाधरउ**-(सं. प्राध्वरक.) रास्ते में पाउं से चलने वाला मामूली आदमी।

३०० **बारहट्ट**-(सं. द्वारभट्ट, प्रा. में बारहट्ट) जो लोकभाषा में 'बारोट' नामसे प्रसिद्ध है।

३०१ **मेलउ**- 'मेलउ' पढ़िये। मिलाप कराया। **हर हेत** हर (ईश) के कारण से।

३०६ **पंगुरण**-(स. प्रावरण) उत्तरीय वस्त्र।

३०८ **मउडबद्धय**- (सं. मुकुटबद्धक., प्रा. मउड गू मांड)। मुकुट को धारण करने वाले। 'मुड्धा' शब्द इससे आया हुआ मालूम होता है।

३०९ **सेणाहिव**-(सं. सेनाधिप)।

३१० **वेयझूणि**-(सं. ध्वनि; प्रा. झूणि) वेद का घोष।

३१२ उपान्त्य पंक्ति को सुधार के पढ़िये -'आगइ कामुकीय कामिनी, अनइ वसंतनिसि-ऊजली।'

३१४ **रलीयाइति**-('रली' आनन्द के अर्थ में) आनन्दित।

३१८ **खेवि**-(सं. क्षेप) वेग में जो चडते है। **सालिहुंत**-(सं. शालिहोत्र) अश्वशास्त्री। लक्षणा से सर्व शुभ लक्षणोपेत अश्व का बोध होता है।

३१९ **पात्र**-नर्तकी। इस शब्द अपभ्रंश के रूपमें पातर अर्थात् सामान्य गणिका का अर्थ में होजाता है। नृत्य शास्त्र का संपूर्ण अभ्यास के बाद नर्तकी को 'पात्र' पद प्राप्त होता है। देखिये 'समस्ताभ्यास-संयुक्ता, नर्तकी पात्र मुच्यते'। सुधाकलशविरचित 'संगीत सारोद्धार' में।

३२५ **अहिणवउ** (स. अभिनव) नवीन।
शेवि भरन्ती-कुमार के दोनों हाथों मे सम्बन्धी जन मांगलिक पदार्थ भरते है '

३३३ **पहु-जाउ**-(प्रभुवत्स-जात·) प्रभुवत्स का पुत्र।

३३६ **कईवार** - (सं.) कवित्व उच्चार।

३४० **बोलाविउ बहनेवो**-(सं. भगिनीपति, प्रा. बहिणी + वइ) बहनोइ।

३४० **छःदरशन**-जीव जगत और ईश्वर सम्बन्धी चिंतनका छ. प्रमुख मार्ग को 'दर्शन' कहते है।
सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय पूर्वमीमासा अथवा धर्ममीमांसा, और उत्तरमीमासा अथवा ब्रह्ममीमांसा याने वेदान्त। दूसरी-गिनती में बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन को भी शामिल किया है और लोग चार्वाकमत को भी शामिल करते है।

३५४ **देसाउर**-(सं. अपर देश.) परदेश।

३५९ **सुपुरुष और नृसिह**·(नरसिंह) नामसे सयर (स्वेरे) स्वतंत्र है।

३६३ **धसाद्दस**-धसाधस पढ़िये।

३६५ **साविज**-(सं. श्वापद, हिंसक पशुः पक्षी के अर्थ में)। इसका प्रयोग देशी भाषाओ में उपलब्ध होता है। सं. स + वाज (पाख ?) से व्युत्पन्न होना सम्भव है। देखिये, भालणकृत 'कादम्बरी', पूर्व भाग 'शुक सारिका साविज माँहि, बोलि पटु प्रकाश।'

३७३ **पडमाँहि**-(सं. द्यूतपट) चौपट की वाजी।

३८७ **धावलहर**-'धवलहर' पढिये। (सं: धवलगृह; प्रा. धवल हर) सुधाधवलित गृह।

३९१ **लच्छि**-(सं. लक्ष्मी); देखिये *गुजराती गौरीगत* में *लक्ष्मीवंत* के पुत्र का उल्लेख 'ओ लाछाकुंवर'। देखिये कड़ी ४०२।

३९७ **आवर्जन**-अनुकूल करने के लिए उपचार।

४०२ **दोसी**-(सं. दौश्यिकः) कापड के व्यापारी।

४०३ **माम**-ममत्व (प्रतिष्ठा) का अभिमान।

४०४ **नातरू**-(सं. नात्रकम् ? ज्ञांनेयं ?) स्नेह-सम्बन्ध ।

४१२ **दव**-'देव' पढिये।

४१३ **कलास**-'कैलास' पढ़िये।

४१८ **ढोणां ढोईइ** (सं. ढोकनानि) 'भेटणाँ'-उपहार अर्पण कीजिये

४२० **मुडधा**-(सं. मुकुटधारी; प्रा. मउडधा मुडुधा) देखिये 'कान्हडदे प्रबध' में खंड २ कडी ६९।

४२६ **मुन पकखेसि**-'मु न पकखेसि' पडियें। मुझे नहि देखेगा।

४३२ **सपराणी**-(सं. प्राण) प्राणवान अत्यंतका अर्थ में 'सविहु सपराणी' वाक्य खड में 'श्रेष्ठ' ऐसा अर्थ ध्वंजित होता है।

४३६ **पढम**-(सं. प्रथमम्, अपभ्रंश, पडम) पहिला।
सरडु-(सं. सरटः) काकीडा।

४३७ **असुउणि**-(सं.अशकुन,अपशकुन) अपशकुनकी वेला मे।

४३३ **ऊहडोनइ**-(सं. उद्वृत्य)।

४४६ **रढिल**-अति आग्रही। **डोहू**-दोहन।

४४७-४८ **छोह**-क्षोभ। **वाउ**-वात।

४५२ **आरीसउ**-(सं. आदर्श; प्रा. आयरिसउ) दर्पण।
एकदन्ती-एक दन्त अवशिष्ट रहा है ऐसी परमवृद्धा गणिकाकी माता।

४६० **संपरदाउ**-संप्रदाय।
मत्तवारणउ-झरूखा में। **मूंधा**-मुग्धा। **दीति**-देदिप्यमान।

४६१ **सधुडिउगीत**-ध्रुवा सहित गीतम्।

४६५ **पात्र**-देखिये कड़ी ३१९।

४६६ गुर्जर वैद्य का उल्लेख कवि-परिचयका सूचक हो सकता है।

४७४ **हलूई**-(सं. लघुक; प्रा. लहुआ) हलकी, मानभंग।
देखिये 'सुदामासार' काव्य में। "याचंता जे निर्मुख जाइ,

तृण-पइं ते हलूउ थाइ।'

४७९ समान विचार का अनुसंधान के लिए देखिये 'माधवानल कामकंदला प्रबंध।' अंग ६, दूहा ५४-१०४।

४८१ सुरहां-(सं. सुरभिकानि, प्रा. सुरहिआ) सुगंधी सुवासयुक्त।

४८६ अनोथ-(सं. अन्यत्र, प्रा. अन्नत्थ)।

४९१ वेश्या-निंदा के लिए देखिए 'माधवानल कामकन्दला प्रबंध' अङ्ग ७, दूहा २४३-२४६।

४९५ लांच-(सं. लचा) अनधिकृत द्रव्य की लालच।

५०० आपणपूं-(सं. आत्मीय, आत्मान अपना।

५०१ आवरजइ देखिए-कडी ३९७। अनुकूल बनाती है।
जूजई-(प्रा. जुय जुय) भिन्न, पृथक।

५०२ आयस-(स. आदेश) आज्ञा।

५०३ असूर-(सं. उत्सूर्यम्) सूर्य को अस्तमान होने के बाद। विलब न करो।

५०७ सपराणा-देखिए कड़ी ४३२।

५१४ आथि-(सं अर्थ) अर्थ से, द्रव्य से हार कर ऊठ गया।

५१९ आफणी-(प्रा. अप्पणीयम्) स्वयं, खुद ही।

५२४ अलविइ-(स अल्पेन आयासेन) सहज।

५२९ अहिनाण-(सं. अभिज्ञान, प्रा. अहिनाण) निशानी, एधाणी परिचय।
खात्र-(सं. खन् धातुसे शब्द बनता है)।
दिवार मे खुदने से प्रवेश होकर चौर्य कार्य होता है।

५३५ संभेरइ-(सं. संहरण) माल का संकलन करता है।

५३६ हडताल-(सं. हट्ट+ताल) हाट पर ताला लगाकर बन्द कर देना।

५४० नन्दलोकनइ-वणिकों को 'नंद' शर्म दिया जाता हैं। इससे नंद शब्द से वैश्य का बोध होता हैं। गुजराती में मुहावरा है

"नन्दना फंद गोविंद आणें।"

५४३ **लांभा**-कनिष्ठ।

५४७ **पूछम**- ?। **विनडी**-विडम्बित की। **सात**-सुख।

५५० **कमिणी** 'कामिणी' पढ़िये। अर्थ स्पष्ट नहीं है।

५५४ **सातो**-साचो। सच्चा, पक्का, चोर।

५५६ **केत**-(सं. केतु) केतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है।

५६३ **तलार** (सं. तलारक्ष) नगर-तलकी रक्षा करने वाला। भाषा में 'तलाटी' शब्द से बोला जाता है।

ग्रोलगु-सेवक

५६८ **मोकलि जे**-'मोकलिजे' पढ़िये।

५६९ **फेडेसिइ**-त्याग करायेगा।

५७९ अर्थांतर न्यास। सुभाषित रूप मे।

५८१-५८३-वणिक-श्लाघा।

ऊडइ-(स. उद्वहति)।

५८५ **कवल**-कलह।

५८७ **परीछयउ** (सं. पृष्ठम्) पूछताछ की।

५९४-९५ **परतनउ**-परकीय परका। पींहर का वास पर घर का वास कैसे कहा जा सकता है?।

५९९ **तरणि**-सूर्य। **त्रिकम**-(सं. त्रिक्रम) तीन डग मे स्वर्ग मृत्यु पाताल में व्याप्त होनेवाला विष्णु।

६०१ **वाहण**-वहाण यान-पात्र। **नीजामा**-(सं. नियामक,प्रा. निज्जामय) कर्णधार, केवटिया।

६०६ **उवांपला**-व्याकुलता।

६०७ **प्रणोसरा**-(सं. अनाश्रया) आश्रय रहित की।

६१० **थापणि**-न्यास। **मोस**-मृषा, मिथ्या।

६१३ **मांटी**-पुरुष, शूर पराक्रमशील मनुष्य।

उसरावण कीधउ (सं. उत्सर्जन) मुक्त किया।

६१४ **पण-महत्त**-पण, प्रतिज्ञा का महत्त्व।

६१६ **कसो**-(सं. कष् धातु) कस, कसौटी करके।

६१८ तलवार की उपर नाम-मुद्रा अंकित करने की रूढ़ि प्रतीत होती है।

६१९-**आपोपइ** -स्वयमेव।

६२१ अर्थांतर न्यास। सुभाषित।

६२३ **सुंडाहलि**-(सं. शुंडाफलक)।

६२६ **सइंहथि**-(स्वयं हस्तेन) खुद अपने हाथ से।

६२८ सौजन्य-सूचक सुभाषित।

६३२ **भडिवाउ**-(स. भटवाद) अपने को शूर मानने का अभिमान।

६३४ **सेलहत**-(स. शैल्ल हस्ते यस्य,प्रा. सलहत्थ) गुजरातके खेडावाल ब्राह्मणों मे 'शेलत' की अवटंक प्रसिद्ध है।

६३५ **कीधारेवणी**-(सं. रेव् धातु) पलायन कर दिया।

६४० **सांघ**-'संधि' पढिये।

६५४ **उलवण**-(सं. उल्लपन) आलाप संलाप।

६५७ **आणुं**-(सं. आनयनम्)।

परिग्रह-(सं. परिग्रह, प्रा. परिग्गह) परिवार।

६८३ **उदाहरण**-दृष्टांत। पुरावा। गवाहि।

६८५ **सोघइ**-'सोचइ' पढिये।

आदीसर-(आदीश्वर) जैनों के प्रथम तीर्थङ्कर, आदिनाथ ऋषभदेव।

७०४ **पुरिसत्तण**-(सं. पुरुषत्व) पौरुष, पराक्रम।

७०६ **ग्रास**-भूमि का जो खंड दान मे दिया जाता है। 'ग्रास' पाने वाला 'ग्रासिया' कहलाता है।

७१० **साथ समाहरण**-साधन सामग्री।

७११ **बन्न अठार**-चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, और शूद्र 'नव नारु', और 'पंच कारु' क़ारीगर वर्ग, समेत अठ्ठारह वर्ण कहलाती है।

७२० **बजा वार तउ भाजन करह**-इस प्रकार का प्रतिज्ञा ग्रहण 'कान्हडदे प्रबन्ध' में पाया जाता है। देखिये खड १, कड़ी १८०

७२३ **पीयाणे**-(सं. प्रयाण)।

७२६ **करह**-(सं. करभ) ऊंट।

पृष्ठ १०४ **पंक्ति** ४। **'प्रमेमोऽय'**-'प्रमोदाय' पढिये।

१०५ **कडी** ७। **चग**-'चग' पढ़िये।

१०६ **कडी** १३। **मयाल**-(सं. मृदु, प्रा. मउ) मायालु।

कडी १९। **पुष्पदंस**.'पुष्पदंत' पढिये।

११० **कडी** ४७। **शत्रुकार**-(सं. सत्रागार) सत्रकार पढ़िये।

१११ **कडी** ५९। **घाडा**-'घोड़ा' पढिये।

११८ **कडी** ७२। **तेणि अवस**-'तेणि अवसरि' पढ़िये।

खेडीदेवति-'क्षेत्र देवता।'

१३५ **कडी** ६। **धार**.'धरि' पढ़िये।

१३७ **कडी** २३। **सुना**-'सुता' पढ़िये।

१८५ कड़ी सख्या ४५५, ४५८, ४५९, को अंक सुधार के पढ़िये।

पूर्ति–प्रस्तावना पृष्ठ 'औ'

'पदूमावत' में सदयवत्स कथा का उल्लेख

अब जी सूर गगन चढ़ि धावहु ।
राहु होहु तो ससि कहं प'वहु ॥
विक्रम धंसा पेम के बारां ।
सपनावती कहं गएउ पतारां ॥
सदैवच्छ मुगुधावति लागी ।
क'चनपुर होइगा वैरागी ॥
राजकु'वर क'चनपुर गएऊ ।
मिरगावति कहं जोगी भएऊ
साधाकु'वर मनोहर जोगू ।
मधुमालति कह कीन्ह वियोगू ॥
प्रभावति कहं सरसुर साधा ।
उखा आगि अनिरुधवा बांधा ॥
हौ रानी पदुमावति, सात सरग पर वास ।
हाथ चढी सो तेहिके, प्रथम जो आपुहि नास ॥

—*पदमावती*, दो० २३३-१७

समाप्त